GULDASTA

Dr Ram Lakhan Prasad

A Collection of Hindi Short Stories

2018

छोटी कहानियों की भावनापूर्ण संग्रह

गुलदस्ता

HINDI
FICTION

A COLLECTION OF HINDI SHORT STORIES

Dr Ram L Prasad

A Collection of Hindi Short Stories

Dr Ram Lakhan Prasad

छोटी कहानियों का दिलचस्प संग्रह

राम लखन प्रसाद

Contents

१. तकदीर की लकीर
2. उँजाले की परी अँधेरे की कली
3. गुलाबो की कौशल
4. अपराधी कौन ?
5. करीना का कमाल आतंकवादी का धमाल
6. आज नहीं तो कल
7. जीना इसी का नाम है
8. लौट के आ जा मेरे लाल
9. प्रीत किये सुख होय
10. साजन की पड़ोसन
11. प्यार का बन्धन
12. गांव की दिवाली
13. उस का रोना गजब हो गया
14. मथुरा के कंस बने मेहनान हमारे
15. शैतान से सौदा फरिशता का ज्ञान
16. अपहरण
17. प्रीत की रीत
18. गजब गाँव की अजब कहानी
19. शैतान से सौदा फरिशता का ज्ञान
20. सफल जहाजिओं की अजब दास्ताँ

प्रस्तावना

इन बीस कहानियों को लिखने में मुझे समय तो लगा होगा लेकिन हम ने उन लम्हों को बड़े ख़ुशी और सुकून से बिताया है क्यूंकि कहानियों को रचते वक़्त हमको हमारे पात्रों के साथ कुछ ख़ास लगाओ सा हो गया था । इन कहानियों में एक खास बात तो यह है कि वे सभी कल्पित होते हुए भी सच्चाई और वास्तिकता के नजदीक हैं । जिस लगन से हमने इन की रचना की है आशा है कि उन्हीं तरह के लगन और दिलचस्पी से पाठक इन को पढ़ेंगे और गुनेंगे । इन से प्रथम हमने जितने कहानियों को लिखा है वे सब मेरे दिल और दिमाग के करीब हैं क्यूंकि मैं ने उन से एक अजीब सा रिश्ता जोड़ रखा है ।

इन कहानियों को पढ़ते समय पाठकों को यह याद रखना है कि इन में मनोरंजन और ज्ञान के अलावे कितने भावनाएं भी भरी हैं । इन भावनाओं को समझना केवल जरुरी ही नहीं पर वास्तिकता होगी तभी हमारी लेखनी आप से खुश होगी । याद रहे इन कहानियों में आप अपने आप को खुद दाखिल कर के और भी मनोरंजन उठा सकतें हैं हालाकिं आप उन स्थानों और पत्रों को पहचान कर उनके साथ होने की चेष्टा करें ।

चलो अब पढ़ने का समय आगया है । जरा ध्यान से पढ़िए कहीं कोई खास बात की उलटी मतलब न निकल जाए ।

मनभावन कहानियों का संग्रह

१.

तकदीर की लकीर

यह एक और कल्पित रचना है ।

किसी भी जीवित या मृतक व्यक्ति से इस का कोई सम्बन्ध नहीं है ।

मीरा की सवारी खुले सड़क पर हौले हौले दौड़ रही थी । उस की सवारी आगे बढ़ती चली जा रही थी । मीरा अपने चलती हुई गाड़ी के खिड़की से बाहर का नज़ारा देख रही थी और ना जाने अपने तकदीर के लकीर के बारे में कया कया सोच रही थी ।

हाय रे बिडम्बना ! तुम ने इस बच्ची पर कैसे कैसे ज़ुलम ढ़ाये हैं । तुम को जरा भी दया नहीं आई ऐसा करते हुये ! लेकिन तुम्हारा कया क़ुसूर है भगवन, जब मीरा का ही भाग्य फूटा हुआ नज़र आ रहा है । पर तुम अपने परम भक्त के लिये कुछ तो कर सकते हो । ओ हां ! तुम्हारे घर में देर है पर अंधेर नहीं हो सकता । अब इस का भी एहसास हम कर लेंगे, मेरे मालिक ।

जिस गली से मीरा की सवारी गुजर रही थी वहां के सभी स्थान गंदगी, बदबू, हल्ला गुल्ला, दुख दरिद्रता और दीनता से भरे पड़े थे । कहीं भी किसी प्रकार की सुख, खुशी और अमन चैन की एक भी चिन्ह नज़र नहीं आ रही थी । इस मुहल्ले की दुर्दशा देख कर ऐसा मालूम पड़ रहा था कि दुनियां की सब से गलिक्ष जगह बस वही था ।

लेकिन कुछ दूर चलने के बाद सभी दृष्य सुन्दरता मे बदलने लगे थे । हरे भरे गन्ने के खेत, लहराते हुये आम के बगीचे, लहराती और बहती हुई नदी नाले, ऊचे ऊचे पेड़ और पहाड़ तथा मनोरम सुहाना वातावरण । यही सीतापुर की खूबी थी जहां मीरा की पदार्पन हुई थी ।

यही नियम इनसान के जीवन के लिये भी लागू है । हर मैल धोने से साफ हो जाती है । हर दुख समय आने पर सुख मे बदल जाती है । हर बुराई भी आहिस्ते आहिस्ते अच्छाई मे तबदील हो जाती है ।

गनीमत तो इस बात की थी कि अब मीरा को इसी गली में रह कर या तो जीना था या फिर मरने की तैयारी करना था । इस पहेलू का चुनाव खुद मीरा को करना था पर उस के लिये यह बहुत कठिन लग रहा था । मीरा के पिता सेठ मनमोहन लाल ने उसे अपने आलीशान मकान से निकाल दिया था । मीरा को बेकुसूर ही निर्वासन कर दिया गया था । पर क्यों ?

किसी को इस से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था कि मीरा इस गंदी गरीब गली में जीवित रहे, खुश रहे, दुखी रहे या फिर अपने जीवन को अन्त कर ले । खास कर के उस के पिता को जिन के पास राजा दसरथ से एक ज्यादा, चार बीबियां थी, बेजोड़ धन दौलत था, अकथ मान मर्यादा और लाखों की अथाह मिलकियत थी । वे भी कोई राजा महराजा से कम नहीं थे । सेठ जी सिडनी के ही नहीं पर पूरे ओस्ट्रेलिया के लगभग सब से बड़े ब्यापारी माने जाते थे ।

आज जिस नाजुक और बेसहाय हाल में तथा जिस दर्दनाक मार्ग पर मीरा को पटक दिया गया था वह उस के पिछले खुशहाल, विलासिता, चमक दमक की जीवन से बहुत ही भिन्न थी । कहां महलो की रानी, सेठ की इकलौती बेटी, महारानी मां की दुलारी और कहां आज की लावारिस मीरा । आज उसे वही सब अपने

हितैषियों ने दूध में गिरी मक्खी के तरह अपने खुशहाल जिन्दगी से निकाल कर फेंक दिया था ।

अपने बचपन से ही मीरा लाड़ प्यार में पली थी, दुलार की दुनिया में सजी थी, चमक दमक के वातावरण में चली थी पर आज उस का जीवन ही बदल गया था । वह बेघरबार हो गई थी । पिछले जीवन में मीरा को न खाने पीने की कोई कमी थी, न ही पहनने ओढ़ने की कोई फिकर थी और न ही मौज मनाने की कोई रुकावट रही । उस के आस पास नौकरों की भीड़ लगी रहती थी तथा पढ़ने लिखने की उत्तम से उत्तम प्रबन्ध था । संगीत कला, नृत्य, कवितायें और अन्य कला तथा हुनर सीखने की पूरी आज़ादी थी । हां यह सब केवल वह अपने पिता के महलो के चार दिवारियों के अन्दर ही कर सकती थी ।

आज मीरा का भाग्य बदल चुका था । यही समय का चक्र था । यही बिधि की विधान थी और समय की फेर थी । आज मीरा एकदम अकेली हो गई थी । न पिता का महल, न उन का प्यार और देखभाल और न ही माता का सहारा । पर मीरा के पास एक कुदरत की महान देन थी । उस की बेजोड़ खूबसुरती, अदभुत सुन्दरता, परिपूर्ण व्यक्तित्व, मीठे बचन, खुशमिज़ाज, कोमल मनोभाव और प्यारा हंसमुख मनमोहनी चेहरा । वह जितना अंदर से प्रिय थी उतना ही बाहर से प्यारी लगती थी । इन गुणों और बनावटों को कोई भी उस से छीन नहीं सकता था । यह सब उस के अपने थे ।

कोई भी जनमदाता ऐसी सुकन्या को पा कर मारे खुशी से नांच उठते पर सेठ मनमोहन लाल की दिमाग ही फिरा दी गई थी

कि उन्हों ने अपनी प्यारी इकलौती पुत्री को सभी सुखों और सहारे से वंचित कर दिया था । यह कैसे और कयों हुआ इस को जानने के लिये उन के घरेलू मामले की छानबीन करने की जरूरत है ।

मीरा की मां आरती, सेठ मनमोहन लाल की सब से पहली, प्यारी और अति प्रभावशाली पत्नी थी । अगर वह भयानक,दारुण और अकल्पित घटना वैसे अचानक न हो जाती तो मीरा सम्भवता वही आनन्दपूर्ण तथा मगन जीवन उन महलो के चार दिवारियों के अंदर ही बिताती रहती । पर होनी ने अपना बल दिखा ही दिया और सिर्फ बारह वर्ष की मीरा की खुशहाल जीवन का एकाएक अन्त हो गया ।

मीरा की मां आरती ने एक दिन अपने व्योपार के सब से सत्यवादी क्रमचारी देवदास के साथ अपने पति, अपना सभी राजपाट और माल खजाना त्याग कर सब दिन के लिये उस के साथ चली गई । इसे धोखा कहा जाय या वासना की शक्ति । दोनों ही सेठ जी के लिये जखमी थे ।

सेठ जी के पेट, सारे शरीर, दिल, दिमाग और पूरे मर्दागनी तथा पुरुषार्थ पर इस का बहुत बड़ा, बुरा, गहरा और असहाय असर हुआ । आरती और देवदास के इस धोखे ने उन को चकना चूर कर दिया था । वे हर तरह से टूट चुके थे । वे धीरे धीरे अपने जीवन से निराश होने लगे थे तथा अपने व्यापारिक, पारिवारिक या घरेलू जिम्मेदारियों से मुह मोड़ने लगे थे पर उस की अन्य बीबियों ने उन की सहायता में लग कर उन को इस दुखित समय से निकालने की कोशिश कर रही थी ।

सेठ जी की सब से छोटी बीबी रेखा बड़ी अभिलाषी, धुनी और लालसी थी इसलिये उस ने अन्य दो बीबियों के साथ मिल कर एक ऐसा षढयन्त रचा कि सेठ जी उस मे बुरी तरह फंस गये । उन की चाल पूरे तौर पर सेठ जी पर चल ही गई । उन का कहना था कि जब मीरा की मां ने सेठ जी के साथ इतना बड़ा विश्वासघात किया है तब उन की बेटी भी आगे चल कर अपने मां के तरह नागिन बन जायेगी कयों कि वह अभी से ही अपने मां के रकम लगने लगी थी और कार्य भी उसी के तरह करने लगी थी । उन का प्रस्ताव था कि मीरा अपने कुकर्मो से पूरे परिवार को नष्ट भ्रष्ट कर के सब की मनो कामनाओं को नेसतानाबूत कर देगी ।

आखिर में सेठ जी अपने तीनों बीबियों के षढयन्त में फंस ही गये और उन की बात मान कर मीरा को घर से निकाल देने का फैसला कर ही दिया । उन के दिल और दिमाग तो पहले से ही टूट चुके थे और अब उन की समरण शक्ति भी खो चुकी थी । सेठ जी अब अपने प्यारी पुत्री मीरा से दूर ही रहने लगे थे । उन को पूरा विश्वास हो गया था कि एक दिन आगे चल कर मीरा अपने मां आरती की तरह उन को धोखा दे ही देगी । बस वे अपने अन्य बीबियों की बाते मान कर मीरा को अपने चचेरे भाई नरेश के पास भारत के उत्तर प्रदेश के एक छोटा सा शहर के लिये भेज दिया ।

मीरा के भव्य महल, बड़े घर आंगन, रंग बिरंगे फव्वारे, बगीचे मे भांति भांति के चिड़ियों की चहचहाहट, उत्कृष्ट भोजन पानी, तथा उस के सुख शान्ति के सभी वातावरण अब उस के पीछे छूटने जा रहे थे । थोड़ी ही दिनों में यह सब मनोरंजन और खेल कूद के साधन उस की अतीत बन कर रह जायेंगी ।

उस सुखी जीवन में भी मानो मीरा का बचपन एक कैद ही था । मीरा को कहीं अकेले आने जाने की आज़ादी कभी भी नहीं दी गई थी क्योंकि वह बहुत ही सुन्दर थी और उस के परिवार वालो को यह डर था कि कहीं उस परी जैसी सुनहरी गुडिया को कोई चुरा न ले जाये । मीरा को यह जान कर की उस के सभी आमोद प्र मोद के साधन छूट रहे थे कुछ दुख तो जरूर हुआ पर अब थोड़ी ही दिनो मे वह आज़ाद पक्षी के तरह उड़ने वाली थी ।

नरेश दिल्ली के पूरब में दो सौ मील दूर इस छोटे से किसानों की बसती मे एक साधारण कपड़े का दुकान का मालिक था और अपने छोटे से परिवार का निर्वाह एक मामुली तौर पर कर रहा था । उन के नरेशनिवास में उन के पत्नी के अलावे उन के भाई सुरेश के परिवार भी रहते थे । नरेश और नीलम के पास अपने कोई बच्चे नहीं थे ।

मीरा के आंखों से लगातार आंसू बह रहे थे जब सेठ मनमोहन लाल के महल से उसे बिदा किया गया । आज वह उस घर आंगन को पहली और आखरी बार एक दम से छोड़ कर जा रही थी जहां उस का बचपन बीता था ।

बारह वर्ष के इस कच्ची उमर मे ही उस पर एक गजब की बिजली गिर पड़ी थी । इस अप्रत्याशित अचानक घटना के कारण उस के जीवन मे एक बहुत बड़ा तूफान आने वाला थी । लेकिन यह कुदरत की करतूत थी कि हर तूफान के बाद महौल में स्थिरता आ जाती है । मीरा का भी दिन लौटेगा और उस के दुख के बादल उस के सामने से हट जायेंगे । यह उस का अटल विशवास था ।

मीरा को सिडनी एयरपोट पर से हवाई जहाज द्वारा लखनऊ जाना था जहां से उसे नरेश के घर वाले सीतापुर ले जाने के लिये आयेंगे । यह सब इन्तजाम सेठ जी के क्रमचारियों ने मीरा के लिये कर दिया था । लगभग आठ घण्टे के बाद मीरा दिल्ली पहुची जहां से उस को दो घण्टों के बाद लखनऊ पहुचाया गया । मीरा अभी भी सुसुक सुसुक कर रो रही थी ।

पाठक अब मीरा के निर्वाचन का सही कारण जान गये हैं तब अब आगे मीरा की जिन्दगी ने कया गुल खिलाया यह जानने के लिये हमे सीतापुर के कपड़ों के दूकानदार नरेश से मिलना पड़ेगा ।

लखनऊ एयरपोट से सीतापुर की यात्रा उन दिनों बड़ी कठिन थी । ऊबड़ खाबड़ रास्ते थे और नरेश की पुरानी खुड़खुड़िया मोटर गाड़ी को उन का बूढ़ा डरायबर हीरा मीरा को लिये धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था । मीरा को लगा जैसे उन का सफर खतम होने का नाम ही नहीं ले रहा था । अब यहीं उस का जीवन का अन्त होने वाला है । धन्य है उस के मैयभा या सौतेले माताओं का जिन के सौजन्य और षढयन्त के कारण आज मीरा इस अनजाने स्थान में पहुँच गई थी ।

यह सब मीरा को उन कहानियों के तरह लग रहे थे जिन्हे बचपन मे उस की माता उसे सुलाने के लिये खाट पर बताया करती थी । पर आज अचानक मीरा खुद उस भयानक और अनजान जगह पर थी । यहां वह मानवता की छोटी छोटी पहाड़ियों और सौंदर्य तथा कुरूपता के उलझन के बीच से गुजर रही थी । एक तरफ ऊंचे ऊंचे मिनार थे तो दूसरे ओर मलिन बस्तियां बसीं

थी । वहां रंक के बीच राजा भी थे तथा लक्जरी के सामने निर्धनता भी चमक रही थी ।

मीरा सोच रही थी कि कया यही वह जगह है जहां उस डरी हुई असहाय कली को अपना नया जीवन बिताने के लिये भेजा गया है । यह सब तो शायद उस की जान ही ले लेंगे । अब इस हालत मे वह कया करे ? जिये या मरे ? किसी को कया फर्क पड़ेगा । इस दुखित दशा को तो खुद उसे ही सहन करने के लिये भेजा गया है । उस ने अपने आप से कहा, *चल मीरा इन वादियों के गले लग जा ।*

लेकिन पुरानी मीरा कहीं सिडनी में खो गई थी और अब एक नई मीरा ने सीतापुर में अपने नरेश काका के घर जन्म ले लिया था । ठीक एक घण्टे बाद मीरा का सफर समाप्त हुआ और वह अपने काका नरेश के घर के अन्दर थी । उस के सामने एक साधारण लम्बा चौड़ा, हट्टा खट्टा अधेड़ आदमी खड़ा था । यही मीरा का नरेश काका था ।

“मेरे सेठ भाई की एकलौती बेटी मीरा का हम तहेदिल से अपने छोटी सी कुटिया में स्वागत करते हैं । मुझे मेरी सिडनी की राज कुमारी से मिल कर बहुत खुशी हुई । मीरा बेटी, आज से तुम हमारे इस विनम्र नरेशनिवास के क्षत्रछाये मे खूब उन्नति करो और फूलो फलो । तुम्हारे लिये यही हमारी निजी दुआ है ।” मुस्कुराते हुये नरेश काका मीरा को अपने गोद मे लेते हुये चूम कर कहा ।

सचमुच यह नरेशनिवास कोई विनम्र या साधारण घर नहीं था । हां यह मीरा के पिता के सिड़नी के महल से कोइ मेल नहीं

खाता   था । यहां के और सभी घरों के मिलान में यह नरेशनिवास मीरा के लिये अति सुन्दर, सुखद और शान्तिपूर्ण स्थान लग रहा था । वास्तव में मीरा वहां खूब सुख पाई और फूली फली कयोंकि नरेश काका और नीलम काकी ने अपना सब प्यार दुलार उसी पर निवछावर कर दिया था कयोंकि उन की अपनी कोई अवलाद नहीं थी ।

अपने जीवन भर नरेश और नीलम सेठ मनमोहन लाल के बहुत ही आभारी थे कयोंकि वे अपनी एकलौती बेटी मीरा को उन के सुपुर्द कर दिये थे । यह उन के लिये समझो एक कुदरती देन थी और वे मीरा को दिलो जान से देख भाल कर रहे थे । मीरा को यहां उस के पिता के महलों की कैदी जीवन के मिलान मे सभी आजादी प्राप्त थी । वह सीतापुर के गलियों, सड़कों, वन उपवन, बाग, मन्दिर, दर और दुकान के सभी दृष्टि, सब कोलाहल तथा सब महक की पहचान धीरे धीरे करती गई ।

धीरे धीरे वही सीतापुर जो शुरू शुरु मे बुरी लग रही थी आज एक नयनाभिराम, मनोरम और अति सुन्दर स्थान बन चुकी थी । यह सब मीरा के नये परिवार के लाड़ प्यार की नतीज़ा थी और उस के साथी निर्मल की मेहरबानी रही ।

पिछले चार वर्षो ने सीतापुर की सभी उध्योगी, समाजिक और व्यवसायिक शान्तिपूर्ण गुंजन मीरा के रग रग में समा गये थे । यह सब उस के इस नये जीवन में बेहद उत्तेजना भर दिये थे और एक अजीब तहलका मचा दिया था । मीरा की जिज्ञासा, कौतुहलता और अभिलाषा इतना बढ़ गई थी कि वह अब अपने सोलह साल की उम्र में एक इक्कीस साल की विद्वान और निखरी हुई युवती नज़र

आ रही थी । यह सब नरेश और नीलम के करकमलो की करिशमा थी ।

अब हर रोज मीरा एक अति शिक्षित, होनहार और सुन्दर यूवती का रूप धारण करने लगी थी । वह फूल सी कली अब और भी निखर चुकी थी । सीतापुर के सभी लोग उस से बहुत प्रेम करने लगे थे । सीतापुर से उस का लगाव इतना बढ़ गया था कि जब उस के काका काकी उसे दिल्ली की सैर कराने ले जाना चाहते थे तो उस ने कहा, "काका जी, मैं दिल्ली नहीं जाना चाहती कयोंकि मुझे सीतापुर मे ही रह कर अपने पढ़ाई लिखाई पर ध्यान देना है ।"

"तुम्हारे बातों से यह लगता है कि दिल्ली की सफर कोई सजा है । मेरी लाडली बेटी, दिल्ली घूमने का शौक हमे बचपन से ही है कयोंकि उस शहर में जाने से दिल खुशी से भर जाता है । लोग कहते हैं कि दिल्ली दूर है पर मेरे लिये मेरी दिल्ली एक हूर है, नूर है, मेरा सुरूर है जहां जाना जरूर है ।" नरेश काका ने मीरा को समझाने की कोशिश किया पर उस के जिद्द के आगे सब दिन के तरह काका जी को आज भी झुकना ही पड़ा ।

मीरा के काका काकी उस को अपने भाई सुरेश के परिवार के हवाले कर के दो हफते के लिये दिल्ली चले गये । उन के गैरहाजरी में उन के व्यापार का देखरेख उन का हितैषी नौकर रमनलाल करने जा रहा था । रमनलाल वहीं पड़ोस में अपने छोटे से परिवार के साथ रहता था । उस के बेटे निर्मल और मीरा

बचपन से ही साथ साथ खेले कूदे और पढ़े लिखे थे। पर अब वे दोनो बच्चे नहीं रहे यह बात किसी ने नहीं जाना।

निर्मल एक सतरह साल का खुशहाल, चंचल, बेफिक्र, सुडौल, घुंघराले बालों वाला, सदा हँसमुख, निखरा हुआ होनहार युवक था जिस की गणित में खास योग्यता या कौशल थी। शायद इसी लिये उस के पिता रमनलाल उस के लिये भविष्य में खुद का कोई बड़ा व्यापार करने की आंत्रिक चाह लिये बैठे थे। उन का ऐसा विचार ठीक ही था कयोंकि धीरे धीरे सीतापुर सर्वदेशीय बनता जा रहा था और वहां के बासिन्दे दुनियां के अन्य स्थानों से कदम से कदम मिला कर चलने लगे थे।

रमनलाल तो सदा नौकरी पर भरोसा कर के अपने परिवार का निर्वाह कर रहा था पर उस के जमाने और निर्मल के भविष्य में जमीन आसमान की फर्क होने लगी थी। निर्मल को जमाने को अपने तरफ झुकाने की शक्ति थी और बड़े से बड़े काम करने की हुनर मिल सकती थी। वह अपना भविष्य जैसा चाहे वैसा बना सकता था। पर पिता को यह नही मालूम था कि निर्मल की निजी गुप्त इरादे कया थे।

निर्मल की उम्मीदे और इरादें व्यापार की ओर नहीं बल्कि वे कहीं और टिकी हुई थी। उस के विचार उस उज्ज्वल, प्रकाशमान, रोशन तथा अत्यन्त खूबसूरत रूप मे फंसे हुये थे जो नरेश की बेटी मीरा के पास थी। मीरा को वह अंदर ही अंदर चाहने लगा था।

निर्मल पहली बार मीरा को उस दिन मिला था जब मीरा एक बारह साल की डरी हुई बच्ची ने सीतापुर मे कदम रखा था । निर्मल उस समय चौदह वर्ष का युवक था जिसे दूसरो के दुख तकलीफ मिटाने की चाह रहती थी । यही कोशिश मे उसी दिन से निर्मल ने मीरा को अपना बना लिया था जिस से मीरा को वह सदा खुश देख सके और उस के साथ मेल जोल बढ़ा सके ।

मीरा और निर्मल थोड़े ही दिनों के बाद एक दूसरे के दोस्त ही नही पर खेल कूद तथा दुख सुख के साथी बन गये थे । वे साथ साथ पढ़ने लगे थे और अपने बचपन के अन्य खुशी समय वहां के गलियों, शहर और बाग बगीचे की चक्कर काटते रहे जब कि उन दोनो के पिता दिन रात एक कर के अपने काम मे लगे रहते और अपने व्यापार को प्रोत्साहित करते रहे । समय का चक्र चलता रहा और हितैसियों की हित जमती गई ।

निर्मल यह नहीं जान सका कि कब, कैसे और कहां मीरा के प्रति उस की भावना में तबदीली आ गई पर जब मीरा अपनी चौदवी वर्षगांठ मना रही थी तब उस ने एक सजी धजी परी का रूप ले रखी थी । उस के बदन के हर कोने से गुलाब सी महेक, फुलझड़ी सी चमक, नाजुक कली सी लचक, चाँदनी जैसी दमक, लहरों जैसी उलझन, नदियों जैसी बहाव और मोम जैसी नर्मी झलक रही थी । ऐसी कुदरत की अजूबा सूरत और बेजोड़ करामाती मूरत देख कर कोई भी युवक के दिल और दिमाग पर असर तो होगा ही पर मीरा की हर अदा पर उस दिन से निर्मल फिदा हो गया था ।

जो भी हो उस दिन से निर्मल का प्यार मीरा जैसी गुडिया के लिये बहुत ही गहरा, गाढ़ा, जुनूनी और मीठा रूप ले चुका था ।

यह निर्मल के लिये एक बहुत ही खुशी की बात थी पर इस मे एक अखंडनीय खोट रह गई थी । यही अब निर्मल की सब से बड़ी और कठिन समस्या थी । मीरा निर्मल की सिर्फ एक अच्छी दोस्त थी तथा उस से प्यार नहीं करती थी ।

इस आभास का अस्थाई संकेत तब मिला जब मीरा ने निर्मल के भावनाओं का जवाब हँस कर उड़ा दिया । "पागल मत बनो निर्मल ! तुम मेरे भाई समान हो । इस के अलावा, मुझे प्यार वार की जरूरत ही नहीं है कयोंकि मैं कभी शादी ही नही करुँगी ।" मीरा को अपने मां का घर छोड़ कर भाग जाना और इस से पिता की मायुसी और निराशा की याद उस के आंखों के सामने नाचने लगे । शायद इसी लिये मीरा शादी जैसे समाजिक बन्धन से नफरत करती थी ।

यह जान और सुन कर निर्मल अपने पराजय के हताशा तथा निराशा के पीड़ा से रो पड़ा । उस का दिल टूट गया था । वह सोचने लगा कि न जाने कयों वह मीरा के साथ एक भाई की तरह बरताव करता रहा । वह कयों नहीं शुरुआत से ही इस पूजिता देवी के कीमतों को समझ पाया था । वह सोचने लगा कि वह अब कैसे इस जटिल समस्या का हल खोज पायेगा । धीरज ले कर वह बैठ गया । समय बीतता गया ।

एक दिन जब नरेश और नीलम अपने छुट्टी पर असट्रेलिया गये थे तब उन के घर मे अचानक आग लग गई । मीरा घर मे अकेले थी कयोंकि सुरेश और उस की पत्नी काम पर थे । उस दिन निर्मल अपने कोलेज से दस बजे ही लौट आया था और जब

मीरा के घर के खिड़कियों से काले धुवां निकलते देखा तो वह घबराया और उधर बड़े जोर से दौड़ पड़ा । वहां पहुँचा तब घर की आग की लपटों की गर्मी सौ गज दूर तक लग रही थी ।

"यहां क्या हो रहा है ?" निर्मल ने पूछा ।

निर्मल के पिता जिन का मुख और हांथ राख से काले हो चले थे, खांसते हुये समझाया, "आग लगी है आग ! सब रसोई से शुरू हुई थी । मै ने आज तक आग की लपटों को इतना जल्द फैलते नहीं देखा । यह बड़े चमत्कार की बात है कि हम ने सब क्रमचारियों को सही सलामत बाहर निकाल लाये हैं ।"

बाहर एक बड़ी भीड़ जमा हो गई थी । डरे हुये सभी क्रमचारी मे से कुछ तो जल गये थे, कुछ रो रहे, अन्य बुरी तरह से खांस रहे थे पर और लोग बलटियों मे पानी ले ले कर आग बुझाने की कोशिश कर रहे थे । निर्मल घबरा कर पूछा, "मीरा कहां है ?"

"घबराओ नही बेटा," निर्मल के पिता ने कहा, "वो आज सबेरे नदी की तरफ गई थी । अब घर मे कोई नहीं है ।"

लेकिन जैसे वे यह कह रहे थे कि उसी समय एक परछाई ऊपर खिड़की से अपने हांथों को अधाधुन मदद के लिये हिला रही थी पर धुआं के मारे उसे पहचानना मुशकिल हो रहा था । निर्मल ने ना आव देखा ना ताव बस उस आग से धधकते हुये मकान मे दौड़ कर घुस गया । वह अपने घुटने के बल घर मे हलता गया । आग

की गर्मी ने उसे लाठी की तरह चोट पहुँचाई और उस के फेफड़े मे काले धुआं ऐसे हले जैसे वह कोई छुरा निगल रहा था ।

हे भगवान ! हे मेरे मालिक ! मुझे उस के पास पहुँचा दो ! मुझे उस को खोजना है जरूर ! मेरी मदद करो प्रभू !

प्रभू ने उस की प्रार्थना सुन ली थी । बाद मे निर्मल ने सब को समझाते हुये बताया । *ना जाने कोई अनदेखा व्यक्ति मेरे हांथों को पकड़ कर उन सीढ़ियों से खींचता हुआ ऊपर ले गया । मूझे नहीं पता की कैसे उस धधकती हुई आग को चीरता हुआ मैं मीरा के पास पहुँचा । घबराई और डरी हुई मीरा को अपने बाहों मे एक गुड्डी की तरह उठा कर उन जलती हुई सीढ़ियों से नीचे ला कर सड़क तक पहुँचाया । यह सिवाय प्रभू की एक अलौकिक क्रम या अचम्भा चमत्कार के और कूछ नहीं हो सकता था । प्रमात्मा ने हम दोनो को बचाया कयोंकि वो भी हम दोनो को एक साथ देखना चाहते हैं । शायद यही हमारी मुकद्दर है । यही हमारे तकदीर की लकीर है ।*

जब मीरा ने अस्पताल मे अपने आंखों को खोला और अपने बचाने वाले निर्मल के आंखो मे आंखे डाल कर देखा तो निर्मल की सभी प्रार्थनाये पूरी हो गई । मीरा को निर्मल से अब प्यार हो गया था । अब वह उस का भाई नहीं रहा । निर्मल ही उस का एक मात्र प्रियतम बन चुका था ।

हम इस प्यार का कया नाम दे सकते हैं ? कया यह पवित्र रिश्ता था या इस मे भी कोई स्वार्थ छिपी थी ? यह तो समय और हालात ही बतायेंगे ।

जब नरेश और नीलम अपने छुट्टी से घर वापस आये तब अपने जले हुये नरेशनिवास की हालत देख कर चीख उठे पर उन को अपने घर की फिकर कम थी । उन को अपने लाढली बेटी मीरा की सोच ज्यादा थी लेकिन यह जान कर कि मीरा को धधकते हुये घर से निकाल कर बचाने वाला निर्मल था उन के खुशी का ठिकाना ही ना रहा । नरेश ने तुरन्त निर्मल को अपने पास बुलाया ।

“मेरे बेटे, मैं तुम्हारा कर्जदार हूँ । तुम्हारे लिये मैं अपना जीवन निवछावर कर सकता हूँ । कहो कि मैं किस तरह अपना यह कर्ज उतारूं ? तुम को कौन सी इनाम दूं तुम्हारे इतनी बड़ी एहसानमंदी और बेसुमार बहादुरी के लिये ? पैसा ! गहना गुड़िया ! अपना एक नया घर ! बताओ दो बेटा । जो भी चीज़ मांगो वह मैं तुम को देने के लिये तैयार हूँ ।”

“ जी नहीं , मैं आप से कोई भी पैसा कौड़ी, माल असबाब, घर द्वार नहीं चाहता हूँ,” निर्मल ने कहना शुरू किया । “मैं केवल आप का आर्शिबाद चाहता हूँ । मैं आप की लाढली बेटी मीरा से शादी करना चाहता हूँ । बस यही आसवासन मुझ को दे दीजिये ।” निर्मल ने मुस्करा कर कहा ।

नरेश ने निर्मल के आंखो मे मीरा के प्रति अगाध प्यार झलकते देखा पर उन को इस लड़के के नेक इरादे पर बहुत तरस आया । “बेटे मैं तुम्हारे बातों को भलिभांति समझता हूँ पर मैं बिलकुल मज़बूर हूँ । तुम्हारी यह मांग नामुमकिन है । मैं इस की इज़ाजत नही दे सकता हूँ ।”

“आखिर क्यों ?” निर्मल ने गिड़गिड़ाया ।

“मेरी मीरा एक सेठ की बेटी ही नहीं पर वह एक बहुत बड़े घराने की बच्ची है । जब मेरे भाई ने उस को मेरे हवाले किया था तब वे मुझ से यह आसवासन लिये थे कि उन की बेटी की गठबंधन केवल उन के वर्ग, जाति और समाज मे होगा । मैं ने उस के लिये एक योग्य वर ढूँढ रखा है जो मीरा से उम्र मे बड़ा जरूर है लेकिन वह एक बहुत नेक, इज़्ज़तदार ओर दयालू..”

“ नहीं ! आप ऐसा नहीं कर सकते हैं, मीरा मुझ से प्यार करती है और वह यह कभी नही करेगी,” निर्मल ने अपने आप को सम्हालते हुये कहा ।

अब तक नरेश की मुखाकृति कठोर हो गई थी इसलिये वे थौड़ी ऊंचे स्वर मे कहना शुरू किया, “मीरा वही करेगी जो मैं कहूँगा ।”

पर जब नरेश ने निर्मल के चेहरे पर एक अजीब सी लाचारी और निराशा देखा तब वे थोड़ी नरमता दिखाते हुये कहे, “देखो बेटा, मैं ने जब कह दिया कि मैं तुम्हारी यह मांग पूरी नहीं कर सकता तब मैं अपने इरादे नहीं बदल सकता । यही हमारे समाज की तकाज़ा है और हम सब किसी न किसी तरह इसी बन्धन मे जकड़े हुये हैं । इस मे से निकलना उतना आसान नहीं है जितना तुम सोचते हो इसलिये तुम को मेरी बेटी मीरा से रिश्ते जोड़ने की इरादे को यहीं खतम कर देना जरूरी है । इस के अलावे तुम मुझ से कोई और चीज़ मांग सकते हो । कोई भी वस्तु ।”

निर्मल अपने दिल पर पत्थर रख कर चुप हो गया । उसे कोई और वस्तु की जरूरत ही नहीं थी । उस ने अपने आप को यह समझाते हुये शान्त हो गया कि शायद बाद मे वह नरेश को मनाने मे कामयाब होगा ।

हो सकता है कि जब बड़े बुजुर्ग इस बात की हल खोजें तब नतीजा उस के पक्ष मे हो जाये । फिर यह भी तो हो सकता है कि मीरा ही उस अनजान मंगेतर से शादी करने से इनकार कर दे । पर शायद यह सब निर्मल की व्यर्थ आशा थी कयोंकि मीरा नरेश को अपने पिता से भी ज्यादा मान इज़्ज़त करती थी । वह कभी भी भूल कर इस मामले मे उन की बातों को टाल नहीं सकती थी । वह वही करेगी जो उस के काका नरेश चाहते हैं ।

यहां तक की निर्मल के पिता भी इस विष्य मे उस की कोई मदद न कर सके जब उन्हो ने निर्मल को यह कह कर समझाया, "तुम को मीरा को भूलना पड़ेगा बेटा । मेरी बात मानों तेरे लिये कई अन्य कई लड़कियां मिल जायेंगी । तेरी पूरी जिन्दगी तेरे आगे पड़ी है । तेरा भविष्य बहुत उज्ज्वल होगा अगर तू नरेश के पैसे ले कर अपना कोई अच्छा व्यापार शुरू कर दे । आगे चल कर तेरी और हम सब की जीवन सफल हो जायेगी ।"

निर्मल की सोचने और कल्पना की शक्ति ही चली गई थी । उसे लगा जैसे कोई भी उस के दुख दर्द को समझने की कोशिश भी नहीं कर रहा था । यहां तक कि मीरा ने भी उसे आश्वासन दिया कि चाहे वह किसी से भी शादी कयों न कर ले लेकिन वह सदा निर्मल को प्यार करती रहेगी । यह भी किस तरह की सांत्वना

ठहरी जब वह जीवन भर मीरा के प्यार पाने के लिये तड़पता रहेगा । निर्मल के अंदर जो प्यार की ज्वाला जल रही थी उस को बुझाना कठिन ही नही पर नामुमकिन था ।

हुआ वही जो राम रचि राखा, सो का करे तरक बढ़ाबे साखा । आखिर मे वह दिन आ ही गई जब मीरा की शादी उस के चुने हुये मगेतर से हो गई और निर्मल के सभी आशाओं पर पानी फिर गया । इतफाक से मीरा के पति सेठ निर्मलदास थे जो उम्र मे मीरा के पिता के बराबर थे ।

अगर मीरा का भी दिल टूट गया था तो वह इस व्याकुलता, परेशानी तथा दर्द को बड़े खूबसूरती, निर्मलता और सावधानी से पूरे विवाह संस्कार के समय छुपाने मे कामयाब हुई थी । अपने बिदाई के समय मीरा ने अपने दूसरे घर को नमस्तकार किया और निर्मल के जिन्दगी से सब दिन के लिये दूर चली गई । निर्मल के लिये तो हम यही कहेंगे- *तकदीर मे यही था साजन मेरे न रो ।*

सेठ निर्मलदास मीरा को बिदा कर के अपने घर मथुरा चले गये जहां से साल मे एक दो बार मीरा अपने नरेश काका के घर आ जाती थी । अपने इन दौरों के दरमियान मीरा कभी कभी खोखले आंखो वाले नये निर्मल को अपने घर के झरोखे से दर्द भरी चेहरा लिये उस की तरफ घूरता हुआ देख लेती थी । मीरा को उस अभागे निर्मल की हालत पर दया भी आती थी और वह उस के दशा को देख कर दुखी भी हो जाती थी पर इस के अलावे वह और कुछ करने से मज़बूर थी ।

थोड़ी ही दिनों में मीरा सेठ निर्मलदास के बेटे की मां बन गई थी । जब भी वह अपने बेटे को अपने घर आंगन मे खेलते देख कर खुशी होती थी तब उसे निर्मल की बुझी बुझी सूखी और दुखी चेहरा सामने आ जाती थी । मीरा ने लोगो से सुन लिया था कि निर्मल अब शराबी हो गया था और जो पैसा उसे मीरा के चाचा नरेश ने उस को बचाने के लिये दिया था उसे वह रंडी बाजी मे पानी की तरह बहा रहा था ।

पिछले बार मीरा ने निर्मल को तब देखा था जब उस के पति की अर्थी निकली थी । सेठ निर्मलदास का देहांत दिल के दौरे के कारण पचहत्तर वर्ष की अवस्था मे हो गयी थी । उस समय मीरा चालिस वर्ष की थी पर कुछ कुछ बुढ़ापे के चिन्ह होते हुये भी वह अभी भी जवान दिख रही थी, सुन्दर थी और फिर से किसी से भी विवाह करने योग्य थी ।

दूसरे ओर निर्मल के शरीर एक बुजुर्ग से मिलने जुलने लगा था । वह अपने उम्र से बीस साल ज्यादा लग रहा था । चमड़े सिकुड़ गये थे, नसें बाहर निकल गई थी, देंह दुबला हो चला था, हड्डिया कमजोर हो गई थी और एक समय का होशियार निर्मल अपना प्यार खोने के कारण अब एक सिमटा हुआ गंवार लग रहा था । शराब और रंडी बाजी ने उसे आज कया से कया बना दिया था ।

एक दिन जब वह मीरा को अपने काका नरेश के आंगन मे अपने बेटे के साथ टहलते देखा तो निर्मल उस के पास अपने कंपित कदमों से हीलता डोलता पहुँच गया । वह नशे मे धुत्त था और कहने

लगा, “आखिर तेरा बूढ़ा साला अब तुझे छोड़ कर चला ही गया । बतावो अब मै कब तुम्हारे संघ आ जाऊं ?”

यह सुन कर मीरा चौंक पड़ी । उस ने आज तक निर्मल के मुख से ऐसे घिनौने और बेशर्मी के शब्द नहीं सुने थे । वह सोचने लगी । *निर्मल ऐसा कयो करने लगा है ? यह मेरे लिये और उस के लिये भी बड़े शर्म की बात है । खास कर के अब जब मैं मातम मना रही हूँ ।*

मीरा के बेटे रोहन को निर्मल की बाते और करतूत बहुत बुरी लगी और वह आगे आ कर बोल उठा, “मेरी मां मेरे पिता के निधन की मातम मना रही है । हम सब दुखी हैं । तुम यहां से चले जाओ ।”

निर्मल गरज पड़ा, “हट जाओ मेरे रास्ते से । तुम होते कौन हो मुझे रोकने वाले !”

“तुम नशे मे हो ! तुम को यहां कोई नहीं चाहता है । अच्छा होगा कि तुन यहां से फौरण चले जाओ,” रोहन ने निर्मल को ढकेलते हुये कहा ।

“तुम्हारी मां मुझे चाहती है । वो मुझ से प्यार करती है । वह सब दिन मुझ से प्रेम करती रही । मीरा अपने बेटे को बता दो !” निर्मल ने मीरा से याचना किया ।

मीरा निर्मल के तरफ देख कर सोचनीय शब्दों से कहा, “आज मैं ने अपने दो दो प्रेमियों को दफना चुकी हूँ । एक तो मेरे

पति सेठ निर्मलदास और दूसरा तुम हो निर्मल, मेरे बचपन के साथी जो समय के झोखों से चोट खा कर मर चुके हो और अब मेरे वो निर्मल नही रहे । अलविदा निर्मल ।"

उस रात को मीरा का *दफनाया* हुआ निर्मल पास के पुल पर से कूद कर आत्म हत्या कर लिया । वह एक काले कागज़ पर सफेद चोक से एक पत्री छोड़ गया था जिस मे लिखा था ः

मेरे तकदीर के लकीर ने आखिर मुखे धोखा दे ही दिया !

अब बस ।

२

उँजाले की परी अंधेरे की कली

राजेश सिन्हा अपने सिडनी वाले तिमन्जिले महल के ओफिस के खिड़की से बाहर के हाबा ब्रिज के सुन्दर नज़ारे की बड़े बारकी से निरक्षण कर रहा था । उस के चेहरे पर एक हलकी सी मुस्कान थी और वह बड़े चंचल मूढ में अपना दिल बहला रहा था । इस धनाढ नौजवान के पास मानो आज कोई काम ही नहीं था । क्या वह बेकार था या कोई काम करने के मूढ मे नहीं था ? जो भी हो वह खुश था ।

कभी कभी राजेश के व्यक्तित्व को ऐसी हरकत दर्शाने की दिलचस्ती हो जाती थी । ऐसा कयों न हो जब उस के पास सब कुछ करने के लिये अपार धन और वैभव थे । यह तभी होता था जब वह बहुत खुश रहता था । आज भी उस के लिये एक बड़े ही खुशी का समय दीख रहा   था । मस्ती करने को दिल करता था ।

खुशी उस व्यक्ति को कयों न हो जो लाखों कड़ोड़ो की मिलकियत का एक मात्र मालिक था और जो भी जी मे आये वह बिना किसी हिचकिचाहट के कर सकता था । ऐसा ही मनमौजी था यह निराला नौजवान । सभी प्रकार के सुख, शान्ति, खुशी और धन दौलत उस के कदम चूम रहे थे ।

उस के सभी दुनियां भर के व्यवोसाय और कारोबार बेहद मुनाफे दे रहे थे और उस के वैभव की कोई थाह ही नहीं थी । उस के सभी करमचारी बड़े भक्तिमान और हुनरदार थे । अपने सब काम करने वालों को वह बहुत लाभ दिया करता था इसलिये सभी लोग उस के स्वाभाव से बहुत खुश रहते थे ।

पिता के अचानक देहांत हो जाने के बाद वह अपने मां के साथ अब सिडनी के अपने डालिंग पोइन्ट वाले अनोखे मकान मे आ कर रहने लगा था । उस के कारोबार मे कई इमारते दुनियां के कोने कोने मे बनी थी । कितनी बड़ी बड़ी माल ढोने वाली गाडियां थी । कई कपड़े, तेल और कागज़ के कारखाने थे । और न जाने कया कया थे उस के कारोबार के पोटफोलियो मे ।

उस के सब से लाभदायक व्यापार इलेक्ट्रोनिक्स के पुरजों की निर्माण करने की फेक्ट्री थी जो संसार के कई देशों मे चल रही

थी । इन के निर्यात से सभी लोग खुश थे कयोंकि इन कारखानो मे बनी परजे बहुत ही उमदे और मज़बूत थे ।

इन अंतरराष्ट्रीय विकास और सम्बन्ध के कारण राजेश कभी बिलायत मे रहता था तो कभी भारत मे होता था तो फिर कभी अमेरिका के चक्कर काटते रहता था । पर जब भी वह अपने सिडनी वाले घर मे रहता तब वह अपने मां के दुलार प्यार मे मलीन रहता था । इस से उस को बहुत सुकून मिलती थी और मन बहला रहता था । मां बेटे मे खूब बनती थी ।

चालिस वर्ष का वह शायद दुनिया का सब से योग्य कुॅवारा था जो एक महान आर्थिक साम्राज्य का एक मात्र संचालक था । वह एक सुन्दर रूपवान नौजवान, सुडौल, दयालू, प्रतिभाशाली, शिक्षित और अति चतुर हीरा माना जाता था । राजेश अपने ही अशिष्टता से एक अमीर बनता जा रहा था । पर उस के मां के लिये उस मे एक कमी रह गई थी । आज तक उस ने अपने मां के लिये कोई बहू की चुनाव नहीं कर पाया था ।

उस का बचपन भारत मे बीता था । उस की शिक्षा दिक्षा बिलायत और अमेरिका मे हुई थी । आज वह एक विख्यात अंतरराास्ट्रीय नागरिक था जिस की सारोकार भले ही दुनियां भर मे फैली थी पर वह एक बहुत नेक हिन्दुस्तानी इनसान था ।

उस के लिये सभी धर्म और वर्ग के लोग एक बराबर थे इसलिये वह कोई भी समाज या लोगों मे भलिभांति घुलमिल जाने की छमता रखता था । उस ने हिन्दू धर्म ग्रन्थों को ठीक से पढ़ा था, इसाई लोगो के सभी कायदे कदर से परिचित था, इस्लाम लोगो से कोई

दुशमनी भी नहीं थी । यह सब कर लेने के बाद अब वह कोई भी धर्म के उलझनों मे नहीं पड़ना चाहता था । वह सिर्फ एक नेक इनसान बन गया था ।

राजेश सिन्हा के पास ऐसे कौशल, प्रतिभा और प्रवीनता थे जिस से वह एक महान व्यापारिक रीति रिवाज और प्रथा अपना बैठा था लेकिन आज न जाने कयों वह अपने सब गुण और महानता को छोड़ कर केवल एक हसीना के सुन्दर चेहरे के बारे मे सोच रहा था । उस हसीन युवती का नाम था मनीषा जिस का परिचय देना बहुत मुश्किल है ।

राजेश और मनीषा दो महीने पहले लीबापुल के एक परोपकरी समारोह मे मिले थे । वह एक गैरदिलचस्प, भीड़ भाड़ वाला प्रसंग था जहां धनी नौजवान एक दूसरे धनवान व्यापारियों से होड़बाजी मे भारत और फीजी मे बाढ पीड़ितों के लिये अपने दान दे रहे थे । कोई अपने प्रेमी को रिझाने के लिये कर रहा था तो कोई अपने मान और शान बढ़ाने के वास्ते खैरात दे रहा था । कुछ भी हो फयदा तो लेने वालों की हो रही थी ।

राजेश उन लोगो मे से नहीं था जो दिखावा के लिये दान करते । वह गुप्त रूप से कई संस्थाओं को हर समय अपना भेंट बिना मागे भेज दिया करता था । वह यह नहीं चाहता था कि ऐसे मेले मे कोई भी उस को दान देने के लिये तंग करे । खास कर के लड़कियां जो व्यापारियों को खोज खोज कर उन से दान देने की अनुरोध कर रही थी । ऐसे लोगों से वह दूर ही रहना चाहता था ।

पाठक इस का मतलब यह नहीं निकाल ले कि वह दान, दया और दमन के बारे मे नहीं जानता था । वह दानी भी था, दयालू भी रहा और अपने दमन से अपने मन को सदा बिचलित होने से सम्भाले हुये था ।

उस शाम की बात कुछ और थी । आज राजेश को यह सब कार्य जायज लग रहा था क्योंकि उस ने अपने दिल को खुश कर देने वाली एक अजूबे को पास के मेज़ पर अकेले बैठे देख लिया था । राजेश ने जब उस लड़की को देखा तो उसे ऐसा लगा जैसे उसी के लिये ही अभी अभी एक छोटे से तालाब मे अति सुन्दर कमल खिल उठा हो ।

सामने वाले मेज़ पर जो युवती विराजमान थी उस की हाव भाव ही कुछ ऐसी चमकीली थी जो राजेश को एकदम मुग्ध कर रही थी । वह अपने आप को उस हसीन मूरत के सादगी को देख कर रोक न सका । युवती साधारण पौशाक मे थी पर उस मे अद्भुत चांद सी चमक थी, वह सीता के हिरन जैसी मनमोहक थी और उस के निखार मे अन्य कोई बनावट की जरूरत ही नहीं थी । ऐसी सादगी और सुन्दरता के मूरत पर कोई भी फिदा हो सकता था । तो राजेश किस खेत का मूली था ।

वह परी पूरे तौर पर एक हसीन लैला थी जिस की आभा ने राजेश के पास उस के तरफ से नज़र हटाने की न तो हिम्मत ही थी और न ही कोई ख्वाहिश रही । वह उस शोभा की प्रतिमा को देखा तो बस देखता ही रह गया । पर जब उस ने राजेश को अपने तरफ इस तरह केंद्रिभूत हो कर घूरते देखा तो उस के चेहरे पर एक मीठी सी मुस्कान बिखर गई । उस ने तो शायद यूँ ही हँस दिया हो

पर राजेश तो उस के इस अनुमोदन मे बहुत गम्भीरता से फंस गया था ।

उस युवती का नाम था मनीषा श्रीवासत्व जो एक स्पेसल अपाहिज बच्चों के स्कूल मे अध्यापिका थी । उस की जनम फीजी मे हुई थी पर माता पिता ने उसे बचपन मे ही सिडनी ले कर चले आये थे । यहीं पर उस की शिक्षा दिक्षा हुई थी । अब वह क्षत्तिस साल की हो चली ती पर एक सोलह साल की कली नज़र आती थी ।

माता पिता अपने कड़ी मेहनत से अपनी साधारण जीवन चला रहे थे । पर जब वे अपने मनीषा के लिये एक बहुत ही धनी भारतीये नौजवान हिरदेष की विवाह का प्रस्ताव को ठुकरा दिया था तब एक अचानक मोटर दुर्घटने मे उन की मृत्यू हो जाने से मनीषा अनाथ तो हो गई थी । इतना होतइ हुये भी वह अपने जीवन को सुचारू रूप से चला रही थी ।

मनीषा ने यह पता लगाया था कि उस मोटर दुघटना के पीछे उसी भारतीय नौजवान हिरदेष का ही हांथ था जिस ने उस से शादी करने की मांग की थी । लाख मिन्नतो के बावजुद भी पुलिस ने न तो उस के साजिश की कोई सबूत पाया और न ही उस धनी नौजवान को कोई सजा दिला पाया था । मनीषा ने अपने मन मे यह ठान लिया था कि कभी न कभी वह खुद इस कांड का अन्त करेगी जिस से वह अपने माता पिता के मौत का बदला ले सके ।

मनीषा को सभी धनवान हिन्दुस्तानियों से एक अजीब सी घृणा हो गई थी पर वह उस नफरत को छुपा कर वैसे लोगो से मिलती जुलती रही ताकि वह अपने गरीबों की टोली के लोगों और स्कूल

के मदद के लिये उन से पैसा व्गैरह ले सके । मनो वह एक रोविनहुड बन कर सेठों के धन से गरीबों की सेवा करने लग गई थी ।

आज राजेश को मनीषा की याद सता रही थी और वह बार बार अपने मोबाइल फोन पर हर मेसज को देख रहा था कि कहीं मनीषा ने अपने वादे के मुताबिक उस के लिये कोई खास खबर तो नहीं छोड़ रखा था । पर ऐसा कुछ नहीं हुआ था ।

राजेश अपने जीवन मे कई लड़कियों के साथ घूम फिर लिया था पर किसी ने उस को इतना बेकरार नहीं कर पाया था जितना मनीषा के उस दिन के वादे ने कर दिया था । पर वह यह भी जानता था कि मनीषा अपने काम मे, अपने स्कूल मे और अपने अकेले जीवन मे बहुत ही व्यस्त रहती थी ।

जिस दिन उन की मुलाकात हुई थी उस दिन मनीषा ने राजेश के बारे मे जो कुछ जानकारी पाई थी उस से उस को जैसे कोई फर्क ही नहीं पड़ा था । दूसरों के लिये शायद राजेश एक गैर विवाहित करोड़पति था पर मनीषा के लिये वह एक आम नौजवान ही था । वह उस को रिझाने के लिये अपने खास चरित का इस्तेमाल किया करती थी ।

थोड़े दिनों के मिलन और मुलाकातों से राजेश को यह अभ्यास होने लगा था कि उस को मनीषा से प्यार होने लगा था । उस का यह प्रेम एक तात्कालिक प्यार था जो उस को पहले ही नज़र मे मनीषा के तरफ एकदम से झुका दिया था । लेकिन जब से मनीषा ने उस

के साथ घूमने फिरने को राजी हुई थी तब से अभी तक मनीषा ने अपने प्यार का इजहार राजेश के प्रति पूरे रूप से नहीं किया था ।

लोगों के लगातार टिपनी से राजेश को यह विशवास होने लगा था कि वह शायद जिन्दगी भर कुवांरा ही रह जायेगा कयोंकि वह शादी के योग्य ही नहीं था । पर अब जब की उस ने अपने सपनो की रानी को ढूंढ ही लिया था तब वह बहुत ही अलौकिक रूप से तथा बेढ़ंगेपन से खुश नज़र आ रहा था । वह अब अपने लैला का मजनू बनने की तैयारी कर रहा था ।

राजेश इन ख्यालों मे खोया हुआ था इतने मे उस के दरवाज़े की घण्टी बज उठी । उस के नौकर ने दरवाजा खोल कर देख कर कहा, "राजेश बाबू, कोई युवती आप से मिलने आई है ।"

राजेश का दिल धड़क गया । वह सोचने लगा कि मनीषा अपने वादे के मुताबिक उस से मिलने आ गई थी । पर वे तो आज शाम को मिलने वाले थे जहां राजेश मनीषा से अपने विवाह का प्रस्ताव करने वाला था । राजेश मनीषा को कोई गोआ या मोरीशश जैसे रोमानी स्थान ले जा कर विवाह का प्रस्ताव करना चाहता था ।

पर मनीषा ने अपने काम के कारण कहीं देश से बाहर जाने को तैयार नहीं हुई थी । इस लिये वे आज शाम को सिडनी के प्रमुख *आरिया* जैसे भोजनालय मे मिलने वाले थे । उन को अपने विवाह सम्बन्धी बहुत सी बातों को वहां तय करना था । इसीलिये राजेश की उतावलेपन बढ़ रहे थे । उसे ताजुब हुआ यह जान कर की मनीषा अपने महत्वपूर्ण स्कूल के काम को छोड़ कर उस से मिलने पहले ही कयों चली आई थी ।

राजेश झटपट दरवाजे के पास पहुँचा पर वहां पर मनीषा को न देख कर बहुत निराश हुआ । वहां उस की वकील *एलिजबथ बेटी* खड़ी थी । वह यह बिलकुल भूल गया था कि इसी सिलसिले मे उस की आज अपोइन्टमेन्ट उस के वकील से थी ।

एलिज़बथ को देख कर राजेश मुस्कराया और कहा, "आप का स्वागत है । धन्यवाद इतने छोटे नोटिस मे मुझे मिलने के लिये ।"

घर के अन्दर बैठते हुये एलिजबथ ने कहा, "कोई बात नहीं राजेश । मैं आज आप के लिये एक बुरी खबर ले कर आई हूँ । मनीषा ने तुम्हारे उन पूर्व विवाह सम्बन्धी समझौता कागज़ातों को बिना दस्तख़त किये लौटा दिया है । "

इस खबर को सुन कर एलिज़बथ ने राजेश के चेहरे पर घबड़ाहट के चिन्ह देखा तो फिर से कहना शुरू किया, "आश्चर्य की कोई बात नहीं है राजेश । अगर तुम चाहो तो मैं उस को फिर से समझाने की कोशिश कर सकती हूँ ।"

"नहीं ! नहीं !! ऐसा भूल कर भी नहीं करना । कया तुम ने उस को भलिभांति से सब कुछ समझाया था ?" रोजेश ने पूछा ।

एलिज़बथ अपने कुर्सी से उठ कर टहलते हुये राजेश को आशवासन दिया कि उस ने इस कागज़ात के बारे मे मनीषा को बड़े विस्तार पूर्वक समझाया था पर उस ने सीधे कह दिया कि वह आप के इन शर्तो से बिलकुल असहमत है और आप से ऐसे बेहूदे शरतों से शादी नहीं करेगी । उस ने यह भी कहा कि मैं इस कोनट्रेक्ट के

कागज़ात तथा आप के इस हीरे की अंगूठी को आप को वापस कर दूँ ।

उस हीरे की अँगूठी को राजेश के हांथ मे रखते हुये एलिज़बथ ने कहा, “हां, उस ने यह भी कहा कि दुबारा उस से मिलने की कोशिश भी न करना कयोंकि इस की जरूरत नही है ।”

“हां, हां ! मैं सब समझ गया,” राजेश अपने कुर्सी से चट खड़ा हुआ और पूछा, “मनीषा कहां थी जब आप ने उस से समपर्क किया ? अपने स्कूल मे ?”

एलिज़बथ ने अपना सिर हिला कर हांमी किया पर राजेश से यह अनुरोध किया, “तुम्हारे लिये यह अच्छा नहीं होगा कि तुम कोई जल्दबाजी मे उस से मिलने उस के स्कूल पर जाओ कयोंकि वह बहुत ही गुस्से मे थी । मैं तुम्हारे वकील के नाते नहीं पर एक औरत के तरह तुम को सलाह देती हूँ कि इस मामले मे तुम को मनीषा को शान्त होने का कुछ दिनो का मौका देना पड़ेगा ।”

“आप की सलाह बड़ी नेक है और इस के लिये मैं आप को धन्यवाद देता हूँ पर मैं ऐसी हरकत कतई बरदास्त नहीं कर सकता,” राजेश ने अपना कोट उठाते हुये कह रहा था, “ आप देख सकती हैं कि मैं इस लड़की से बेहद प्यार करता हूँ और कोई भी अड़चन मुझे उस से शादी करने से नहीं रोक सकती है । अगर वह मुझ से शादी नहीं करेगी तो मैं सिड़नी हाबा पुल से कूद कर खुदकुशी कर लूँगा । अब आप जा सकती हैं और मुझे जो करना है वह मैं अच्छी तरह से जानता हूँ । मै आप से अलविदा लेता हूँ, एलिज़बथ । बाय बाय !”

राजेश की वकील तो चलती बनी पर वह एक बहुत ही टूटा फूटा और निराश राजेश को बड़े उतावलेपन मे मायूश हो कर अपने घर से बाहर निकलते देखा । आगे क्या होने वाला था अब इस काण्ड के प्रदर्शन के लिये अभी कुछ देर थी ।

पर उधर मनीषा के स्कूल मे तो गजब की ज्वाला जल रही थी । उस के साथी आज तक मनीषा को इतने गुस्से मे कभी भी नहीं देखा था जितना क्रोधित वह आज नजर आ रही थी । वह नराजगी से आग बबूला हो रही थी । उस के साथी उस के लिये बहुत सहानुभूति प्रकट कर रहे थे और कह रहे थे कि उसे एक दो दिन की छुट्टी ले लेनी चाहिये इस मामले को सुलझाने के लिये ।

मनीषा को कोई छुट्टी की जरूरत नहीं थी उसे तो एक कुलहाड़ी चाहिये थी जिस से वह राजेश का सिर फोड़ सके और अपने उस के इस बवंडर जैसे प्रेम लीला को एकदम से ख़तम कर सके । इस की खात्मा ही सब से सही सुलझाव होगी क्योंकि वे अभी तक एक दूसरे को अच्छी तरह से पहचान भी नहीं पाये थे । शादी और कोई उस से सम्बन्धी शर्तों की तो ऐसी की तैसी ।

अगर राजेश यह सपना देख रहा था और सोच रहा था कि मनीषा कोई खतरनाक या विकराल कागज़ात या प्रमाणपत्र पर अपनी आंखें मूंद कर अपना दस्तख़त सहज मे कर देगी तो यह उस की सब से बड़ी भूल थी । इस का मतलब तो यही हुआ कि वह अभी तक मनीषा को ठीक से पहचान नहीं पाया था । मनीषा मन ही मन बड़बड़ा रही थी ।

मनीषा का स्कूल सिडनी के उस इलाके मे था जहां शहर के बेरोजगार और गरीब लोग सरकारी इमारतों मे अपने जीवन की निर्वाह बड़े दुख और मुसीबत से कर रहे थे । यहां के लोगों की रहन सहन बड़ी नीचे स्तर की थी और वहां के अपराध दर बहुत बड़े थे । कई लोग तो अस्थाई घरों मे अपना गुजर बसर कर रहे थे । कितने नौजवान तो सड़क पर ही घुम फिर कर अपनी जिन्दगी चला रहे थे ।

इस इलाके के मनीषा के स्कूल के कक्षा मे लगभग चालिस बच्चे थे जिन को विषेश शिक्षा दी जाती थी । कमती से कमती सुविधाओं के बावजूद मनीषा और उस के सहयोगियों के लिये यहां काम करने मे बहुत अच्छा लगता था कयोंकि उन को ऐसे बच्चों से लगाव था ।

रोजेश के ऊँचे और धनाढ दुनियां से यहां का गरीब और वंचित वातावरण मे जमीन आसमान का फरक था फिर भी मनीषा के लिये यही असली समाज सेवा थी । राजेश से मिलने से और उस के प्यार के दरशाने से मनीषा को कोई फरक नहीं पड़ा था ।

राजेश पहले एक बार जब मनीषा के स्कूल आया था तब उस के चेहरे के बिपरीत हाव भाव देख कर मनीषा को बहुत ताजुब हुआ था । उस दिन राजेश एक दौलतमंद के तरह आया था जो गरीबी को नहीं जानता था । आज इस स्कूल पर राजेश की दूसरी उपस्थिति थी ।

वह सीधे चल कर मनीषा के अध्यनकक्ष मे पहुँचा । पिछले वार के मिलान मे आज की उस के पदारपन का कारण बिलकुल अलग था । वह बहुत डरा हुआ था पर हिम्मत कर के मनीषा को सम्बोधित

करते हुये बोला, “माफ करना, मनीषा, क्या हम दो मिनट के लिये बात कर सकते हैं ?”

क्लासरूम के चालिस व्यस्त चहचहाते बच्चे एकदम चुप मार कर राजेश के तरफ देखते रह गये । उन को ऐसा लगता था जैसे आज मनीषा का यह रंगीला प्रेमी कोई दूसरे ग्रह का सितारा था । धनी और खूबसूरत व्यक्ति जो चमकदार सूट बूट मे उन के आगे खड़ा था वैसे आदमी को इस इलाके मे देखना एक अजूबा ही था ।

मनीषा ने राजेश के ओर देख कर केवल ***नही*** कह दिया पर राजेश ने गिड़गिड़ा कर चिरोरी विनती करने लगा, “प्लीज मनीषा, यह बहुत जरूरी है कि हम अपने गलत फहमी को दूर कर दें । मैं नहीं जानता कि एलिज़बथ ने तुम से क्या कहा पर..।”

मनीषा ने राजेश को रोकते हुये कहा, “अपने वकील को क्यों कुसूर देते हो । उस को तो तुम ने ही भेजा था ।”

“यह सही है कि मैं ने उसे भेजा था पर कुछ भरम हो गई है जिस को हमे समझाना है,” राजेश ने अनुरोध किया ।

“यह नहीं हो सकता ! मैं अभी पढ़ा रही हूँ ,” मनीषा ने इनकार करते हुये कहा ।

इस डर से की कहीं बात ओर भी न बिगड़ जाये राजेश आगे कुछ न कहते और करते हुये चुपचाप स्कूली बच्चों के तरह हांथ बांध कर वहीं फर्श पर बैठ गया । “अच्छा मैं यहीं अगोर लूंगा ।”

राजेश की यह इन्तजार बड़ी लम्बी होती जा रही थी । एक घण्टा, दो घण्टे, तीन घण्टे की प्रतीक्षा और ऊपर से व्यस्त क्लास्रूम की गर्मी ने उस का वहां ठहरना बहुत ही कठिन बना दिया था । पहले उस ने अपने कोट को उतारा, फिर उस की टाई निकली और इस के बाद उस के जूते और मोजे भी निकल गये ।

उस के दिल मे आया कि वह अपने पसीने से तरबतर कमीज़ को भी उतार दे पर वह शर्म के मारे चाह कर भी ऐसा नहीं कर सका । फिर यह तो स्ट्रिपटीज की तरह हो जायेगी और मनीषा के बच्चों के लिये शोर गुल मचाने का एक और कारण मिल जायेगा । मनीषा वैसे ही बच्चों की पूरा ध्यान पढ़ाई पर नहीं खींच पा रही थी । लेकिन वह वहीं डटा रहा केवल एक उम्मीद लिये कि मनीषा मान जायेगी ।

कक्षा के सभी बच्चे राजेश के हर हरकतों की निरक्षण बड़े चाव से कर रहे थे । उन को ऐसा लग रहा था कि कोई बदमाश बच्चा वहां कोने मे बैठा अपने टीचर को अपने नटखटता को समझाने के लिये सबर कर रहा था ।

आखिरी मे वह समय आ ही गया जब बच्चों की छुट्टी हो गई और मनीषा के सहयोगी टीचर भी घर चले गये । अब दोनो प्रेमी उस क्लास्रूम मे एकदम अकेले बचे थे । मनीषा के आंखों मे अभी भी गुस्से के चिन्ह थे पर वह राजेश के पास आ कर पूछ ताछ करना शुरू किया, “तुम यहां कयों आये हो, राजेश ? तुम कया चाहते हो ?”

राजेश अपने शब्दों को बड़े सावधानी से चुन कर जवाब दिया, “मनीषा, मैं तुम को चाहता हूँ। मैं तुम से बेहद प्यार करता हूँ।”

“ वो भी अपने ही शर्तों पर ?” मनीषा अपने पुस्तकों और अन्य चीज़ों को बटोर कर अपने बेग मे भरने लगी तब राजेश ने मनीषा के हांथ को अपने हांथों मे ले कर कहा, “ मैं तुम को ऐसी गलतफहमी मे नहीं रखना चाहता हूँ मनीषा । मैं तुम को बहुत चाहता हूँ और मुझे अब तुम्हारी निजी विचार जान लेने के बाद कोई शर्त वर्त की जरूरत ही नहीं रही है । बस तुम मान जाओ, यही मेरी दुआ है । प्लीस !”

क्षण भर के लिये मनीषा के चेहरे पर एक सच्ची अफसोस दिखाई दी और वह बोल उठी, “लेकिन तुम मुझ को अभी पूरी तरह से जानते भी नहीं हो । फिर ऐसा कैसे कह सकते हो ?”

राजेश पलट कर कहा, “हमारे बीच इतना कुछ हो जाने के बाद तुम ऐसा कैसे कह सकती हो मनीषा ? मै तुम से बहुत प्यार करता हूँ।”

मनीषा अपने मन ही मन सोचने लग गई । *कयोंकि यही सत्य है । मैं खुद अपने आप को पूरे तरह से अभी नहीं समझ पाई हूँ । मुझे लग रहा है कि मैं बस एक कटपुतली के तरह एक नाटक कर रही हूँ । इस नाटक की मुख्य पात्र मैं ही हूँ लेकिन मुझ को पूरी वार्तालाप की संवाद अभी मालूम ही नहीं है ।*

अपने मन की बातों को मन ही मे रखते हुये मनीषा ने कहना शुरू किया, “अगर तुम मुझ को ठीक से पहचानते तो तुम को तो यह

पता हो जाता कि मैं तुम्हारे पैसो और जायदाद से नहीं पर तुम से प्यार करती हूँ ।”

“इस सत्य को अब मैं ने भलिभांति जान और मान लिया है, मनीषा, मुझ को माफ कर दो,” राजेश ने अपनी सफाई देते हुये कहा ।

“तब तुम को हमारे शादी से पहले उस पूर्व विवाह सम्बन्धी समझौता की कया जरूरत पड़ गई थी ? इस से बेहतर तो यही होता कि तुम मेरे पास एक ऐसा ख़त लिख देते जिस मे यह कह देते कि *तुम को मुझ पर कोई विशवास ही नहीं है* ।” मनीषा ने कहा ।

यह सुन कर राजेश बहुत हताश हुआ और अपने सर के बालो को नोचते हुये कहना शुरू किया, “मेरी प्यारी मनीषा, तुम तो जानती ही हो कि मैं एक कड़ोडपति ही नहीं पर पैसो और जायदाद के बहुत बड़े चक्र मे फंसा हूँ । तुम मानो या न मानो पर मेरे पास यही सब जटिल समस्यायें हैं । मेरे कई ट्रस्टीस हैं, कितने साझेदार हैं और मैं कई देशों के टेक्स की कानून से बन्धा हुआ हूँ । इन सब को बिना निपटाये और सुलझाये मैं सहज मे अपने इन जिम्मेदारियों से भाग कर अपनी शादी आसानी से नहीं कर सकता हूँ । मुझे समझने की कोशिश करो ।”

“अब तुम को इस सब की कोई फिकर ही नहीं होनी चाहिये कयोंकि मैं तो अब तुम से शादी ही नहीं कर रही हूँ ।” मनीषा ने अपना हट दिखाते हुये कहा ।

राजेश को अपनी नानी ही नहीं पर अपने लनडन यूनिबेसिटी की एक प्रेमिका की याद आ गई । यह शायद पिछले पंद्रह वर्षों की बात थी पर राजेश को लगा जैसे वह घटना कल ही बीती थी ।

उन दिनों भी राजेश अपने उस मिस इन्डिया की विजेता प्रेमिका के जिद्द से बाज आया था । सुनीला भी एक बहुत ही बेसबब की हठी युवती थी । विडंम्बना इस बात की थी कि सुनीला वह दूसरी यूवती थी जिस से राजेश प्यार करने लगा था ।

लेकिन जब वह उस के बच्चे की मां बनने वाली थी तब वह राजेश से शादी ही नहीं करने को तैयार थी । पर कुछ भी लेने देने से सुनीला ने बिलकुल इनकार कर दिया था यह कह कर की राजेश एक अच्छा पिता कभी भी नहीं बन सकता कयोंकि वह बहुत ही नादान तथा अधूरा व्यक्ति था ।

सुनीला ने आखिर अपने माता पिता के घर हिन्दुस्थान चली गई थी जहां पर उस ने एक कन्या को जनम दिया था । उस ने राजेश से सभी सम्पर्क तोड़ दिये थे और जब राजेश अपने टूटे हुये दिल को सम्भाल कर अपने बेटी से मिलना चाहा तब तक तो सुनीला कहीं गुम हो गई थी । उस ने राजेश के लिये अपना कोई भी पता ठिकाना ही नहीं छोड़ा था ।

आज राजेश उस इतिहास को दुबारा दुहराना नहीं चाहता था इसलिये वह मनीषा से विनती कर रहा था कि वह अपने जिद को छोड़ कर उस के फिर से खिले हुये प्रेम के चमन को न बुझाये और मुरझाने की कोशिश करे । वह मनीषा को अपने नज़दीक खींचते हुये अपने बांहों मे जकड़ कर कहा, “भगवान के लिये मान जाओ

मनीषा, तुम्ही ने तो कहा था कि शादी करने से पहले मैं अपने सभी आर्थिक मामलों को सुलझा लूँ । मैं ने यह नहीं सोचा था कि तुम इस बात को ले कर इतनी नाराज़ हो जाओगी ।"

"तुम ने कैसे सोच लिया कि मैं अपने शादी से पहले कोई कानूनी कागज़ात चाहती थी," मनीषा ने राजेश को अपने से दूर ढकेलते हुये कहा ।

"मेरी जान, वे कागज़ात जो मेरे वकील ने तुम्हारे पास लाई थी वे कोई जहरीले शर्तनामे नहीं थे पर वह एक बहुत ही साधारण समझौता था जो मेरे जैसे व्यक्ति के लिये शायद जरूरी था ।" राजेश आवेश मे कहता गया और मनीषा चुपचाप सुन रही थी ।

"लेकिन मैं अब सोच रहा हूँ कि मै ने ऐसा कर के न ही तुम्हारा दिल दुखाया है पर अपने जीवन की सब से बड़ी गलती कर दी थी । इस से मुझे बहुत दुख है । मैं तुम को अपने आप से भी ज्यादा विशवास करता हूँ और मैं तुम को अपना बीबी बनाने के लिये कुछ भी कर सकता हूँ ।" राजेश ने फिर मनीषा को अपने पास ला कर उसे चूम लिया और अपने ताकतवर बाहों मे भर लिया ।

मनीषा राजेश के प्रेम भरा आलिंगन मे पिघल गई और उस के मीटे मीठे प्यार का जवाब मधुमय प्रेम से देती रही । वह सोचने लगी ।

राजेश एक नेक इनसान है । उतना धनवान होते हुये भी वह इतना भोलाभाला, अति खूबसुरत और ताकतवर नौजवान है । इस जमाने मे ऐसा व्यक्ति तो दिन मे भी बत्ती ले कर ढूँढने से कहीं नहीं मिल सकता है । मैं कया करूँ ?

राजेश के हाव भाव देख कर मनीषा को ऐसा लगा जैसे वह उस के लिये बलि चढ़ाने वाले बकरे से कम नहीं है । वह बड़े असमंजस मे पड़ गई थी । उस के लिये अब न जाने क्या सत्य है और न जाने क्या झूठ है । पर उसे याद आया कि उस को कुछ तो करना था । समय आने पर उस को कुछ कर दिखाना था । अभी तो दिल्ली दूर थी ।

मनीषा को शान्त देख कर राजेश ने उस के खान मे धीरे से फुसफुसा कर कहा, "कहो न कि तुम मुझ से शादी करोगी !"

"बिना कोई शर्तनामे के ?" मनीषा ने भी फुसफुसा के पूछा ।

" हां ! अब कोई भी शर्त की जरूरत नहीं है," राजेश ने कहा और वे एक दूजे के हांथों मे हांथ लिये चल पड़े ।

कहां ? यह तो उन की तकदीर ही बतायेगी । उजाले की परी वही लैला जिसे हम अभी तक मनीषा के नाम से जानते थे अब अपने वही राजेश को मजनू बनाने की कोशिश मे थी । इस बीच राजेश की माता जी का देहांत हो गया तथा राजेश को बहुत दुख हुआ । पर मनीषा ने राजेश को उस दारुन दुख से अपना असीम प्यार जता कर धीरे धीरे निकाल लिया था ।

अब हम को देखना है कि वही मनीषा कैसे अंधेरे की कली बन कर गजब ढाने वाली है । आगे आगे पढ़िये और देखिये कि क्या क्या होता है । वही होगा जो अंधेरे की कली चाहेगी क्योंकि अब उस का राजेश उस का मजनू बन चुका था । जोरू का गुलाम तो अब पूरे तौर से हुकम का गुलाम नज़र आ रहा था ।

मनीषा और राजेश की शादी एक गुप्त विवाह थी और उन की एक महीने की सुहाग रातें काशमीर, गोवा, टोकियो, पेरिस, टोरोनटो और नियुयोक के सुन्दर से सुन्दर होटेलो मे बीते थे । राजेश के लिये तो अब मनीषा ही उस की एकमात्र खजाना थी । ऐसा लग रहा था कि जब दिल लगी परी से तो सारे व्यापार की ऐसी तैसी ।

शादी के बाद संसार भ्रमण और अब अपने घर की रहन सहन चालू हुई । मनीषा अब कड़ोड़ों की मालकिन थी और वो जो चाहे कर सकती थी कयोंकि राजेश ने उसे पूरी आज़ादी दे दी थी । यह आज तक विधाता भी नहीं समझ सका कि जो भी वस्तु मे बहुत चमक होती हो वह सदा सोना नहीं होती है । राजेश को भी इस सत्य का पता ही नहीं चलता था । वह तो मनीषा के प्यार मे लट्टू बना फिरता था ।

ऐसे मौके का फायदा उठाना मनीषा के लिये बहुत सरल हो गया था । पहले तो उस ने राजेश के वसीयतनामे को तैयार कराया जिस मे राजेश के मरने के बाद सभी जायजाद की मालकिन मनीषा बन जायेगी पर जितने नकद धन होंगे वे सब मनीषा के स्कूल को दिये जायेंगे । उस ने घर के सभी नौकरो को बदल दिया और अपने एक पुराने षडयन्तकारी महेश को अपने जेगुआ मोटर का ड्रायबर नियुक्त कर दिया था ।

वही ड्रायबर घर की सभी सिकिउरिटी की देख भाल करता था । लेकिन यह किसी को नहीं मालूम था कि अपने आत्म सुरक्षा की जिम्मेदारी राजेश ने अपने एक बहुत ही पुराने भक्तिमान करमचारी दयानन्द को दिया था । दयानन्द सदा एक परछांई के तरह राजेश के पीछे रहता था । इस की खबर किसी को कभी भी नहीं हुई थी ।

यह महेश भी एक बहुत ही छुपा रुसतम था जो एक होमोसेक्सुअल लौंडा यानि समलेगिक चमकीला खिलाड़ी था । इसे मनीषा बचपन से जानती थी तथा उस से एक टीचर के भेस मे छिप कर कई गैरकानूनी कार्य कराया करती थी ।

इसीलिये मनीषा दिन मे एक अध्यापिका की नाटक कर के गरीबों की टोली मे दिन के उजाले मे रहती थी पर उस की रात कहां गुजरती थी यह आज तक किसी ने भी नहीं जाना था । यहां तक की जब उस ने महेश के साथ मिल कर एक काली अंधेरी रात मे उस भारतीय नौजवान हिरदेष से अपने मां बाप के मौत के बदला ले कर उस को सदा के लिये इस दुनियां से गायब करवा दिया था तब न तो इस हादसे को किसी ने देखा था और न ही कोई पुलिस इस की छानबीन किया था ।

जब राजेश ने मनीषा को देखा था और चाहा था तब भी वह दिन के उजाले की मनीषा कोई और थी जिस का भेद राजेश भी नही जान पाया था । उस रात की रानी का नाम था सीमा जिस के कुकरमों का कोई भी सीमा नहीं थी । उजाले की मनीषा को अंधेरे की सीमा बनना पड़ा था कयोंकि वह अपने माता पिता के कातिल को खुद सजा देना चाहती थी ।

उसे सेठों से माल ले कर गरीबों को बांट देने मे बहुत ही सुकून मिलती थी । इस लिये उस ने अपने रातो के कुकरमों को कभी पाप के नज़रो से नहीं देखा था । वह अपने गरीबों के लिये नेकी कर के दरिया मे डाले जा रही थी । यह कब तक चलेगा खुद उसे भी नही मालूम था । पर एक दिन उस के अंदर के जलन भाव और घृणा के भावना के घाव भर जायेंगे और वह फिर से मनीषा बन कर अपने

जीवन को संवार लेगी । यह उस का अटल विशवास था । पर तब तक के लिये उस की यह षडयन्त्र चलती रहेगी ।

आज ईस्टर की शुक्रवार थी और मनीषा ने राजेश के लिये खास भोजन पकाया था । सभी नौकर चाकर छुट्टी पर गये हुये थे । आज राजेश के मन पसंद वाले केकड़े की तरकारी, मोटी मोटी नान और सब्बजियों से बनी पुलाव पकी थी । इस लिये उस ने राजेश को जल्द घर आने को कहा था । राजेश पांच बजे ही घर आ गया था और रसोई से स्वादिष्ट भोजनों की महक उसे सीधे वहीं खींच ले गई ।

घर आते समय दयानन्द ने राजेश को मनीषा के बारे मे कुछ संदेहजनक बातों को बताने की कोशिश किया यह कह कर की *उस के जान का खतरा हो सकता है* पर राजेश ने उलटा उसी को ढांट ढपट कर खामोश कर दिया था । राजेश को मनीषा पर पूरा विशवास था और वह परी जो उस पर अपने जान निवछावर करती थी वह कभी कैसे उस की जान ले सकती थी ।

दो चार प्यार की बातें हुई, कुछ दारू वारू पिये गये और फिर बड़े प्रेम से दोनों ने मनीषा के स्वादिष्ट पकवान का मजा लिया । मनीषा के इशारे पर राजेश उसे ले कर अपने शयन कक्ष मे गया और खूब प्यार जताया । रात को दस बज चुके थे । राजेश को नींद आ रही थी और मनीषा रसोई साफ करने के बहाने नीचे चली गई ।

ठोस भोजन, कुछ शराब का नशा, मुलायम तथा मजेदार खाट, मनीषा के   प्रेम प्रदर्शन के मधुर असर और दूध मे मनीषा द्वारा नशे की पुड़िया पिलाने के चाल ने राजेश को एक गहरी नींद मे

सुला दिया था । मनीषा जब रसोई मे पहुँची तब तक वह सीमा की कुरूप रूप को धारण कर लिया था । उस कुरूपता को और भी सजाने संवारने के लिये उस का षडयन्तकारी नौकर महेश भी वहां मौजूद था ।

सीमा और महेश एक और सेठ से बदले के आग मे जल रहे थे और अपने कपटनीतिक योजना को बड़े होशियारी से बना रहे थे । आहिस्ते आहिस्ते उन दोनों के बुरे इरादे और कदम राजेश के शयन कक्ष के ओर बढ़ने लगे थे ।

उन का षडयन्त्र राजेश की मौत को एक हिंसक डकैती के कारण हो जाने को था इसलिये महेश ने पहले एक खिड़की को तोड़ा जिस से बाद मे यह साबित किया जाये कि चोर उसी रास्ते से घर के अंदर आया था और चोरी करते समय जब राजेश ने उसे रोकना चाहा तब उस चोर ने उस की हत्या कर दी ।

राजेश के कमरे मे सन्नाटा छाया हुआ था । राजेश मनीषा द्वारा दूध मे दिये गये उन नींद की पुड़ियों के नशे मे आराम की नींद मे सो रहा था । मनीषा का ड्रायबर महेश ने राजेश के सिर पर एक होकी के बेट से जोरदार वार किया और राजेश के फूटे हुये सिर से खून बहने लगा । महेश के दूसरे वार से पहले दयानन्द की पिस्तोल की गोलियां चल पड़ी और महेश तिलमिला कर वहीं बगल मे गिर गया ।

मनीषा के होश हवास उड़ गये थे । उस ने सोचा कि सचमुच मे कोई चोर घर मे घुस आया था पर ऐसा कुछ नहीं हुआ था । दयानन्द के कर कमलों से वहां पुलिस भी मौजूद थी ओर एम्बुलेन्स

के क्रमचारी भी थे । पुलिसों ने मनीषा और महेश को गिरफतार किया और एम्बुलेन्स वाले राजेश को वहीं कुछ प्रारंभिक उपचार कर के स्थाई चिकित्सा के लिये तुरन्त अस्पताल पहूँचाया ।

अब मनीषा और महेश अपने काले करतूतों के कारण सलाखों के पीछे अपनी सारी जीवन बिताने चले गये थे । दो हफते मे राजेश भी अस्पताल से वापस सकुशल अपने घर आ गया था । अपने वफ़ादार क्रमचारी दयानन्द को अपना मुख्य मुन्शी बना कर वह चैन से अपने व्यापार मे संलग्न हो गया था ।

राजेश की उजाले की परी मनीषा तो आज सच मे अंधेरे के कली निकली जिस के कालेपन की सीमा ही न रही । आज सीमा के जलन और घृणा के भावनाओं का अन्त हो गया था । राजेश उस चालाक, जिद्दी और व्याकुल मनीषा से छुटकारा पा लिया था । उस के प्यार मे अंधा हो कर उस ने अपना बहुत कुछ खो दिया था पर अब फिर वह एक आज़ाद कारोबारी हो गया था ।

लेकिन उस ने जो भी कुछ मनीषा का हो कर सीखा था वैसी शिक्षा उसे कोई भी स्कूल मे नहीं मिल सकती थी । उस की सभी जागरुकता या शिक्षा इन शब्दों मे बखानी जा सकती हैं ः

- जो भी वस्तु देखने मे चमकीली हो वह सभी समय हीरा नहीं होती ।
- अच्छी नारी एक सफल मां, पत्नी, भगनी और साथी बन सकती है पर बुरी स्त्री इन सभी विशेषताओं से अलग जीवन बिताने के खुशी रहती हैं तथा हर इनसान को इन से बच के रहना चाहिये ।

- भक्तिमान और वफादार करमचारी सदा बहूमूल्य और निष्टवान होते हैं ।
- पवित्र प्रेम मे धोखे बाजी की कोई भी जगह नहीं है ।
- एक बार गरम दूध की जली बिल्ली भी दुसरे बार सभी पीने की चीज़ों को फूँक कर पीती है तब हर चतुर इनसान को यही करना चाहिये ।

कहते हैं कि समय ही हमारे सब दुखों व दर्दों की दवा है और शान्ति प्रदान करने वाला है । जैसे जैसे समय बीतता गया वैसे वैसे राजेश मनीषा के सभी काले करतूतों को अपने पीछे छोड़ता गया और आज एक साल बाद उस के प्रेम के नाटक को अपने दिल से निकालने मे समर्थ हो गया था ।

कहते हैं कि हर बीते रात के बाद नया सुबह आ जाती है जिस तरह हर दुख के बाद सुख नज़र आने लगता है । राजेश के लिये भी उस के हर गमों के बाद अब खुशी के दिन लौट आये थे । आज जनवरी महीने की अटठारह तारिख थी और राजेश के कम्रचारियों ने उस के जनम दिन पर एक बड़े जलसे का आयोजन किया था ।

सभी लोग पाटी का भरपूर आनन्द उठा रहे थे । राजेश मुख्य मेज पर विराजमान था । बाजे बज रहे थे, गाने की गुँजाइश हो रही थी और केक भी काटने का समय होने को था । अचानक होल मे सन्नाटा छा गया था कयोंकि दरवाजे पर दो अजनबी अति खूबसूरत नवयुवतियां आ कर खड़ी हो गई   थी । पूरे होल के लोगों के नज़र उन पर टिक गई थी ।

राजेश अपने कुर्सी से उठा और दौड़ कर दरवाजे के पास जा कर एक मूरत के तरह खड़ा हो गया । उस की नज़र सुनीला के चेहरे से हटती ही नहीं थी पर अपने आप को सम्भालते हुये कहा, “सुनीला ! तुम और इस समय यहां कैसे ?”

“मैं तुम्हारे धरोहर को तुम को सौंपने आई हूँ । यह तुम्हारी बेटी सुप्रिया है,” सुनीला ने अपने पास मे खड़ी सोलह सत्तरह वर्ष की कन्या के तरफ इशारा करते हुये कहा ।

राजेश सर्वप्रथम सुनीला से गले मिल कर उस को धन्यवाद दिया फिर सुप्रिया को बड़े प्रेम से माथे पर चूम कर गले लगाया । राजेश के सारे बदन खुशी से कांप रहे थे और वह उन दोनों युवतियों को बार बार निहार रहा था । जब उसे होश हुआ तब वह उन को बड़े आदर सत्कार से आगे के मेज़ तक ले जा कर उन को उचित स्थान पर बैठाया ।

उन का परिचय देते हुये राजेश ने कहा, “लैडिज़ एनड जेनटलमेन, यह मेरी बेटी सुप्रिया है और यह उस की मां सुनीला है ।” लोगों के तालियों से होल गूँज उठा और नौजवान करमचारियों के सीटी से सब का कान फटा जा रहा था ।

पाटी ख़तम हुई और राजेश अपने नये मेहमानो को लेकर अपने घर पहूँचा । सुप्रिया को अपना कमरा दिखाते हुये राजेश ने उस से कहा, “बेटी अब यही तुम्हारा घर है । यहां की सभी चीज़ पर तुम्हारी पूरी हक है । तुम फ्रेस हो लो तब तक मैं तुम्हारे मम्मी से कुछ जरूरी बाते करता हूँ ।”

सुप्रिया अपने कमरे मे चली गई और राजेश सुनीला के पास बैठके मे पहुँचा । इतने दिनों के विछोह के बाद आज वे परस्पर एक दूसरे से मिल कर बाते करने जा रहे थे । पहले तो उन की कुछ इधर उधर की बाते होती रही फिर वे वही मोड़ पर पहुँचे जब वे एक दूसरे से जुदा हुये थे ।

“सुनीला, सर्वप्रथम मैं तुम को तहेदिल से सुक्रिया अदा करता हूँ हमारे बेटी की देखभाल और रक्षा करने की तथा मेरे सूने दुनियां मे लौट कर आने के लिये,” राजेश ने बड़े सावधानी से कहता गया और सुनीला चुपचाप सुनती गई ।

थोड़े देर तक कमरे मे सन्नाटा छाया हूआ था जैसे वहां पर कोई नहीं हो पर फिर सुनीला ने कहना शुरू किया, “आज से ठीक सत्तरह साल पहले मै ने तुम से कहा था कि मैं तुम से शादी नहीं करना चाहती थी कयोंकि तुम बड़े नादान थे और एक सफल पिता बनने के काबिल नहीं थे । पर आज जब हमारी बेटी जवान हो गई है तो समाज के बदलते हुये हालात और दुनियां की बिगड़ती दुनियांदारी को देखते हुये अब शायद मेरे सभी बिचार बदल गये हैं । अपने बेटी के लिये आगे मैं खुद अकेले एक अच्छी मां का फर्ज पूरे तरह नहीं निभा सकती हूँ । अब हमे तुम्हारी जरूरत पड़ेगी । हम दोनों मिल कर ही सुप्रिया को एक अच्छी भविष्य दे सकते हैं ।” इतना कह कर सुनीला सुसुक सुसुक कर रो पड़ी ।

राजेश का भी मन भर आया और वह उठ कर सुनीला को अपने पास बिठा कर उसे फुसलाते हुये आशवासन दिया कि जब अब वे सब इकटठा हो गये हैं तब सब कुछ बिलकुल ठीक हो जायेगा ।

राजेश ने सुनीला को समझाया कि वे दोनो मिल कर सुप्रिया को एक होनहार, हुनरदार और सुन्दर सौभाव की युवती बना कर उस के जीवन मे खुशी ही खुशी भर देंगे । इसी मे उन सब की खुशी होगी ।

सुनीला और राजेश इस विचार से सहमत हुये कि *जो हो गया था सो हो गया, तथा अब उन को उस सब बीते बातों को भूल कर अपने नये जीवन की नीव डालने की जरूरत थी । वे उन सत्तरह वर्षों की जुदाई और तड़पन को तो वापस अचानक सुमधुर मिलन और खुशी मे तो हरगिज़ नहीं बदल सकते थे पर अपने बच्ची के भविष्य उज्जवल बनाने के लिये यह संकल्प कर सकते थे कि अब वे एक हो कर यह प्रयत्न कर के अपने परिवारिक सुख, शान्ति और अमन चैन को ठीक करें । यही अब उन का एक मात्र लक्ष्य बन जायेगा ।*

सिडनी के अपने घर आंगन को छोड़ कर राजेश और सुनीला अपने पुत्री को ले कर अपने होंगकोंग वाले आलिशान महल मे निवास करने चले गये । यहीं पर राजेश और सुनीला की पुनः शुभ विवाह बड़े धूम धाम से हो गई । इस के बाद वे सुप्रिया को अमेरिका के हावड यूनिवेर्स्टी मे पढने के लिये भेज कर अपने मन मौजी बन कर अपना खूशहाल और सुखी जीवन बिताने लगे थे ।

अब राजेश के उजाले की परी का नाम था सुनीला जो ऐसी कली बन गई थी जिस मे अँधेरे की कोई भी गुन्जाइश ही नहीं थी । उन के भविष्य को और भी मनोरम तथा चमकदार बनाने के लिये उन की सुपुत्री सुप्रिया थी ।

अब बस ।

३

गुलाबो की कौशल

गुलाबो गुलाब के फूल की तरह लम्बी और पतली कली थी जिस का रंग भी शायद उसी सुन्दर फूल से हूबहू मिलते जुलते थे । उस के आंख और दांत तो उस के हसीन चेहरे पर ऐसे चमक रहे थे जैसे खुले आसमान मे किसी एक रात को चांद सितारे अपनी रोशनी फैला रहे हो ।

साधारण रूप से कहा जाये तो गुलाबो एक अति प्रभावित, होशियार और सुन्दर वकील थी । न जाने कयों उस ने अभी तक फिर से शादी नहीं की थी । उस के पहले पति का देहान्त एक मोटर दुर्घटना मे हो गया था और अब वह अपने दो बेटियों के साथ रहती है । उस ने करीब चालिस सावनो को भलिभांति देख लिया था । इस जमाने मे एक सफल पेशेवर वकील की यह भी कोई उम्र है ?

गुलाबो मेरी अच्छी दोस्त पिछले पांच वर्षों से है । हम दोनो एक दूसरे के साथ अदालत मे सरकारी वकील थे पर जब से मेरी तरक्की एक चीफ अभियोजक याने प्रोसीक्यूटर की हुई तब से हम

एक दूसरे को बहुत कम मिलते हैं । हां अभी छः महीना हुआ जब हम दोनो चन्द लहमो के लिये उस के सहेली प्रकाश और मेरी पत्नी के अंतिम संस्कार के समय मिले थे ।

उस के बाद कई मरतबा हम ने गुलाबो से सम्पर्क करने की कोशिश भी की पर हर बार मुझे मेरे लालसा को कुचल कर उस का दमन करना पड़ा इसलिये कि कहीं वह मेरे जैसे विधुर के सम्पर्क का कोई उलटा मतलब न निकाल ले । इस लिये अब मैं अपने बेटी प्रि या के साथ गुजर बसर कर रहा हूँ ।

लेकिन आज जब गुलाबो ने मुझ को फोन किया तब मुझे फिर भी डर था कि कहीं वह मेरे अवाज़ मे छुपी मेरी अनुकंपा या चाह को न पहचान ले । उस ने आज रात को मुझे अपने साथ भोजन करने के लिये आमंत्रित किया है और मैं न चाहते हुये भी उस से मिलने के लिये सुराही नामक भोजनालय मे ठीक सात बजे जाने के लिये राजी हो गया हूँ ।

सुराही नाम की यह भोजनानय शहर के ऊंचले भाग के पहाड़ पर स्थित है । सभी बाहरी दीवार, कारनिस और अरौनी मे टिम टिमाते दिये जल रहे हैं । सभी खाने वाली मेजों को बड़े कुशलता से सजाई गई है । मैं भी आज अपने सब से खूबसूरत पौशाक पहने हुये वहां निर्धारित समय पर हाजिर हुआ । आज इस खास अवसर के लिये मुझे तैयार होते कम से कम एक घण्टा तो लगा होगा ।

एक कोने वाले मेज पर अकेले बैठी हुई गुलाबो पर मेरी नज़र जा टिकी । वह भी आज बड़ी सजधज कर आई थी । नीली कुरता, लाल घाघरा, गुलाबी आंचल और फिर उन मे सजी उस बदन और चेहरे

का तो कहना ही क्या था । मेरे वहां होने का शायद एक एहसास उसे हो गया था इसलिये उस ने अपने गोरे गोरे हांथो से इशारा कर के मुझे अपने पास बुलाया । हाय ! मैं तो उस की इस अदा पर फिदा हो गया ।

मेरे उस के मेज़ के पास पहुँचते ही गुलाबो खड़ी हो कर मेरे गालों पर एक हलकी सी चुम्बन लगा दी जिस से मैं तो बाग बाग हो गया पर अपने आप को सम्भाल कर उस के इशारे पर पास वाली कुर्सी पर बैठ गया । गुलाबो की मदहोश नज़र और उस के इत्र की सुगन्ध ने तो आज मुझ को ऐसा मुग्ध कर दिया था कि मेरी तो कुछ देर के लिये बोली बाणी भी जैसे बन्द हो गई थी ।

मैं ने सब दिन से ऐसा देखा था कि जिस राह से गुलाबो गुजरती थी वहां की सभी देखने वालो की नज़रे उसी पर टिक जाती थी क्योंकि वह एक ऐसी ही अनोखे हुस्न की महबूबा थी । जिस कमरे मे वो होती तो वहां की रौनक ही बढ़ जाती थी क्योंकि वह एक ऐसी ही बेजोड़ सुन्दरता को लिये घूम रही थी । मेरी भी आज क्या तकदीर थी कि मै इस परी के पास था । गुलाबो के करीब था ।

गुलाबो की मधुर आवाज सुन कर जैसे मेरी नींद खुल गई, “आज हम बहुत दिनो के बाद ऐसे मिल रहे हैं । मौसम भी बड़ा हसीन है और यह जगह भी बहुत दिलफेंक है, न सुजेन !”

“तुम सच कहती हो गुलाबो । ऐसा लग रहा है कि हम वर्षो के बाद मिल रहे हैं ।” मैं ने उस के तरफ झुक कर कहा और फिर यह भी

कहने से अपने आप को रोक न सका, "तुम आज बहुत ही सुन्दर लग रही हो, गुलाबो ।"

कोई भी युवती को उस की खूबसूरत की बड़ाई सुन कर उस के चेहरे पर चमक आ ही जाती है पर गुलाबो ने मेरे शुभकामना और प्रशंसा को जैसे सुना ही न हो और वह अन्य बाते करने लगी ।

हम इधर उधर की रोचक बातें और अपने अपने बच्चों के बारे मे पूछताछ करते रहे । गुलाबो की दो बेटियां, गीता और सीता तथा मेरी बेटी प्रिया सब लगभग एक ही उमर की हैं । हमारे गुफ्त्गू के दौरान गुलाबो ने प्रिया के बारे मे पूछा, "अपने मां के जाने के बाद प्रिया कैसे रहती होगी ?"

"हम दोनो किसी तरह से अपनी काम चला लेते हैं पर प्रकाश की कमी को बहुत महसूस करते हैं । प्रिया के लिये यह बड़े दुख का समय है पर हम अपने जीवन को खुशी रखने की कोशिश करते रहते है ।" हम ने कहा ।

गुलाबो ने जैसे मेरे आंखो मे प्रकाश की तड़प को देखा और वह अपने बातचीत की विष्य बदल कर पेशेवर सम्बन्धी बाते करने लगी । उन ने मुझे मेरे तरक्की के लिये बधाई दी और बताया कि वह भी अब अगले महीने से एक बड़े वकील के दफतर मे परायबट प्रोसीक्यूटर का पद सम्भालने जा रही है । हमे ऐसा लगा कि अब हम एक दूजे के प्रियतम बनने के बजाय एक दूसरे के बिरोधी बनने जा रहे थे । हम ने भी गुलाबो को बधाई दी पर यह न

कह सका कि न जाने कब और कहां हम दोनों की मुतभेड़ हो जायेगी ।

मैं ने सोचा था कि गुलाबो मेरे फिलहाल की निर्जन और अकेलापन के हालात पर तरस खा कर और मेरे सुन्दर सौभाव, मेरे नौजवानी को और मेरे आकर्षण को देख कर मुझे खाने पर बुलाया था पर ऐसा कुछ भी नहीं नज़र आ रहा था । अब मेरे सभी आंत्रिक अभिलाषा और लालसा पर जैसे पानी फिरने वाला था ।

भोजन के बाद हम दोनो अपने मिठाई की मजा ले रहे थे कि गुलाबो ने कहना शुरू किया, “सुजेन, तुम को मैं सब दिन से बड़े इज़्ज़त के नज़रों से देखती आई हूँ और आज भी तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो । लेकिन आज मैं तुम से एक बड़े मदद की मांग करने जा रही हूँ । यह मदद मेरे एक बहुत ही अच्छे दोस्त याने मेरे चचेरे भांई के लिये है । वह एक बड़े पुलिस के पद पर है पर उस पर कोई मुसीबत आ गई है । कया तुम उस की . .”

गुलाबो की बातें पूरी ही नहीं हुई थी कि प्रिया का फोन आ गया और वह मुझे तुरन्त घर आने के लिये कह रही थी इसलिये हम को एक अच्छा बहाना मिल गया कि मैं वहां से गुलाबो के जटिल स्वाल का जवाब दिये बिना निकल जाऊँ । मैं ने यही करना मुनासिब समझा और गुलाबो को धन्यवाद दे कर जल्दी से उस भोजनालय से निकल कर घर की ओर चल दिया ।

रास्ते मे जैसे मेरी मोटर चल रही थी वैसे ही मेरे दिमाग मे विचारों की धारा भी धारावाहिक रूप से भाग रही थी । मुझे गुलाबो के हुनर, खूबसूरती और ज्ञान के आड़ मे एक भयानक धोखा, छल

कपट और चालाकी की बदबू आने लगी थी और मैं बहुत ही असमंजस मे पड़ गया था कि मै उस से अपने दोस्ती को कायम रखूँ या तोड़ दूँ । मैं सोच रहा था कि आज के इस ढकोसलेदार प्रतिग्रह की अध्याय के बाद हमे अपने गुलाबो से सम्बन्धित सभी पैतड़ों को बदलना होगा ।

कया सभी खूबसूरत बला के पीछे कोई धोखा होने का डर रहता है ? कया सभी सुन्दर चेहरे पर किसी तरह का नकाब चढ़ा रहता है ? कया हर प्यारे बदन के अन्दर कोई जहर हो सकती है ? कयामत तो ऐसा जुर्म इनसानियत पर खुलेआम नहीं कर सकता है । कुदरत ने जब हम को शहद जैसा मीठा वस्तु दिया है तो वहीं प्रकृति की देन नीम सी कडुवी फल भी तो है । कहीं अमृत है तो कही जहर भी है । इसलिये यहां दुनियां बनाने वाले ने गुलाबो जैसी खूबसूरत बला को भी पैदा किया है और मेरे प्रकाश जैसी सती को भी हमे दे कर ले लिया है ।

यह सब विचारते और गुनते घर आ गया और मैं दौड़ कर अन्दर प्रिया के पास पहुँचा । मेरी बेटी प्रिया रसोई मे बैठी रो रही थी और पूछने पर पता चला कि उसे उस के स्कूल के भूगोल वाले परीक्षे के कुछ स्वालों के जवाब नहीं मिल रहे थे । मेरी बच्ची अभी अभी अपने नये हाई स्कूल के दसवे कक्षा मे दाखिल हुई थी और अपने माता पिता के तरह अव्वल दर्जे मे रहना चाहती थी । मेरी बेटी को उस के कक्षा मे कोई पिछाड़ दे ऐसा हो ही नहीं सकता था ।

खोदा पहाड़ निकला चूहा । मै ने तो सोचा था कि प्रिया को कोई बड़ी मुसीबत आन पड़ी है इसलिये गुलाबो के मनमोहक समारोह से

भागता चला आया था । एक हिसाब से यह ठीक ही हुआ । जान बची लाखो पाने को मिलेगा । मैं ने जब प्रिया को उस के स्वालों के सभी सही जवाब अपने लेपटोप के जरिये इनटरनेट पर **गूगल** के खोज बीन करने वाले वेबस्थान से खोज कर दिया तो वह बहुत खुश हुई ।

पर जब मैं ने उसे मुझे समय पर घर बुलाने के लिये धन्यवाद दिया तब वह मेरे मकसद को समझ ही नहीं पाई । लेकिन मुझे इस से बहुत लाभ हुआ था कयोंकि मैं किसी के जाल मे फंसने से बाल बाल बच गया था । अब आगे के लिये हमे गुलाबो का दिया हुआ गरम दूध को ही नहीं पर अपने आगे रखे हुये ठन्डे माठा को भी फूॅक कर पीना होगा । ऐसा मैं ने सोचा पर कर नहीं पाया ।

दूसरे दिन सोमवार को सुबह दस बजे जब मैं जज देव पथिक के चेम्बर मे पहुॅचा तब वहां वे मेरे एक विरोधी मुवक्किल सदानन्द के मुकदमे की फ़ाइल का निरक्षण कर रहे थे । मुझे अगले दिन एक चीफ प्रोसीक्युटर के हैसियत से उस उॅच पुलिस अफसर सदानन्द के विरुद्ध कई भ्रष्टाचार के दावे के लिये अदालत मे सबूत पेश करना था । अपने उस अच्छे दोस्त की पैरवी गुलाबो कर रही थी । हमारी मुतभेड़ होने मे अब देर नहीं रही ।

पिछले हफते सुपरीटेनडन्ट सदानन्द पर भष्टाचार के दस इलजाम लगाये गये थे । उन को जब अदालत मे जज पथिक के समक्ष पेश किया गया था तब वो न ही अदालत की पर जज की भी तवहीन की थी । सदानन्द ने यह कहा था कि उसे इस अदालत और न्याय करने वालो पर कोई विशवास नहीं है और वह दूसरे जज और

अदालत मे अपनी सुनवाई कराना चाहता था क्योंकि उस पर यह सब लगाये गये इलज़ाम के पीछे किसी और का हांथ है ।

जज पथिक उस के ऐसे गैर जिम्मेदार बयान से जल उठे थे । जज ने उस की जमानत को स्वीकार नहीं किया था और उसे बन्दी बना कर रखने का हुकम दिया था जब तक उस की पूरी सुनवाई नहीं हो जाती । जज पथिक की हुकम सुन कर सदानन्द ने अदालत को कई और भी जलि कटी सुनाई थी ।

इसी सिलसिले मे बात चीत करने के लिये गुलाबो ने मुझे सुराही भोजनालय मे खाने पर बुलाया था । पर मेरी बेटी प्रिया के भूगोल के कठिन स्वालों ने मुझे उस दल दल मे फंसने से बचा लिया था । मै जज पथिक के चेम्बर मे दाखिल होने से प्रथम सोचने लगा था कि कहीं उस दिन गुलाबो के विनती के जवाब न देने से आज उस ने मेरी कोई शिकायत तो नहीं कर दी थी जज से । मेरे सामने तो चोर के दाढ़ी मे तिनके वाली बात डगमगा रही थी ।

न्यायधीश ने मुझे अपने दफतर मे देख कर अपने पास की कुर्सी पर बैठने का संकेत दिया और कहने लगे, "मैं इस सुपरीटेनडन्ट के बच्चे को जेल की हवा तो खवाऊँगा ही पर फिलहाल तो मैं उस को न्यायालय के मानहानी के लिये सजा देना चाहता हूँ । दो हफतों के लिये उस को खुले जेल मे सभी मुज़रिमों के साथ रखने की हुकम दूँगा जिस से कि उस की तबीयत को बुरे जेहली लोग ठीक कर दें ।"

मैं जज पथिक की बातें सुन कर थोड़ा चौंका पर फिर भी उन को सावधान करते हुये कहा, "जज साहब यह सदानन्द गुलाबो का

बचपन का दोस्त है और उस का दूर का रिशतेदार भी है। वही उस की वकालत कर रही है। अगर आप बुरा न माने तो मेरे विचार से हमे इस मामले मे कुछ खास सावधानी बरतनी पड़ेगी।”

सदानन्द अब सरकारी राजनेताओं और पुलिस यूनियन के बीच के राजनीतिक झगड़े का एक बुरा अंग बन गया था। सरकारी नेता उस के खिलाफ घूसखोरी और भष्टाचार का इलजाम लगा रहे हैं और उस की पुलिस यूनियन वाले भी उस की तरफदारी नहीं कर रहे हैं।

मज़दूर संघ की यह अपसी फूट और मतभेद अब अदालत तक पहुँच गई थी। सदानन्द ने कुछ यूनियन के पदाधिकारी जो चुनाव लड रहे थे की मदद कर रहा था इस लालच मे कि जब वे जीत कर सरकार की बहुमती पा जायेंगे तब सदानन्द को कोई बड़ी विदेशी पदवी दिला दी जायेगी। सदानन्द ने दो यूनियन के ऊँच पदाधिकारियों को यूनियन के पैसे से वेश्याओं को काम मे लाने के लिये पकड़ा था पर कुछ सरकारी मंत्रियों के कहने पर उन को बरी करा दिया था।

फिर तीन सरकारी नेताओं को अपने कम्रचारियों के साथ अभद्रता करते हुये रंगे हांथ पकड़ा गया था पर सदानन्द के मेहरबानी से उन पर कोई कानूनी कार्यवाही ही नहीं की गई कयोंकि उन मंत्रियों ने सदानन्द को रिशवत तथा अन्य सुविधायें प्रदान करने का वादा दिया था।

इतना ही नहीं एक पादरी साहब जो एक बहुत ही बड़े व्योपारी के परिवार से सम्बन्ध रखता था उसे भी कुछ बच्चों के साथ बोडिंग

स्कूल मे अशिष्टता करने पर रिहा कर दिया गया था कयोंकि उस धनाड व्यापारी ने सरकारी मंत्रियो से कह कर सदानन्द से ऐसा करा दिया था । इन सब भष्टाचार, घुसखोरी, अभद्रता और अशिष्टता के झमेले मे सदा नन्द को तो फंसाया ही गया था पर न जाने मैं कहां से आ कर इस मे फंस गया था ।

पर मेरी मजबूरी थी मेरी हाल की पद की तरक्की जिस के फर्ज से मैं कहीं भाग भी नहीं सकता था । फिर मेरे न्यायधीश पथिक भी किसी से कम छुपे रुशतम नहीं लगते थे । उन को भी हम ने कई बार कुछ ऐसे कार्यों को करते और ऐसे स्थानों पर देखा था जिस से मुझे उन पर भी शक होने लगा था । पर मैं इन हांथियों के लड़ाई मे चींटी की मौत नहीं मरना चाहता था इसलिये मैं अपने सभी काम को बड़े लगन और दिलचस्पी से कर रहा था ।

गुलाबो जिस की पैरवी कर रही है वो सदानन्द पहले पुलिस यूनियन का हिसाब किताब भी कर चुका है । इस नेतागिरी के अवधि मे उस ने न जाने कितने धन यूनियन के कोश से बिना कोई इज़ाजत के निकालते देखा था और यूनियन के चहते उम्मीदवारों के चुनाव मे खर्च होते देखा था । पर वह जानते हुये बी खामोड था कयोंकि उस को तरकको की लालच दी गई थी । जब उस के उम्मीदवार चुनाव जीत कर मंत्री का पद पा लेते थे तब तो सदानन्द की दसो उंगलियां घी मे हो सकती थी । पर ऐसा कभी हुआ ही नहीं कयोंकि उसे उन्ही लोगों ने दूध मे गिरी मक्खी के तरह निकाल कर फोकना चाहते थे ।

जज पथिक ने मुझे समझाया कि किसी भी हालत मे इस बार उस सदानन्द को छोड़ने का नहीं है । हम को अपने सभी सबूतों को

इतना मज़बूत करना है कि वह सांप इस जाल से निकल न सके । इस के बाद मैं जज के दफतर से निकल कर अपने दफतर मे चला गया और काम पर लग गया ।

हम ने हफते भर सदानन्द के विरुद्ध अपने सभी सबूतों को इकटठा करने की कोशिश किया पर बहुत कुछ नही हासिल हुआ था । फिर भी मैं ने उन को अदालत मे पेश करने के लिये काबिल बना लिया था । हमारे सभी सबूत बहुत छीछले थे और गुलाबो यह जानती थी इसलिये वह मुझ से मदद मांगती थी जिस से मैं मुकदमे के सुनवाई के समय कुछ ढीलापन दिखा दूँ और गुलाबो सदानन्द को बरी करवा ले । कया मैं ऐसा करने के लिये राजी हो सकता हूँ ? गुलाबो ने कैसे ऐसा सोच भी सकती थी । हमे उस के पूरे बात को सुन लेना चाहिये था ।

यही सब करते कराते शुक्रवार भी आ गया । शाम हो गई और मैं अपने घर चल दिया । घर पर मेरी बेटी प्रिया मेरा इन्तज़ार कर रही थी । उस ने मुझे बड़े प्यार से गले लगाया और कहा कि उस रात को वह अपने सहेलियां गीता और सीता के घर पर रहने का प्लेन बनाया है । यह सुन कर मैं चौंक गया कयोंकि प्रिया की यह सहेलियां गुलाबो की बेटियां थी । मेरे बेटी के इस प्रबन्ध से तो बहुत गजब हो जायेगा । मुझे इस व्यवस्था को रोकने के लिये कोई बहाना तो ढूँढना ही पड़ेगा ।

“बेटी प्रिया, मैं ने तुम से कितनी बार कहा है कि अब तुम बड़ी हो गई हो और तुम को अपने घर की सफाई और अपने पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है । अपने सहेलियों के घर जा कर उन

के साथ गुलछरे उड़ाने की समय तुम को शोभा नहीं देता ।" मैं ने कुछ बनावटी गुस्से से कहा पर जैसे मेरी बात को उस ने सुना ही नहीं और जाने की तैयारी करने लगी ।

रास्ते पर किसी की मोटर की सीटी बजी तो मैं ने देखा कि गुलाबो अपने चमकते गाड़ी मे अपने दोनो बेटियों को लिये प्रिया का इन्तज़ार कर रही थी । अब मैं कया करता ? अपने लाडली बेटी के इस प्रबन्ध को मुझे न ही निगलने की हिम्मत थी और न ही उगलने की इसलिये उस को बाहर तक छोड़ने के लिये मैं गुलाबो के मोटर तक गया । गुलाबो मुझ को देख कर अपने गाड़ी से उतरी और बड़े प्यार से मेरे गले लगी ।

अपने बेटियों के सामने हम एक दूसरे की निकटतम को नहीं प्रदर्शित करना चाहते थे इसलिये गुलाबो बच्चियों को ले कर चल पड़ी । मैं वहीं अपने घर के बाहर खड़ा सोचता रह गया । जब बच्चे बड़े होने लगे तो उन की आज़ादी पर भी ध्यान देना होता है ।

रात तो किसी तरह से घर मे अकेले कट ही गई और सुबह जब मै अपना नाशता तैयार कर रहा था तब उस दिन की दैनिक समाचार पत्रिका के पहले पन्ने की खबर पढ़ कर मैं हैरान रह गया पर मुझे बहुत घबराहट नहीं महसूस हुई जैसे मैं ऐसे खबर का इन्तज़ार कर रहा था । जज देव पथिक की बड़ी तस्वीर के साथ यह लिखा था ।

"न्यायधीश पथिक गिरफतार ! वेश्याव्रिति मे उलझाव !"

यह तो वही बात हुई जैसे किसी डाक्टर ने वही इलाज दे दिया हो जो मरीज़ खुद चाहता हो । हमारे घर का फोन बजा तो मैं ने जान

कर थोड़े देर मे उठाया । गुलाबो की सुमधुर आवाज़ सुन कर मैं ने कोई अचम्भा नहीं दर्शाया । वह मुझ से तुरन्त मिलना चाहती थी इसलिये मैं ने अपनी बिरीफकैस को उठाया और मेरी मोटर गुलाबो के दफतर की ओर चल पड़ी ।

गुलाबो का नया दफतर शहर के एक बड़े इमारत के पांचवे मंजिल पर था । अपनी गाड़ी नीचे कारपाक मे खड़ी की, इमारत का लिफ्ट लिया और गुलाबो के दफतर वाले इमारत पर पहुँचा । रिसेप्शनिस्ट से पूछ कर गुलाबो के दफतर के सामने जा खड़ा हुआ । आज न जाने क्यों मै ऐसा बरताव कर रहा था जैसे मैं कोई हुकुम का गुलाम था जो पान के बीबी के इशारे पर नाच रहा था ।

मैं ने धीरे से उस दरवाजे पर दस्तक दिया जिस पर स्वर्ण अक्षरों मे लिखा था *गुलाबो श्रीवास्तव, सीनिया प्रायबेट प्रोसिक्युटा* ।

भीतर से वही सुमधुर आवाज़ आई, “अन्दर आ जाओ, सुजेन !” गुलाबो ने अपने फोन को एक हांथ से ढांकते हुये कहा और इशारे से मुझ को पास मे रखी आराम कुर्सी पर बैठने को कहा । वह किसी को अपने फोन पर जली कटी सुना रही थी । लेकिन जल्दी से उस फोन वार्ता को काट कर मेरे तरफ आ गई । पास मे बैठी एक युवती से मेरा परिचय कराया, “सुजेन शांन्डिल, मेरे दोस्त यह है हमारी सहयोगी सोनालि बनसल । सोनाली, सुजेन आज यहां आये हैं क्योंकि वे मुझे कोफी पिलाने ले जा रहे हैं ।”

मैं भी गुलाबो के बनावटी निमंत्रण को चुप चाप सच मान कर सोनालि के तरफ इशारा करते हुये कहा, “तुम भी यही दफतर मे काम करती हो ?”

“अन्डा कवर !” सोनालि ने कहा और गुलाबो ने आगे कहती गई, “यही हमारे आज के ताजे खबर की मुख्य कलाकार है । यह हमारी सब से खास गवाह है । सुजेन, तुम बाहर मेरा इन्तजार करो मैं सोनालि से निपट कर अभी तुम्हारे साथ हो लूँगी ।”

मैं बाहर निकला और उन के रिसेपशन के एक बड़े कुर्सी पर बैठ कर गुलाबो का इन्तज़ार करने लगा । गुलाबो के बोस चतुर सिन्हा का दफतर बगल ही मे था और वे किसी से बड़े जोर जोर से बाते कर रहे थे जैसे कोई दो लोग झगड़ा कर रहे हों । थोडी देर मे वह अपने दफतर से बाहर निकला और मुझे देख कर अपने रिसेप्शनिष्ट से पूछा कि कया मैं उस के लिये सबर कर रहा था । रिसेप्शनिष्ट ने जब अपना सर हिला कर न कह दिया तब चतुर ने पूछा, “कया गुलाबो के साथ कोई है ?”

“ जी हां ! उन के साथ सोनालि बनसल है ।”

“ कौन ? सोनालि ? मैं ने तुम से कहा था कि जब सोनालि यहां आये तो उसे सीधे मेरे पास भेजना । किसी को उस से बाते करने की जरुरत नहीं थी ।” चतुर सिन्हा अपने रिसेप्शनिष्ट पर गरज पड़े ।

“आप फोन पर थे इसलिये सोनालि को गुलाबो ने..”

“ गुलाबो माय फुट ! अगले बार जब मैं कोई आदेश देता हूँ तो मैं यह उम्मीद करता हूँ कि तुम उस का पूरे तरह से पालन करोगी । आई बात समझ में ?” इतना कह कर वह सीधे गुलाबो के ओफिस

मे हल गया और जोर से कहा, “सोनालि ! जाऔ मेरे ओफिस के सामने मेरा इन्तज़ार करो !” और जब सोनालि उस दफतर से निकल गई तब चतुर सिन्हा ने जोर से दरवाजा बन्द कर के गुलाबो से कुछ बाते करने लगा ।

भीतर से थोड़ी कुछ आवाज़ आई पर बहुत साफ नहीं थी पर जब गुलाबो ने चीखना शुरू किया तब तो जैसे आसमान ही टूट पड़ा हो, “चतुर, तुम को इस तरह से चिल्ला चिल्ला कर बाते करने का कोई अधिकार नहीं है । मैं कया सपना देख रही थी कि तुम ने सोनालि के बारे मे कोई आदेश छोड़ रखा था ?”

“तुम को कया पता कि पत्रकार लोगों ने जज पथिक के गिरफतारी को ले कर कया उधम मचा रखा है कयोंकि हमारी *अन्डा कवर* ने उसे रंगे हांथ पकड़वाया है । मुझे बहुत सम्भाल कर सब कदम उठाना है इसलिये मैं नहीं चाहता कि तुम इस मामले से कोई सम्बन्ध रखो । इस मामले को मैं ही देख भाल करूँगा ।” चतुर ने गुलाबो को समझाया तब गुलाबो ने गुस्से से पूरे फाइल को उस के हवाले कर दिया और कुछ बडबडाते हुये अपने दफतर से बाहर निकल कर चल पड़ी । गुलाबो आगे आगे और मैं उस के पीछे पीछे चल रहा था ।

जब हम बाहर कोफी शोप मे पहुँचे तब भी गुलाबो का दिमाग उतना ही गरम था और वह चतुर सिन्हा को अनाप सनाप कहे जा रही थी । मैं ने दो कोफी मंगाया और हम दोनो चुसकी लेते हुये अपने दिल और दिमाग को ठन्डा करने लगे । गुलाबो गुस्से मे और भी खूबसूरत लग रही थी । कोफी का मजा लेते लेते हम दोनों ने एक

ऐसा जबरदस्त तरकीब रचा कि जिस से सांप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे । पर फिलहाल तो यह एक बावरची की गुप्त नुखसा ही रहेगी ।

मुझे जज देव पथिक को उस के पदवी से गिरने से बचाना था और गुलाबो को सदा नन्द को कारागार से छुड़ाना था । पर चतुर सिन्हा तो सोनालि के गवाह को ले कर जज पथिक की ऐसी की तैसी करने मे कोई कमी नहीं छोड़ेगा । अब हम ऐसे ही चक्रविहू के बीच फंसे हुये थे । इस से बाहर तो निकलना है पर कैसे ?

सब से पहले हमे जज देव पथिक को जमानत पर छुड़ाने की जरूरत थी । फिर सदा नन्द को बचाना होगा । इन कार्यों को करने के लिये कई कदम उठाने पड़ेंगे । गुलाबो यह जान गई थी कि जहां जज देव पथिक को फंसाया गया था वहीं सदा नन्द को भी लोगों ने झूठी तरकीब लगा कर उस को भी फंसा दिये थे ।

पहला तो यह होगा जहां सोनालि बनसल के जज पथिक के विरुद्ध की सभी सबूतों को बरबाद करना होगा जिस से न्यायधीश को उन के पद से गिराने से बचाया जा सके । दूसरा कोई ऐसा जतन किया जाये जिस से जिन नेताओं और यूनियन के क्रमचारियों ने सदा नन्द को फंसाया है उन का सब भन्डा फोड़ दिया जाये जिस से उन पर मोकदमा दायर हो और सदा नन्द सरकारी गवाह बन कर बरी कर दिया जाये । यह दोनो कार्य बहुत कठिन हैं पर हम योग्य वकीलों के लिये यह सब नामुमकिन नहीं हैं । इन को पूरे रुप से करना कई कारणो के लिये बहुत ही जरूरी है ।

इन सब बातों को मध्य नज़र रखते हुये गुलाबो और मैं ने एक तरकीब सोची । भले ही हम एक ही पेड़ के दो अलग अलग डाल थे पर अपने तने पर एक न एक दिन मिलने की राह देख रहे थे । हमारे लिये अब शायद दिल्ली दूर नहीं थी । हमारी बेटियां तो धीरे धीरे घुल मिल ही रही थी तो हमारा मिलन भी अब हमारे समझदारी पर ही निर्भर रहेगा ।

उस दिन का हमारे कोफी का समय पूरा हुआ और हमारे सभी आगे की कानूनी कार्यनीति और योजना बन चुकी थी । अब केवल उन को अमल मे लाने और पालन करने की देर थी । गुलाबो और मेरे बीच की बहुत ही आपसी भ्रम और गलत फहमी अब दूर होने लगे थे । पहले तो हम एक नदी के दो किनारे जैसे लगते थे पर हम अब हम एक दूसरे के करीब आने लगे थे । हम ने एक दूजे से बिदा लिया और हजारो अरमानों को लिये अपने अपने घर चल दिये ।

दो दिनो के छुट्टी के बाद आज हमे अदालत मे जज देव पथिक को जमानत पर जेल से छुड़ाना था । चतुर सिन्हा ने अपनी कई सफाई दी जिस से पथिक को वेश्याबृति के लिये कुसूरवार दिया जाय पर गुलाबो के मदद से मैं ने उस के खास गवाह सोनालि की सब पोल को न्यायधीश के सामने खोल कर रख दी । उन की सभी जज पथिक को फसाने की नाटक का अन्त हो गया और जज पथिक को बरी कर दिया गया । चतुर सिन्हा और सोनालि बनसल तो भीगे बिल्ली की तरह अदालत से ऐसे गायब हुये जैसे गदहे के सिर से सिहं चली गई हो ।

उस दिन जब हम तीनो एक जगह इकटठा हुये तब हमारे बीच की मन मोटाव और दूरियां जाती रही । जज पथिक, गुलाबो और मैं

अपने एक कार्यनीति का जशन मना रहे थे । जज पथिक तो हम दोनो की बडाई और सराहना करने से थक ही नहीं रहे थे । गुलाबो को तो अब केवल अपने चचेरे भाई सदा नन्द को बचाने की सूझ रही । हमारी दूसरी रणनीति अब तीन कुशल, निपुण और चतुर वकीलों की गुटबन्दी हो गई थी । इसलिये जज पथिक के कहने के अनुसार मैं ओर गुलाबो दूसहे दिन सुबह को समय नियुक्त कर के पुलिस यूनियन के प्रधान सालिकराम से मिलने उस के दफतर पहुँचे ।

उस मनोरम सुबह को लगभग दस बजे जब हम सालिकराम के दफतर पर पहुँचे तब हमारा कोई खास स्वागत नहीं हुआ । हम दोनो विरोधी पक्ष के वकीलों को वहां के अगवानी के क्रमचारी सीधे सालिकराम के भव्य और आलिशान दफतर मे पहुँचा दिया । यह दफतर किसी कार्यालय या कचहरी से कम नहीं था । बड़े बड़े मेज़, सजी हुई मोटी मोटी कुर्सियां और न जाने कितनी कीमती छोटे छोटे कोफी टैबल सुन्दर फर्श पर सजे थे ।

सालिकराम एक डरा धमका कर काम बनाने वाला खड़ुस व्यक्ति तो था ही पर वह कभी कभी बहुत ही धार्मिक और न्याय परायण हो जाता था । हम यही सोच रहे थे कि आज न जाने उस का कैसा मूड था यह तो हम को तब पता चले जब वह कुछ कहेगा । बस हम को पता चल ही गया जब उस ने न कोई राम जुहारी और न कोई बन्दगी किये बिना कहना शुरू किया, “तुम लोग पुलिस कमीशनर सदा नन्द की पैरवी करने वाले वकील हो ? मैं नहीं जानता कि सदा नन्द की कीमत तुम लोग चुका पाओगे या नहीं । पर छोड़ो यह सब । तुम यहां कयो आये हो ?”

“यहीं तो उस के सभी अपराध के शुरुआत का स्थान है,” मैं ने सालिक को समझाते हुये कहा, “सदा नन्द की सभी दुख तकलीफों और समस्याओं की बुनियाद उस की इसी यूनियन से सम्बन्ध रखती हैं।”

“सदा नन्द ने अपने आप को तकलीफ का पहाड़ बनाता गया था और अब उस पर वह अब बहुत भारी पड़ने लगा है,” सालिक ने अपने यूनियन के तरफ से सफाई दिया।

“ अच्छा ! तो ऐसा कैसे हुआ कि सदा नन्द इस यूनियन के हिसाब किताब की देख भाल करने लगा था ? कया तुम लोगों के पास कोई अकाउटेन्ट रखने की ताक़त नहीं थी ?” मैं ने पूछा।

“ हम किसी को पैसा कयों देते जब हम को मुफत मे काम करने वाले मिल जाते थे। फिर हम सदा नन्द पर सब दिन पूरा भरोसा करते थे।” सालिक ने कहा।

“अच्छा, यह बताईये कि कया कभी सदा नन्द ने कोई हिसाब किताब मे गड़बड़ी की थी या पैसे को चुराया था या इधर उधर किया था ?” मेरे इस स्वाल का कोई जवाब नहीं मिला तब मैं ने सालिक राम को थोड़ा उसकाया। “हो सकता है कि यहां पर खेत खाय गदहा और मार खाये जोलाहा वाली कहावत लागू है ! पैसे की चोरी ओर छीना झपटी तथा हिसाब किताब की रद्दोबदल किसी और ने किया हो और सदा नन्द पर इलज़ाम मढ़ दिया गया हो।”

“ माफ कीजिये वकील साहब ! क्या इसी लिये तुम लोगों ने जज पथिक को बचा लिया है जिस से सदा नन्द के इलज़ाम को किसी और पर मढ़ी जा सके ?” सालिकराम चीख उठा ।

“इस को तो तुम बावर्ची का रहस्य ही समझिये । फिर यह हमारे ग्राहक का विशेषांधिकार है जिसे हम जाहिर नहीं कर सकते हैं । पर हम इतना कहे देते हैं कि हम अब जान गये हैं कि कुछ यूनियन के ऊच पदाधिकारी और सरकारी मंत्रियों ने मिल कर जज को और सदा नन्द को बदनाम करने की कोशिश कर रहे है जिस से वे अपनी चोरी को छुपा सकें ।”

मेरा ऐसा कहने पर सालिक राम गरज पड़ा, “वकील साहब, तुम बहुत ही गहरे पानी मे हल रहे हो । डूब जाओगे ।”

“माफ करना सालिक राम, मुझे तैरना आता है । मैं तो अपने आप को बचा ही लूँगा पर आप का क्या होगा जब आप की और आप के मंत्रियों की सब पोल खुलेगा ?” मेरे इतना कहने पर सालिक राम के तेवर कुछ बदलने लगे ।

“सुजेन, क्या मैं तुम को सुजेन कह सकता हूँ ?” सालिक ने कहना शुरु किया और मेरे सर हिला देने पर उस ने धीरे से मेरे नज़दीक आ कर कहा, “क्यों न हम आपस मे एक युद्धविराम संधि कर लें । मैं आप का सरकारी गवाह हो जाऊँ और सब का भण्डा फोड़ कर दूँ ।”

“मैं तुम्हारे संधि के बारे मे समझा नहीं । थोड़ा विस्तार पूर्वक समझाओ तब मैं कोई फैसला सुना सकता हूँ ।” मैं ने कहा और सालिक के उत्तर का राह देखने लगा ।

“ देखो वकील साहब मैं नहीं चाहता कि हमारे यूनियन का नाम बदनाम हो और न ही मैं कोई मुसीबत मे फंस जाऊँ । मैं आप को ओर आप के साथी को अपने यूनियन के सभी हसिाब किताब को दिखा दूँगा और यह भी बत दूँगा कि किन किन लोगों ने कब कब हमारे यूनियन के धन को बरबाद किया है । तुम्हारा यह अनुमान ठीक ही है कि सदा नन्द को बदनाम कर के अन्य लोग खुशी मना रहे हैं । आप सरकार के वकील हैं और गुलाबो सदा नन्द की पैरवी कर रही है । बस आप दोनो मिल कर हम को इस दलदल से निकाल लीजिये ।” सालिक राम ने गिड़गिड़ा कर कहा ।

गुलाबो और मैं ने एक दूसरे को बड़े ध्यान से देखा । मैं जब खड़े हो कर चलने के लिये सालिक राम से हांथ मिलाया तब गुलाबो ने कहा कि उस की सालिक राम से कुछ काम की बातें अभी बाकी है । वह बाद मे आयेगी । मैं तो उन दोनों की इजाजत मांगी और वहां से चल पड़ा ।

सालिक राम के पूरे हाव भाव बदल चुके थे और उस के पैर अब शायद वही जमीन पर थे जिस पर हम चल रहे थे । अब हमारे रणनीति की अध्याय खतम होने को थी इसलिये मैं वहां से निकल कर अपने दफतर की ओर बिदा हुये हर्साय । गुलाबो की गजब अब शुरू होने जा रही थी ।

सालिक राम ने गुलाबो को सब यूनियन के कई साल के गुप्त हिसाब किताब के कागज़ात को दिखाया । सालिक राम के सहयोग से कई सबूतों को गुलाबो ने इकटठा किया । इन तमाम सबूतों के जरिये वह प्रधान मंत्री महेन सिंह और उन के कई अन्य मंत्रियों के चोरी, बेइमानी और घूसखोरी की पोल को खोल कर अदालत के समक्ष रखा । ऐ सब नेता पहले कई मज़दूर यूनियनों के उँच पदाधिकारी रह चुके थे ।

इन से यह साफ जाहिर हुआ कि पुलिस कमिशनर सदा नन्द को एक मुहरा बना कर फंसाया गया था । सदा नन्द को तो अदालत ने सभी सबूतों को मध्य नज़र कर के बाइजज़त बरी कर दी पर उन भ्रष्ट, दूषित और बेईमान नेताओं को कौन कानून के समक्ष लाने की हिम्मत कर सकता था । इस के लिये हम पांच व्यक्तियों का एक जबरदस्त मंडली बनानी पड़ी ।

देव पथिक, सदा नन्द, सालिक राम, गुलाबो और मैं ने मिल कर देश के मुख्य सेनिक सेनाध्यक्ष सेनापति अमर सिंह से सलाह किया । हमारी समुदाय ने सेनापति अमर सिंह को उन सभी नेताओं के सब नीच क्रम,भष्टाचार, काले करतूतों और बेईमानियों के सबूतों को दे कर देश को उन भ्रष्ट नेताओं के चंगुल से बचाने के सही उपाय ढूँढने के लिये छोड़ कर अपने अपने कामों पर जुट गये ।

समय भागता रहा और जैसे एक बड़े तूफान के बाद स्थिरता आ जाति है और सब वातावरण शान्त हो जाता है वैसे अब सभी भ्रष्ट नेता अपने अपने काम पर पुनः वैसे लग गये थे जैसे कुछ हुआ ही न हो । अचानक जब धारा सभा के संसद भवन मे की साल की

आखरी धारा सभा की बैठक हो रही थी तब वहां एक बड़ा धमाका हुआ ।

सेनापति अमर सिंह और उन के वफादार सेनिको ने संसद पर धावा बोल ही दिया और सरकार की सत्ता पलट कर देश के सभी नेताओं को बन्दी बना लिया । जोखिम घुनों के साथ आज अच्छे दाल भी पीसे जा रहे थे पर जब किसी भी भ्रष्ट सरकार की ऐसे आकस्मिक राज्य परिवर्तन होती है तब किसी को छोड़ा नहीं जा सकता है ।

भ्रष्टाचार को मिटाने के लिये सेनिको को ऐसे कदम उठाने ही पड़ते हैं चाहे कोई इस को कानूनी समझे या यह कोई गैर संवैधानिक प्रथा ही क्यों न हो । ऐसा करना अत्यन्त आवशयक हो जाता है ।

देश मे हाहाकार मच गया । सभी समाचार पत्र, रेडियो और टेलेबिजन स्टेशन पर काबू कर लिया गया । सभी सरकारी दफतर और पुलिस विभाग के अडडों पर सैनिक तैनात कर दिये गये । सेनापति अमर सिंह ने रेडियो और टेलेबिजन द्वारा जनता को अपने कार्य की जरूरत को भलिभांति समझया । इस के बाद देश के लोगों मे समझ आ गई और सभी लोग अपने नियमित कार्यो को सामान्य रूप से करने लगे ।

थोड़े ही दिनों मे सेनापति अमर सिंह के आदेश पर हम मंडली वाले सभी सबूतों के साथ उन सब भ्रष्टाचार से भरे नेताओं पर कानूनी कार्यवाही कर के उन सब को उपयुक्त सजा दिलवाई । देश मे जो भी जरुरी कार्य को मनोनित और चुने हुये राजनीतिक नेता कभी न

कर सके थे अब सेनापति अमर सिंह और उन के समुदाय ने पांच वर्षो मे कर के दिखा दिया ।

नया संविधान, देश के सभी नागरिक को एक ही नाम से पुकारना, एक ही इलेक्ट्रोल की सूचि, सब देश वासियों को समान अधिकार, मुफ्त शिक्षा प्रणाली, किसानो की मदद, व्यवसाय का प्रोत्साहन और अन्य तमाम नागरिक के सुविधायें । सब से अहम बात तो यह है कि किसी को देश मे भ्रष्टाचार करने की गुन्जाइश ही नहीं है कयोंकि अब दे मे इस के विरुद्ध काम करने वाली एक खास संस्था बना दी गई है ।

अब जज देव पथिक, सुपरिंटेन्डन्ट सदा नन्द और यूनियन के प्रधान सालिक राम अपने अपने काम से अवकास ले लिये हैं । उन के स्थान पर योग्य लोगों को नियुक्त किया गया है । देश के अंतिरिम प्रधान मंत्री सेनापति अमर सिंह हैं और उन के सहयोगी मंत्रियों का एक होनहार और नेक तथा हुनरदार लोगो का दल नये चुनाव होने तक देश का बागडोर सम्भाल रहा है । सरकारी नौकरो के सभी विभाग के मुखिये बड़े इमानदारी और लगन से अपने काम मे लगे हुये हैं । देश दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति की ओर बढ़ रहा है ।

मुझे देश का अटोनी जेनरल का भार सम्हालने को कहा गया है और बुलाबो अब सेनापति अमर सिंह के सरकार की एक बहुत ही जिम्मेदार मंत्री का पद सम्भाल रही है । हमारी विवाह अगले वर्ष के जनवरी महीने की बीस तारिख को मुकर्रर की गई है । हमारी तीनो बेटियां, प्रिया, गीता और सीता देश के विभिन्न विध्धालयों मे उंच शिक्षा हासिल कर रही हैं ।

गुलाबो ने अपने गजब कर कमलों से न ही केवल देश मे भ्रष्टाचार का अन्त करने मे मेरी मनन की है पर वह अपने गजब के कमाल से मेरा व्यक्तिगत जीवन को चमका दिया है । हम ने अपने जीवन काल मे बहुत ही ऊँचे नीचे, ऊबड़ खाबड़, टेहड़े मेहड़े, सरल कठिन और खट्टे मिटठे समय और रास्तों पर चल कर अपने आप को सवांरा तथा सही बनाया है ।

गुलाबो और मेरी यह संकलप है कि जब तक हम जीवित रहेंगे हम अपने देश की सेवा लगन और मन से करते रहेंगे फिर अवकास ले कर किसी टापू मे अपना बसेरा बनायेंगे । हम अपने बेटियों को श्रेष्ट आचरण तो देंगे ही पर उन के शिक्षा दिक्षा मे कोई कमी नही रहने देंगे जिस से हमारी भावी संतान सुखी जिन्दगी व्यतीत करती रहे ।

आज के लिये इतना ही । हम अब दूसरे कहानी की खोज मे जा रहे है । किसी मोड़ पर फिर मिलेंगे ।

४

अपराधी कौन ?

एक कल्पित छोटी कहानी

आईये मैं आप को एक कहानी बताता हूँ । लेकिन मेरी एक शर्त है । आप किसी को यह नहीं बतायेंगे की आप ने इसे कहां पढ़ा और किस से सुना था ।

अगर आप कभी भी इस कहानी को भूल कर भी किसी से बताये तो किसी भी हालात में यह कब, कहां, कैसे, और क्यों हुआ तथा यह किस के बारे में है कभी भी नहीं जाहिर होने देंगे । आप इस कहानी के भेद सदा गुप्त ही रखेंगे जिस से कोई यह न समझ बैठे की यह सच्ची घटना है । मैं चाहता हूँ कि यह सदा एक कल्पित कहानी ही बनी रहे । अगर आप अपना वचन देते हैं तो हम आगे बढ़ते हैं ।

जब कोलेज के इतिहास के प्रोफेसर अशोक त्रिपाठी ने पहली बार उस खत को पढ़ा तब वे बड़े ताजुब में पड़ गये थे । यह चुमड़ा हुआ

पत्र उन्हें उन की बेटी राखी के कमरे से तब मिला था जब वे उस के कमरे की सफाई कर रहे थे ।

यह कोई साधारण खत नहीं था जिसे वे सहज से भुला देते । इस चिटठी ने उन के दिल और दिमाग पर एक भयानक डर सा पैदा कर दिया था । अपना प्यार दरशाने का यह अजब तरीका है, उस ने सोचा । इस को पढ़ने से उन को इस में एक जलन की भावना झलक रही थी ।

वे अपने आराम कुर्सी पर बैठे हुये उस सिकुड़े हुये खत को बार बार जोर से पढ़ रहे थे ।

"मैं तुम से बहुत प्यार करता हूँ । इस संसार में तुम को मुझ से ज्यादा प्यार कोई कर ही नहीं सकता है । हम दोनो एक दूसरे के लिये ही बने हैं और कोई भी हमें कभी जुदा नहीं कर पायेगा । चाहे कुछ भी हो जाये हम सदा साथ साथ रहेंगे ।"

यह खत किसी कोम्पिउटर पर रचा कर सफेद पन्ने पर लिखी गई थी पर इस पर किसी का दस्तख़त नहीं था । न ही कोई लिफाफा था और न ही किसी का नाम या पता था । बस प्रोफेसर जी यही सोच रहे थे कि यह कोई उन के बेटी राखी के कोलेज के बिगड़े हुये नौजवान की मूढता या मूर्खता ही है । पर वे इस को इतना सहज से टाल भी नहीं सकते थे क्योंकि उन की पुत्री ने इस को सभाल कर अपने आलमारी में जो रखा था । हाँ उस खत पर सिकुड़न को देख कर ऐसा लग रहा था की राखी ने इसे पाकर अपनी नराज़गी जरूर जाहिर की थी । यही सोच अशोक को खाये जा रही थी ।

जब इन की शादी हुई थी तब अशोक त्रिपाठी एक बड़े शान्त स्वाभाव के सज्जन थे, पूरे व्यवसायी, पेशेवर तथा एक नियमित सज्जन की क्षमता रखते थे । उन की बीबी कल्पना एक साधारण वकील थी पर कुछ चिडचिडे स्वभाव की जरूर थी । आत्म सम्मान से भरपूर नजर आती थी ।

कुछ दिनों तक इन दोनो की गृहस्थी बड़े प्रेम से बीती । विवाह के बाद दो ही सालों में उन के आंगन में एक सुशील कन्या खेलने लगी थी । वे दोनो अपने बेटी राखी को वह सब कुछ देने के लिये तैयार थे जिस से उन की लाडली बेटी सदा खुश रहे ।

समय का चक्र चलता रहा और यह छोटा सा परिवार उन्नति करता गया । इस परिवार के छोटे छोटे बात विवाद बड़े बड़े झगड़ों के रूप लेने लगे थे क्योंकि वकील साहिबा अब शहर की एक मशहूर वकील के पद पर विराजमान थीं और उन के तेवर में तबदीली आ गई थी । अब इस कल्पना की उस इतिहास के साधारण प्रोफेसर साहब से निभती नहीं रही और परिवार की नैया ढगमगाने लगी थी ।

आज जब उन की अपनी कन्या कोलेज की सफल छात्रा है, मेहनती है और काफी नाम कमा रही है तब वे दोनों दमपति तलाक ले कर एक दूसरे से अलग रह रहे थे । यह घटना उन के अपने जीवन में और राखी के रहन सहन में बड़ी उथल पुथल ला दी थी ।

अशोक तो किसी तरह अकेला जीवन व्यतीत कर रहा था पर कल्पना ने एक अन्य युवती आशा के साथ अपना एक नाज़ायज समलैंगिक नाता जोड़ कर एक अजीब सा विवाहित समझौता कर

रखा था । कल्पना और आशा अब मानो पती पत्नी के तरह एक अलग बंगले में रह रहे थे ।

इस का दुख अशोक और राखी दोनो को हो रहा था पर वे इस मामले में कोई भी दखल देने से बेबस थे । सभी लोग अपने अपने ढंग से अपना जीवन निर्वाह कर रहे थे और कभी कभी जब राखी से मुलाकात हो जाया करती थी तब उन के खुशी का ठिकाना ही नहीं रहता था ।

आज उस अज्ञात खत को पा कर अशोक को अपने पुराने सुखी जीवन की बहुत याद आ रही थी । वह उस खत को बार बार पढ़ता रहा और अपना सिर हिला हिला कर अपने आप को सान्तवना दे रहा था कि उस में कोई सच्चाई नहीं है ।

पर एक पिता होने के नाते शायद आज वह अपने बेटी के लिये सुरक्षात्मकता दिखा रहा था । उस के बच्ची को कहीं कोई नुकसान न पहुंचाने की कोशिश कर रहा हो । वह असमंजस में पड़ गया था पर फिर यह सोच कर की उस की बेटी अब कोई छोटी बच्ची तो नहीं रही, वह अपने आप को इस फिकर से दूर रखना चाहता था ।

अशोक ने फोन उठाया और राखी का नम्बर लगाया । राखी ने दूसरे ही घण्टी पर फोन उठाया “हलो ताजी ! क्या हो रहा है?” उस के स्वर में एक अजीब सा उत्साह और यकीन था ।

“नहीं, मैं केवल तुम्हारी आवाज सुनना चाहता था और तुम्हारी याद आ रही थी,” अशोक ने जल्दी से कह दिया ।

उस दिन पिता पुत्री के बीच बातें तो खूब हुईं पर अशोक यह न जान पाया की राखी को कोई तकलीफ है या उसे कोई सताने की कोशिश कर रहा है । हर एक पिता का यह फर्ज है कि वह अपने बच्चों के बारे में फिकर करते रहे जब तक बच्चे खुद अपने पैरों पर न खड़े हो जायें ।

राखी की पढ़ाई अभी ख़तम नहीं हुई थी इस लिये अशोक को उस के लिये फिकर लगी रहती थी ।

उधर राखी की माँ कल्पना और उस के साथी आशा भी राखी का अकसर ख्याल लिया करते थे पर किसी कारण से राखी को आशा से पटरी नहीं बैठती थी । यह सवाभाविक था की जब एक दूसरी औरत ने आ कर उस के माँता पिता के विवाहित जिन्दगी को बरबाद कर दिया हो तब वह उस हादसे को लेकर चिन्तित जरूर हुई होगी ।

यह कल्पना की संगिनी आशा भी अजीव थी । पास के एक लड़कियों के हायस्कूल में खेलकूद की अध्यापिका थी और वहां के बास्केटबोल टीम की कोच भी थी । देखने में अति सुन्दर और सौभाव की बड़ी चटक थी । स्कूल की सभी बच्चियां और अन्य सदस्य उस को बहुत मानते थे । उसे देख कर कोई भी उस को एक समलैंगिक महिला या लेसबियन नहीं मान सकता था । पर उस के व्योहार तो कल्पना के साथ वही और वैसे ही थे ।

कल्पना आज अपने दफतर में दिन भर के वकालत से सम्बंधित कड़े काम के बाद अपना थकाई दूर करने के लिये कोफी की चुसकी ले रही थी की उस के फोन की घण्टी बज उठी । उस ने फोन

उठाया और सोचा की शायद वह आशा होगी । " हेलो ! कल्पना हिया ! "

" हाँ कल्पना, मैं अशोक बात कर रहा हूँ , कया तुम्हारे पास थोड़ा सा समय है मुझ से बातें करने की ?" अपने पुराने पति की आवाज़ सुन कर कल्पना को कुछ घबड़ाहट सी हुई पर वह जल्दी से समभल कर जवाब देने को तैयार हो गई । " अशोक ! तुम कुछ परेशान लग रहे हो, क्या बात है ?"

" कल्पना, मैं राखी के कमरे को साफ करते समय आज एक खत पा कर बड़े असमंजस में पड़ गया हूँ ," यह कह कर अशोक ने उस खत को पढ़ कर कल्पना को सुनाया ।

पर कल्पना चिढ़ सी गई और कई अनाप सनाप बकते हुये उस ने कहा, " पहली बात तो तुम्हे अपने नौजवान बेटी का खत पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है और फिर इस में क्या बुराई है ? सभी कोलेज के छात्रायें ऐसे समय से गुजरा करते हैं । होगा कोई उस का छिपा चाहने वाला जो अपना प्यार जताना चाहता है । "

ऐसी बातें सुन कर अशोक को नराज़ी तो आई पर वह उन बातों को टालते हुये कहा, "कल्पना तुम राखी की माँ हो और एक वकील होने के नाते इस खत में तुम्हे कोई मूढता, मूरखता, दबाव या बुरा विचार नज़र नही आता है ? मेरे ख़याल से केवल कोई बिगड़ा हुआ नौजवान ही ऐसी हैरानी पहुँचाने वाली चिटठी को लिख सकता है । मैं सोचता हूँ की हमारी बेटी कोई मुसीबत में है । "

“मैं सोचती हूँ की यह सब केवल तुम्हारा भरम है । जब तक हमें राखी खुद नहीं कुछ बताती तब तक हम कुछ नही कर सकते हैं । हमें अपना काम करने दो ।” कल्पना ने इतना कह कर फोन रख दिया और अशोक सोचता ही रह गया । अशोक के दिमाग में एक बात जरूर आया की कल्पना और आशा जैसे लोगों से वह इस के अलावे और क्या उम्मीद कर सकता है ।

प्रीतम बड़ा ही खुदर्गज और गुस्से वाला नौजवान था । देखने में किसी अमीरखाँ और देवानन्द से कम नहीं था पर उस की बुरे परवरिश के कारण उस में अच्छे शिष्टाचार और सही इनसानियत के गुन बहुत कम नज़र आ रहे थे ।

नसेड़ी पिता और बचपन में ही माता की अचानक मौत ने उसे जीवन के बहुत ही सामाजिक, धार्मिक और संसारिक शिक्षा से वंचित रखा था । वह आवारा और गैर जिम्मेदार जरूर था पर होशियार था, दिमागदार था तथा कोम्पिउटर प्रोग्रेम का महा ज्ञानी था । सुरक्षित नौकरी न भी होते हुये किसी भी ढ़ंग से अपना जीवन निर्वाह कर ही लेता था । सड़क पर चलते लोगों से मुतभेड़ कर लेना, कहीं चोरी और कभी नसेड़ियों से लड़ाई कर लेना या धोखा, छल और कपट की चाल तो कहीं अन्य सामाजिक छेड़छाड़ में फंस जाना उस के लिये कोई नई बात नहीं थी ।

कुछ छः महीने पहले प्रीतम की मुलाकात इतफाक से राखी से हो गई थी । कुछ दिनों से प्रीतम पास के एक गेस सटेशन में आस्थाई मोटर मकेनिक का काम कर रहा था और शाम को कोलेज में कोम्पिउटर प्रोग्रेम की पढ़ाई भी करता था ।

रविवार का दिन था । शाम होने लगी थी और राखी अपने सखी सहेलियों के साथ सैर सपाटा कर के लौट रही थी । पुराने सड़क के गड्डों के कारण उस के मोटर की पिछले दांई ओर के टायर के चिथड़े निकल गये थे । पर बड़ी मुशिकल से उस के सहेलियों ने मोटर को ढकेल कर गेस सटेशन तक पहुँचा दिया था ।

प्रीतम ने बड़े शौक से नया टायर लगा दिया था पर जब पैसा भरने का समय आया तब उन के पास पूरे पैसे नहीं जुट सके थे ।

उन को तकलीफ में देख कर प्रीतम ने अपने क्रेडिट कार्ड से उन का कर्ज चुका कर उन का मददगार बन गया था लेकिन किसी को यह नहीं मालूम पड़ा की वह क्रेड़िट कार्ड भी चोरी का था । ताकि कल वह आ कर अपना पैसा वसूल कर ले , बड़े प्रेम से प्रीतम ने राखी से उस का पता ले लिया था । राखी को क्या पता था कि उस छोटे से कर्ज के लिये वह प्रीतम को अपने जीवन में आने की निमन्त्रण दे चुकी थी ।

उन को क्या पता था कि उन की मुलाकात एक भेड़िये के रूप में भालू से हुई थी । उधर प्रीतम के मन में राखी जैसी अति सुन्दर युवती को देख कर लड्डू फूट रहे थे । वह अपने आप को बोलीउड के सितारों से तुलना कर के मन ही मन फूला नहीं समा रहा था ।

दूसरे दिन का समय कटना प्रीतम के लिये बड़ा मुशिकल हो गया था क्योंकि उसे उस शाम को किसी खास व्यक्ति से मिलना था । शाम होते ही प्रीतम को राखी के चेहरे की चमक और उस की बेजोड़ मधुर मुस्कान उस को खींचती ले चली राखी के मुकाम तक

जहां पहुंचते ही उस ने बन्द दरवाज़े पर एक हलकी सी दसतक लगाया ।

दरवाज़ा खुला पर उस ने अपनी कर्जे के पैसे लेने के जगह राखी को भरमा कर उस के घर में दाखिल हुआ ओर उस की मेहमान नवाज़ी से लाभ उठाया । छणभर की नसमझी में इनसान से गलती हो जाती है पर फिर वह जीवन भर पशचाताप के कडुये फल चीखता रहता है । ठीक यही बात राखी के साथ हुआ ।

प्रीतम की चिकनी चुपड़ी बातें, उस के आंखों की चमक और उस के बनावटी हावभाव ने राखी को उस रात पागल बना दिया था । अपने फरेबी नाटक से वह राखी के दिल जीत रहा था । चाय पानी के बाद कुछ दवा दारू भी काम में लाई गई और जब सुबह हुई तब राखी को अपने जवानी के हवस या पागलपन का आभास हुआ ।

उस ने प्रीतम के बहकावे में आ कर उस काली रात की भयंकर और अशलील करतूत से चौंक पड़ी और अपने आप से उसे नफरत हो रही थी । यही मान लेना उचित है कि उस की इज्जत लुट गई थी और उस का जिम्मेदार आवारा प्रीतम ही था ।

यह वही प्रीतम था जो झूठ और फरेब के दुनियां में रहता था । अपने कल्पित जीवन को सत्य में बदलने में कभी नहीं हिचकिचाता था । किसी भी समूह में उस की बोली बाणी बन्द हो जाती थी लेकिन अकेले में वह शेर सा लगता था । अपने जमीनदार या किसी भी मुखिया से अकेले में झगड़ा करना या पड़ोसियों से लड़ाई उस के लिये बड़ा आसान था ।

अपना गुस्सा वह ज्यादातर पड़ोसी के कुत्ते और बिल्लियों को सता कर या मार कर उतारा करता था । यही उस की कायरता थी पर वह इन सब को अपनी बहादुरी समझ बैठा था क्योंकि आज तक उस को मुंह तोड़ जवाब देने वाला कोई न मिल पाया था ।

प्रीतम के मन में यह बात बैठ चुकी थी की वह राखी से प्यार करने लगा है । लेकिन उस रात के धोखे से भरी हरकत के बाद राखी अगर किसी भी चीज़ से घृणा करती थी तो वह था प्रीतम । अब क्या था प्रीतम तो खुले आम शहर में ढिंढोरा पीटता फिरता था की राखी ही अब उस की एकमात्र प्रीयतम है । उस ने एक गुप्त खत को लिख कर राखी तक पहुँचा दिया ।

"मैं तुम से बहुत प्यार करता हूँ । इस संसार में तुम को मुझ से ज्यादा प्यार कोई कर ही नहीं सकता है । हम दोनो एक दूसरे के लिये ही बने हैं और कोई भी हमें कभी जुदा नहीं कर पायेगा । चाहे कुछ भी हो जाये हम सदा साथ साथ रहेंगे ।"

अब रोज रोज प्रीतम राखी का पीछा उस का साया बन कर करने लग गया था । वह उस को देखे बिना रह ही नहीं सकता था । यही मान लो की वह पागलों की तरह उस के सभी कार्यो को बड़े चाव से देखा करता था और मन ही मन ख्याली प्यार के नशे में चूर रहता था ।

राखी की हर मुस्कान, हर बात, हर चाल, हर खुशी, हर नज़र केवल प्रीतम के लिये ही होनी चाहिये थी । राखी का किसी से मिलना जुलना प्रीतम को गंवारा नहीं था । उस के लिये वह केवल

उस की ही प्रेमिका थी । राखी ऐसे खुदगर्ज आदमी से निपटने की कोशिश कर रही थी ।

राखी अपने जीने का ढंग तो बदल नहीं सकती थी और उस रात वह अपने एक सहपाठी राकेश के साथ शहर के एक साधारण भोजनालय में शाम का समय बिताने चली गई थी । राकेश एक गरीब माँ का इकलौता बेटा था और बहुत ही होनहार बिध्यार्थी था इसीलिये उस को इस कोलेज में छात्रवृति मिली थी ।

आज वह राखी के साथ एक अच्छे दोस्त के हैसियत से आया था जिससे वह उसे पिछले दिनों की लापरवाही के लिये सांत्वना दिला सके और उस के मन की बोझ को कुछ हलका कर सके । आते ही उस ने राखी को फूलों का एक सुन्दर गुलदस्ता दिया । दोनो बताये हुये मेज पर बैठ कर आपस में गुफतगू करने लगे ।

इस रोमानी दृष्य को देख कर प्रीतम को सहन करना मुश्किल हो रहा था । उस के अन्दर एक अजीब सी ज्वाला धधक रही थी । राकेश और राखी का हँसना मानो उस के कलेजे में तीर और तलवार सा लग रहा था । उस के जलन भाव की कोई सीमा ही नहीं थी पर वह सब सह रहा था यह कह कर की, -*राखी तुम केवल मेरे लिये हो और मैं तुम्हारे लिये । तुम कीसी और की हो ही नहीं सकती हो ।*

उस रात के भोजन पानी के बाद राखी और राकेश जब भोजनालय से बाहर निकले तब राकेश राखी को उस के कमरे तक छोड़ने गया था । दोनो साथ साथ चल रहे थे पर मानो उन के पैर प्रीतम

के दिल को खरोच रही थी और वह उन के पीछे पीछे चलता हुआ गुस्से से आग बबूला हो रहा था ।

यह एक तरफा प्यार का जलन भाव भी बड़ा अजीब था क्योंकि न तो राखी और न ही राकेश इस से वाकिफ थे । वे चलते चलते अपने मंजिल पर पहुँचे तब राकेश ने राखी के गालों पर एक हलका सा चुम्बन दे कर उस से गले लगा ।

तब राखी को महसूस हुआ की राकेश एक सुन्दर स्वभाव का, हँसमुख और बड़ा प्यारा नौजवान था । शायद इसीलिये राखी ने राकेश को फिर मिलने का वादा किया और उसे अपना फोन नम्बर भी दे दिया । राकेश कल फोन करने का वादा कर के राखी को उस के घर छोड़ कर अपने घर की ओर आहिस्ते आहिस्ते खुशी में गुनगुनाते हुये चल पड़ा ।

राखी अन्दर चली गई और राकेश के बारे में सोचने लगी । आजकल बहुत कम नौजवान राकेश के तरह मिलते हैं जो दोस्ती को समझते हैं और निभाते हैं ।

वह अपने खाट पर बैठी सोचने लगी कि कल जब राकेश उस से मिलने आयेगा तब वे कहाँ जायेंगे, क्या क्या करेंगे और कैसी कैसी बाते करेंगे । आज की इन मधुर यादों ने उसे कल के बुरे ख्यालो से दूर ले गये । वह एक गहरी नींद में खो गई ।

राकेश आज की सुहानी रात के बारे में सोचता हुआ कल की आने वाली पुनः मिलन का इन्तज़ार में अपने घर की ओर चला जा रहा

था । रात काली थी, सड़क सूनी थी और राकेश मगन में गुनगुनाता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था ।

अचानक उस ने अपने पीछे किसी की आहट सुन कर मुड़ कर देखना ही चाहता था कि उस के सर पर किसी की काले साये ने लोहे से वार किया । लोहा इतना अचानक चला की राकेश अपना बचाव नहीं कर पाया और उस का माथा फट गया ।

इस के आगे क्या हुआ वह राकेश के समझ के बाहर की बात थी । हम बाद में उस की जिक्र करेंगे । लेकिन इतना कह देना उचित है कि राखी को राकेश ने उन की पुनः मिलन के लिये फिर से कभी फोन नहीं कर सका ।

उधर प्रीतम जानता था की वह बड़े होशियारी से अपना काम तमाम कर के सभी सबूतों को मिटा दिया था । राकेश के बटुआ में जो कुछ थोड़ा सा नकद धन था वह निकाल कर उस के क्रेड़िट कार्ड़ को सड़क पर फेंक दिया जिससे जब उस को पाने वाला उस कार्ड़ को काम में लायेगा तो इस जुर्म में वही पकड़ा जायेगा ।

बटुआ में जो राकेश का चित्र था उसे निकाल कर अपने पैरों तले मसलते हुये वह कह रहा था, *"राखी के साथ जाने का और उस को चुम्मा लेने का नतीजा यही था ।"* पर वह असमंजस में था कि उस का शिकार इस जुर्म के लिये पूरी तरह से शहीद हो गया था या नहीं ।

रात कटी, सबेरा हुआ और प्रीतम की हरकतें होती रही । वह पास के पबलिक फोन में एक सिक्का गिराया और राखी का नम्बर

लगाया । "हेलो! कौन बोल रहा है ?" राखी की आवाज सुन कर प्रीतम रुका और जब राखी ने दुबारा वही स्वाल पूछा तब उस ने कहा, "ताजुब है कि जानते हुये भी तुम अनजान बन रही हो । मैं ने कहा की मैं ही तुम्हारा प्रीतम हूँ । हम एक दूसरे के लिये ही बने हैं । कोई भी हमारे तुम्हारे बीच में नहीं आ सकता है ।"

"बन्द करो अपनी यह फिजूल की बातें , मुझे तुम से कोई बातें नहीं करनी है । मुझ से दूर ही रहो तो अच्छा है ।" राखी ने कहा पर प्रीतम कहाँ इतने आसानी से मानने वाला था, "मैं तो सदा तुम्हारे संघ ही रहता हूँ । तुम से दूर रह कर भी तुम्हारे ही पास हूँ । हम एक छोटे से नाले के दो किनारे बन गये हैं । " यह कह कर प्रीतम ने फोन काट दी और राखी का मुह तोड़ जवाब उस के मन ही में रह गया पर प्रीतम की धमकी ने अपना काम कर ही दिया ।

राखी एक दम डर गई थी और वह फुसफुसाने लगी, *"मैं अपने एक रात की भूल से अब बड़े मुसीबत में फंस गई हूँ । अब मैं क्या करूं ? "*

राखी के पास सैकड़ो दोस्त थे पर आज उसे ऐसा मालूम पड़ रहा था की वह इस दुनियां में एकदम अकेली हो गई है । न जाने कितने देर तक वह चुप मार कर बैठी थी । उस ने एक लम्बी सांस लिया और प्रीतम का नम्बर मिलाया । आज वह फैसला कर के ही रहेगी चाहे कुछ भी हो जाये ।

फोन चार पांच बार बजने के बाद प्रीतम ने उठाया और कोल करने वाले का नाम देख कर बोला, " हाँ , बोलो मेरी जान ! मैं तुम्हारे

लिये क्या कर सकता हूँ ? जान हाजिर है , गुलाम को केवल हुकम चाहिये । ”

राखी गुस्से से कांप रही थी पर वो कड़ी आवाज में बोली, “मैं नहीं चाहती की तुम आज के बाद फिर कभी भी हमें फोन करो और न ही मिलने की कोशिश करो, बात समझ में आई ?” प्रीतम चुप रहा और राखी कहती गई, “जब तुम ने आज सुबह मुझे फोन किया तब मैं सो रही थी और आवाज सुन कर चौंक गई थी । तुम को इस गलती के लिये माफी मांगनी चाहिये और यह समझाना होगा कि तुम ऐसी हरकतें किऊं करते हो । तुम को शरम आनी चाहिये एक लड़की को इस तरह छेड़ते हुये । ”

प्रीतम के तरफ से कोई जवाब नहीं आई तब राखी चीख उठी, “बेशर्म ! लुच्चा ! बेहूदा ! देखो वह केवल एक रात की मुलाकात थी । हम दोनों पागल थे और नशे की हालत में हम अपनी हद को पार कर गये । ऐसा हरगिज़ नहीं होना चाहिये था । तुम ने मेरे जज़बात को ठेस पहुँचाया है पर जो हो गया सो हो गया । हम इस गलतफहमी को दूर कर के एक दूसरे के दोस्त बन कर अपने अपने अलग रास्ते पर चले तो बेहतर होगा ।”

राखी को सिवाय गहरी सांसों की ध्वनि और दांत पीसने के आवाज के और कुछ नहीं सुनने को मिला तब वह फिर अपने आप को सम्भालते हुये बोली, “मैं बहुत खुश हूँ की तुम ध्यान से मेरी बातें सुन रहे हो और इन्हे अमल में लाने की सोच रहे हो । मुझे मेरी पढ़ाई पूरी करनी है और तुम को भी कई काम करने होंगे । जाओ अपना भविष्य देखो और मुझे चैन से रहने दो । मैं तुम से बिनती

करती हूँ प्रीतम मुझे अपने हाल पर छोड़ दो । हमारी बात समझ में आई की नहीं ?"

इतना सब सुन कर प्रीतम ने फोन रख दिया और राखी पास के खिड़की से बाहर एक टक ताकती रह गई । अब उसे पता चल रहा था कि वह कोई जबरदस्त राक्षस के पाले पड़ी है लेकिन उसे अब ऐसे दरिंदे से हिम्मत और क्ररूर्ता से पेश आना पड़ेगा । अपने आप को शान्त करने के लिये वह अपना एक तोलिया ले कर नहानघर में गुस गई । जैसे सब कपड़े उतार कर नल के पानी से नहाना शुरु किया वैसे ही उस का दिमाग ठण्ड़ा हो गया ।

फिर भी वह अपने बदन पर प्रीतम द्वारा लगाये दाग और घिनौने मैले को मल मल के दो देना चाहती थी । वह बड़े देर तक नहाती रही और अपने बदन के एक एक अंग को निहारती रही । अपने आपत्ति को टालने के नये तरीकों को ढूंढती रही ।

जब वह स्नान कर के बाहर निकली तब उस को ऐसा लगा जैसे उस के सम्सया का कुछ कुछ समाधान मिलने लगा था । उसे कुछ समय पहले की एक सहेली याद आई । सरस अब कोलेज ख़तम कर के पास ही के एक बड़े कम्पनी में काम करने लग गई थी । राखी ने जल्दी से नये कपड़े पहने और सरस से मिलने की तैयारी में बाहर निकलने के लिये दरवाजा खोला । जैसे वह अपना कदम चौखट के पार किया कि उस के होश उड़ गये । दीवार पर लटकते हुये मरे और पुराने गुलाब के गुलदस्ते को देख कर वह चौंक पड़ी ।

गुलाब के झूरे हुये लाल लाल पंखुडियां मानो खून बन कर झरने की तरह नीचे गिर रही थी जैसे कोई यह साबित करना चाहता था कि

उस का भी वही हाल होने वाला है । राखी ने अपने आप को सम्भाला और इस दृष्य को देख कर सीधे सरस को तार मारा और उसे सब बात को समझाते हुये अपने घर बुलाया ।

सरस अपने सहेली राखी की करुण पुकार सुन कर उस से मिलने दौड़ी चली आई । सरस और राखी एक दूसरे के अच्छे दोस्त ही नहीं पर दो बहनों की तरह एक दूसरे से पेश आते थे । सरस ने अपनी शानदार मोटर राखी के घर के सामने ही खड़ा कर के जब राखी के घर के दरवाजे को खटखटाया तो उसे देख कर राखी के आधे से ज्यादा मुसीबत कोसों दूर भाग चुकी थी ।

दो कप चाय के दरमयान राखी ने सरस को अपनी सारी सम्स्याओं और कठिनाईयों के बारे में बड़े बारीकी से बताया । प्रीतम जैसे पागल अपराधी के लिये सरस के पास राखी के लिये केवल एक ही सलह थी । एक मनोबैग्यानिक होने के नाते सरस ने कहा, "बच के रहना बाबा इस खतरनाक गुण्ड़े से क्योंकि उस की दिमागी हालत अच्छी नहीं लगती है । वह पागल ही नहीं पर बहुत विमूढ और अस्तव्यसत इनसान मालूम पड़ता है । ऐसे लोगों से जितना भी दूर हम रहे उतना ही कम है । "

उस रात के भोजन के बाद उन दोनों के बीच कितने और भी बार्तालाप हुई, हँसी मज़ाक हुई ओर अन्य काम की बातें भी हुई । आधी रात कैसे बीत गई उन दोनों को पता भी नहीं चला । सरस जाने को बाहर निकली ओर राखी ने उसको उस के मोटर तक छोड़ने आई थी । बिदा लेने से पहले सरस ने राखी के गले मिली

और तब तक अपने मोटर के पास इन्तज़ार करती रही जब तक राखी अपने घर के अन्दर नहीं पहुँच गई थी ।

सरस ने जैसे अपने मोटर को स्टॉट किया की एक काला साया मोटर के आगे आ कर खड़ा हो गया । सरस ने मोटर की हेढलाईट जारी किया पर उसे कोई भी नज़र नहीं आया । उस ने सोचा की वह शायद उस का भरम था लेकिन जब उस की मोटर चल पड़ी तब उस ने रियरव्यु मिरर में वही काले साये को फिर देखा पर इस बार उस ने मोटर के रफतार को बढ़ाया और पक्के सड़क पर पहुँचते ही अपने घर के तरफ मुड़ गई ।

थोड़े ही दूर चल कर मोटर के आगे वाला टायर निकल गया । मोटर बगल के नाली में जा गिरा और सरस बेहोश हो गई । जब उस को होश हुआ तब वही काले साये वाला चेहरा उस के पास खड़ा हँस रहा था और कह रहा था, “अब मैं तुम को पहचान गया हूँ ! मेरे राखी को छुने वाले का यही हाल होगा ।”

उतने में वहां पुलिस पहुँच गई पर उस काले साये वाले व्यक्ति की सकल देखने को नही मिली । सरस को अस्पताल पहुँचाया गया और उस के मोटर को किसी गेराज वालों ने खींच कर ले गये ।

राखी और सरस को बड़ा ताजुब हुआ इस हादसे से पर वे इस को करने वाले की मकसद उस काले साये के कथन से जान पाये । हाँ सरस ने राखी से इतना जरूर कहा, “यह सब तब शुरू हुआ जब मैं ने तुम से बिदा लेते समय तुम्हे आलिंगन किया ।

मैं सोचती हूँ कि इस के पीछे भी वही दरिंदे का हांथ है क्योंकि यह उसी की कथन है -*हम दोनों एक दूसरे के लिये बने हैं* । और वह यह नहीं चाहता है कि कोई दूसरा तुम्हारे नज़दीक आये । "

सरस ने राखी को समझाया की कुछ दिनों के लिये वह उस से मिलना जुलना छोड़ देगी जिस से वह फिर से कभी ऐसी मुसीबत में न पड़ जाये ।

यह सुन कर राखी को बहुत दुखः हुआ पर वह और कर भी क्या सकती थी । राकेश का दुबारा न मिलना और अब सरस का उस के दोस्ती से किनारा खींच लेना उस के समझ में नहीं आ रहा था पर वह जिये जा रही थी ।

दूसरे दिन राखी को कोलेज जाना था पर जाने से पहले उस ने अपने लेपटोप पर अपना ईमैल देखने के लिये बैठी । एक के बाद एक देखती गई पर जब उस ने कोई बिमला का ईमैल खोला तब असल में वह ईमैल बिमला का नहीं बल्कि प्रीतम का था । उस ने न चाह कर भी उस को पढ़ा ।

"हेलो मेरी जान ! मैं तुम को बहुत ज्यादा प्यार करता हूँ । तुम मुझे बहुत याद आती हो लेकिन अब वह दिन दूर नहीं की जब हम दोनों सब दिन के लिये एक साथ होंगे । वह दिन हमारे लिये बड़ा आन्नद ले कर आयेगा ।"

" इस संदेश के बाद छप्पन और ऐसे ही समाचार हैं जो तुम्हारे लिये बहुत जरूरी साबित होंगे पर उन्हे मिटाना नहीं । तुम पर कल

से बहुत ज्यादा प्यार आता है और परसों मैं तुम को और बहुत सारा प्यार दूंगा ।

सब दिन के लिये केवल तुम्हारा ही प्रेमी , प्रीतम ।"

यह ईमैल पढ़ने के बाद राखी चीखना चाहती थी पर उस के गले से कोई आवाज़ ही नहीं निकली । इसी तरह के बेहूदे संदेशों से और भी ईमैल भरे पड़े थे पर सब संदेश दूसरे दूसरे नामों से भेजे गये थे केवल अन्त में नाम उसी चंडाल के थे ।

यह सब देख लेने के बाद राखी के सर चकराने लगा था पर उस ने एक लम्बी सांस ली और अपने कमरे का ठीक से निरक्षण किया ।

प्रीतम ने यहां एक रात के कुछ ही लहमे गुजारा था जो आज उस के लिये एक पहाड़ सा बन गया है । वे दोनों एक दूसरे को दोस्त समझ कर थोड़ी सी पी ली थी लेकिन वही थोड़ा सा नशा उस के जीवन में आग लगा गई थी । उस रात की हरकत उस के चरित्र से हरगिज़ मेल नहीं खाती थी और इसी लिये उसे बहुत पशचाताप हो रहा था ।

उस रात को वे दोनो अपने कपड़ों को उतार कर जल्दी से अपने खाट पर चले गये थे । सब कुछ इतना रफतार से हो गया था की उस में प्यार की कोई गुंजाइश ही नहीं थी ।

जब सब कामदेव की क्रिया खतम हुई तब प्रीतम किसी खास नियुक्ति के बहाने कर के शर्म के मारे भाग खड़ा हुआ था । वह खुद अपने नहानघर में जा कर मल मल के स्नान किया था जैसे वह कोई बहुत बुरी गन्ध या मैल को साफ कर रही थी ।

यह सब झूठ और फरेब के जीते जागते नमूने थे तब इस में प्यार कहां से आ गया । पर आज वह फरेबी जन्म जन्मांतर के मोहब्बत के बारे में ढँका पीट रहा था । यह सब राखी के समझ के बाहर था पर सब कुसूर तो उस का स्वंय का ही था ।

यही सोच कर वह दुखों के दरिये में तैर रही थी । यह प्रीतम ने उस का सब कुछ लूट लिया था । इज़्ज़त, आबरू, अमन चैन और हो सकता है उस रात को उस ने उस के कोम्पिउटर पर से उस के सब गुप्त विवरण भी ले लिया हो ।

राखी आज एक बरबाद जहाज के शरणार्थी के तरह तड़प रही थी । कब उसे किनारा मिलेगी ? कब वह इन सब तकलीफों से छुटकारा पायेगी ? यही सब सोच कर उसे बड़ा गुस्सा आ रहा था । यह दरिंदा प्रीतम को कोई अधिकार नहीं है उसे सताने को और उस के प्यार जताने का तरीका बहुत ही नीच और गन्दा था । इस का अन्त होना उसके लिये अत्यंत जरूरी हो गया था ।

यह सब झंझट ने राखी के जीवन में एक भयंकर बाढ़ और तूफान ला दी थी और उस का जोरों से चढ़ता हुआ पानी तो अब राखी को डुबाये जा रही थी । प्रीतम की हरकतें बढ़ती ही जा रही थी और अब तो वह राखी के कोलेज के इर्दगिर्द भी नजर आने लगा था । राखी को वह दूर दूर से ही देखता रहता जैसे वह उस का साया हो गया था ।

राखी के फोन पर उस दिन राकेश की माँ का मेसज था : *हम ने तुम्हारा नम्बर राकेश के जेब में पाया । मैं पबलिक फोन से बात कर रही हूँ क्योंकि हम गरीबों के घर में फोन लगाने के लिये पैसे*

नहीं रहते । तुम चाहे जो भी हो पर मैं तुम को यह बताना चाहती हूँ कि मेरा एकलौता बेटा राकेश अब अस्पताल में एक अपाहिज की जिन्दगी बिता रहा है । उस रात के हादसे के बाद आज उसे होस हुआ है । कृपा कर के उस से दूर ही रहे तो बड़ी मेहरबानी होगी ।

उसे यह सुन कर बहुत दुःख हुआ पर वह किसी भी हालत में राकेश के माँ तक नहीं पहुँच सकती थी क्योंकि उस के पास उन का पता ठिकाना नही था ।

ऐसे दुख के समय में अकसर माँ की याद आती है क्योंकि वही हमारे दिल की बात सही तौर पर समझ सकती है । शायद इसी लिये कोई कवि ने कहा है , *अम्मा तेरे ममता का नहीं कोई मोल* । राखी ने फोन उठाया और अपने माँ का नम्बर लगाया ।

कल्पना और आशा अपने बरामदे में बैठे अपने जीवन के बारे में बातें कर रहे थे । अभी कुछ दिनो से उन के प्रेम मोहब्बत में भी कुछ दरारें दीखने लगी थी । इस का कोई खास कारण नजर नहीं आ रहा था पर दूरियां बढ़ रही थी और वे दोनों चिन्तित थे ।

वे शायद अब अपने कुत्ते रोजा से ज्यादा बातें करने लग गये थे और पहले की तरह एक दूसरे से पेश भी नहीं आते थे । आलिंगन और भोगविलास के लिये भी समय नहीं मिलता था ।

घण्टी सुनते ही कल्पना ने फोन उठाया और राखी को पा कर बड़ी खुशी हुई पर उस की सब दिन की चहचहाती चिड़िया आज कुछ उदास थी और उस के आवाज़ में पीड़ा भरा था ।

राखी रो रो कर अपना सब दुखः अपने माँ को बताया तब कल्पना ने बातें खतम करते हुये कहा, “बेटी तू चिन्ता मत कर मैं कुछ करती हूँ ।” और फिर फोन रख कर आशा के तरफ देख कर कहा, “हे भगवान! यह तो गजब हो गया ।”

आशा को कल्पना ने राखी के सब मुसीबतों से वाकिफ कराया और अपने पूर्व पति अशोक को तुरंत तार मार कर बुलाया । “अशोक, यह कल्पना है । मैं ने अभी अभी राखी से बातें की है और वह बहुत डरी हुई लग रही थी । शायद वह कोई बहुत बड़े मुश्किल में फंसी है । हमें उस को कोई उपाय से बचाना होगा । उस दिन शायद तुम ठीक ही कहते थे पर मै तुम पर बेकार नाराज़ हुई थी ।” कल्पना एक ही सांस में बोल गई ।

आज अशोक को कल्पना की बातें सुन कर उस दिन की बात याद आई जब उस ने उसे यही बात की चरचा की थी । पर तब कल्पना ने इस पर ध्यान ही नहीं दिया था । अशोक को नराज़गी तो आ रही थी पर यह सब उस के लाडली बेटी से सम्बंध रखती थी इस लिये वह अपने गुस्से को शान्त कर लिया और कल्पना की सब बातें सुनता रहा ।

थोड़ी देर में वे तीनों एक जगह पर उपस्थित हुये और सलाह कर के इस निशचय पर पहुँचे कि राखी को कुछ दिनों के लिये कोलेज से घर ले आना ही समझदारी होगी ।

“मैं आज रात को ही चला जाऊंगा राखी को लाने पर तुम उस को तैयार रहने को कह देना,” यह कह कर अशोक अपने घर वापस चला गया ।

घर पहुँच कर राखी के कमरे को ठीक ठाक कर के अशोक सीधे कोलेज के तरफ चल पड़ा । रास्ता लम्बा था पर अशोक को राखी के घर पहुँने में कम से कम तीन चार घण्टे तो लग ही जायेंगे इसीलिये वह मोटर को एक स्थाई रफतार से चलाता जा रहा था ।

रात के दस बज चुके थे जब अशोक राखी के घर के सामने एक हलकी सी सीटी बजाई । राखी को बचपन से ही इस निराले आवाज को पहचानने में कोई तकलीफ नहीं होती थी फिर भी उस ने खिड़की से झांक कर देखा । अपने पिता के चमकती हुई मेसैडिस को देख कर वह मारे खुशी के कूदने लगी और अपने माँ के कहने के मुताबिक वह जल्दी से अपना सामान उठाया, अपने घर को बन्द किया ओर निकल पड़ी ।

मोटर के पास पहुंचते ही उस के पिता ने उसे बड़े प्यार से उस के माथे को चूमा और आगे की सीट पर बैठने को कहा पर राखी खुद मोटर चलाना चाहती थी । अशोक ने सब दिन की तरह कह दिया, “आज नहीं बेटी , फिर कभी ।” यह बाप बेटी के बीज का सब दिन का मज़ाक था क्योंकि अशोक कभी अपनी गाड़ी किसी को चलाने नहीं देता था ।

“आने के लिये धन्यवाद पिताजी !” राखी ने कहा लेकिन बगल के झाड़ी से देखने वाली आंखों को किसी ने न देख पाई । प्रीतम ने गाड़ी का नम्बर ओर चलाने वाले के चेहरे को अच्छी तरह से

पहचान लिया था । मोटर चल पड़ी और थोड़े ही देर में राखी अपने पिता से बाते करते करते सीट को गिरा कर सो गई ।

लगभग दो घण्टे की गहरी नींद के बाद जब राखी जागी तब अशोक ने उस से अपने कठिनाईयों के बारे में पूछा ।

जब राखी अपनी दर्दनाक कहानी बताने लगी तब अशोक मोटर की रफतार कुछ कम कर के बड़े ध्यान से सब कुछ सुनता रहा और गुनता रहा कि आगे उस को कैसा कदम उठाना है जिस से उस की लाडली बेटी की जीवन फिर से सुखमय हो जाये ।

जब वे अशोक के घर पहुँचे तब तक राखी ने अपने पिता को अपनी सभी सम्सयाओं से वाकिफ करा दिया था ।

घर पहुँच कर वे आराम के नींद में सो गये और सबेरे उठ कर नहा धो कर जब बाप बेटी एक साथ हुये तब अशोक ने राखी को दिलासा दिलाते हुये कहा,"बेटी मैं यह नहीं जानता कि तुम को धमकाने वाले प्रीतम को किस ने बनाया है पर मैं यह अच्छी तरह से जानता हूँ कि तुम्हे किस ने पैदा किया है । मुझे पूरा विशवास है कि तुम उस दरिंदे के लिये नहीं बनी हो । तुम निशचिंत रहो और हम सब आप को इस तकलीफ से जल्द ही मुक्ती दिला देंगे ।"

बुद्धवार को कल्पना और आशा अपने दिन भर के कार्य की तैयारी कर रहे थे । आशा ने कल्पना को बताया कि आज उस को अपने खास बास्केट बोल टीम के साथ रहना था और उसे घर आने मे शायद देर हो जायेगी । कल्पना अपने दफतर के काम को जल्दी निपटा कर घर आ जायेगी । आज शाम को अशोक राखी को लेकर

उस के भविष्य के बारे में विचार करने उस के घर आने वाला था । आशा का न रहना ठीक ही था क्योंकि अशोक को आशा से मिलने जुलने में अच्छा नहीं लगता था ।

अशोक सब दिन आशा से दूर ही रहता था शायद इसलिये कि आशा ने ही उस के खुशी शादी सुदा जीवन को बिगाड़ दिया था और वह एक समलैंगिक व्यक्ति ठहरी पर अशोक ने कभी इस बात को कल्पना या आशा के सामने जाहिर नहीं होने दिया था । कल्पना को फिर भी इस बात का महसूस हो रहा था और शायद इसीलिये उसने आशा का घर देर में आने से एक रकम से खुश ही थी । पर इतफाक से आशा का काम जल्दी खतम हो गया और वह समय से पहले ही घर पहुँच गई ।

यह देख कर कल्पना ने कहा, "आशा ड़ियर, मैं नहीं चाहती की तुम राखी के मामले में आज के विचार विर्मश में हमारे साथ सामिल हो ।" यह सुन कर आशा चौंक पड़ी और गुस्से से आग बबूला हो उठी क्योंकि राखी से भले उस की कोई खून का नाता नहीं था पर फिर भी उस ने कई वर्षों से राखी की देख भाल या परवरिश करने में अपना पूरा सहयोग प्रदान किया था ।

जवाब में आशा ने कहा, "माय ड़ियर कल्पना, तुम शायद यह भुल रही हो कि मैं ने भी राखी के दुःख सुख में सदा बराबर का साथ दिया है और आज तुम मुझे उस से दूर रखना चाहती हो । यह तो मेरे लिये सरासर बे इनसाफी की बात है ।"

कल्पना कुछ कहने ही जा रही थी कि अशोक की गाड़ी राखी को लेकर आ पहुँची । राखी मोटर से उतर कर दौड़ती हुई सीधे आशा से जा लिपटी और फिर अपने मां से गले लगी ।

उन का कुत्ता रोजा भी राखी को देख कर नये नये आवाज़ करने लगा और कूदने लगा जैसे वह भी राखी का स्वागत कर रहा हो । राखी बचपन से ही रोजा से बहुत घुलमिल गई थी इसीलिये वह उस को बड़े दुलार करके बैठने को कहा तब घर के अन्दर चली आई ।

कल्पना ने अशोक और आशा को भी अपने बरामदे में चलने का इशारा किया और खुद जा कर एक आराम कुर्सी पर बैठ गई ।

उन सब के सामने एक बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो गई थी जिस का समाधान ढूँढना उन सब के लिये जरूरी हो गया था । अशोक आशा को वहां देख कर कुछ हिचकिचाया पर जल्द से कह दिया, "हम लोग कइ दिनों से इस मामले का हल खोज रहे हैं पर आज तक हम को कोई खास सफलता नहीं मिली है । राखी भी शायद अब हताष होने लगी है और हम सब से कुछ कहना चाहती है जिस से हम सब को सही अंदाज़ा हो जाये कि हमारा दुशमन कितना खतरनाक और चालाक है ।"

राखी आहिस्ते आहिस्ते अपनी सभी तकलीफों को सब को बारीकी से समझाया तब सब उस के दुःख को भलिभांति समझ गये ।

एक बात उन के समझ से बाहर की बात थी कि इतना अच्छा परवरिश के बावजूद भी राखी ने कैसे उस लुच्चे आदमी को

पहचानने में गलती कर दी और उसे उस रात में मनमानी करने का मौका दे दिया । लेकिन किसी ने भी राखी के उस रात के भूल के लिये कुछ और कहना उस के बड़े घाव पर नमक छोड़ने वाली बात मान कर चुपचाप समस्या का समाधान ढूंढने में लग गये ।

उस चिन्ताजनक विचार गोष्टी को आगे बढ़ाते हुये कई सलाह सामने लाये गये और सब ने यह महसूस किया की सच में वह प्रीतम नाम का दरिंदा कोई साधारण दुशमन नहीं है । उस चालबाज,चालाक और चंडाल राक्षस से उतने ही शक्ति और सावधानी से पेश आना चाहिये जितना किसी एक बुरे बर्ताव करने वाले आदमी के साथ होनी चाहिये । फिर भी सब से पहले शायद उस को डराने धमकाने से ही काम बन जाये इसलिये अशोक को उस का सामना एक पिता के हैसियत से करना जरूरी हो गया था ।

इस के लिये एक मर्द को दूसरे मर्द से मुतभेड़ होना बहुत जरूरी हो गया था । अशोक को उस शैतान से मिलना चाहिये और उसे कड़े से कड़े शब्दों में राखी से दूर रहने की चेतावनी देनी चाहिये । अगर इस पर भी वह न राजी को तो उसे कुछ पैसे की लालच दे कर भी दूर किया जा सकता है । थोड़ी देर इसी तरह तरक वितरक होती रही पर अन्त में यह फैसला लिया गया कि राखी प्रीतम को मिलने का जगह ओर समय निर्धारित करेगी जहां पर अशोक पहुँच कर उस का जोरदार सामना खुले आम करेगा । कोई भी तरह से चाहे डरा धमका कर या पैसे दे कर उस से राखी से न मिलने का वचन लेना जरूरी था ।

आखिर में अशोक और राखी इस योजना पर अमल करने चल पड़े । राखी ने प्रीतम को तार मारा और उस से मिलने के लिये सरताज नाम की एक आलीशान भोजनालय में शाम का भोजन करने के लिये राजी किया ।

शुक्रवार की शाम ठीक आठ बजे रात को उन का मिलन तय हुआ । राखी और अशोक के पास दो दिनों का समय था अपने योजना को जबरदस्त बनाने के लिये और वे समय आने पर पूरे तौर से तैयार थे । कल्पना ने अपने पास से पाँच हजार डोलर नकद का बन्दोबस्त कर दिया था ।

निर्धारित मुहुर्त से पहले ही राखी और अशोक सरताज होटेल में पहुँचे । राखी जा कर नियुक्त मेज़ के पास तीन सजाये हुये कुर्सियों में से एक पर बैठ कर प्रीतम का इन्तजार करने लगी ।

अशोक थोड़े दूर पर दूसरे कुर्सी पर छिप कर बैठ गया जहाँ से वह राखी और प्रीतम पर नजर रख सके । योजना के मुताबिक राखी के इशारा पाते ही अशोक उसी टेबल पर आ जायेगा और उन की मंसुबा शुरू हो जायेगी ।

रेस्टुरेन्ट खचाखच भरा था सब लोग अपने अपने धुन में थे । पास ही की शहर के होल की घण्टी ठीक आठ बजे बजना शुरू किया और प्रीतम का शानदार प्रवेश हुआ । पूर्व व्यवस्था के मुताबिक वेटर ने उसे सीधे राखी के टेबल के पास लाया और राखी के इशारे से वह बगल की कुर्सी पर बैठते ही कहा, “कैसी हो राखी ? तुम्हे फिर से देख कर बेहद खुशी होती है । मेरा दिल मारे खुशी के नांच उठा है । तुम आज बड़ी सुन्दर लग रही हो ।”

राखी ने होशियारी से कहती गई, "तुम अपने आदत से लाचार हो इस लिये अपने हरकत से अभी बाज नहीं आये हो । पर आज हम इस का अन्तिम फैसला करने आये हैं ।"

राखी के इन बातों से प्रीतम के तेवर चढ़ गये पर वह इस पब्लिक स्थान पर कोई तमाशा नही खड़ा करना चाहता था इसी लिये अपने आप को सम्भालते हुये कहा, "मैं सोचता हूँ की तुम पूरे तौर पर मुझे समझने की कोशिश नहीं करती हो या फिर मुझे पहचानने में भूल कर रही हो । जब मैं ने कह दिया कि मैं तुम्हारा आशिक हूँ , तुम्हें बेहद प्यार करता हूँ तो तुम को मेरे प्यार का कदर करना चाहिये । मेरे भी सीने में दिल है और इस दिल में भी भावनायें भरी हैं ।"

"प्रीतम तुम क्यों नहीं मुझे अकेले छोड़ देते हो और भूल जाओ ये सब झूठी प्यार व्यार की बनावटी बातें ," राखी ने जोश में आ कर कह गई ।

"यही सादगी पर तो मैं मरता हूँ पर यही तुम्हारी सब से बड़ी भूल है । तुम अपने जीवन की सब से बड़ी गलती कर रही हो ।" जैसे प्रीतम ने यह कहा कि अशोक वहाँ पहुँच कर उस को रोक कर कहा, "मैं सोचता हूँ कि तुम मेरी बेटी राखी की बातों को ध्यान से सुन ही नहीं रहे हो ।"

"नमस्ते प्रोफेसर साहब ! तस्रीफ रखिये !" प्रीतम ने अशोक के तरफ देख कर कहा । "आप से मिल कर बेहद खुशी हुई ।"

अशोक के बैठते ही प्रीतम ने एक व्यंगात्मक रूप से कहा, "राखी, हम दोनों प्रेमियों के बीच इन का आ जाना क्या कोई जरूरी है ? यह तो कबाब में हड्डी वाली बात हो गई है ।"

"आज हम एक ऐसी कबाब बना रहे हैं जिस में हड्डी की जरूरत पड़ गई है । मैं यहां इस लिये आया हूँ कि तुम को यह समझा सकूँ की जब राखी ***न*** कहती है तो उस का सही मतलब होता है सिर्फ ***नहीं*** और तुम को एक अच्छे इनसान के तरह एक ही बार कहने पर सुन लेना चाहिये की तुम्हें उस का पीछा बिलकुल छोड़ देना पड़ेगा ।" बड़े जोरदार शब्दों मे अशोक बोला ।

प्रीतम थोड़ी देर तक अशोक को परखता रहा और फिर कहा, "प्रोफेसर साहब, आप की यह बेफिजूल की डांट फटकार आप अपने कोलेज के विद्यार्थियों को दे सकते हैं पर मुझ पर इस का कोई असर नहीं पहुँचने वाला है । फिर भी कहिये आप का क्या इरादा है ?"

"मैं चाहता हूँ की तुम सीघ्र ही राखी के जिन्दगी से दूर हो जावो । मैं तुम जैसे आवारा लड़कों को अच्छी तरह से जानता हूँ, न कोई काम धन्धा है और न ही कोई पहचान है । बस बेशरम के तरह बेफिजूल पढ़े लिखे सीधी साधी लड़कियों को सताने निकल आते हो । जान न पहचान बड़ी बीबी से सलाम करने आ जाते हो । लानत है तुम को पैदा करने वाले पर । मेरा यहां आने का एक ही मकसद है और वह यह है कि तुम जैसे गिरे मख्खी को अपने दूध में से एकदम निकाल कर इतना दूर फेंक दूं कि दुबारा तुम हमारे बेटी राखी के जीवन में आने की कोशिश ही न करो ।" अशोक बड़े

गम्भीरता से अपने बेटी की पैरवी कर रहा था पर प्रीतम को इन सब बातों का तनिक भी असर नहीं हो रहा था ।

“अच्छा ! तो आप आज हम दोनों के पवित्र प्यार को तोड़ने पर तुले हैं पर ऐसे दखल देना आप जैसे समझदार लोगों को शोभा नहीं देता है । मेरी विनती है कि अगर आप हमारे बीच न आयें तो बेहतर होगा नहीं तो आप सब के लिये यह जंग बहुत महंगा पड़ेगा ।” यह प्रीतम की भी एक धमकी थी जिस को सुन कर अशोक मारे गुस्सा के कांप रहा था ।

“न जाने तुम किस मिट्टी पत्थर के बने हो जो तुम को एक साधारण सी निवेदन को समझने की शक्ति ही नहीं है । मुझे तुम्हारे पागलपन और नाटक को देख कर बड़ा दुःख हो रहा है । मालुम पड़ता है तुम से निपटने के लिये हमे कोई और रास्ता अपनाना पड़ेगा ।”अशोक कहता गया ।

“प्रोफेसर जी, आप शायद जानते होंगे कि प्यार में हमारे तरह आदमी अन्धा हो जाता है पर खुशी की बात यह है की मैं सब कुछ अच्छी तरह से देख सकता हूँ । मैं यह देख और समझ रहा हूँ कि आप अपने बेटी के निजी जिन्दगी के खुशी मे दखल दे रहे हैं और उस के खुशी में रुकावट बन कर खड़े हो गये हैं । आप को तो यह मालूम ही नहीं कि हम दोनों एक दूसरे के लिये ही बनाये गये हैं ।” प्रीतम का कहना हुआ ।

लेकिन अशोक इतने सहज से हार मानने वाला नहीं था, “मैं तुम को ठीक से नहीं जानता और न ही जानने की कोई चाहत है पर मैं

यह अच्छी तरह से जानता हूँ की मेरी बेटी तुम जैसे मक्कार के लिये नहीं बनी है इसीलिये मैं यही चाहता हूँ कि तुम मेरी बेटी के जिन्दगी से दूर हो जावो । मैं उस के लिये कोई भी कीमत चुका सकता हूँ जिससे तुम्हारे दिल और दिमाग से मेरी बेटी के लिये जो झूठा प्यार का भूत सवार है वह एकदम निकल जाये तथा तुम उस का पीछा बिलकुल छोड़ दो । बस अपना कीमत बताओ ।" इतना कह कर अशोक ने मेज़ पर कल्पना का दिया हुआ पैसे से भरा लिफाफा रखते हुये कहा ।

"अच्छा जी ! अब आप हमारे प्यार की कीमत लगाना चाहते हैं या फिर कोई मज़ाक कर रहे हैं ? लेकिन मैं आप को बता देना चाहता हूँ कि मेरा और राखी का प्यार का आप कोई भी कीमत नहीं लगा सकते हैं क्योकि वह बहुत ही बहुमूल्य है और अनमोल है । फिर भी इस लिफाफे में क्या है ये भी बता दीजिये जिस से मैं यह अच्छे से जान लूँ की आप हमारे पवित्र रिशते की क्या मोल लगाते हैं ।" प्रीतम एक सच्चे प्रेमी के तरह कहता गया ।

अशोक ने चाह कर भी प्रीतम की बनावटी बातें सुनता रहा पर कुछ सोच कर बोला, "मूरख लड़के, मैं ने तुम्हारे इन झूठी बातों का नहीं पर तुम्हारे हम सब से दूर हो जाने की कीमत पांच हजार डोलर लगाया है । इस रकम को तुम तभी ले सकते हो जब तुम हमें अपना वचन दे कर यह आशवासन दोगे की आज से तुम हमारे जीवन से एकदम दूर हो जावोगे और फिर कभी भी लौट कर हमारे कोई भी परिवार के सामने नज़र नहीं आवोगे । "

उस लिफाफे को उठाते हुये प्रीतम फिर से कहना शुरु किया, “अच्छा जी ! तो अब आप लोग हम को यह पैसा दे कर खरीदना चाहते हो , पर क्या हम ने कभी भी आप लोगों से इस तरह के रकम की मांग की थी ?” प्रीतम ने बड़े होशियारी से यह सवाल किया ।

“यह तो हम अपने मर्जी से तुम को दे रहे हैं ताकि तुम हमें अपना जबान दे कर हम सब से दूर हो जावो ।” अशोक ने जोश में आ कर कह दिया ।

“देखिये मैं आप लोगों का इनाम नहीं चाहता हूँ पर मैं आप लोगों से वादा करने को तैयार हूँ,” प्रीतम बड़ा चालाकी दिखाते हुये कहा और उस पैसे वाले लिफाफे को अपने कोट के जेब में रखते हुये फिर कहना शुरु किया, “मैं आप लोगों से यह वादा करता हूँ कि राखी के लिये मेरा प्यार अमर रहेगा, मैं राखी से प्यार करता हूँ, करता रहूंगा और उस के बिना मेरा जीना बेकार है । आज नहीं तो कल हम दोनो एक हो जायेंगे क्योंकि हम दोनो एक दूसरे के लिये ही बने हैं ।” इतना कह कर प्रीतम उठ खड़ा हुआ और बेशरमी दिखाते हुये चलता बना ।

प्रीतम तो उन को चकमा दे कर चूना लगा कर पैसे को ले कर चलता बना और राखी से न मिलने जुलने का कोई वादा नहीं किया । इस के बाद अशोक और राखी हक्के बक्के से एक दूसरे के मुंह देखते रह गये । जब वैट्रेस ने आकर खाने की ओडर लेना चाही तब अशोक ने निराश हो कर कह दिया, “आज नहीं, फिर कभी ! अभी तो हमारी सब भूख प्यास मर चुकी है । ”

वे दोनों आहिस्ते से उठे और अशोक अपने बेटी राखी को उस के घर छोड़ कर वापस अपने मकान की ओर चल पड़ा । उस के दिमाग में हज़ारो ख्याल उठ रहे थे पर उस के सामने उन का कोई सही जवाब नहीं था । वह इतना जरूर जानता था कि राखी और उस के परिवार को उन के मुश्किल से निकालना अत्यन्त जरूरी हो गया था ।

घर पहुँच कर अशोक ने सारी बातें कल्पना और आशा को बताया जिस को सुन कर सब लोग बड़े चिंतित हुये और असमंजस में पड़ गये कि अब आगे कैसे इस भयंकर मुसीबत से छुटकारा पाना है ।

उधर प्रीतम ने भी अपनी सभी हरकतों को और भी उत्तेजित कर दिया था । आखिर वह एक माहिर कोम्पिउटर हैकर जो ठहरा तो इसी लिये वह सब को सताने की कोशिश में लग गया था ।

अपने अवगुणों से पहले तो उस ने राखी के कोलेज के सभी रेकोर्ड़ को नष्ट कर दिये तथा उस के सभी परीक्षा में असफलता के चिन्ह भर दिया था । राखी के कोलेज के उपस्तिथि के सूचि भी बिगाड़ दी थी ।

कोलेज के प्रमुख ने राखी को अपने दफतर में बुला कर उस को सतर्क किया कि वो आजकल कोलेज के लेकचर में आती ही नहीं है और उस के परीक्षा के परिणाम गिर गये हैं । अगर ऐसा ही रहा तो उस को कोलेज से निकाल दिया जायेगा ।

लाख समझाने और अपना सफाई देने से भी उस की किसी ने न सुनी । प्रीतम अपने करतूतों से बहुत प्रभावित हो रहा था की उस

ने राखी को बड़े मुसीबत में डाल दिया था । प्रीतम यही सोच रहा था कि अब राखी की पढ़ाई में बाधा आ जायेगी तो हसीना मान जायेगी ।

राखी पर तो मानो कोई बहुत बड़ा पहाड़ ही टूट पड़ा था और वह पूरे तरह से हताश हो चली थी । अकसर राखी के घर और कोलेज के फोन में एक या दो घण्टी बज कर बन्द हो जाती थी और फोन उठाने पर किसी की आवाज़ नहीं सुनाई देती थी ।

राखी बड़े असमंजस में पड़ गई थी । वह सोच रही थी कि आज प्रीतम उस के सुखी जीवन में आग लगाये जा रहा था और वह कुछ नहीं कर पा रही थी । वह लाचार होती जा रही थी ।

जिस दिन राखी के कोलेज के सभी रेकोर्ड की गडबडी हुई उस के दूसरे दिन चोरी के इलज़ाम में उस को उस के पार्ट टाइम नौकरी से भी निकाल दी गई थी । वह तिलमिला गई ! रो पड़ी ! गुस्से से लाल पीली होने लगी ! पर कुछ भी न कर सकी । वो अपने कमरे में आई केवल एक इरादा लेकर कि वह उस पागल प्रीतम से बातें कर के सभी चीजों का फैसला कर लेगी ।

राखी ने प्रीतम के फोन का नम्बर लगाया और उस ने तीन घणटी के बाद ही फोन उठाया, “जी, कौन बात कर रहा है ?”

“बलड़ी गोड डेम ! तुम ठीक से जानते हो मैं कौन हूँ !” राखी ने डपट लगाया ।

“ ओ राखी ! मैं जानता था तुम मुझे जरूर फोन करोगी,” प्रीतम ने हँस कर कहा ।

“कुत्ता ! साला ! दोगला ! तुम ने हमारे कोलेज के सब रेकोर्ड नाश कर दिया है और चुगुली कर के मुझे मेरी छोटी सी नौकरी से भी निकलवा दिया । तुम किस तरह के गिरे हुये इनसान हो,” राखी ने गरज कर कहा पर प्रीतम चुप रहा और सुनता रहा ।

राखी कहती गई, “हम से दूर हो जावो ! मै तुम से नफरत करती हूँ ! तुम एक राक्षस हो ! बड़े गैर जिम्मेदार व्यक्ति हो ! मैं कभी भी तुम जैसे बेकार आदमी से न मिलना चाहती हूँ और न ही देखना चाहती हूँ । मैं सोच भी नहीं सकती कि तुम इतने नीचे गिर सकते हो और हम सब को इतने तकलीफ में डाल सकते हो अपने स्वार्थ के लिये । तुम एक बीमार और मलिच्छ आदमी हो । मैं तुम को अपने जिन्दगी से दूर रखना चाहती हूँ सब दिन के लिये । मेरी बात समझ में आई ?”

प्रीतम फिर भी चुप साधे रहा पर सब कुछ सुन रहा था । तब राखी ने चिल्ला कर कहा, “बेवकूफ आदमी, तुम सुन तो रहे हो । आज से हमारा तुम्हारा सब रिशता खतम ! खतम ! खतम! पूरे तौर से अन्त हो गई ।”

जब राखी चिल्ला चिल्ला कर प्रीतम को जली कटी सुना रही थी और उसे अपने जिन्दगी से दूर रहने को कह रही थी तब प्रीतम केवल इतना कह कर फोन रख दिया था, “राखी तुम गुस्से में और भी सुन्दर लगती हो और तुम्हारी बोली बाणी में और भी मिठास आ जाती है । मुझे आज की तुम्हारी बातें बड़ी अच्छी लगी । मैं उस दिन के इन्तजार में हूँ जब हम दोनों एक हो कर अपना जीवन बितायेंगे ।

सब दिन के लिये तुम मेरी हो जावोगी तब मैं तुम से जी भर के बातें करूंगा । पर आज बस इतना ही, फिर कभी मेरी जान !"

राखी की नराज़गी की कोई सीमा ही न रही पर जैसे ही प्रीतम ने फोन रखा वैसे ही राखी ने अपना फोन जोर से फर्श पर पटक दिया । फोन चकनाचूर हो गया ।

उस ने अपना सिर जोर से हिलाया, अपने मुट्ठी को मजबूत से बान्धा, दाँत कडकडाये और जोर से आवाज लगाई-*साला, कुत्ता, बेशर्म, राक्षश, नीच, गवांर, निर्दयी, मलिच्छ !*

वह अपने खाट पर पेट के बल लेट कर अपना मुंह छुपा कर रोने लगी । जब उस के सभी दुःख के आंसू बह निकले तब वह चित हो कर ऊपर छत की ओर एक टक ताकती रही और अपने भविष्य के बारे में सोचती रही ।

अचानक उसे याद आया कि आँसू कभी किसी के काम नहीं आते हैं । अब उसे जाग कर हिम्मत से कुछ करना चाहिये । ऐसा कई बार पहले भी वह सोच चुकी थी पर आज यह उस का ठोस विशवास था ।

अपने जीवन में इस अनिश्चिता या तबदीली से वह बड़ी बेचैन थी और उसे एक अजीब सा गुस्सा आ रहा था । जिंदगी में पहली बार उसे ऐसा लगा कि उसे अब इस दुनियां में कहीं भी छिपने की जगह ही नहीं रही तथा उस को स्वतंत्र रूप से रहने का अधिकार ही छीन लिया गया था ।

उस ने अपना टेलीफोन और कोम्पिउटर को एक शक के नज़र से देखने लगी थी और उन से दूर ही रहना चाहती थी । प्रीतम ने उस के खिलाफ इतने झूठे और बेबुनियाद अफवाहें फैला दिया था कि अब उस के अच्छे दोस्त भी उस से दूर होने लगे थे । गये दिन की चहचहाती राखी अब लगभग सभी दिन अपने आंखों में आँसू भरे फिरती थी । उस को पूरा विशवास हो गया था कि इन सब के पीछे उस दुष्ट प्रीतम का ही हांथ था ।

राखी के जीवन में तो एक भयंकर तूफान आ ही गया था पर अशोक के यूनिवेसिटी में प्रोफेसर की काम में दाखिल होने से पहले जो उस ने अपना व्यक्तिगत संक्षिप्त विवरण यानी रेसुमे दिया था उसे अब गलत,छली, ढोंगी और धोखाधड़ी का नाम दिया जा रहा था । इतना ही नहीं अशोक ने जितने भी पेशेवर लेख लिखे और छपवाये थे उन सब को अब साहित्यक डाकाज़नी या ग्रंथ चोरी का इलज़ाम लगाया जा रहा था ।

यूनिवेसिटी के प्रमुख ने प्रोफेसर अशोक त्रीपाठी को पलैजिरिजम का दावा कर के उन को तुरंत सफाई देने की मांग की थी नहीं तो उन पर कानूनी कार्यवाई भी की जा सकती थी । यह सब भी वही चालाक लोमड़ी कोम्पिउटर हैकर प्रीतम का ही काम था ।

अशोक ने एक लम्बी खत लिख कर अपने यूनिबेसिटी के अधिकारियों को समझाने की कोशिश की कि उस के पास जितने भी कागज़ात हैं वे सब असली हैं और उस के सभी लेख उस के अपने हैं । यह सब किसी की शरारत थी जो उसे बदनाम करने पर लगा था । उस ने उन को यह आशवासन दिलाया कि वह उस

जरिये को जल्द ही खोज निकालेगा जिस से उस के पेशे पर धब्बा लग गया था ।

अपने कोम्पिउटर हैकिंग के ज्ञान से ही प्रीतम ने वकील कल्पना के ट्रष्ट अकाउन्ट से पैसे गैर कानूनी रूप से निकाल कर उस के व्यक्तिगत खाते या अकाउन्ट में कर दिया था । इसी लिये कल्पना पर ट्रष्ट फंड के पैसे में गड़बड़ी करने के जुर्म में उस पर दावा किया गया और हो सकता था कि उस के वकीली के लाईसेन्स को रद्द भी किया जा सकता था ।

कल्पना ने भी अपने वकीलों के संसथा को यह समझाने की कोशिश की कि उस ने किसी के खाते में से गैरकानूनी रूप से पैसे की गडबडी कभी भी नहीं की थी और न ही कभी ऐसा होने देगी ।

वह सब किस ने किया उसे अभी नहीं मालूम था पर वह बहुत जल्द ही उस चोर को ढूंढ निकालेगी जिस से उस के नाम पर जो दाग लगाया गया है उस को एकदम से मिटा दिया जा सके ।

उधर आशा के स्कूल में एक बहुत बड़ा अफवाह फैल रहा था कि उस का नाजा़यज रिशता कुछ लड़कियों से कई दिनों से चल रही थी ।

इस विषय में कई लोगों का ईमैल प्रिन्सपल के पास आया था और स्कूल के अधिकारी आशा के बारे में पुलिस से छानबीन करने की मांग कर दी थी । यह भी वही होशियार लोमड़ी प्रीतम की ही काली करतूतों का नतीजा था ।

आशा ने भी अपने स्कूल के मुखिये के पास जा कर उन को आशवासन दिया कि वह कभी भी किसी विद्यार्थी के साथ कोई भी बेअदबी या बुरा बरताव नहीं की थी । वो भी उस चुगुलखोर की खोज में है जिस से उस के नाम पर लगे इलज़ाम से वह जल्द ही छुटकारा पा सके ।

इस पूरे परिवार पर पागल प्रीतम बिजली बन कर तड़प रहा था । वे बेचारे कुछ भी नहीं कर पा रहे थे क्योंकि वह इतने चालाकी से सब कुछ कर रहा था । किसी के पास कोई सबूत नहीं छोड़ता था पर अपने घिनौने काम करते जा रहा था । यह उस के पागलपन की हद थी लेकिन सभी बुरे काम का अन्त जरूर होता है । ऐसा ही प्रीतम का भी होगा ।

इस अन्धेर या बुरे कर्मो का खात्मा कब होगा और कैसे होगा ? इन स्वालों के सही जवाब अशोक को कल्पना और आशा के साथ हो कर जल्दी ही ढूंढ निकालने की आवशयकता थी नहीं तो उन सब के काम और नाम बहुत बिगड जायेंगे ।

बस यही समझ लो कि प्रीतम राखी से अपने प्यार को कबूल कराने के लिये सब के नाकों में दम कर रखा था । पूरे परिवार के जिन्दगी में खलबली मच गई थी ।

वे सब बिलकुल हतास हो गये थे पर उन की हिम्मत ही उन को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती थी । रातो रात राखी को गायब करने का पलेन बनाया गया और उसे होंगकोंग के युनिवेसिटी के छात्रव्र ति के बहाने उस के घर से गायब कर दिया गया था । प्रीतम को

चकमा दे कर राखी को आशा के माता सुशीला के घर दूर गाँव में रहने के लिये भेज दिया गया था ।

पर इस राज को पूरे तरह से प्रीतम से छुपा कर रखना कोई खेलवाड़ नहीं था । वह दूसरे ही दिन राखी का पीछा करते हुये आशा के माँ सुशीला के घर उसी गाँव में पहुँचा । सुशीला एक दूर गाँव में रहती थी जहां यातायात की सुविधा बहुत कम थी । पर पागल प्रेमी प्रीतम के लिये राखी को खोज निकालना उस के बांयें हांथ का खेल था ।

प्रीतम की मुतभेड़ जब सुशीला से हुई तब सुशीला ने राखी का पता छिपा कर रखना चाहा पर प्रीतम बेधड़क सुशीला के घर के अंदर घुस कर राखी को खोज निकाला ।

इस पर सुशीला को बहुत नराजी आई और वह अपने स्वर्गवासी पति का बन्दूक लेकर प्रीतम को मार ड़ालने की धमकी दी । प्रीतम को घर से बाहर जाने को कहा ओर अपने पीछे अपना दरवाजा बंद कर के राखी को अंदर रहने को कह कर एक गोली प्रीतम के पैर के नजदीक चलाती हुई बोली, “तुम अगर एक मिनट में अपने मोटर के अंदर न गये और यहां से गायब न हुये तो इस पिस्तोल की अन्य पांच गोलियां तुम्हारे सीने में उतार दूंगी । फिर पुलिस को बाद में बुलाउंगी ।”

प्रीतम को शायद पहली बार कोई ऐसा जोड़ तोड़ वाला मिला और उसे ऐसा लगा की उस की जान खतरे में है तब वह दुम दबा कर भागने को तैयार हो गया पर जोस में यह कहता गया, “सुशीला जी, आप के बुढ़ापे का लिहाज़ कर के आज तो मैं जा रहा हूँ पर मैं

आप से फिर मिलुंगा तब राखी मेरे बाहों में होगी । तब तुम सब लोग अपने हांथ मलते रह जावोगे । फिलहाल तुम लोग हमारा कुछ नहीं कर सकते हो क्योंकि हम ने कोई भी कानून को नहीं तोड़ा है ।"

इतना सुनते ही सुशीला ने एक और गोली हवा में चलाई और प्रीतम सीधे भाग पड़ा । खौफनाक मौत को अपने सामने खड़ी देख कर कौन ऐसा इनसान है जो डरेगा नहीं और अपने बचाव में कुछ करेने को न सोचेगा ? भले प्रीतम एक बुरा आदमी था पर मौत को समीप देख कर वह भी सहम गया और चलता बना ।

प्रीतम से तो सुशीला फिलहाल छुटकारा पा गई थी पर घर के अंदर जाते ही दोनों स्त्रियां, सुशीला और राखी, डर के मारे कांप रही थी । प्रीतम के आने से और राखी की पूछताछ से उन के दिल और दिमाग पर जो चोट पहुँची थी उस से वे दोनों बड़ी चिन्तित हो रहीं थी । बिना कुछ आगे सोचे समझे वे दोनों वहां से रातों रात चुपचाप अपने मोटर में बैठे और चल पड़ीं ।

रास्ता लम्बा था पर उन्हे जल्दी पहुँचना था इसलिये गाड़ी भी रफतार से चल रही थी । शहर के पास आने पर उन के जी में जी आया क्योंकि अगर कोई मुश्किल आई भी तो मदद अब नजदीक थी ।

दूसरे दिन मध्यान तक वे कल्पना और आशा के घर पहुँचे तब उन के सांस में सांस आया । अपने आने का कारण समझाते हुये वे प्रीतम के धमकी और बदतमीजी के बारे में भी साफ साफ बताना

उचित समझा जिस से सब को उस पागल के नियत का अंदाज़ा लग जाये ।

आशा और कल्पना ने उन दोनों की बहादुरी और हिम्मत की दाद दी तथा सराहना करते हुये उन को अपने घर में पनाह दिया । आगे क्या करने को है यही सोच कर कल्पना ने तुरंत अशोक को तार दे कर अपने घर बुलाया जिस से कोई ठोस योजना बनाई जाये ।

अशोक के आते ही विचार गोष्टी फिर शुरु हुई कि किस तरह से वे सब उस पागल प्रीतम से छुटकारा पा सकते थे । अब वही उन सब के हंसता खेलता जीवन का बहुत बड़ा समस्या बन गया था । उस के काले करतूतों का अन्त होना उन के परिवार के लिये निहायत जरूरी हो गया था ।

अब प्रीतम के सब खेलों का खातमा होना था नहीं तो उन के परिवार की सुख शान्ति नाश होती जायेगी और अब यह सब उन के सहन शक्ति के बाहर की बात हो गई थी ।

उन के आखिरी योजनाये बन चुकी थीं बस उन की तामील या पूरा करने की जरूरी रह गई थी । आशा को उस दरिंदे प्रीतम के घर और रहन सहन के बारे में बारीकी से पता लगाने का कार्य सौंपा गया ।

अशोक उस के बचपन और माता पिता के बारे मे तहकीकात करने को चल पड़ा ।

कल्पना ने सब कानूनी सलह और तर्क वितर्क की खोज में जुट गई जिस से सभी पर लगाये हुये झूठे इलजामों से एकदम छुटकारा पाया जा सके ।

सुशीला को घर पर ही रह कर राखी की सुरक्षा करने को कहा गया । सब लोग अपने अपने काम में तुरंत लग गये ।

फिलहाल एक दिन सुबह राखी ने हताष हो कर अपने माँ से बोली ,"अम्मा मैं ही इन सब तकलीफों की जड़ हूँ और इस से छुटकारा पाने के लिये मैं सोचती हूँ कि मै ही कोई जहर खा के अपनी जान दे दूँ तभी हम सब को शान्ति मिलेगी ।"

यह बात को सुनते ही कल्पना के होश उड़ गये और वो राखी को समझा बुझा कर शान्त किया और सब काम छोड़ कर तुरन्त अपने एक पुराने जांच पड़ताल करने वाले इनबेस्टीगेटर मनोहर लाल को समपर्क किया ।

मनोहर पहले पुलिस की नौकरी करता था पर आजकल वह अवकास ले कर अपना एक छोटा सा दफतर खोल रखा था जहां से वह सामोहिक अपराध से सम्बन्धित जाँच पड़ताल किया करता था ।

कल्पना ने मनोहर से राखी की खुदकुशी करने का विचार तथा उस के सब दुःख तकलीफों का बखान और प्रीतम की छेड़खानियों को बिस्तार पूर्वक बताया । ''मनोहर साहब, मेरी बेटी बड़े तकलीफ में है । मैं चाहती हूँ की आप इस प्रीतम के बारे में छान बीन कर के

हम को उस के बारे में बताओ ताकि हम यह जान सके की हमे उस के साथ कैसे पेश आना चाहिये ।"

"कल्पना जी, मेरे रेकोर्ड में इस हैवान के लिये कई जानकारी है । वह छोटी मोटी चोरी,सड़क पर लड़कों से लड़ाई, गाली गलौज, पड़ोसियों से झगड़ा झंझट तथा कोम्पिउटर की अपराध में माहिर है । मेरे ख्याल से इस को हमारे थोड़े से डराने धमकाने से ही काम चल सकता है । बिहान शनिवार है और मैं अपना काम अपने मन से कर के आप को पूरा रिपोट दे दूंगा ।" मनोहर ने कहा ।

बस अब क्या था कल्पना ने मनोहर से उस की फीस तय कर के उसे तुरंत काम पर लग जाने को कहा । मनोहर अपनी सब योजना बना कर दूसरे ही दिन प्रीतम के घर के पास ही अपनी गाड़ी रोक कर उस के दरवाजे पर दसतक दिया । प्रीतम ने दरवाजा खोला और मनोहर जैसे लम्बे चौड़े आकार के आदमी को देख कर बोला, "तुम हो कौन और तुम को क्या चाहिये ?"

मनोहर एक बड़े आकार का तगड़ा और लम्बा चौड़ा पुरुष था इसलिये वह जल्दी से प्रीतम को भीतर ढकेल कर खुद भी उस के घर में घुस कर भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया ।

"हमारे ही घर में और हम से ही सीना जोरी ! यह कहां का अन्याय है ?" प्रीतम घबड़ा कर बोला ।

"अभी तुम ने मेरा पूरा कमाल देखा कहां है कुत्ते ! आगे आगे देखते जाओ मैं तुम्हारा क्या बुरा हाल करता हूँ । मैं ही तुम्हारा काल बन कर आया हूँ और मैं ही तुम्हारे होश उड़ा दूंगा ।" मनोहर प्रीतम को

धक्के मार कर एक कोने में कर दिया और उस के गाल पर एक जोर का तमाचा लगाया जिस से वह तिलमिला उठा ।

“मैं घूंसे भी मार सकता हूँ और मेरे पास पिस्तोल भी है जिसे मैं तुम पर चला सकता हूँ । देखो इस पर मेरा नाम लिखा है और यही अवजार तुम्हें सीधे रास्ते पर जरूर ला देगी । पर शायद इन की जरूरत ही नहीं पड़े अगर तुम सीधे से राजी हो जाते हो तो ।”मनोहर प्रीतम का गला पकड़ते हुये कहा ।

“तुम को जो भी चाहिये मैं देने को राजी हूँ ।”प्रीतम भय से कांप रहा था ।

“मै एक लड़की के बारे में तुम को बताने आया हूँ । उस का नाम है राखी जो कोलेज की एक बड़ी होशियार छात्रा है जिस का बहुत अच्छा भविष्य है । वह एक महान परिवार की होनहार इकलौती बेटी है । कोई भी तरह से वह तुम जैसे आवारा, नीच, चोर, चंडाल और गुण्ड़े से कभी भी भूल कर नाता नहीं जोड़ना चाहती है । इसलिये मैं तुम को चेतावनी देने आया हूँ जिस से तुम उस परिवार को सताना बन्द करो और उस लड़की से एक दम दूर हो जाओ ।” इतना कह कर मनोहर ने प्रीतम का कान पकड़ कर खींचा और कनपटी पर एक और जोरदार तमाचा लगाया ।

बगल के मेज पर प्रीतम का लेपटोप था जिस से प्रीतम खबरे भेज कर सब की जिन्दगी तबाह करता था । मनोहर ने उस लेपटोप को उठाया और फर्श पर जोर से पटक कर तोड़ फोड़ दिया और उस को अपने पैरों से कुचल कर एकदम नाश कर दिया जिस से वह फिर काम में न आ सके ।

प्रीतम को दुःख तो बहुत हुआ पर आज मनोहर जैसे ताकतवर दुशमन के सामने लाचार था । वह करे तो क्या करे बस हांथ जोड़ कर माफी मागना शुरू किया और गिड़गिड़ा कर बोला,“आज से हमारी सब हरकतें और सताना बन्द । मैं आज रात को ही इस शहर को छोड़ कर चला जाऊंगा और कभी भी लौट कर उस लड़की को नहीं छेड़ुंगा । यह मेरा वादा है मेरे यार बस मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो ।”

“यह अच्छा हुआ की तू ने जल्दी ही मान ली वरना आज तो मैं तेरी हड्डी पसली सब तोडने आया था पर यह याद रखना अगर तू अपने जबान से मुकर गया तब मैं तुझे खोज निकालुंगा चाहे तू कहां भी रहेगा । समझा?” यह कह कर मनोहर प्रीतम को एक और तमाचा लगाया और अपना पिस्तोल लिये बाहर निकल गया ।

प्रीतम थोड़े देर तक चुपचाप वहीं फर्श पर बैठा रहा और सोचता रहा । रात हो गई और उस को मनोहर की दी हुई शारीरिक ओर मानसिक चोट की पीड़ा सता रही थी । उस रात को वह अपने घर से निकला और सीधे मनोहर के दफतर का पता लगा कर वापस आ गया । किसी प्रकार सब पीड़ा लिये वह सो गया ।

रविवार को सबेरे जब प्रीतम की नींद खुली तब सूरज निकल चुका था और लगभग नौ बज चुके थे पर उस के दिमाग में मनोहर की फटकार और मार खटक रहे थे । वह उन सब घटनाओं को जितना भूलना चाहता था वे सब उस को उतना ही याद आते और सताते थे ।

उस को अपने आप पर गुस्सा आता था की कैसे वह अपने ही घर में मनोहर का कैदी बन कर उस के झिड़कियां सुनता रहा और मार खाता रहा । उस पर होने वाले कोई भी बेरहम हमले या हिंसात्मक हादसे का बदला लेना उस के लिये एक खेल था । वह योजना बनाने लगा अपने अगले वार का ।

उस सोमवार को मनोहर ने कल्पना के पास एक रिपोट भेजा जिस में उस के फीस की इनबोइस थी और यह लिखा था कि आज से उन के सभी तकलीफों की अन्त हो जायेगी और उन को सताने वाला शहर छोड़ कर चला गया है । कल्पना को यह खबर सुन कर विशवास ही नहीं हो रहा था पर उसे मनोहर की बातें माननी पड़ी क्योंकि उस रिर्पोट में प्रीतम के घर में जो कुछ भी हुआ था उस का विस्तृत विवरण लिखा था ।

प्रीतम से उस के र्दद सहे नहीं जा रहे थे इसीलिये जब मनोहर अपने दफतर को बन्द कर के अपने घर चला गया तब प्रीतम ने अपना काम शुरू किया । वह बड़े तरकीब से मनोहर के दफतर के अन्दर गया और उस में के सभी चीजों को तहस नहस कर डाला । मनोहर के कोम्पिउटर के सभी लिखित प्रमाणों को एकदम से मिटा दिया ।

वह उस पिस्तोल को उठाया जिसे मनोहर दिखा कर उस को डरा धमका रहा था । उस पर लिखे मनोहर के नाम को उस ने चूमा और अपने बेग में रखते हुये कहा, “मनोहर साहब ! यही तमंचा तुम्हारा काल बन कर आ रही है । अपने आप को बचाना सको तो

बचा लो पर इस का कोई उपाय अब तुम्हारे पास है ही नहीं । मेरा इंतज़ार करो !”

तिजोरी में कुछ पैसे थे उस को भी ले कर प्रीतम अपने अगले परियोजन या प्रोजेक्ट पूरा करने को निकल पड़ा ।

प्रीतम ने यह पता लगा लिया था कि मनोहर सब दिन अपने कलब में अपनी शाम बिता कर रात को दस गयारह बजे अपने घर जाया करता था पर उस रात को मनोहर अपने घर पहुँचने से पहले ही दम तोड़ दी थी ।

मंगलवार को सुबह जब शहर की कचरे वाली लोरी कचरे की बिन उठा रही थी तब उन को एक बिन में किसी की बुरी तरह से बिगड़ी हुई लाश मिली थी । इस लाश को पहचानना मुश्किल था इसलिये उस की जांच करने के लिये पुलिस वालों ने अस्पताल भेज दिया था ।

कल्पना को मनोहर के रिपोर्ट मिले दो ही दिन बीते थे की शहर के बुद्धवार के दैनिक समाचार पत्रिका के मुख्य पृष्ट पर छपे हुये चित्र और खबर को पढ़ कर कल्पना कांप उठी ।

किसी ने मनोहर की हत्या बड़े बेरहमी से कर दी थी और हत्यारे ने कोई भी सबूत नहीं छोड़ा था जिस से किसी पर शक की जाये और किसी को गिरफतार किया जाये । जिस बेरहमी से हत्या की गई थी उस को देख कर पुलिस ने इस में किसी अपराध गिरोह या गरुप का हांथ समझा था ।

कल्पना ने एक लम्बी सांस ली और सोचने लगी की क्या होगा जब पुलिस उस के तरफ आयेगी तहकीकात करने और पता चलेगा की उस ने ही मनोहर को प्रीतम के पास भेजा था । लेकिन उस को सबूरी मिली की कहीं भी इस हत्या काण्ड में प्रीतम का नाम नहीं था पर फिर भी उन्हों ने मनोहर के भेजे हुये रिपोर्ट और इनबोइस को रद कर दिया था ।

उधर प्रीतम अपने आप से बहुत खुश हो रहा था यह देख कर की उस ने अपने सभी कामों को बड़े चाव से और दिल लगा कर तथा बड़े लगन से करते चला आया था ।

अशोक, कल्पना, आशा और राखी के जीवन में इतना जहर घोल दिया था की उन सब के तीखेपन से वे सब चीख रहे थे । उस के लिये अब सबर करने के सिवाय और कोई चारा ही नहीं था । उस की खुशी उस फिल्म के ड़ायरेक्टर की तरह थी जिस की फिल्म उस के मन और चाहत के मुताबिक बन रही थी ।

प्रीतम अपने कमरे के एक आराम कुर्सी पर बैठा हुआ अपने ख्वाबों की दुनियां में झूम रहा था । उस की आंखें बन्द थीं और उस का चंचल और पापी मन राखी के सपने में खोया हुआ था ।

राखी उस हसीन रात की तरह आज फिर बेपर्द अपने खाट पर लेटी थी और वह उस के सिर से पैर तक की अलहड़ जवानी की कुदरती सुन्दरता और बनावट के बारे में सोच रहा था । राखी के एक एक अंग को वह मन ही मन निहार रहा था और मजे ले रहा था । उस के ख्याली स्पर्श से वह उत्तेजित हो रहा था और अपने मन को काबू में लाने की कोशिश कर रहा था ।

कब राखी उसे फिर मिलेगी जब वह उस को अपना सब प्यार उस पर निवछावर कर देगा ? आज ! कल! परसों ! यह सब उसे नहीं पता था पर फिर भी वह बड़े बेसबरी से उस शुभ दिन का इन्तज़ार में अपना नीरस जीवन बिता रहा था ।

वह यह मानने को तैयार ही नहीं था कि यह सब केवल उस का पागलपन था, उस की मस्ती थी, उस की झूठे सपने थे या उस की अपनी भूल थी । यह ताजुब की बात थी कि उस को कभी भी ऐसा नहीं लग रहा था की उस के सभी बुरे कारनामों का भणडा एक न एक दिन जरूर खुलेगा पर तब बहुत देर हो चुकी होगी ।

अभी कुछ दिनों से प्रीतम राखी का पता नहीं लगा पा रहा था और वह पागलों के तरह उसे ढूंढता फिरता था । उसे यह संदेह था कि जब राखी सुशीला के साथ गाँव से लौटी थी तब वह कल्पना के ही साथ होगी ।

ऐसा सोच कर वह उन के घर के तरफ बढ़ा । वह यह ठीक से जानता था कि कल्पना अपने दफतर में थी और आशा तो स्कूल के खेलकूद में जुटी होगी । प्रीतम अपने राखी की खोज में चल पड़ा । उसे यह सोच था कि राखी किसी और के साथ न चली गई हो ।

प्रीतम ने कल्पना के सूने घर के पीछे वाले दरवाजे को बड़े आसानी से अपने तरकीब से खोल लिया और धीरे से पर बड़े सावधानी से अन्दर चला गया । वह अपने आप में बडबडा रहा था-*वो अगर मेरी न बन सकी तो वो और किसी की नहीं हो सकती ।*

वह राखी के खोज सभी कमरे में कर चुका था और अब बाहर ही जाने वाला था कि आशा का कुत्ता रोजा उस पर झपट पड़ा । प्रीतम ने रसोई की छुरी उठाई और रोजा का भी काम तमाम कर दिया । उस को जब राखी वहां नहीं मिली तब उस की नाराज़गी बढ़ गई थी ।

राखी उसे वहां नहीं मिली क्योंकि वह सुशीला के साथ अपनी खुद की जंग की योजना बनाने कहीं बाहर गई थी । इस मामले में सुशीला और राखी की अलग खिचड़ी पक रही थी ।

उन का पलेन प्रीतम से बदला लेने का था और वे अब अहिंसा और कोई अन्य तरीके को अपनाने के लिये तैयार थीं । सुशीला उस दिन पिस्तोल चला कर अपना हिम्मत बढ़ा चुकी थी और उसे अशोक, कल्पना और आशा के पलेन में कोई दिलचस्पी नहीं थी ।

वह राखी के लिये ढाल बन कर खड़ी हो गई थी और समय आने पर प्रीतम की जान भी ले सकती थी पर वह ऐसा कर के अपने हांथ गन्दे नहीं करना चाहती थी ।

जब वे दोनों दोपहर को घर पहुँची तो रोजा को खून से लथ पथ फर्श पर पड़ा देख कर चीख उठीं और तुरंत कल्पना को खबर दीं ।

जब सब लोग घर पहुँचे तब कुत्ते की मौत तथा अंदर की उथल पुथल देख कर उन के होश ठिकाने पर नहीं रहे । अशोक को भी फौरन बुलाया गया । पुलिस आई, छानबीन हुई पर कोई सुराख या सुबूत नहीं मिले ।

उन के पास केवल किसी पर सन्देह या शक करने के सिवाय और कुछ नहीं था । हो न हो यह काम भी उसी शैतान प्रीतम का था । ऐसा घिनौना हरकत केवल वैसे ही नीच विचार के लोग कर सकते थे ।

अशोक मारे गुस्से से कमरे में इधर से उधर चल रहा था और बड़बड़ा रहा था ।

- उस दरिंदे को रोकने के लिये हम ने जो भी तरीके अपनाये वो सब अभी तक बेकामिल साबित हुये । हम ने उचित तरीका अपनाया, शक्ति भी काम मे लाई, रिशवत भी दिया, धमकी भी दी और क्या क्या नहीं किया पर हमें आज तक कुछ भी सफलता नहीं हासिल हुई ।

हम उस राक्षस को अपने से दूर रखने में असमर्थ रहे । उस ने हमारे जिन्दगी में जहर घोल दिया और एक भयानक उथल पुथल ला दिया जिस से हमारे पेशा, हमारा परिवार, हमारी पूरे जीवन को भ्रष्ट कर दिया है । हम एक डर और भय की दुनियां में रहते हैं । लानत है हम पे जो हम ऐसी दुखित जीवन बिता रहे है ।

परिवार के सब लोग इस सच्चाई को चुपचाप सुन रहे थे पर कल्पना ने याद दिलाया कि उन का आखिरी योजना अभी बाकी है और उन सब को उस पर सीघ्र ही अमल करना चाहिये ।

मैं सभी सम्भव कानूनी तर्क वितर्क की खोज करूंगी जिन के जरिये इस तकलीफ से हम छुटकारा पा सकें ।

अशोक प्रीतम के बचपन और उस के परिवार के बारे में पता लगायेगा और आशा उस दरिंदे का साया बन कर उस का पीछा करेगी जिस से उस की रोजीना कार्य और घर की बारीकी से पता चल सके ।

कल्पना जैसे कोई सपने से अचानक जाग गई थी और उस के मुँह से यह आह निकल पड़ी, “चलो अपने कल्याण के लिये अब हम सब अपने अपने काम को लगन से करें ।” इस कथन के बाद सब का बिसरजन हुआ और सब अपने अपने काम पर लग गये ।

सुशीला और राखी आज से उसी घर के चार दिवारी के अंदर रहेंगी । सुशीला,जिन को यह खेद था कि वो उस दिन प्रीतम को मौत के घाट न उतार सकीं जब उन को वह मौका मिला था, अब राखी के लिये कोई ठोस सुरक्षा का प्रबंध करने लगी थी । सुशीला सोचने लगी कहीं फिर से वह पागल प्रीतम राखी को सामना करने न आ जाये ।

‘ इस सतरंज के लड़ाई में मैं किसी भी कीमत पर यह नहीं चाहती हूँ कि वह हम से पहले अपनी अगली कोई भी चाल चले । सुशीला के सामने अब एक चुनौती खड़ी हो गई थी । एक बार उस ने प्रीतम की जान बक्स कर जो गलती कर चुकी थी उस का प्रायस्चित अब वह कर रही थी । उसे फिर कुछ वैसा ही करने की इक्षा हो रही थी । जब सब अपने काम में व्यस्त रहेंगे तब उस को भी राखी के साथ कुछ अजूबा दिखाने का मौका शायद मिल ही जाये । पर उस का रास्ता बदल चुका था । वह प्रीतम से छुटकारा चाहती थी पर

उस पर कोई जादू टोना कर के उस को अपाहिज बना देना चाहती थी जो उस के लिये उम्र कैद से भी भयानक साबित होगा ।'

अशोक पहले पहल प्रीतम के पुराने हाय स्कूल के प्रिन्सिपल से मिल कर उस के बारे में सब जानकारी ले ली फिर अशोक को प्रीतम के दो पुराने अध्यापकों से भेंट हुई । प्रीतम के दो चार सहपाठी भी मिले और इन सब से बहुत सारी तथा खास जानकारी प्राप्त हुई ।

उस के स्कूल के लोगों से यह पता चला कि शुरु शुरु में प्रीतम एक बहुत ही होशियार विद्यार्थी था पर आहिस्ते आहिस्ते अपने साथियों के और अपने वातावरन के प्रभाव से वह बिगड़ता चला गया ।

उस को सुधारने की कोशिश जारी थी पर न जाने उस के अंदर किस तरह की आग जल रही थी । उस के माँ बाप के अपने घर के झगड़े और नशे के हालत में लगातार मार पीट और गाली गलौज से वह तंग रहता था । वह सभी को अविशवास की नज़र से देखता था । सब दिन वह कुछ भयानक योजना ही बनाने में जुटा रहता था । कोम्पिउटर को काम में लाने में वह बहुत माहिर था ।

"अगर वह चाहता तो कक्षा में उस को ऊंचे दरजे मिलते थे लेकिन अगर किसी शिक्षक से मुठभेड़ हो गई तो उस शिक्षक की नौबत आ जाती थी । उन की मोटर, घर, परिवार और पेशे पर वार होते थे तथा उन के ऊपर कई अन्य मुसीबतें खड़ी हो जाती थी । वह सब दिन से बड़ा चालाक था इसलिये उस को रंगे हाथों पकड़ना नामुम्किन था । जिस दिन उस ने स्कूल छोड़ा हम सब लोगों के

खुशियों का सीमा ही नहीं रहा । पर फिर वह अपने माँ बाप पर एक बड़ा बोझ बन बैठा था ।" स्कूल के प्रिन्सिपल साहब ने अशोक को बताया ।

उसी स्कूल की एक अध्यापिका ने अशोक को और जानकारी दी, "श्रीमान जी, मैं ने उस बिगड़े बाबू को आखिरी ग्रेड में पढ़ाया था । उसे सदा लड़कियों को छेड़ने में बड़ा मजा आता था और मूरख लड़कियां भी उस के तरफ खिंची चली जाती थीं शायद इस लिये की वह देखने में खूबसूरत था । मैं तो सब दिन सोचती थी कि वह अब तक कोई जेल की हवा खा रहा होगा ।"

पूछने पर वहीं से प्रीतम के माता पिता के घर का पता भी मिला और अशोक के लिये आगे का काम सरल हो गया ।

दूसरे ही दिन सुबह अशोक उस पते पर पहुँचा जहां प्रीतम की परवरिश हुई थी । अशोक एक ऐसे वातावरन में पहुँच गया था जहां पुराने टूटे फूटे सड़क, घर, मोटर और बेकार शराबी लोगों की भरमार थी और बड़े अजीब तथा बेकार लोग ही नज़र आ रहे थे । उसे लगा की वह स्थान कोई झोपड़ पट्टी से कम नहीं थी और वह एक अनजान जगह पर आ गया था ।

प्रीतम के पिता की पड़ोसन अशोक के बने ठने पौशाक को देख कर हँस रही थी । यह पड़ोसन फटे कपड़े में, बिखरे हुये बाल लिये, मुंह में जलती हुई तम्बाकू की चसक लेती और नंगे पैर चलती आ रही थी ।

अशोक ने उस महिला से बातें करने के इरादे से उस से पूछा, "यहां कहीं प्रीतम के पिता जी रहते हैं । उन का नाम झगरू है । क्या आप उन को जानती हैं ?"

वह महिला रुकी और खुल कर कहने लगी, "मैं तो यहां कुछ ही दिनों से रहती हूँ पर सुनने में आया है कि बूढ़ा झगरू तो यहां बाबा आदम के जमाने से रहते हैं । उस की यहां किसी से नहीं पटती है क्योंकि वह एक तो शराबी है और दूसरे उस की गाली गलौज बड़े अशलील और बुरे लगते हैं । वह अपने आप को अपाहिज कह कर सरकार से पैसे उठाता है और दिन भर नशे में झूमा करता है ।"

"और उस के अन्य परिवार कहां है ?" अशोक ने पूछा ।

" सुना है उस की बीबी बहुत पहले बन्दूक से दग कर मर गई थी और उस का एक ही लड़का कहीं आवारागर्दी कर रहा है । तुम झगरू से मिलना चाहते हो तो बगल के दरवाजे को जोर से खटखटावो तो वह सुन कर शायद बाहर निकले ।" महिला ने कहा और अपने झोपड़ी के अन्दर जाने वाली थी कि उसे कुछ और याद आ गई ।

"हाँ ! मुझे यह भी पता है कि उन दिनों झगरू के घर हर शनिवार को पुलिस का आना जरूरी था क्योंकि नशे की हालत में वह अपने बच्चे और पतनी को बहुत मारता था । कभी किसी का दाँत टूटता था तो कभी किसी का सिर फूटता था पर साधारण चोट खरोच तो रोजाना हुआ करता था । अस्पताल के इमेजेन्सी विभाग में अगर

इस परिवार से कोई किसी दिन न गया तो वह शायद असमंजस की बात हो जाती थी ।” महिला ने कहा ।

“प्रीतम शायद बारह या तेरह साल का था जब उस की माँ, जो केनसर से पीड़ित थी और पीड़ाहरने वाले अवषधियों पर निर्भर थी , अचानक गुजर गई थी । अफवाह उठी थी की झगरू और उस की बीबी शराब के नशे में चूर थे और उन में किसी बात पर झगड़ा शुरू हो गया । बस झगरू की बीबी ने बन्दूक उठाया झगरू को मारने के लिये पर उस मुठभेड़ में बन्दूक अचानक चल गई और उस की बीबी उस का शिकार हो गई । बेचारी के लिये मानो बैकुण्ठ ही हो गई थी ।” इतना कह कर वह महिला अपने घर के अन्दर चली गई ।

अशोक झगरू के घर का दरवाजा खटखटाने ही वाला था कि उस के पीछे से किसी की जोरदार आवाज आई, “हांथ ऊपर करो ! नहीं तो इस टांगे से तुम्हारा सिर फोड़ दूंगा !” अपने दोनों हांथों को ऊपर किये हुये अशोक मुड कर देखा तब पता चला की एक दुबला पतला बूढा आदमी एक टंगारी ताने उस के पास खड़ा था । उस के मुंह से लार चू रहे थे, कपड़े गन्दे थे और वह नशे में चूर था ।

अशोक अपने आप को सम्हालते हुये कहा, “अरे हम ने ऐसा क्या कर दिया कि तुम मुझे मारने पर तुले हो ? मैं तो तुम को मदद करने आया हूँ ।”

“तुम होते कौन हो हमारे बारे में सब सवाल पूछने वाले ? तुम क्या चाहते हो ? जल्दी बतावो नहीं तो मैं तुम्हारा सर फोड़ दूंगा ।” उस ने जवाब मांगा ।

उस बूढ़े के हाव भाव से अशोक जान लिया था कि वही प्रीतम का पिता है इसलिये वह सावधानी से पर शान्ति पूर्वक उस को जवाब देना शुरू किया, “मैं तुम्हारे लिये एक तरफ बहुत बड़ी मुसीबत खड़ा कर सकता हूँ और दूसरे तरफ मैं तुम को पैसे से माला माल कर सकता हूँ । तुम्हारी मरज़ी तुम चाहे जिस रास्ते को चुन लो लेकिन याद रहे मैं ऐसे बाहर सब के सामने इतने काम की और गुप्त बातचीत नहीं करता ।”

“तुम कया बकबक किये जा रहे हो झगरू के समझ में कुछ नहीं आता है । अच्छा अब अंदर चल कर साफ साफ कहो ।” झगरू दरवाजा खोल कर भीतर चला गया और अशोक पास पर पड़ी एक टिपाई पर बैठ गया । झगरू और अशोक के बीच कई बाते हुई ।

“तुम्हारा मनमौजी बेटा प्रीतम हमारे खास ग्राहक का बहुत बड़ा कर्जदार है और वह उन को कहीं मिलता ही नहीं है । हम चाहते हैं कि तुम हमें उस से मिला दो । इस काम के लिये हमारे ग्राहक तुम को बीस टके की कमीशन देंगे ।” अशोक बातें बनाते हुये कहता गया ।

“मैं अपने प्रीतम को यहां बुला लूँ तो तुम को खबर कैसे दूंगा ?” लालच में पड़ कर झगरू ने पूछा ।

अशोक को लगा की अब ऊँठ आया पहाड़ के नीचे और वह फुसफुसा कर झगरू से कहा, “देखो झगरू, अगर तुम पैसा चाहते हो तो जो भी हमारी तुम्हारी बातें हो रही हैं उस को बहुत ही गुप्त रखना पड़ेगा । यह मेरा गुप्त फोन नमबर है जिस पर तुम कभी भी तार मार कर हम से बात कर सकते हो । हम एक दूसरे को फिर नहीं देखेंगे पर काम हो जाने पर तुम्हारे बेंक में पैसे जमा हो जायेगा । ”

अशोक अपना बनावटी फोन नमबर दे कर और झगरू का बेंक अकाउंट नमबर लेकर चलता बना । उस को उस के मतलब भर की जरूरी खबर मिल गई थी । अब उस का काम आगे बढ़ाने में कोई दिक्कत नहीं होगी ।

प्रीतम के बारे में और गहरी जानकारी लेने के लिये आशा ने बड़े सावधानी से उस के घर के पास उस की जासूसी करती रही । एक शाम को जैसे ही प्रीतम अपने घर से निकला की आशा वहां पहुँच गई । प्रीतम की पड़ोसन हसीना उस से अपने बिल्लियों के बारे में कुछ तर्क वितर्क कर रही थी और उसे जली कटी सुना रही थी । आशा वहीं छुप कर उन की कुछ बाते सुनी ।

“मैं तुम को अच्छी तरह से जानती हूँ । तुम ने ही मेरी पूसियों को गायब किया है ।” हसीना उस पर इलजाम लगा रही थी पर वह इनकार किये जा रहा था । हसीना गुस्से में थी और प्रीतम को जली कटी सुना रही थी, “तुम बड़े ही निर्दयी और बेरहम आदमी हो और तुम को शर्म आनी चाहिये जानवरों पर जुर्म करते हुये ।”

“ऐ बुढी, हमारे रास्ते से हट जाओ मुझे कोई बहुत जरूरी काम से बाहर जाना है,” प्रीतम हसीना को ढकेल कर चलता बना और हसीना उस के पीछे बड़बड़ाती रह गई ।

जब प्रीतम दूर निकल गया तब आशा निकल कर हसीना को सम्बोधित करते हुये कहा,“माफ कीजिये, मैं इधर ही आ रही थी और मुझे आप के तरफ उस नौजवान की बदतमीजी देख सुन कर बहुत खराब लगा । वह ऐसा क्यों कर रहा था?”

हसीना पूसियों की देखभाल करती थी और उसी से आशा को पता चला की प्रीतम उस के बिल्लियों से नफरत करता है और पिछले एक साल में उस की कई पूसियों को न जाने कहां गायब कर चुका था ।

प्रीतम इतना खूंखार आदमी था कि एक औरत को उस से बातें करना मानो लोहे का चना चबाना था । इसलिये हसीना चुप मार कर सब सहे जा रही थी । हसीना ने कई बार उस के घर में जा कर देखना चाहा पर उस की हिम्मत ही नहीं हुई ।

हसीना ने आशा को बताया की पहले वह उसी घर में रहती थी इसलिये अभी तक उस घर की चाभी उस के पास है । यह सुन कर आशा को बड़ी खुशी हुई और वह कोई उपाय खोजने लगी की कैसे वह प्रीतम के घर में जा कर अपना जांच जारी करे ।

आशा को एक तरकीब सूझी और वह बोली, “हसीना, अगर आप चाहे तो मैं आप की चाभी लेकर प्रीतम के घर में जा कर आप के

बिल्लियों की खबर ला सकती हूँ । हाँ आप को प्रीतम के अचानक आ जाने पर नज़र रखना पड़ेगा ।"

हसीना खुश हुई ओर आशा प्रीतम के घर के अन्दर चली गई । बिल्लियों का पता लगाना तो एक बहाना था । आशा ने प्रीतम के घर से सभी जरूरी कागज़ात लिये । उस का लेपटोप से सभी प्रोग्रेम को रद्द किया । जब उस ने एक जूते में छिपी पिस्तोल को देखा तो घबड़ा गई । इन सब चीजों को देख कर जरूरी कागजात अपने बेग में सम्भाल कर रख लिया ।

अब उसे हसीना के बिल्लियों के बारे में पता लगाने को था तो उस ने प्रीतम के फ्रिज को खोल कर देखा जहां पर कम से कम पाँच या छः बिल्लियां मरी पड़ी थी । आगे वह कुछ और करे की हसीना ने इशारा किया की कोई आ रहा है और आशा पीछे के दरवाजे से निकल कर भाग खड़ी हुई ।

आशा का काम तो पूरा हुआ पर यह ठीक ही हुआ कि वह हसीना को उस के बिल्लियों के मौत के बारे में उस को न बता सकी क्योंकि उसे बड़ा दुख होता ।

कल्पना ने पिछले कुछ दिनों में न जाने कितने कानूनी किताबों को खोल कर देखा और बड़े ध्यान से पढ़ा था । वह उन कानूनी कागज़ातों में ऐसे एक अपराध को खोज रही थी जिस में प्रीतम को अधिकत्म सजा मिल सके और उस अपराध को कैसे किया जा सकता था ।

अन्त में उस ने यह पाया कि प्रीतम से छुटकारा पाने के लिये किसी की मौत की शक्त जरूरी है । किस की जान जायेगी इस का फैसला अशोक और आशा के रिर्पोट मिलने पर ही पता चल सकता था । सब को पुनः एक आखिरी योजना बनाने वाली सभा में भाग लेनी पड़ेगी ।

तब तक पाठक इन्तजार करने की कृपा करें ।

उधर प्रीतम सोच रहा था कि कुछ दिनों से वह चुप क्यों मारे बैठा था । राखी ने आज तक उस के प्यार को पूरे तौर से समझने की कोशिश ही नहीं की थी और इस का खास कारण था उस के परिवार वालों की बेबुनियाद हसताछेप और उन का व्यक्तिगत दखल अंदाजी ।

उस ने सोचा की वह राखी को पाने का एक अच्छा मौका तब खो दिया था जब वह सुशीला के घर गया था । बूढी सुशीला खुद कमजोर थी पर वह उस से भी कमजोर निकला जब वह अपना हार मान कर बिना राखी को लिये वहां से चुपचाप चला आया था । वह अब अपने आप से वैसी गलती कभी भी नहीं होने देगा ।

प्रीतम को बहुत दुःख हो रहा था क्योंकि उस के उतने दिनों के लेपटोप को मनोहर ने नाश कर के उस को तकनीकी दुनियां में मानो एक अपाहिज बना दिया था । एक तरह से वह ठीक ही हुआ था क्योंकि अब प्रीतम अपने घर में अशोक के दिये हुये पाँच हजार डोलर से एक बहुत ही आधुनिक और जटिल कोम्पिउटर ले आया था । इस मशीन से वह अपने तकनीकी काम को और भी हुनर और खुशी से कर रहा था ।

आज प्रीतम अपने नये कोम्पिउटर से खेल रहा था और उसे कुछ अनहोनी को होनी में बदलने की बड़ी सूझी थी । वह कुछ ऐसा करना चाहता था जिस से राखी का मन वह जीत ले । कुछ ऐसा अजीब काम जिस से राखी को उस से दूर भागने के बजाय उस के पास आने को मजबूर कर दे । लेकिन उसे यह जान कर ताजुब हुआ कि बहुत से चीज़ उस के लेपटोप से गायब हो गये थे । उस ने सोचा कि शायद उस का कोम्पिउटर करैश हो गया होगा । पर असलियत तो यह थी की आशा ने सब चीज़ों को मिटा दी थी ।

प्रीतम ने अपने लेपटोप को फिर से ठीक किया । वह खड़ा हुआ, एक अंगड़ाई भरी, कुछ कसरत किया । उस के अंदर एक नया आत्म विशवास आ गया था । अब फिर वह समय आ गया था कि वह राखी से मिले जिस से सब यह जान जायें की वह अभी भी जिन्दा है और बड़े बे सबूरी से राखी का इंतजार कर रहा है ।

प्रीतम फिर चला राखी के परिवार को सताने । वह राखी के परिवार को प्यार और मौत का अंतर बताना चाहता था । वह सोचता था कि वे सब यह भूल रहे थे कि इस प्रेम कहानी में वही एक मात्र का प्रेम करने वाला कल्पित रोमानी था और सब तो उस के साथ युद्ध करने में लगे हुये थे ।

अगर इनसान के अंदर जोश है तब प्यार करने वाले या नफरत करने वाले की कोशिश जारी रहती है । आज यही हाल हमारे सनमुख है जहां प्रीतम अपना प्यार दरशाये जा रहा था और राखी के परिवार वाले अपने नफरत के आग में जले जा रहे थे ।

प्रीतम के मुताबिक प्यार सब दिन गुलाब के फूलों, हीरे जवाहरात के गहनों से और प्रेम भरे पत्रों से ही नहीं दरशाया या व्यक्त किया जाता है । कभी कभी उस के तरह भी प्यार का इझार करना जरूरी हो जाता है जब चलती गाड़ी में चाख लगाने वाले छाती ताने हमारे प्यार के रास्ते में खड़े हो जाते हैं । अब समय आ गया था कि वह उन सब विरोधियों को यह ठीक से बता दे कि उस का प्रेम मोहब्बत अभी भी जिंदा है और उस की मौत भी इस लगन को नहीं मिटा सकती थी ।

उस ने इन्टरनेट पर कई गुमनाम वाले ईमैल के पता रचे और पहले पहल टेक्स डिपाटमेनट को यह झूठी खबर दे दी की वकील कल्पना अपने सभी ग्राहकों से मांग कर रही थी की वे उस के आधे फीस चेक से और आधे नकद पैसे से भरे । इस खबर को पा कर टेक्स वाले कल्पना के दफतर पर धावा मारेंगे । इस खबर को भेज कर प्रीतम बड़े जोर से हँसा ।

दूसरा गुमनाम ईमैल पुलिस के पास भेज दिया जिस में यह लिखा था कि सुशीला के गाँव वाले खेत में मारीजुआना की खेती होती है और भांग का सौदा किया जाता है । इस से पुलिस वहां भी जा पहुँचेगी और उस को तंग करेगी ।

तीसरा वार उस ने अशोक पर किया । एक वेबसाइट से उस ने कई अशलील लड़कियों और बच्चों के नंगे चित्र अशोक के वेबसाइट पर उतार कर रख दिये और पुलिस तथा यूनिबेसिटी के अधिकारियों को इस की खबर दे दी । अब अशोक पर भी अशलील चित्रों को रखने के जुर्म की छानबीन होगी ।

यह सब कर के प्रीतम अपने लेपटोप के आगे खड़ा हो कर नाचने लगा । यह सब उस के साथ उलझने का नतीजा था ।

आज तो अब रात हो चली थी और अशोक अपनी गाड़ी खड़ी कर के अपने पूर्व पत्नि के घर पहुँचा । कल्पना और आशा आगे के कमरे में कुछ गुफतगू कर रही थी । सुशीला और राखी भी अपने अलग कमरे मे आराम कर रही थी । अशोक को आते देख कर कल्पना ने उठ कर दरवाजा खोला और उस को अन्दर आने को कहा ।

तीनो व्यक्तियों ने अपने अपने खोज बीन और जांच पड़ताल की खबर सुनाई । आशा ने प्रीतम के बारे में बताना शुरू किया । "आप लोग मानो या न मानो पर यह प्रीतम नाम का आदमी एक बहुत ही बड़े मानसिक बीमारी से पीड़ित है । यह वह राक्षस है जो इनसान और जानवरों पर घोर अत्याचार कर के अपने मन की शान्ति लेता है ।"

थोड़ी देर रुक कर वह फिर बोली, "वह एक बहुत ही गिरा हुआ कामुक व्यक्ति है जो अपने स्वार्थ के लिये किसी की भी हत्या कर सकता है वह चाहे राखी कयों न हो । उस के पास एक ही लक्षय है और वह है किसी तरह से राखी को जीतना ।"

आशा का गला सूख रहा था उस ने पानी पी कर फिर कहना शुरू किया, "मैं ने यह सब उस के लेपटोप में देखा था पर उस में से सब फाइलों को हम ने निकाल दिया था । इस के अलावे मैं ने उस की हिंसा की हथियार,उस की पिस्तोल को देखा जो उस ने एक जूते में छिपा रखा है और वही उस का सब से बड़ा खजाना है ।

एक ताजुब की बात यह थी की उस पर मनोहर का नाम मुद्रित था । मुझ से जो भी हो सका मैं कर के आ गई ।”

कल्पना यह सुन कर की उस पिस्तोल पर मनोहर का नाम मुद्रित था चौंक पड़ी और उस को विशवास हो गया की मनोहर का कातिल यही प्रीतम था जिस ने मनोहर के ही बन्दूक से उसे बेरहमी से मार दिया था । पर वह इस राज को अपने अंदर ही छुपा रहने दिया ।

कल्पना और अशोक दोनों ने आशा के खतरनाक काम की सराहना किये तब अशोक ने अपने अनुसंधान के बारे में बताया ।

“जो कुछ भी आशा ने प्रीतम के बारे में कहा है उन सब बातों को उस के स्कूल, अध्यापक,सहपाठी और मुख्य अध्यापक ने पूरे तौर से समर्थन किया था । मैं ने उस के पैदाइश का घर और परवरिश के वातावरण तथा उस के पिता को अच्छी तरह से देखा और परख भी लिया है । जो भी मैं ने देखा और सुना है उस से मेरे मन में तनिक भी संदेह नहीं है की आज तक जो भी हादसे हमारे और हमारे दोस्तों के साथ हुये हैं उन सब का जिम्मेदार यही नीच, दुष्ट, भ्रष्ट और खराब आदमी है ।”

“हम सब जानते हैं की हिंसा ही हिंसा को पैदा करती है । प्रीतम को राखी को सताने का कारण उस के माई बाप हैं । उन्हो ने ही अपने पुत्र में एक गैर जिम्मेदार आदमी के अवगुण भरे थे । अपने ही करतूतों और हिंसक कर्मो से उस को एक रोगी, घातक और जुनूनी इनसान का रूप दे रखा था । इसी लिये प्रीतम में दूसरे को जबरन बस में रखने की , खुद तबाह होने की या दूसरों को तबाह करने

की भावना भरी है । उस के परिवार के बारे में जान कर हमे ऐसा ही महसूस हुआ । ”

“प्रीतम की माँ भी कोई फूलों कि गुलदस्ता नहीं थी और उस की भी मौत बड़े संदेहयुक्त परिस्थिति में हुई थी । यह भी हो सकता है की उस की भी हत्या किया गया था पर किसी के पास कोई सबूत नहीं था ।”

अशोक का भी गला सूख चला था पर वह फिर बोला, “हाँ ! उस की चालाकी इसी में थी कि उस ने किसी के पास कोई सबूत नहीं छोड़ा था । इसी लिये आज तक वह कानून से बचता आया है पर अब आगे का मामला कल्पना, तुम्हारे जैसे वकील और कानून के रक्षक के हांथों में है ।”

अब कल्पना की बारी आई । “इस का मतलब यह हुआ की समय आने पर किसी की भी हत्या करने में वह कभी हिचकिचायेगा नहीं । हमारे योजना के मुताबिक इस चालाक दुष्ट को हमें कोई बड़े अपराध के लिये फसाना पड़ेगा । जैसे किसी की हत्या, कोई डकैती या देश द्रोह ,वगैरह ।”

अपने लिखे हुये परचे को देख कर कल्पना फिर कहना शुरू किया, “यही हमारी अनुसंधान थी और पहले तो हम ने सोचा की क्यों न हम राखी के हड्डी पसली तोड़ कर पुलिस को यह बता दें कि प्रीतम ने ही उस को यह जखम दिये हैं । इस पर उस को शायद कुछ दिनों की जेल की सजा हो जाये । बाद में हम उसे राखी से दूर रहने के लिये कानून का आदेश ले सकते हैं पर मेरे ख्याल से

प्रीतम उस ओड़र पर कभी भी अमल नहीं करेगा । इस लिये हमारी यह तरकीब नहीं चलेगी ।"

अशोक को सम्बोधित करते हुये कल्पना ने पूछा, "अशोक, तुम प्रीतम और उस के पिता के रिशते के बारे में क्या कह रहे थे ?"

"उन का रहन सहन सब दिन जंगली कुत्ते बिल्ली के तरह रहा है । एक दूसरे को मारते काटते ओर आपस में सदा लड़ते झगड़ते रहते थे । वे दोनों कई सालों से नहीं मिले हैं पर जब भी वे एक दूसरे को मिलते हैं तब यही समझ लो कि उन दोनों के बीच महा भारत का युद्ध शुरू हो जाता है । प्रीतम के पिता झगरू सदा नशे में रहता है और जब भी उस के सामने प्रीतम का नाम लिया जाय तब वह गुस्से में हो कर मेज पर घूँसे मारने लगता है ।" अशोक ने कहा ।

"अब हमारे सामने एक गम्भीर सवाल यह है की क्या हम किसी की हत्या कर सकते हैं ?" कल्पना ने अचानक पूछा । कमरे में एक अजीब सा सन्नाटा छा गया था । सब सोचने लगे ।

- इतिहास से लेकर कई धार्मिक ग्रन्थों तक सब का मन दौड़ने लगा । तुलसी दास की चौपाई सामने आई : पुत्र बधु भगनी सुत नारी, इन को कुद्रष्टि बिलोकहीं जेही , ताहि बधै कछु पाप न होई ।

: फिर इसी युग में कई हिटलर, सदाम, रावण और कन्स जैसे पापियों का अन्त किया गया और किसी पर कानूनी कार्यवाही कभी नहीं की गई । इसलिये अगर एक और पापी को इस कलियुग में मौत के घाट उतार दिया जाता है तो इस से क्या फर्क पड़ेगा ?

जिस की हत्या होती है वह तो चला जाता है पर हत्या करने वाले के जीवन में निशचिन्त रूप से कई उथल पुथल मच जाते हैं । लेकिन यहां पर उस हत्या की जिक्र हो रही है जो अपनी ही बेटी के जीवन में सुख शान्ति लाने के लिये की जायेगी । आज तक हम सब आदर्शवादी और अच्छे लोग की तरह गुजर बसर कर रहे थे और लगातार खूब सताये जा रहे थे । सताने वाले को न तो कानून कुछ कर सका था और न ही समाज ने हमारी कोई मदद की थी ।

अब हम एक बुरे आदमी के साथ बुरा बर्ताव करने की सोच रहे हैं । इस में क्या खराबी है । हम घूंसे की जवाव शायद लातों से दे रहे हैं । एक आंख फोड़ने वाले की आंख फोड़ने जा रहे हैं । हमारे दांत तोड़ने वाले का दांत तुड़ने पर लगे हैं । पर अपने मन की और परिवार की सुख शान्ति के लिये ही यह सब कर रहे हैं ।

दूसरे ओर से देखने में बात कुछ और होती है । कोइ बात नहीं प्रीतम की ने अभी तक क्या क्या जुर्म किये थे और आगे क्या करने वाला है पर हम समाज के अच्छे लोग और सभी सभय लोगों को तो उस से नीचे नहीं गिर जाना चाहिये । प्रीतम आज जिस रास्ते पर चल रहा है उसे वहां पहुचाँने वाली मानने योग्य मनोवैज्ञानिक शक्तियां ही हैं । उस के आचार विचार, उस की दुष्टता सब उस के परवरिश , उस के वातावरण और उस के शराबी परिवार से जुडी हुई है ।

हम को यह भी मानना पड़ेगा की हम उस के दुष्टता के लिये सरासर गलती उसी पर ही नहीं मढ़ सकते हैं । प्रीतम खुद नहीं जानता है की उसे उसी के समाज ने अच्छे शिष्टाचार से वंचित रखा है इसलिये वह अब तक जो भी हमारे साथ करता रहा वह

भले अनुचित था पर उस के लिये उचित ही था । प्रीतम को उचित और अनुचित चीज़ो का ग्यान ही नहीं है ।

हम सब इतने खुदगर्ज और स्वार्थी नहीं बन सकते हैं । हम में से केवल किसी एक को यह कुर्बानी करनी पड़ेगी और यह भी हो सकता है कि हम यह खता कर के बच भी जायें ।

"यह काम अगर हम में से कोई एक करता है तो हम अपने बेटी राखी के जिन्दगी में फिर से सुख, चैन ओर खुशी ला देंगे । बस हम यही चाहते हैं ।" कल्पना इतना कह कर चुप हो गई ।

अशोक और आशा के लिये भी यह भावनाओं से भरपूर शब्दों का असर हो रहा था । अशोक अपने कुर्सी से उठा और दरवाजा खोल कर बाहर की अंधकार में गुम हो गया ।

अति सुन्दर! विचित्र ! अदभुत ! एक दुखों का मारा और सताया इनसान चाहे तो वह क्या न कर सकता है । बदला लेने की चाह तो होती है पर एक अजीब सा डर भी लगा रहता है । इस परिवार के किसी भी सदसय के पास इतनी हिम्मत नहीं थी कि वे किसी की हत्या कर सकें । पर उन को इस जंजाल से छुटकारा पाने के लिये कुछ तो करना ही पड़ेगा । पर उन को क्या करना है ?

थोड़ी देर के लिये हम प्रीतम के नजरिये से इस मामले को देखते हैं ।

एक नौजवान लड़का एक खूबसूरत लड़की से प्रेम करने लगता है । वही उस के सपनों की रानी बन जाती है और वह उसे बेहद प्यार करता है ।

ऐसा समाज में अकसर हुआ करता है । यह कोई नई बात नहीं है । कुछ लोग इस को प्रीतम का पागलपन कहते हैं पर वह किसी भी हद तक जा सकता है अपना प्यार पाने के लिये । यहां तक की वह उस परिवार के लोगों पर जुलम ढाने लगता है ।

दूसरे तरफ अशोक, कल्पना, आशा, सुशीला और राखी प्रीतम से नफरत करने लगते हैं । अपने प्यार की आहूति देने के लिये वे सब प्रीतम को डराते हैं, धमकाते हैं, रिशवत देते हैं और मार भी खिलाते हैं ।

कानून तो यही लोगों ने तोड़ने की कोशिश की है तो इन को ही सजा मिलनी चाहिये । लेकिन राखी का पूरा परिवार अब एक बड़े साजिश की योजना बना रहा था जिस से प्रीतम और उस के पिता का मिलन हो और कोई अनहोनी हो जाये । बस तब उन का बेड़ा पार हो जायेगा ।

बाप और बेटे, झगरू और प्रीतम, जिन में कभी भी पटरी नही बैठी है और कोई प्रेम भाव ही नहीं है उन दोनों को एक कमरे में ला कर मुठभेड़ बढाने की योजना है । इस से क्या हो सकता है ?

दोनों के पास बन्दूक थे और दोनों जिद्दी भी थे तथा कुछ हद तक दोनों नसमझ भी थे । नतीजा यही हो सकता था कि बात बिवाद होगी, लड़ाई होगी और किसी एक की जान भी जा सकती थी । यही तो योजना है पर इस को कैसे अमल में लाया जाये ?

राखी और सुशीला को खास गुप्त बातें बता कर घर पर ही सुरक्षित रहने को कह कर सब लोग अपने अपने काम पर चले गये ।

अशोक चला गया यूनिवेसिटी छात्रों को पढ़ाने । आशा को आज अपने बासकेटबोल टीम की देखभाल करनी थी । कल्पना को अदालत में एक खास तलाक का मुकदमा लड़ना था ।

योजना के मुताबिक राखी को अशोक ने जो आस्थायी प्रीपैड सेल फोन दी थी उस से आज उस को प्रीतम से बातें कर के उस फोन को एकदम से नष्ट कर देना था ।

घर से सब लोग अपने काम पर चले गये थे । सुबह नौ बजे राखी ने उस फोन को उठाया और प्रीतम का नम्बर लगाया ।

जैसे ही प्रीतम के सेल फोन की घण्टी बजी कि उस ने उस को उठा कर चुपचाप सुनता रहा । राखी ने कहा, "हेलो, कया मैं आज प्रीतम से बात कर सकती हूँ ?"

प्रीतम ने एक लम्बी सांस लिया और बड़े उतसुकता से बोला, "हाँ मेरी जान ! मैं तो तुम से बातें करने को और देखने को तरस रहा हूँ । बोलो आज मैं तुम्हारे लिये कया कर सकता हूँ ?"

राखी थोड़े देर तक अपने माँ के दिये हुये पीले कागज़ के टुकड़े पर लिखे हुये संदेश और आदेशों को जल्दी से देखने लगी । इस संनाटे के बीच प्रीतम मन ही मन मुस्करा रहा था और उस के पैर थिरकने लगे जैसे वह कोई मधुर संगीत की धुन सुन रहा हो ।

“हां राखी, बोलो बोलो कुछ तो बोलो, प्यार हुआ है तो कह दो हां । तुम्हारी आवाज़ आज बड़ी मीठी लग रही है । मुझे बहुत दुख हो रहा है की मेरे सच्चे प्यार जताने के बावजूद भी सब लोग तुम को मुझ से दूर रखना चाहते हैं पर यह मुमकिन नहीं है क्योाकि मैं ऐसा होने नहीं दूंगा ।” प्रीतम थोड़ा हंसा और हवा में चुम्बन की आवाज़ कर के फिर कहना शुरू किया, “ तुम्हारे परिवार को यह शोभा नहीं देता है जो वे तुम जैसी परी को मुझ जैसे सच्चे प्रेमी से छिपाना चाहते हैं । दुनियां मे कोई भी ऐसी जगह नहीं है जहां से मैं तुम को नहीं ढूँढ सकता हूँ यह तो तुम ठीक से जानती हो ।”

राखी यह सब सुन कर अपनी आंखे बन्द कर के सोचने लगी । उसे प्रीतम के एक एक शब्द तीर की तरह लग रहे थे पर उस ने अपने माँ के दिये गये कागज़ को फिर देख कर बोली,“ प्रीतम, हम ने तुम को बार बार यही कहा है की मुझ से दूर रहो और आज फिर वही कहने के लिये तुम को फोन किया है । मैं ने सब तरीके से तुम को यह समझाने की कोशिश किया है कि हम कभी भी एक साथ नही हो सकते हैं । मैं तुम को कभी भी अपने जीवन में आने नहीं दूंगी चाहे तुम कुछ भी करो ।”

राखी ऐसी बातें पहले कई बार कह चुकी थी और आज भी वह जानती थी कि इस का कोई भी असर प्रीतम पर नहीं पड़ने वाला था । जब तक इस दुनियां में प्रीतम के जैसे पागल प्रेमी है तब तक कोई भी प्रकार की तर्क और कारण उस को बदल नहीं सकती थी ।

“ राखी डार्लिगं, मैं यह ठीक से जानता हूँ की तुम जो भी कुछ कह रही हो वह सब झूठ है । तुम को यह सब कहने के लिये तुम्हारे

परिवार वालो ने तुम को उत्तेजित किया है और तुम उन की कटपुतली की तरह उस मन्त्र को बार बार रटे जा रही हो । इसीलिये मैं इन सब बातों पर बिलकुल ध्यान नहीं दे रहा हूँ । मैं ने तुम से प्यार किया है यह कोई खेलवाड़ नहीं है ।"

"नहीं ! नहीं ! नहीं ! हजार बार नहीं । प्रीतम तुम एक बहुत बड़े गलतफहमी में हो जो मैं आज एकदम से मिटा देना चाहती हूँ ।"

" राखी मेरी जान ! यह सब हमारे तकदीर की बात है । तुम मानो या न मानो हमारा तुम्हारा मिलन हमारे भाग्य में लिखा है ।"

" प्रीतम, तुम नहीं समझोगे मेरी बातें । तुम को आगे समझाना मेरे लिये असम्भव है ।"

" मेरी प्यारी राखी ! तुम पवित्र प्यार का मतलब ही नहीं जानती हो । सच्चा प्रेम । समपूर्ण लगन । वैसा प्यार कभी मरता नहीं और न ही वह कभी खतम होता है । हम जैसे दो प्यार करने वालों को कभी कोई रोक नहीं सकता । तुम को अपने दिल से एकांत में हो कर पूछना चाहिये तब तुम को सच्च का पता मिल जायेगा क्योंकि अपना दिल कभी झूठ नहीं कहता है ।" प्रीतम अपने कुर्सी में झूमते हुये कहे जा रहा था ।

राखी हैरान थी और उस के आंख डबडबा गये थे पर उस ने प्रीतम से फिर विनती किया की वह उस से दूर हो जाये । प्रीतम ने उसे आशवासन देते गया कि वह उस की हमेशा रक्षा करेगा, उस की देख भाल करेगा और सब दिन उस के साथ ही रहेगा । उस को उस से डरने की कोई जरूरत नहीं है । राखी जानती थी कि जो भी

कुछ प्रीतम कह रहा था वह सब दिन उस के विपरीत ही काम करता है ।

उस के लिये रक्षा करने का मतलब कष्ट देना था । अगर वह कहता है कि मुझ से डरना नहीं तो इस का मतलब है कि उस से बड़ा भयंकर चीज़ और कोई नहीं है ।

सुशीला जो अभी तक राखी के पास ही बैठी सब सुन रही थी उस को इशारे से   प्रोतसाहित किया की जल्दी से असली बात को कह दो ।

राखी ने अपने आप में हिम्मत बांधा और फिर कहना शुरू किया, " प्रीतम, मैं ने बहुत कोशिश की है तुम को समझाने की पर तुम ने आज तक मेरी बातों को नहीं माना है । इसलिये आज मैं यह सब उस आदमी से बताने जा रही हूँ जो सब दिन तुम को सीधे रास्ते पर चलने के लिये कोशिश करता रहा और विनती करता रहा । यह वही आदमी है जो शायद मुझे उस भाषा को बतायेगा जो तुम समझते हो । मेरे ख्याल से यह वही आदमी है जो मुझे बतायेगा की मैं कैसे तुम को अपने जीवन से निकाल सकती हूँ । मैं यह अच्छी तरह से जानती हूँ कि वही आदमी पर मैं पूरा भरोसा कर सकती हूँ और वही मेरी मदद करेगा ।"

राखी सोच रही थी की उस की यह सब बातें आज उस के तेवर को और भी बढ़ा देंगी क्योंकि वह बड़े ध्यान से सुन रहा था । राखी कहती गई, "हाँ , मैं यह भी जानती हूँ की इस संसार में तुम एक ही आदमी से बहुत डरते हो इसलिये मैं तुम्हारी सब शिकायतों को

ले कर आज उन्हीं से मिलने जा रही हूँ । अब बहुत देर नहीं है कि तुम्हारा सब भण्डा मैं उन के सामने फोड़ने वाली हूँ । ”

“राखी यह तुम क्या कह रही हो ?” प्रीतम चौंक सा गया पर फिर भी सवाल पूछता रहा, “ तुम ऐसे किस आदमी के बारे में बात कर रही हो ? मुझे नहीं पता वह कौन है पर इस दुनियां में मैं अपने आप को छोड़ कर किसी से भी नहीं डरता हूँ ।”

“इस बार तुम गलत हो क्योंकि मैं एक ऐसे खास आदमी को जानती हूँ जो मेरी सहायता करेगा । मैं तुम को बताना चाहती हूँ कि मैं उन के घर से थोड़े ही दूर पर ही खड़ी हूँ । मैं आज के तुम्हारे घर के सामने नहीं बल्कि मैं वहां हूँ जहां तुम पैदा हुये थे और जहां तुम्हारी परवरिश हुई थी । हाँ प्रीतम मैं थक गई हूँ और मैं तुम्हारे पिता झगरू से मिलने जा रही हूँ । अब वही हमारी मदद करेंगे और तुम को ठीक कर के सीधे रास्ते पर लायेंगे ।” पूर्व योजना के अनुसार राखी ने इतना झूठ कह कर फोन काट दिया और वादे के मुताबिक सुशीला को वह फोल दे दिया । वही फोन फिर से बजा पर सुशीला ने उस को नहीं उठाया ।

सुशीला जल्दी से अशोक, कल्पना और आशा को एक एक कर के उन के अपने अपने आस्थाई प्रीपैड सेल फोन पर इस की खबर पहुँचा कर अशोक के कहने के मुताबिक उस फोन को हथौड़ा से तोड़ फोड़ कर फेंक दिया था ।

अन्य तीनों लोगों ने भी वैसा ही किया । अब न रहा किसी के पास आस्थाई फोन न ही अब बजेगी उस में कीसी की घण्टी और न ही

कोई यह जान पायेगा की कौन, कब और किस से इस योजना के बारे में वार्तालाप किया था ।

घर के सब लोग तो अपने अपने काम पर थे जहां पर उन की हाज़री ही उन को कोई भी अपराध से दूर रखेगी ।

राखी और सुशीला भी अपनी मोटर ले कर शहर के दूसरे कोने के एक बड़े सूपरमार्केट में पहुँचे । वहां उन को कुछ हंगामा करना था जिस से यह साबित हो जाये कि वे भी किसी भी अपराध के स्थान से दूर थे ।

सुशीला ने अपनी ट्रोली ढकेलती हुई एक बड़े से तरकारी और फलों के प्रदर्शन या सजावट के सामने से गुजरी और उस में धक्के मार कर सब चीजों को बिखेर दिया । दूकान में हलचल मच गई और कई क्रमचारी तथा मनेजर भी आ पहुँचे ।

सुशीला और राखी दोनों ने माफी मागा और उस गलती के लिये बीस डोलर भरने को तैयार हो गई पर मनेजर ने उन को उन के उदारता के लिये धन्यबाद दिया और अपने क्रमचारियों से सब फर्श को साफ कराया ।

इस के बाद सुशीला और राखी ने अपने सब सौदे को केशिया के पास जा कर धीरे धीरे चेकआउट कराया जिस से दुकान के केमरे में उन का चित्र अच्छे से आ जाये । उन के लिये यह काफी था कि जब प्रीतम और झगरू की मुतभेड़ हो रही थी तब वे दोनों अपना खरीदबीन शहर के दूसरे कोने में उस सूपरमार्केट में कर रही थी ।

आज सुशीला को लगा अगर कल्पना की योजना काम नहीं कर पाई तो उस का जादू टोना तो अभी बाकी था ।

राखी से बात करने के बाद प्रीतम गुस्से से तिलमिला रहा था । न तो दुबारा राखी का फोन लग रहा था और न ही वह अपने घर की फोन उठा रही थी । प्रीतम ने अपने जूते में रखी मनोहर की पिस्तोल उठाई और तुरंत घर से बाहर निकला जिस से वह राखी को अपने पिता झगरू से मिलने से रोक सके ।

अपने मोटर को बड़े रफतार से चला कर प्रीतम पहुँचा अपने पिता के घर जहां आज पुत्र और पिता के बीच एक महायुद्ध की सम्भावना थी । प्रीतम अपना मोटर अपने पिता के पुरानी लोरी के पीछे खड़ा कर के दौड़ता हुआ झगरू के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ ।

घर के अंदर जाते ही प्रीतम ने अपने पिता को अपने सामने हांथ में शराब की बोतल लिये देख कर आग बबूला हो गया । बाप बेटे आमने सामने उस मैले और गंदे बैठक में छाती ताने खड़े थे ।

" वो कहां है ?" बेटा के मुठी बन्धे थे और वह चिल्ला कर पूछा, "जल्दी बताओ वो कहां है ?"

"कौन कहां है ?" पिता ने पूछा ।

" गोड डेमिट ! तुम जानते हो मैं राखी के बारे में पूछ रहा हूँ !" प्रीतम घर में इधर उधर देखा ।

झगरू दिल्लगीबाज की तरह बड़े जोर से हँसा, "अब आज तुम पर कौन सा भूत सवार है ?"

प्रीतम बुढे के तरफ बढ़ा, "उस को तुम ने कहां छिपा रखा है जल्दी बताओ वरना हम से बुरा कोई न होगा ।"

" मैं अभी भी नहीं जानता तुम क्या कह रहे हो । पर यह राखी है कौन ? तुम्हारी नई चिड़िया, जरा मै भी तो जानू ।" झगरू ने प्रीतम से पूछा ।

प्रीतम बिजली के तरह तड़प उठा,"तुम अच्छी तरह से जानते हो मैं किस के बारे में पूछ रहा हूँ । उस ने कहा था कि वह तुम से मिलने जा रही है । यह सब चापलूसी बन्द करो ओर सीधे से राखी को बुलाओ नहीं तो..," प्रीतम ने अपने पिता को अपना घूंसा दिखाया ।

"नहीं तो तुम मेरा कया करोगे?" झगरू ने प्रीतम का तिरसकार करते हुये कहा ।

"अच्छा ! तो लात के भूत बात से नहीं मानते । मैं तुम को आखरी मौका देता हूँ कि तुम सीधे से हम को बता तो कि तुम ने राखी को कहां छिपाया है नहीं तो मैं अपने बचपन की तुम्हारी सब मार काट और गालियों का बदला ले लूंगा । मैं आखरी बार पूछता हूँ बूढे, क्या कोई लड़की जिस का नाम राखी था यहां आई थी तुम से मदद मागने की वह हम से अलग हो जाये?" प्रीतम गुस्से से चिल्ला रहा था और अपने पिता का गला पकड़ कर हिला रहा था ।

बड़े जोश से झगरू ने इनकार किया पर इस से बाप बेटे के बीच कुछ हातापाई भी हुई और प्रीतम ने अपने पिता को झूठा कहा तथा उसे इतने जोर से धक्का दिया कि उस की शराब की बोतल गिर

गई । झगरू भी समभलते समभलते फर्श पर चित हो कर गिरा । एक तो उस का शराब बरबाद गया दूसरे उस को कुछ चोट भी आ गई थी इसलिये उस की नराज़गी की सीमा ही न रही ।

अब झगरू झगड़ा करने के लिये पूरे तरह से तैयार था और वह कहने लगा, " मैं तो यह नहीं जानता की यह राखी वाखी कौन है और वह कहां है पर मैं इतना जानता हूँ की तुम किसी बड़े धनी लोगो के जंजाल में फंसे हो और उन से बड़े करजा ले कर अब एक बेईमान की तरह भरना नहीं चाहते हो । वे तुम को बहुत बेसबरी से खोज रहे हैं । मैं उन को तुम्हारा पता बता कर पकड़वाऊंगा जिस से मेरे बुढ़ापे के लिये कुछ पैसे मिल जायेंगे । मुझे बताया गया है कि तुम ने उन का बहुत बड़ा चीज चोरी किया है । अब तुम बच नहीं सकते हो । मैं अभी उन के आदमी को खबर देता हूँ ।" इतना कह कर झगरू वह फोन नम्बर खोजने लगा जो अशोक ने उस को दिया था पर वह कहीं मिल ही नहीं रहा था ।

प्रीतम चौंक गया और तुरंत पूछा, "यह सब तुम को किस ने बताया?"

"मैं किऊं बताऊं । यह मेरा और उन लोगों का रहस्य है । तुम पकड़े जाओगे, मुझे इतने पैसे मिलेगें की मैं बुढापे में राज करूँगा ।"

अब प्रीतम के दिमाग में आग सी लग गई थी, "सुन खूसट बुढ़े ! अब मैं तुम्हारा वो हाल करूँगा की तुम उस पैसे के बारे में सब भूल जाओगे । सीधे सब सच सच बताना शुरू करो ।" इतना कह कर

प्रीतम अपने पिता को कुर्सी से उठा कर फर्श पर पटक दिया और उन के छाती पर बैठ के घूंसे से वार करने लगा ।

झगरू को अपने बेटे के इस रवईये से बहुत दुख हुआ और उस का सब नशा उतर गया । वह जोर से ताकत लगा कर उठा और प्रीतम को ढकेल कर जल्दी से अपना बन्दूक निकाला ।

जब तक प्रीतम अपने आप को सम्भालता था तब तक झगरू का अपना बन्दूक   प्रीतम को अपना निशाना बना लिया था ।

इस के बाद कोई और बाते नहीं हुई केवल एक दूसरे से हांतापाई, लपट झपट, ठेल ढकेल और गाली गलौज ही होती रही । दोनों फर्श पर गिरे और अचानक थोड़े देर में दो बन्दूक की गोलियों की आवाज़ सनाई दी । एक का निशाना छत से बाहर गया और एक के निशाने ने झगरू के छाती को चीरती हुई उसे वहीं भीगे फर्श पर बेजान छोड़ गई थी । किस की गोली किस को लगी यह तो जांच के बाद बन्दूक ही बतायेगी ।

प्रीतम घबड़ा गया । उस का गला सूख गया । वह मनोहर की पिस्तोल अपने हांथ में लिये अपने घुटने के बल बैठ गया और रोने लगा ।

उस टोली के लोग गोलियों की आवाज़ सुन कर दौड़े आये और झगरू के घर के अंदर के दृष्य को देख कर दंग रह गये । किसी की भी मौत के बाद हर वहां आने वाला इनसान उस पर तरस खाता है चाहे मरने वाला कितना भी बुरे आचरण का रहा हो ।

थोड़े ही देर में पुलिस आ पहुँची और प्रीतम को हथकड़ी लगा कर ले गई ।

झगरू अपने जीवन की लड़ाई तो हार गया था पर उस को एक प्रकार से इस संसार से मुक्ति मिल गई थी क्योंकि वह अपने आप को इस धरती पर एक बोझ बना कर रहने लगा था । वह न तो एक आदर्श पति बन सका, न ही एक अच्छे पिता के कर्तव्य को कर सका और न ही वह उस समाज का कोई मदद कर सका था ।

अब आप ही सोचिये उस का जीना किस काम का था ।

इस को आप चाहे एक पागल प्रेमी की कहानी समझें या एक हत्या काण्ड माने यह आप पर निर्भर है । मैं ने तो आप के सामने सभी पहेलुओं को प्रस्तुत कर दिया है पर अब आप ही सोचिये की अपराधी कौन है ?

माता पिता जो अपने पुत्र की अच्छी परवरिश न कर सके और उसे समाज के श्रेष्ट आचरण से वंचित रखा था ?

या फिर वह आवारा पुत्र, पागल प्रेमी, जुल्मी और निर्दयी व्यक्ति प्रीतम, जो राखी, उस के परिवार, निर्दोश लोगों और जानवरों को सताने में सदा खुशी रहता था ?

या फिर वे लोग जो प्रीतम को राखी से दूर करने के लिये उसे मारा, धमकाया, रिशवत दिया और उस के विरूद्ध कई अन्य योजनाये बना कर उसे उस मोड़ पर पहुँचाया था ?

लेकिन अभी मुकदमा पूरा नहीं हुआ है । उस का नतीजा भी जान लीजिये ।

पोस्ट मोटम यानी मरणोत्तर करने के बाद यह पता चला की झगरू की मौत उसी मनोहर की चोरी की पिस्तोल की गोली लगने से हुई थी । उस पिस्तोल पर केवल प्रीतम के उंगलियों के चिन्ह थे । उसी पिस्तोल की गोली से मनोहर की हत्या कर के उस के शरीर पर छुरी से कई घाव किये गये थे । मनोहर के मौत के बाद न तो उस के पिस्तोल की और न ही उस के कातिल का पता चला था ।

जिस लड़की से प्रीतम प्यार करने लग गया था वह उस दिन झगरू के हत्या के समय अपने दादी सुशीला के साथ एक सूपरमार्केट में खरीदबीन कर रही थी । अगर सुशीला का जादू टोना चला होता तो आज यह सब कतल नहीं होते पर और कुछ हो सकता था ।

जिन लोगों को प्रीतम ने अपने बुरी हरकतों से सताया और बदनाम किया था बे भी सब उस हत्या के समय अपने अपने काम पर थे ।

राखी के पिता प्रोफेसर अशोक त्रीपाठी अपने यूनिवेसिटी के इतिहास के क्लास में लेक्चर दे रहे थे ।

राखी की माँ कल्पना उस समय अदालत में एक तलाक वाले मुकदमे की पैरवी कर रही थी ।

कल्पना की सहेली आशा अपने बासकेटबोल के टीम की देखभाल में जुटी थी ।

हलाकि इन सब की सम्बन्ध किसी न किसी तरह से प्रीतम के जिन्दगी से था पर अभियोग लगाने वालो के मुताबिक उन पर कोई भी कानूनी कार्यवाई नहीं की जा सकती थी ।

मुकदमा होते समय अदालत ने प्रीतम को अपने पिता झगरू की और मनोहर की हत्या करने के जुर्म के लिये अपराधी ठहराया । अन्त में हार मान कर प्रीतम ने अपने और सभी जुर्मो को कुबूल किया । वह अदालत में रो रो कर जज और जूरी के सामने अपने सभी कसूरों को जाहिर किया ।

" माई लोड ! मैं ने ही राखी पर इतने सारे जुर्म ढाये थे ।

मैं ने ही राकेश को लोहे से मार कर अपाहिज बनाया ।

मैं ने ही सरस के गाड़ी की पहिये को ढीला किया था जिस से उस का दुर्घटना हुआ था ।

मैं ने ही अपने लेपटोप के इनटनेट के जरिये ईमैल भेज भेज कर सब के रेकोर्ड़ को बरबाद या रद किया था और सब को बदनाम करता था ।

मैं ने ही हसीना के बिल्लियों को और आशा के कुत्ते रोजा को मारा था ।

मैं ने और किस किस को कैसे कैसे सताया वह सब मुझे अभी याद नहीं है पर मैं उन सब से बहुत शर्मिंदा हो कर माफी मांगता हूँ ।" इतना कह कर प्रीतम कटघरे में बेहोश हो कर गिर पड़ा और

अदालत के आदेश पर वहां के क्रमचारियों ने उस को अपने निगरानी में उस का इलाज़ कराने के लिये अस्पताल ले गये ।

अदालत की कार्यवाई स्थगित कर दी गई ।

न्यायधीश ने अदालत का फैसला दो हफ्ते में देने का ऐलान कर के चले गये ।

पर हम तो अपनी समाजिक अदालत को जारी रख सकतें है और अपना फैसला सुना सकते हैं ।

एक तरफ प्यार की प्रेरणा थी और दूसरे तरफ नफरत की भावना काम कर रही थी लेकिन दुख की बात तो यही थी की इनसान होते हुये वे सब एक दूसरे को ठीक से समझ नहीं पाये ।

न ही झगरू का साधारण परिवार और न ही अशोक का शिक्षित परिवार के पास इस प्रीतम और राखी के प्रेम के आग बुझाने के लिये कोई सुझाव थे कियोंकि उन में शायद स्वार्थ की भावना ज्यादा थी और गलतियों को सुलझाने की लगन ही नहीं थी ।

इस कहानी से हम अपने समाज के कई पहेलुओं पर फिर से गौर कर सकते हैं और अपने गलतियों को सुधारने की कोशिश कर सकते हैं ।

किस को कया सजा मिलनी चाहिये ? अपराधी कौन है ?

हम आप के इनसाफ पर छोड़े जा रहे हैं ।

समाप्त ।

५

करीना का कमाल आतंकवादी का धमाल

अपने जीवन काल में हम आम इनसान बहुत ही लम्बी चौड़ी बातें किया करते हैं पर जब बात कर्तव्य की सामने आती है तब हम में से कई लोग कायर की तरह दुम दबा कर भाग खड़े होते हैं । केवल इने गिने हिम्मत वाले लोग सामने आ कर कुछ कर के दिखाना जानते हैं । वही लोग हमारे सच्चे रक्षक हैं । हमारी करीना उन में से एक है ।

हम यह भी जानते हैं की बुरे से बुरे काम करने वाले के पास वही ताक़त, वही उत्तेजना, वही जोश तथा वही हिम्मत की जरूरत होती जो उन के विरुद्ध में खड़े होने वालों के पास होते हैं । एक तरफ उलटी नदी बहती है और दूसरे ओर सही क्रम करने वाले अपना यश कमाते हैं और मानव

समाज की रक्षा कर के उन का कल्यान करते हैं । उन्हे क्रमवीर कहा गया है । हमारी करीना भी वही है ।

यहां हम बुरे लोगों की कितनी भी निन्दा करें वह सब दिन कम ही रहेगी पर वहीं हम चाहे कितनी भी बड़ाई और सहारा अपने सही और हिम्मती रक्षकों की करते रहें वह हमारे लिये थोड़ा ही होगा । हमारी करीना की बड़ाई हम पूरे तौर से कर ही नही सकते हैं ।

इस कलियुग में बुरे लोगों की और बुरे क्रमों की जितना भी निन्दा तथा रोकथाम किया जाये वह सदा कम ही रहेगा क्योंकि उन जैसे दरिंदो से हमारे सभी लोग, सरकार और समाज अब डरने लग गये हैं और चुप मार कर बैठे रहना बेहतर समझते हैं । यही हमारी नादानी है । पर हमारी करीना कोई नादान लोगों में नहीं गिनी जाती है ।

अब समय आ गया है की हर सभ्य इनसान, हर एक समाज और हर एक देश को इस नीन्द से जागना पड़ेगा जिससे हम सब शान्ति से और आज़ादी के साथ इस धरती पर फिर से मौज कर सकें । इसी लिये हमें करीना जैसे लोगों को इस मोहिनी अवतार में सहारा देना पड़ेगा ।

आतंकवादी का अन्त यहां तभी आ जायेगा

जब आत्मघातीपन ही ख़तम हो जायेगा

इस युग में बस एक ही तो उपाय बचा है

उन का नाश ही अब हमारा अभिप्राय है ।

हम सब को यही संकल्प करना चाहिये जिससे न रहेगी बांस और न बजेगी बांसुरी । चलो देखें इस योजना को हमारी करीना कैसे सही रूप दे सकती है ।

सिडनी ओस देश का एक बड़ा शहर है जहां सभी यातायात की बड़ी सहूलियत है और वहां कई कड़ोरों की जनसंख्या है । बड़े से बडे इमारत बने हैं । सभी लोग सब दिन अपने अपने दैनिक काम में लगे रहते हैं । इसी नगर में हसन नाम का एक नौजवान एक साधारन बस ड्रायवर था ।

वह अरब देश से बचपन ही में अपने मां बाप के साथ एक गैरकानूनी जहाज पर आया था । आते ही वे सब एक अंग्रेज परिवार के साथ रहने लगे थे ।

जोन और मेरी ने उन का देखभाल करते रहे और बाद में हसन को गोद ले लिया था जब उस के मां बाप का देहानत हो गया था । हसन की शिक्षा दिक्षा वहीं सिड़नी के एक सरकारी स्कूल में हुई थी ।

धीरे धीरे हसन इस शहर के बारे में खूब अच्छी तरह से वाकिफ हो गया था और उस के यार दोस्त भी कई लोग बन गये थे । इस बीच हसन के देश से और भी शरनार्थी गैरकानूनी रूप से आ आ कर इसी शहर मे बस गये थे ।

आज हसन की पच्चीसवी सालगिरह मनाई जा रही थी । जोन और मेरी ने बड़े शौक से हसन के सभी यार दोस्तों और रिशतेदारों को इस जलसे में सामिल होने के लिये दावत दी थी ।

घर लोगों से खचाखच भरा था । तालियों से घर गूंज उठा जब जोन और मेरी ने हसन को अपने सभी जायदाद का वारिस घोषित किया । हसन के खुशियों का ठिकाना न रहा । वह जोन और मेरी को तहे दिल से शुक्रिया

अदा किया ओर उन्हे गले से लगाया । आज एक बेघरबार शरनार्थी लाखों का मालिक बन गया था । यह सब उस के तकदीर की बात थी ।

सभी लोग जलसे की भरपूर लुत्फ उठा रहे थे । हसन के पधारे हुये मेहमानो में शहर के एक बड़े व्यापारी की बेटी भी आई हुई थी । करीना अपने पिता मानसिंह की इकलौती बेटी थी और आज वह अपने चचेरे भाई अजीत के साथ इस जलसे में शामिल हुई थी ।

इस लड़की को देखने वाले देखते रह जाते थे कयोंकि इस में एक नई चमक थी । उसे हम एक खिलता फूल से या किसी शायर की ख्वाब से, या कोई चमकती हुई रोशनी से या फिर केवल चांदनी की रात से ही नहीं मिलान कर सकते थे । उस को कुदरत ने बड़े शौक से समय ले कर पैदा किया था जिस से वह भविष्य में इस संसार में सभी मानो मात्र को ऐसा सुख दे सके जिस का हम सहज में अनुभव भी नहीं कर सकते हैं ।

करीना ऐसी ही एक बन की हिरनी थी जिस के आवाज लोग सुमधुर वीणा की तान की तरह सुन रहे थे । वह ऐसी ही ठण्डी हवा थी जिस की खुशबू सभी के मन को लुभा रही थी । वह ऐसी ही रेशम की ड़ोर थी जिस में सभी को बान्ध लेने की असीम क्षमता थी । उसे अगर हम चांदनी रात से तुलना करते हैं तब वह रात शायद फीकी पड़ जायेगी । हां उस को हम मंदिर के जलते हुये उस दिये की तरह देख सकते हैं जिस की लव एक भक्त को परम आन्नदित कर देती है ।

करीना आज खूब सजधज कर आई थी और वह एक बड़ी खूबसूरत युवती लग रही थी । उस के बदन की बनावट और चेहरे की मुसकान सभी के मन भाने लगी थी । हसन करीना के इर्दगिर्द ही रहता था जैसे उस को कोई चुरा न ले जाये ।

पिछले दो सालों से करीना हसन के बस में सफर करती हुई अपने यूनिवेसिटी जाया करती थी और आहिस्ते आहिस्ते उन दोनो के बीच एक अजीब सा रिशता कायम हो गया था ।

इस रिशते को केवल दोस्ती ही कहा जा सकता है किऊंकि उन दोनों के बीच अभी प्यार की कोई सिलसिला नहीं चली थी या बातें नहीं हुई थी । एक अच्छे दोस्त होने के नाते हसन न जाने कयों करीना को इस अशलील दुनियां से सब दिन बचा कर रखना चाहता था । उस का निगेहबान बना रहना चाहता था । शायद वह करीना की छिपी गुनों को जानता था ।

करीना को भी हसन के साथ साथ रहने में और उस के साथ घूमने फिरने में कोई दिक्कत नज़र नहीं आती थी । देखने और सुनने वालों ने शायद इस रिशते की गलत मतलब निकाल लिया था इसलिये जब करीना के पिता मानसिंह तक यह अफवाह पहुंची तब एक बड़ा हंगामा मच गया था । करीना की पढाई और घर से बाहर निकलना एकदम बंद कर दी गई थी ।

ऐसे ही माहौल में हमारे परिवार में बगावत का आ जाना मुनासिब हैं और ठीक यही हुआ । करीना और हसन की मिलने की पाबंदी उन के दोस्ती को एक नया मोड़ देने को मज़बूर कर दिया था । अजीत के मदद से करीना और हसन की शादी एक गिरजाघर में वहां के पादरी के समक्ष हो गई थी । मानसिंह चाह कर भी इस शादी को नही रोक पाये कयोकि करीना अपने उम्र के मुताबिक अब सब कुछ करने को आज़ाद थी ।

हसन और करीना की शादीसुदा जीवन ने उन की गहरे दोस्ती को आखिर प्यार में बदल ही दिया था और वे अब एक साधारण जिन्दगी बड़े प्रेम से बिता रहे थे । समय बीतता गया और आज उन दोनो के पास दो बच्चे भी

हो गये थे । अनल और अनील की परवरिश हसन और करीना ने बड़े शौक और बड़े तमन्ना से कर रहे थे ।

इस बीच अजीत ने हसन की एक दूर की बहन हसीना से निकाह कर ली थी । अब दोनों प्राणी एक ही घर में निवास करते थे । हसन और अजीत हर शाम को लकेमबा के एक पुराने मकान में अपने और दोस्तों के साथ मिला करते थे । यह सब बड़े ताजुब की बात तो थी पर उन के हावभाव और चेहरे से कोई उन को आसानी से छुपे रुसतम का दर्जा तो नहीं दे सकता था । कोई यह कया जान सकता था की उन के असली चेहरे पर एक नकली नकाब पड़ा था जो उन के असलियत को सब से छुपाता था ।

जब वे देर से घर आते थे तब करीना और हसीना के पूछने पर अपनी सफाई देते हुये कह देते थे की वे एक नये कलब के सदस्य हैं और ज्यादा काम के कारण वहां से आने में देर हो जाती है । दोनों की बीबीयां यह सुन कर सभी लोगो के तरह संतुष्ट हो जाती थी । यही तो गनीमत है हम साधारण लोगों की कि बस हम अपने पती की बातें आंख मून्द कर मान लेते हैं बिना किसी हिचकिचाहट के और फिर पीछे जीवन भर बस पश्चाताप के कड़ुवे फल चीखते रहते हैं ।

हसन और अजीत की परवरिश तो बड़े ठीक से हुई थी पर उन के संगती लोग उन को बिगाड़ने में काफी मदद किये थे । शायद इसी लिये हम कहते हैं की संगत से गुण आये और कुसंगत से गुण जाये ।

यह कलब भी गजब की अजब जगह थी । उस में भाग लेने वालों के लिये वह एक मदरसा था जहां भोलेभाले नौजवानों और नवयुवतियों को भड़काया जाता था, उस्काया जाता था और फिर प्रोतसाहित किया जाता था कि जो भी लोग उन के मजहब के खिलाफ हैं वे काफिर हैं और उन्हें इस दुनियां में

रहने का न ही कोई अधिकार है और न ही कोई जरूरत है । ऐसे लोगों को इस जहान से ख़तम करना ऊपर वाले का हुकुम या आदेश है । हम उस ऊपर वाले के बंदे इस हुकुम का जी जान से पालन कर के शहीद हो जायेंगे । उस कलब के लोग का यही विशवास था ।

इस मदरसे का मुखिया या उस्ताद अबदुल था जो इन चुने हुये कच्चे उम्र के युवा लोगों को वहां ला कर उन के दिल और दिमाग में केवल एक ही बात भरना था और वह यह था की इस दुनियां में एक दिन उन के ही मजहब का राज होना है । सभी काफिरों और उन के लीड़रों को इस दुनियां से मिटाना ही उन का ऐलान था और यही उन की प्रतिज्ञा थी । दुनियां की हुकूमत तब उन के हांथों में होगी और ऊपर वाले की हुकुम पर पूरा अमल होगा ।

इस कसम को पूरा करने के लिये इस जत्थे के सभी सदस्य कुरबान हो जाने के लिये हरदम तैयार रहेंगे और कभी पीछे नहीं हटेंगे । यही अबदुल का एकमात्र लक्ष्य था ।

अबदुल ने एक और ऐलान किया । दौलत की कमी उन के पास नहीं है किऊंकि वह पूरब देश से आता रहेगा जब तक हमारे शहीद बातें कम करेंगे और ज्यादा से ज्यादा खास जगह जगह पर बमों का बिसफोट कर के काफिरों को मारते रहेंगे । यही उन का नारा रहेगा और यही उन का एक मात्र इरादा होगा ।

कमपिउटर, मोबाइल फोन, हथियार और सभी विषफोट करने वाली औजारों की कोई भी कमी नहीं रहेगी । रकम रकम के टेकनीशन भी हमारे जत्थे में भरे पड़े हैं इस लिये हमारी सभी योजनायें सब दिन सफल ही होने की समभावना है । हम हारने वाले नहीं हैं और न ही हम कभी मुड़ कर पीछे देखेंगे । हम आगे ही बढ़ते रहेंगे ।

इस नौजवानो के जत्थे के सभी सदस्यों को कसम खानी पड़ती थी की वे सब रहस्य को गुप्त रखेंगे और इस गुटबंदी के सभी नियमों का सदा निसंकोच पालन करेंगे । जान लेना या जान देना उन के लिये बस एक खेल था । काम पूरा होने पर उन को जन्नत में सही जगह मिलेगी । उन के परिवार वालों को पैसे मिलेगे और उन की देखभाल भी की जायेगी ।

यह गठबंधन या संघ के सभी लोग किसी भी देश की सरकार को पलटने में बड़े बड़े सरकारी इमारतों को बम से उड़ा देने में हवाई जहाज को हाय जैक कर लेने में किसी का अपहरण करने में या आत्मघाती हमलावर करने में कभी भी पीछे नहीं हटेंगे । इस मदरसे में भाग लेने वालों का नाम नकली होगा और हम सब समय आने पर अपने अपने जगह पर अपनी अपनी काम को उस्ताद के हुकुम के मुताबिक से कर के शहीद हो जायेंगे ।

इसी मदरसे में हसन और अजीत की भी दिमाग बराबर धोई जाती रही । वे भी सभी के तरह मतवाले होते जा रहे थे । उन में भी यही जोस बढ़ती जा रही थी । उन को न तो अपने परिवार की फिक्र रहती थी और न ही इस दुनियां के नाश होने का कोई ड़र रहता था । उन के इस हालत पर करीना और हसीना को तरस आने लगा था और वे बहुत चिन्तित भी हो रहे थे ।

यह सब देख कर करीना और हसीना को कुछ कुछ शक होने लगा था जब हसन और अजीत कानाफूसी करते रहते थे और अपने मोबाइल फोन पर एकान्त में जा जा कर बातें किया करते थे । उन को अपने घर और परिवार की देखरेख की कोई फिकर भी नहीं रहती थी । वे दोनों मानों कोई अजीब नशे मे झूम रहे थे ।

समय बीतता गया और अबदुल का मदरसा जोरों से चल रहा था । जोशीले युवा वर्ग के लोग इस जत्थे में शामिल होते जा रहे थे । पलेन बनती जा रही

थी और असली समय का इन्तजार किया जा रहा था जब देश के मुख्य मुख्य स्थानों पर आक्रमण जारी किया जायेगा । सभी सदस्य अपने उस्ताद या मुखिया के हुकुम का इन्तजार कर रहे थे । कब धमाका होगा, किस को अगवाह किया जायेगा और कहां विषफोट होगा किसी को पहले से पता नहीं था ।

पानी सर तक चढ़ चुकी थी और एक दिन करीना और हसीना ने चुपके से हसन और अजीत का पीछा किया और वे अबदुल के मदरसे की सभी बातें सुनी तथा उन के कार्य को खुद देखा । उन के भविष्य के पलेन को जान लेने के बाद उन का परदा फास किया ।

जिस दिन वहां पुलिस ने छापा मार कर सभी को गिरिफतार किया उस दिन हसन और अजीत को करीना और हसीना ने पहले से इतलाह कर दिया था । वे दोनो शायद अपने अपने बीवियों के कहने पर उस मदरसे के लिये दगाबाज या धोखेबाज तो निकले थे पर उन को अपने थोड़े दिन के लिये बहक जाने पर बड़ा दुख हो रहा था ।

उन को यह जान कर खुशी हुई की उस मदरसे को बन्द कर दिया गया और उन के सदस्यों पर मुकदमा करने के बाद सभी अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा दी गई । बात यही खतम नहीं हुई थी ।

कुछ ही दिनों के बाद हसन और अजीत पर जानलेवा हमले हुये और उन की मौत हो गई । हसीना को न जाने कहां गायब कर दी गई । यह सब देख सुन कर करीना को अपने बचाव के लिये कदम उठाना पड़ा । वह अपने बच्चों को अपने पिता मानसिंह को सौंप कर दूसरे देश चली गई । वह कहां चली गई थी यह किसी को नहीं मालूम पड़ा पर उस ने जो भलाई का काम किया था उस के लिये देश के लोग उसे शाबाशी देते थे ।

मानसिंह ने करीना के दो बच्चों, अनल और अनील, को पढा लिखा कर होशियार बनाया और आज दोनों खूफिया पुलिस का काम कर रहे थे । वे अपने काम को बड़े सफलता के साथ कर रहे थे कयोंकि वे चाहते थे कि इस दुनियां से आतंकवादी एक दम से मिट जाये और देश के सभी नागरिक अपना जीवन शान्तिपूर्वक बिता सकें । यह एक बड़ा संकल्प था पर किसी को तो मानव कल्याण के लिये ऐसा करना होगा ।

इस संकल्प के लिये सभी जिम्मेदार नागरिकों को कई कठिन काम करने पड़ेंगे तभी आतंकवादियों, आत्मघाती हमलावर और उन को प्रोतसाहित करने वाली सभी संस्थाओं और लोगों का अन्त हो सकता है । यह काम जोखिम जरूर है पर बेहद जरूरी भी है ।

आतंकवादी की प्रथा सभी देशों और सभी नेताओं को तंग कर रही है और उन सब के सामने एक बहुत बड़ी समस्या आन खड़ी है । एक समय था जब हम अपने समक्ष में किसी भी चोर और चांड़ाल को पहचान लेते थे और समाज में उन की खूब मरम्मत कर देते थे तब उन को कानून के हवाले कर देते थे पर आज वैसे खराब और जहरीले दरिंदों के चेहरे को पहचानना बहुत मुश्किल हो रहा है । वे हमारे सामने निर्दोष भेड़ बकरी के तरह रहते हैं लेकिन वे असल में खतरनाक भालू और भेड़िये से भी खतरनाक और जहरीले हैं ।

हमारे मध्य में कई लोग उन का सहारा देते हैं और उन का भेद छुपाते हैं । हम उन को तब जान पाते हैं जब वे अपना खतरनाक काम को कर देते हैं । तब बड़ी देर हो चुकी होती है । हम सब को चैतन्य हो कर रहना है अगर हम इन अपराधियों का अन्त देखना चाहते हैं ।

देश को और उन के लोगों को आतंकवादियों से बचाना कठिन हो रहा है । सभी लोग परेशान हैं, दुखित हैं, क्रोधित भी हैं और एकदम मोहभंग भी हैं पर एकता में सदा बल रहा है और कोशिश करने पर इनसान क्या नहीं कर सकता है । जब हम सब एक हो कर इस खतरे का जोरदार मुकाबला करेंगे तब हमारी परेशानी और सब दुख दूर हो जायेगी ।

हमारे मध्य में ज्यादा से ज्यादा अनल और अनील तथा करीना जैसे लोगों की शक्त जरूरत है जो उन आतंकवादियों, आत्मघाती हमलावर लोगों और उन के जत्थों का अन्त करने में हमारा सहयोग दे सकते हैं ।

हम सब और हमारे सभी देश के नेता तभी अपने काम में सफल होंगे जब सभी समझदार प्रजा एक साथ हो कर हमारी मदद करती रहेंगी और न की अपराधियों की तरफदारी करेगी ।

अब पाठकगण को करीना का कमाल देखने का समय आ गया है । आज उस को लापता हो जाने के पांच साल बीत गये थे । करीना अब करीना नहीं रही और वह अब हिन्द देश के एक बड़े गुफा में अपने ढंग से एक नये संस्था का संचालन कर रही थी । ऐसे ही हिम्मती व्तक्तियों की इस धरती पर जनम लेने से हम सब का उद्धार हो सकता है ।

करीना का नया अवतार हुआ था । उसे अब मोहिनी के नाम से जाना जाता था और उस के इस नये दल का नाम प्रसंगम था । इस संस्था का मुख्यालय हिन्द देश के परमानंद पर्वत पर बने एक साधारण आश्रम में जरूर था पर वह एक अंतराष्ट्रीय महाविद्यालय बन गया था । यही को हम मोहिनी अवतार कहते हैं ।

पिछले पांच वर्षों मे मोहिनी ने बड़े से बड़े व्यापारियों और देश के प्रमुख नेताओं से मिलती रही और अपने योजना को बिसतार पूर्वक समझाती रही । उन लोगों के मदद और आर्थिक सहयोग से आज मोहिनी इस संस्था का संचालन करने में समर्थ हुई थी । संयुक्तराष्ट की पूरी सलाह और मदद से यह संस्था बनी थी ।

आज मोहिनी के प्रसंगम आश्रम का उदघाटन हिन्द देश के प्रधान श्री भगवान दास के करकमलो से हुआ था । प्रधान जी ने इस संस्था के बारे में सब को बड़े बिसतार पूर्वक समझाया ।

यह आश्रम संसार के सभी लड़कियों के लिये बना है जो होशियार हैं, सुलक्षणी हैं, सुन्दरता उन की कदम चूम रही है, तथा अपने जीवन में और भी आगे बढ़ने का हौसला रखती हैं । यहां उन के हुनर के मुताबिक सभी प्रकार की शिक्षा मिलेगी । जब वे अपने पूरे निपुर्ण होने की क्षमता दिखायेंगी तब उन को उचित काम करने के लिये संसार के किसी भी देश में जाने का मौका प्रदान किया जायेगा ।

मोहिनी के साथ इस में कई देशी और विदेशी सलाहकार भी रहेंगे जो लड़कियों को शिक्षित करने और प्रोतसाहन देने में मदद करेंगे । यहां पर बड़े बारीकी से लड़कियों को रचनात्मक और सकारात्मक ज्ञान दिया जायेगा जिससे उन को ऐसी प्रेरणा और उत्तेजना मिले की उन में आत्मनिर्णय करने की पूरी पूरी काबलियत हो तथा उन में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की ठीक और सही पहचान हो जाये ।

ऐसा इस लिये जरूरी है कयोंकि आज की आधुनिक दुनियां बड़ी पेंचीली होती जा रही है । हम चाहते हैं की हमारी शिक्षित कन्यायें जब काम पर लगें तब एक पूर्ण क्रमवीर बन सकें और किसी भी मुश्किल काम के

वातावरण में सही तौर से पेश आने की क्षमता रखें । इन के लिये केवल एक ही रासता रहेगा जो उन को सदा आगे की ओर अग्रसर करेगा । पीछे मुड़ कर देखना या लौटना इन के शब्दकोस से एकदम मिटा दी जायेगी ।

यही इस महान संस्था का लक्ष्य रहेगा और यही यहां का साधना होगी । इन प्रयोजनों का पूरा ध्यान यहां का हर एक सदस्य के अंदर कूट कूट के भरना यहां के हमारे निपुर्ण क्रमचारियों का एकमात्र संकलप रहेगी । हमारे इस नई दुनियां के लिये यह संस्था एक मिसाल बन जायेगी जब हमारे शिक्षित लड़कियां संसार के कोने कोने में जा कर अपना यश फैलाना शुरू करेंगी ।

इन्ही शुभ आशाओं को लेकर मैं अपना आशीश इस योग कार्य को दे रहा हूं जिस से यह दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करती रहे । आप सब की जय हो तथा यह मोहिनी अवतार का प्रसंगम सफल हो ।

याद रहे की आखीरी में होगा वही जो मन्जूरे खुदा होगा । हम अपना करम करते रहें और फल उस के हांथ में छोड़ दें । यह गीता का संदेश है । यही हमारी मांग है ।

इस अंतराष्ट्रीय प्रसंगम का उदघाटन होते ही मोहिनी ने अपना शुभ काम शुरु कर दिया । पंद्रह देशों से दस दस चुनी हुई लड़कियों को ला कर उन की खास प्रशिक्षण आरम्भ की गई । इन चुने हुये युवतियों को भाषा, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, तथा अन्य सामान्य ज्ञान और शारीरिक शिक्षा के अलावे सभी तकनीकी और व्यायाम की हुनर दी जाने लगी । हर साल उतने ही नये रंगरूटों को लगातार सभी देशों से लिया जाता रहा जिससे यहां का कार्य चलता रहे ।

समय दौड़ता रहा और मोहिनी का यह विषेश कार्य भी सभी क्षात्रों को सही उत्तेजना देती रही । इन सभी रंगरूटों का एक ही अभिप्राय था । उन का विशेष संदेश एक ही रहा । जाओ अपने अपने निमित काम में लग जाओ और सभी आतंकवादियों और आत्मघाती हमलावरों को ढूंढ ढूंढ कर उन का अन्त करने का भरशक्त प्रयत्न करो ।

मोहिनी अवतार का नुसखा कठिन था पर उस का प्रयोग एक दम अनिवार्य था । यह योजना या मनसूबा खतरनाक था पर इस तदबीर को जारी करना अत्यन्त जरूरी हो गया था । उन दरिंदों के साथ लड़ाई करना या मुठभेड़ करना अब हमारे पैसे और जान की बरबादी हो रही थी । मोहिनी अवतार की योजना एक ठोस कदम थी जिससे उन दरिंदों का नाश या नेसतानाबूत होना अवशयक हो गया था । इस प्रयोजन में देर थी पर उन सब की अन्त निशचय थी । आज नहीं तो कल यह मनसूबा सफल होगा ।

इस अंतराष्ट्रीये प्रसंगम के अनुसनधान के मुखिया डाक्टर मोहन ने एक ऐसा प्रभावशाली और ताकत्वर दवा की पुड़िया तैयार किया था जिस को लेकर सभी लड़कियां अपने विशेष कार्य के लिये चल देती थी तथा उस के इस्तेमाल कर के मानव समाज का कल्यान कर रही थी । यही इन का सब से बड़ा हथियार था ।

जैसे अलकायड़ा और जमाल इसलामिया के सदस्य अपने सभी कार्य गुप्त रखने की और अपने जान पर खेल जाने की कसम खाते हैं वैसे ही मोहिनी अवतार के सभी सदस्या भी अपने सही काम पूरा करने को और सभी योजना को गुप्त रखने की बीड़ा उठाई थी । वे बम और गोले की इस्तेमाल करते थे और मोहिनी अवतार के सदस्या इस चमत्कारी दवा की पुड़िया को काम में लाते थे ।

एक जरूरी बात सभी लड़कियों को मालूम था और वह यह की अगर किसी कारणवश उन का काम पूरा नहीं हुआ तब वही दवा की पुड़िया उन के लिये खुद काम करेगी ।

इन लड़कियों की सब से बड़ी हुनर उन का किसी भी व्यक्ति को मोह लेने की बेजोड़ ताकत थी । इस अनमोल गुण को देने वाली इस संस्था की संसार प्रसिद्ध मनोविज्ञानिक महिला ड़ाक्टर प्रीती थी । ड़ाक्टर प्रीती के इस मोहिनी मंत्र के आगे कोई का बस नहीं चलता था और हर एक व्यक्ति पर उस मोहिनी मंत्र का महान जादू चल जाता था । कोई भी व्यक्ति इन रंगरूटों के जाल में फंस कर वही करने को तैयार हो जाता था जो वे चाहती थीं । इसीलिये इस प्रसंगम के लोगों पर अपने सदस्यों पर इतना अभिमान था और इतन विशवास था ।

इस गुप्त योजना से अगले दस वर्षों में मोहिनी अवतार के पूरी तरह से प्र तिबद्ध पांच हजार सदस्य संसार के कोने कोने में जाकर अपना अपना काम करते रहेंगे और उन जटिल अपराधियों को अपने सिखाई हुई तरकीबों से और उस दवा की पुड़ियों से धीरे धीरे खत्म करते रहेंगे । एक दिन ऐसा आयेगा जब सभी आतंकवादी और उन के साथियों की नाम निशान इस धरती से मिट ही जायेगी ।

यही जोड़ का तोड़ जवाब से ही सभी आतंकवादी और आत्मघाती हमलावर की खातमा हो सकती है । यही करीना का कमाल रहेगा और यही हमे शान्ति प्रदान करेगा । इस योजना के जरिये न तो बन्दूकें चलेगी, न ही बम गिरेंगी और न ही हवाई जहाज और मकान गिरेंगे । बस केवल उन का अन्त होगा जिन पर हमारी नज़र रहेगी ।

इस अंतराष्ट्रीये प्रसंगम को प्रोतसाहित करना और इस मोहिनी अवतार की सेवा सभी नेक नागरिक और सभी सभ्य देशों का परम कर्तव्य हो जाता है । चलो अब हम सब मानव कल्यान के लिये इस बहती गंगा मे गोता लगाये और नहां लें ।

हमारी प्रार्थना यही है की इस दवा, दुआ, दलन और दस्तूर से हमारा भविष्य और हमारा जीवन उन आतंकवादियों और आत्मघाती हमलावरों से सुरक्षित होती रहगी और हम सब चैन से रहने लगेंगे ।

मोहिनी अवतार की और हमारी अंतराष्ट्रीये प्रसंगम की सदा विजय हो, यही हमारी आकांक्षा है, यही हमारी दुआ है ।

इस कलियुग में अब तरण उपाय नहीं कोई

मोहिनी अवतार की जब तब विजय न होई ।

८

आज नहीं तो कल

लोग कहतें हैं की हर एक तूफान के बाद शान्ति मिलती है, दुःख के बाद सुख मिलता है और गर्मी के पश्चात ठंडक आ जाती है । ठीक इसी तरह धूप के बाद छांव और रात के बाद दिन आ जाता है जैसे अंधेरे के बाद प्रकाश और हर एक इन्सान जन्म लेने के बाद कई जंजालों में फंस जाता है । वह इस धरती पर ही अपने कर्मों के अनुसार चाहे स्वर्ग में रहता है नहीं तो नर्क भोगता रहता है ।

हम मानते हैं की हमारा कर्म ही इस जीवन में हमें अच्छा और बुरा वक्त दिखाता है । आज का मनुष्य जब जाग उठता है तब वह चैतन्य होकर अच्छे कर्मों को करता है और अपने कर्तव्य से ही सुखी जीवन बिता सकता है । उसे स्वर्ग में रहने का आभास होता है । अगर इन्सान अपने जीवन में सोता ही रहे तब वह निसंदेह

इसी धरती पर अपने कुकर्मों के कारण नरक भोगता रहता है । यह कई विद्वानों की निजी भावना है ।

हमारे कर्म और कर्तव्य शायद हमारी भावनाओं से ऊंचे हैं क्योंकि हम अपने अच्छे कर्तव्य और उम्दे कर्म से ही अपनी भावनाओं और सपनों को साकार कर सकते हैं । लेकिन इसके विपरीत व्यवहार करके इन्सान बड़ा दुखी होता है और तड़पता रहता है जैसे वह यहीं नरक भोग रहा हो ।

आज के युग में हम चाहें तो अपने श्रेष्ट काम या व्यवहार से बहुत आन्नद की जिंदगी बिता सकते हैं पर हम दुःख और दरिद्रता के दरिया में डूबते रहेंगे अगर हम अपने आपको बुरे लोगों की संगत से दूर नहीं रख सकते हैं । हमें कोई किनारा नज़र नहीं आयेगा और हम अपने हालत को ठीक से समझ नहीं पा सकेंगे । यही हमारे लिये नरक होगा।

अपने पुनीत कर्मों और अच्छे कर्तव्यों से एक विचलित या बिगड़ा हुआ इन्सान भी अपने आपको सुधार सकता है तथा सुखी जीवन बिता सकता है । यही विश्वास को लेकर हम अपने इस कहानी को रचने जा रहे हैं ।

महेश अपने गांव से अपने परिवार को छोड़कर कुछ दिनों के लिये सूबा नगर चला गया था । सूबा में उसका एक कालेज वाला पुराना मित्र रवि रहता था । रवि अब एक बड़ा कलाकार था और महेश ठहरा एक साधारण अध्यापक लेकिन इन दोनों की खूब बनती थी ।

रवि के घर पहुंचने पर महेश का खूब स्वागत सत्कार हुआ और महेश सबसे मिल-जुल कर अपनी छुट्टी बिताने लगा। आज वर्षों बाद वह सूबा शहर का रहन-सहन और चमक-दमक देख रहा था। आज का नया सूबा शहर कुछ और था और महेश इस नये और आधुनिक शहर के सभी नजारों को एक साथ देखना चाहता था। लेकिन उसके मित्र रवि ने बताया, 'धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होये,माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आये फल होये।'

एक-दो दिनों के बाद अब रवि ने महसूस किया की उसका दोस्त महेश सूबा शहर के नज़ारों को देखने को उतावला हो रहा था। एक अच्छा दोस्त होने के नाते यह उसका फर्ज बन जाता था कि महेश को वह इस दुनिया का मजा ले लेने देता। उसके लिये शायद यह लाभदायक हो।

बड़ी हसीन रात थी। महेश और रवि सूबा शहर की चमक-दमक देखने के मकसद से निकल पड़े। चांद भी नीले आकाश पर मुस्करा रहा था। इनके आने से शायद वह रात और भी रंगीन और चलायमान हो रही थी। थोड़ी देर सूबा पाइंट पर बिताया, फिर कुछ देर तक शहर का चक्कर लगाया और अन्त में अपने उस मुकाम पर वे पहुंच गये जहां उन्हें शायद नहीं जाना चाहिये था।

लेकिन जब वहां आ ही गये थे तो अनुभव तो कर लेना जरुरी हो गया था। यही वो जगह थी जहां शहर का सारा सौंदर्य, दौलत और शराब के साथ-साथ शबाब भी नज़र आ रहा था। यह सब दृश्य

देखकर महेश की आंखें चकाचौंध हो गईं थीं लेकिन उसने जैसे अभी जी भर के देखा नही था इसलिये बड़े चाव से देखे जा रहा था। कहां उसके गांव की खेती-बारी और कहां सूबा नगर की चमक-दमक ! यह तो जैसे जमीन और आसमान का फर्क लग रहा था।

रंगीली बिजली बत्तियों की चमक, रसीले संगीत की दमक और लोगों की दिलकश चहक देख-सुनकर महेश तो दंग रह गया और चुपचाप एक कोने में बैठ गया। यहां से उस खूबसूरत नाइट क्लब के अन्दर का दिलचस्प नजारा देखने में जो मजा उसको मिल रहा था वह उस भीड़-भाड़ में भाग लेने से नही मिल पाता। महेश इस नवीन और आधुनिक रहन-सहन का पूरा लुत्फ उठा रहा था।

यहां पर सभी जाति, धर्म, वर्ग और उम्र के लोग एक दूसरे से घुलमिल रहे थे। सभी लोग नाच-गाने का मजा ले रहे थे, शराब की चुस्की ले रहे थे और खूब हंसी मज़ाक में चूर थे। कोई लुट रहा था तो कोई लूट रहा था पर सभी अपने-अपने ढंग से वहां का पूरा लुत्फ उठा रहे थे।

कई जाने माने लोग नशे की हालत में झूम रहे थे। उनको न समाज का ख्याल था, न कोई धर्म की रुकावट, न ही कोई इज्ज़त की सोच फिकर। बस मजे लेने के धुन में वे मनमानी किये जा रहे थे।

रवि के दोस्त महेश की नज़र उन मस्ती में चूर और नशे में डूबे लोगों को निहारने से फिर ही नहीं रही थी। उसे बड़ा मजा आ रहा

था और उसको यह डर था कि कहीं यह चलचित्र जल्दी ही न खत्म हो जायें क्योंकि उसका जी अभी नहीं भरा था।

एक से एक नये फेशन वाले लोग झूम रहे थे। उस मंच पर मर्द, स्त्री, नौजवान और नवयुवतियां सब नाच-कूद रहे थे। जिनको नाचना नहीं आता था तो वे भी अपने हाथ-पांव और कमर को संगीत की गति विधि से मिलाकर हिला-डुला रहे थे। लोगों के कदम कहीं और डगमगाते थे और संगीत की लहर कहीं और जाती थी पर कोई किसी का परवाह नहीं करने वाला था।

रवि को जब कुछ फुर्सत मिली तब वह बोल उठा, 'मेरे यार यह सूबा का सबसे मशहूर नाइट कलब जुपीटर है और यहां हमारे लोग दिन भर के कड़ी मेहनत के बाद अपने गम भुलाने और कुछ मौज उड़ाने के लिये चले आते हैं।'

'अच्छा मेरे यार अब बस ! मुझे जी भर के इन रंगीन नजारों को देख लेने दे पता नहीं कब यह शुभ अवसर फिर मिलेगा,' महेश ने कहा और टकटकी लगाये देखता रहा।

'अब देखो उस युवती को ! क्या गजब का सौंदर्य है। '

'उसकी चाल तो देखो ! मानो नागिन सी मचलती बलखाती चली आ रही है। मेरे दिल पर आज हजारों बिजलियां गिर रही हैं। मैं कैसे सम्भालूं अपने आप को ? काश! मैं एक कुंवारा होता तो इनके

बारे में कुछ सोचता पर मेरी किस्मत ही नहीं है इनसे मुठभेड़ करने की और दोस्ती बढ़ाने के लिये। जाऊं तो जाऊं कहां। ’

‘जायेगा कहां मेरे दोस्त ? मेरी तरह इन सबका मजा लेते रहो और घर पहुंचने पर इन सबको भूल जाया करो। अपने जीवन का एक नया पन्ना रोज खोलो तभी खुशी मिलेगी।’ रवि ने सलाह दी।

‘अच्छा यह तो बड़े पते की बात तुम ने कही है। मैं इसको याद रखूंगा और इस पर अमल करने की पूरी कोशिश करूंगा।’ महेश ने कहा।

‘सिर्फ एक हसीना की बात यहां मत कर,’ रवि ने कहा, ‘मेरे यार यहां तो सैकड़ों की भीड़ रहती है। आगे-आगे देखो होता है क्या। ’

एक सफेद सलवार कमीज़ में सजी उनके आगे से गुजर गई। फिर एक गुलाबी साड़ी वाली नाज़नीन सामने से मचल गई। और अब तो कमाल हो गया ! एक और बिजली मिनी ड्रेस में आ चमकी की महेश की आंखे चौंधिया गईं।

कितने और आते गये। महेश मदहोश होकर उन सबके बदन की बनावट और कपड़ों के फेशन को देखता रहा जैसे यह चलचित्र फिर कभी देखने को नही मिलेगा। कहां कल का एक गंवार महेश और यहां तो आज का नये विचारों वाला महेश नजर आ रहा था।

एक और आधुनिक पोशाक वाली नई नवेली को जब महेश ने देखा तो देखता ही रह गया । उसके हसीन चेहरे पर से महेश की नजर हटती ही नहीं थी पर रवि ने उसके नयनों के तार को तोड़ दिया, 'जिस पर तुम्हारी निगाहें टिकी हुई हैं वह कोई मामूली चीज़ नहीं है । यह इस क्लब की मंत्री है प्यारे और इसे चाहने वाले लोग बड़े प्रेम से इसको "मिस जानकी " के नाम से पुकारते हैं । '

इस युवती के हाल-चाल में सभ्यता कूट-कूट कर भरी गई थी । एक नाजुक डाली जैसी लचक, चेहरे पर थोड़ी सी मुस्कान और काला चश्मा उसकी नशीली आंखों को छुपाये रखा था । गले में दमकता हुआ कीमती हार और कानों में हिलते हुये चमकते गहने लटक रहे थे ।

उसने शायद अपनी जवानी के कुछ ही दिन देखे थे पर वह होशियार नजर आ रही थी तथा एक अजीब सुन्दरता उसके कदम चूम रही थी । इस चांद से चेहरे वाली को तो महेश देखता रह गया जैसे कभी ऐसा प्राकृतिक दृश्य उसने देखा ही नहीं था ।

महेश के दिल और दिमाग पर तो अब काबू ही नहीं रहा और वह इस युवती की तरफ देखकर इशारे से अपना हाथ हिलाया जैसे वह उसका अभिवादन कर रहा हो । लड़की ने उसके अभिवादन को अपना सर झुकाकर स्वीकार किया और चलती रही ।

थोड़ी देर के सन्नाटे के बाद रवि ने कहा. 'महेश भाई, अब तो तुमको यह मानना ही पड़ेगा कि मालिक एक बहुत बड़ा कारीगर है

जो इतनी खूबसूरत चीज बनाकर हमारे सामने रख देता है। पर एक बात तो साफ है की मिस जानकी को उस बनाने वाले ने बड़ी फुर्सत लेकर रचा होगा।'

महेश ने तो अपने गांव की साधारण युवतियों को ही देखा था पर यह अजब दृश्य तो उसके दिल और दिमाग पर गजब ढाह रहा था। उसकी कल्पना शक्ति कमजोर होती जा रही थी और वह अपने सपनों की एक नई दुनिया बसाने लगा था।

इसी बीच रवि फिर बोल उठा, 'यह भी जानना जरूरी है कि यह मिस जानकी एक बहुत बड़े व्यापारी की एकलौती बेटी है। दाहिने ओर जो मोटी सी औरत बैठी है वही इनकी मां है और इनका पिता विदेश मे बिजनेस कर रहा है।

इनके पिता को लोग पीपी के नाम से जानते हैं। हम तो उसे परमेन पानडे ही कहते हैं। पर जो भी हो, यही उनका रहन-सहन है। मां-बेटी यहां और पिता विदेश में। बहुत ही रंगीन मिज़ाज है इनका, लेकिन हम क्यों इनकी चिन्ता में लगे हैं ? आओ चलो हम एक-एक और ड्रिंक पीते हैं ।'

रवि और महेश एक एकांत स्थान पर बैठकर अपनी बातचीत में व्यस्त हो गये पर महेश का चंचल मन बड़े जोरों से कहीं और दौड़ रहा था। उसने तो अभी सब नजारों को जी भर के देखा नहीं था। महेश की आखों के सामने से मिस जानकी का चेहरा दूर ही नहीं हो

रहा था । जानकी कहीं नजर नहीं आ रही थी फिर भी जैसे वह महेश के सामने से गुजर रही हो ।

उधर मिसेज़ पीपी एक अधेड़ आदमी से ऐसे घुलमिल कर बातें कर रही थीं जैसे वही उसका पीपी हो । आज रात वह कई बार उसी आदमी के साथ नाच चुकी थीं । ऐसा तो यहां हर रात होता है, रवि ने महेश को बताया । उसने महेश को याद दिलाया की लोग वहां मौज उठाने के लिये आते हैं । कोई शिष्टाचार का प्रदर्शन करने नहीं आते की उन्हें समाज के बंधनों में ही रहना चाहिये ।

अगर समाज के नियमों से डरते हों तो यहां आना बंद कर दो वरना सब भुलाकर यहां का सही लुत्फ उठाओ और खुश रहो । मेरा यहां आने का मकसद सिर्फ अनुसंधान है ।

पूरे क्लब का दृश्य विचित्र था पर महेश उसका पूरा मजा ले रहा था । शराब था, शबाब था, खेल और मेल थे और यही तो यहां की रीति रिवाज लग रहा था ।

कोई चाल का, तो कोई हाल का और फिर कोई तो सिर्फ माहौल का नशेड़ी था । महेश और रवि ने भी अब तक चार पांच ड्रिंक तो पी ली थीं और अब वहां का नजारा बहुत ही आकर्षित तथा मनोरंजन से भरपूर लग रहा था ।

खास मंच पर एक नाच समाप्त हुआ और दूसरा गीत शुरू हुआ । गाने वाली चमक रही थी लेकिन गीत के बोल कुछ समझ में नहीं

आ रहे थे । इसका कारण न जाने महेश और रवि के नशे की हालत थी या सचमुच गाने वाली का दोष था।

कभी सब बत्तियां बुझ जाती थीं और कभी वापस उजाला हो जाता था । अंधेरे में जो क्लब में झूमते लोग कर लेते थे वह उजाले में कैसे किया जा सकता था। इसी तरह महेश और रवि की रात कटी और वे सुबह एक बजे घर पहुंचे तथा आराम की नीद सो गये। पर उस रात की चमक-दमक उनकी आंखों के सामने नाचती रही। कई सुहाने सपने भी उनकी नींद को हराम कर रहे थे पर जब सुबह हुई तो केवल एक अकेलेपन का अनुभव हो रहा था।

किसी तरह से दिन तो कट गया पर शाम होते ही दोनों दीवाने फिर से अपनी उसी मंजिल की ओर चल पड़े । उनके लिये मौज उड़ाना ही उनका एक असली और खास मकसद बन कर रह गया था।

आज शनिवार जो ठहरा इसीलिये वह नाईट क्लब खचाखच भरा हुआ था । आज की रात एक खास उत्सव और रंगीले नाच गाने वाली थी। केवल आगे मंच पर ही स्पॉट लाईट टिमटिमा रही थी। महेश और रवि भी वहां मौजूद थे और पूरा लुत्फ उठाने को उत्सुक हो रहे थे।

छम ! छम ! छम ! घुंघरू बज उठे ! राग सुरीली थी और नाचने वाली का तो कहना ही क्या। कई नाचने वाली आईं और अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन करके मंच से बाहर चली गईं । एक से बढ़कर एक थीं और उनकी मस्ती भरी अदायें जुल्म ढा रही थीं।

देखने सुनने वाले झूम रहे थे और नाचने गाने वाले सबको मतवाला बना रहे थे ।

अब आज का अंतिम प्रोग्राम होने ही वाला था जिसको क्लब की मिस जानकी को पेश करना था । लोगों में एक अजीब सी खलबली मच गई थी जैसे कोई ज्वालामुखी फूटने वाला हो ।

क्लब की सभी बत्तियां एक साथ जिन्दा हो गईं और जैसे ही जानकी ने मंच पर कदम रखा कि तालियों से वहां का माहौल गूंज उठा । जब सब की तालियां रुक गईं तब भी महेश की थपोड़ी बजती रही जिसको सुनकर लोग हंस पड़े और महेश शर्मा गया पर जानकी की कड़ी नजर महेश पर पड़ ही गई ।

प्रोग्राम शुरू करने से पहले जानकी के सुरीले आवाज़ जब महेश के कानों में पड़े तब उसे होश आया की उसकी बेतुकी तालियों ने गजब का तमाशा दिखा दिया, 'दोस्तों !मेरी आज की रात उस खूबसूरत नौजवान के लिये है जिसकी तालियों ने मेरा दिल जीत लिया और मुझे खुश कर दिया ।'

हॉल की सारी बत्तियां बुझ गईं और स्टेज की स्पॉट लाईट में केवल जानकी ही नज़र आ रही थी । उसके नाचने का ढंग ही अलग था । उसकी कमर की लचक, आंखों की मटक और पैरों की थपक सभी के दिलों पर चोट कर रही थी और सबकी जबान से वाह! वाह !! की आवाज़ निकल रही थी । महेश भी एक नये दुनिया के सपनों में खो गया था ।

जानकी के नाच ने सभी को मदहोश बना दिया था और महेश तो पागल हो चुका था । शराब पीने वाले दो चार पेग और मार गये थे । चारों ओर जानकी की ही चर्चा हो रही थी । नाच बन्द हुआ और अचानक हॉल की मरी रोशनी जिन्दा हो गई । एक दूसरे से लिपटे लोग चौंककर अलग हो गये । आज का प्रोग्राम समाप्त हुआ पर हर एक तरफ से शोर आ रहा था । सभी लोग बाहों में बाहें डाले क्लब से बाहर निकल रहे थे ।

महेश अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ और वहीं बैठा अपने ख्याली दुनिया में खो गया था की अचानक किसी ने उसके कंधे पर अपना नाजुक हाथ रख दिया ।

महेश ने मुड़ कर देखा तो देखता ही रह गया । उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि जानकी उसके इतना करीब खड़ी थी । उसे एक अजीब सा एहसास हुआ, एक बहुत ही प्यारी सी महक मिली और दिल को खुश कर देने वाली मुस्कान देखने को मिली । जानकी एक लम्बी सांस लेकर महेश के बगल वाली कुर्सी पर बैठ गई ।

थोड़ी देर तो महेश अवाक होकर अपने सामने वाली अजूबे को एकटक लगाये देखता रहा लेकिन फिर जानकी ने खुद सन्नाटे को भंग करते हुये कहा,मेरा प्रोग्राम कैसा रहा ?

बस अब क्या था महेश ने जानकी के सामने उसकी बढ़ाई के पुल बांध दिये और इसी बीच अपना शुभ परिचय भी दे दिया । महेश

और जानकी को जैसे एक दूसरे में कोई चुम्बक नजर आ रही थी। कुछ देर तक वे एक दूसरे से जान-पहचान करने में व्यस्त थे पर जानकी की मां ने आकर रंग में भंग डाल दिया।

जाते-जाते जानकी अपना पता महेश को दे गई और यह भी कह गई कि उनकी पहली मुलाकात एक अंतिम मिलन नहीं होना चाहिये। उस रात भर महेश के कानों और दिमाग में जानकी की एक-एक बात और अदा गूंज और झूम रहे थे।

जानकी के चेहरे की चमक और होंठो की मिठास महेश को एकदम पागल बनाते जा रहे थे। उसने रवि को अपने दिल की धड़कन सुना दी पर रवि के लाख समझाने के बावजूद महेश ने जानकी से फोन पर बातें की और कल फिर मिलने का वादा भी कर लिया।

किसी तरह से सुबह तो हो गई पर महेश की तड़प नही गई। वह जानकी से मिलने के लिये आतुर था, उत्सुक था, बेताब था। इतने में एक फोन आया की जानकी उससे मिलने ठीक दस बजे आ रही है। उसके आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा और वह अब इन्तजार की घड़ियां गिनने लगा।

रवि महेश की जल्दबाजी से घबरा गया था इसलिये उसने महेश को जानकी से मिलने जुलने में सावधानी बरतने के लिये कहा पर महेश इसका विपरीत मतलब निकाल बैठा। महेश की सोच में रवि को इस बढ़ते हुये रिश्ते से जलन हो रही थी पर उसने अपनी दोस्ती के कारण चुप रहना ही बेहतर समझा।

ठीक दस बजे एक सफेद शानदार मोटर रवि के घर के सामने आ खड़ी हुई और जब जानकी ने सीटी बजाई तब महेश सीधे उसकी मोटर की ओर खिंचता चला गया। रवि को अब यह एहसास होने लगा की जैसे मोहब्बत की आग दोनों तरफ से लगी हुई थी।

जाते-जाते महेश रवि से कहता गया, 'मेरे यार हम शाम को क्लब में मिलेंगे !'

जानकी की मोटर सूबा पाईंट की ओर चल पड़ी। अब वे दोनों एक दूसरे के चाहने वाले हो गये थे। उनकी दूरियां कम हो चुकी थीं और वे अब खुलकर एक-दूसरे से बातें करने लगे थे जैसे उनका जन्म-जन्म का साथ रहा हो।

समुन्दर में तैरकर, बोटेनिकल गार्डन की सैर सपाटा करके और होटल में भोजन करके जानकी और महेश दोनों और भी करीब आ गये थे। इस नजदीकी का कारण शायद उन दोनों के एक दूसरे के मिलते जुलते स्वभाव और स्वतंत्र आचार-विचार थे। अब उनको किसी की परवाह नही थी। उनके लिये बस इतना ही काफी था कि वे दोनों खुश थे और अपने जीवन का मजा उठा रहे थे।

जानकी को महेश के बारे में और ज्यादा जानकारी की जरुरत ही नहीं थी क्योंकि उसके लिये महेश एक खुली किताब के तरह पेश आता था।

दोपहर को जानकी ने महेश को रवि के घर छोड़कर शाम को मिलने का वादा करके चली गई। एक अच्छे दोस्त के नाते रवि ने उस शाम को क्लब जाने से पहले महेश से कुछ बातें कीं और सलाह मश्वरा किया क्योंकि उस दिन महेश के पिता से उसकी बातें फोन पर हुईं थीं।

'महेश भाई, आज तुम्हारे पिताजी का फोन आया था और वे पूछ रहे थे की तुम कब घर वापस आ रहे हो । कृपया उनको बता दीजिये जिससे आपके परिवार वाले आपके वापस आने की खबर पा जाये ।' रवि ने कहा ।

इतना सुनते ही महेश चीख उठा, 'रवि, अगर तुम्हे मेरा यहां रहना अच्छा नहीं लगता है तो साफ-साफ बता दो जिससे मैं कोई दूसरा प्रबंध कर लूं । मैं और जानकी कोई दूध पीते बच्चे नहीं हैं जिनको तुम्हारी सलाह की जरूरत है । हां, अगर तुम यह सोच रहे हो की मैं जानकी से प्यार-व्यार करता हूं तो यह तुम्हारी भूल है । जानकी मेरी एक अच्छी दोस्त है, बस ।'

रवि महेश की सफाई सुनकर चौंक गया और इससे पहले की वह कुछ कहे कि महेश की गाड़ी आ गई । महेश झटपट उसमें बैठा और जानकी से मिलने चल दिया । रवि चुपचाप वहीं बाहर बैठ गया, सोचता रहा । उस रात वो कहीं नहीं गया ।

रवि महेश को समझाने की कोशिश कर रहा था पर महेश के दिल की बात जानना अब मुश्किल ही नहीं लेकिन बहुत असंभव सा लग रहा था । महेश शायद अब पहले वाला महेश नहीं रहा उसे सूबा की हवा लग गई थी । रवि को ऐसा लगता था जैसे दोस्त, दोस्त न रहा ।

महेश के दिल और दिमाग में क्या हो रहा था यह तो वही जानता होगा पर इतना रवि जानता था कि महेश गलत रास्ते पर चल रहा है । क्या यह सब एक दिखावा था या इसमें सच्चाई थी ? इसका

पता लगाना रवि के लिये कोई आसान बात नहीं थी क्योंकि महेश का मिज़ाज अब बहुत चिड़चिड़ा होता जा रहा था ।

उधर जब महेश की मुलाकात जानकी से हुई तब उसने अपने रहने का इन्तजाम किसी होटल में करने की बात की तब जानकी ने तुरंत महेश को अपने घर आ जाने की सलाह ही नही पर आमंत्रण ही दे दिया ।

उस रात क्लब में महेश और जानकी के रिश्ते में और भी नजदीकियां आ गईं थीं । दूसरे ही दिन महेश रवि के घर से निकलकर जानकी के आलीशान मकान में रहने चला गया । अब शायद दोस्त, दोस्त नहीं रहा क्योंकि महेश को एक नया दोस्त जो मिल गया था ।

रवि को लाचार होकर महेश के परिवारवालों को उसके नये रिश्ते के बारे में बता देना पड़ा । रवि और महेश के दोस्ती में तो आग लग ही गई थी पर उधर महेश के घर वालों के दिल में भी बड़ी भयानक जलन और दर्द हो रही थी । इधर रवि भी बहुत असमंजस में पड़ गया था कि कैसे महेश इस जाल में फंस गया था ।

रवि यही सोचता रहता कि महेश को इस जंजाल से कैसे निकाला जाये जिससे वह अपने परिवार में पुनः जाकर मिल जाये । रवि अब कोई तरकीब सोच रहा था और अब क्लब भी जाना छोड़ दिया था क्योंकि वहां महेश से मिलने पर कुछ मुटभेड़ तो हो ही सकती थी ।

समय बीतता गया । जानकी के सिफारिश करने पर महेश की बदली सूबा के एक स्कूल में हो गई थी और अब वे दोनों साथ-साथ खाते, पीते, नाचते, गाते, मौज उड़ाते और हर रात को क्लब के प्र ोग्राम के बाद घर जाकर एक ही कमरे में तथा एक ही खाट को बडे शौक से आबाद करते थे । उनको ऐसा मालूम पड़ता था कि न महेश और न तो जानकी अब एक दूसरे से अलग रह सकते थे ।

एक दूजे के प्यार में वे दोनों इतन खो गये थे कि अब वे क्लब के हर एक सदस्य्य के लिये लैला और मजनू बन गये थे । जानकी ने क्लब में खूब नाम कमाया और अब वह प्रेम की दीवानी महेश से शादी की बातें करने जा रही थी । उसे शायद एक उपयुक्त मौके का इन्तज़ार था । समय तेजी से आगे बढ रहा था । महेश और जानकी एक दूसरे के प्यार को समझने की कोशिश कर रहे थे ।

'क्या कोई साधारण इन्सान इतना बनावटी रिश्ता कायम करके अपना जीवन चला सकता है ?' महेश ने कई बार इस गम्भीर सवाल को अपने आप से पूछा था । उसके दिल और दिमाग दोनों ने यही जवाब दिया था, 'तुम यहां खूब गुलछर्रे तो उड़ा रहे हो पर यह एक बहुत बड़ा गुनाह है ।' पर महेश के विचार में आजकल जीने के लिये चालाक लोग ऐसा ही करते हैं क्योंकि प्यार में सब चीज़ जायज़ है ।

अब इस बेसबब बाढ़ का पानी सर तक पहुंच चुका था और महेश के परिवारवालों को उसे डूबने से बचाना था । इस बीच महेश के पिता श्यामकरन भी अपने पुत्र की गैरहाजिरी से तंग होकर आखिर एक दिन रवि के घर आ पहुंचे । यह जानकर की महेश शादीशुदा होते हुये भी कोई गैर लड़की के साथ मजे उड़ा रहा है, उनका खून

खौल गया। वे आगबबूले तो हो गये थे पर यह भी जानते थे की जल्दी का काम शैतान से ही होता है। इसलिये वे शान्त चित से काम निकालना चाहते थे।

रवि को आज मालूम हुआ कि महेश की गांववाली पत्नी उसका इन्तजार कर रही थी और महेश यहां जानकी जैसी एक स्वार्थी शहरी लड़की के साथ गुलछर्रे उड़ा रहा था। इस पर रवि को महेश पर तो नाराजगी हुई पर अपने आप पर ज्यादा गुस्सा आया क्योंकि इस सब झंझटी काण्ड का जिम्मेदार शायद वही था।

पहले तो रवि को महेश जैसे गंवारी और गैर अनुभवी को उस क्लब में नहीं ले जाना चाहिये था और दूसरे तरफ रवि को महेश के परिवार से जल्दी सम्पर्क कर लेना चाहिये था जिससे सच्चाई सामने आ जाती और बात इतनी नहीं बिगड़ती। देर तो हो चुकी थी पर वह उस मासूम पत्नी पर अन्धेर नहीं होने देगा। यह उसका दृढ़ निश्चय था।

पर अब तो तूफान आ ही गया था, दुःख के बादल छाये जा रहे थे, महेश के पारिवारिक जीवन में उथल-पुथल हो रही थी और हलचल मच रही थी। श्यामकरन और रवि इस जंजाल से निकलने का रास्ता ढूंढ ही रहे थे कि उन्हें एक जानकी के प्यार का ठुकराया और दिल टूटा हुआ नौजवान मिला जिसका नाम विजय था।

रवि विजय को कई बार क्लब में पहले मिल चुका था और महेश से पहले कई बार उसको जानकी के साथ मंच पर गाते, बजाते और नाचते देखा था। विजय ने अपने प्रेम की दुःख भरी कहानी, अपने

टूटे हुये दिल का दर्द और अपने ठुकराये हुये प्यार की दास्तां श्यामकरन और रवि के सामने प्रस्तुत की।

विजय ने यह समझाया की वह दिलो जान से जानकी को चाहता था और वह भी हमें यही भावना दिखाती थी पर जब से जानकी महेश के साथ हो गई है तब से वह उसकी तरफ देखती भी नहीं। विजय को इस बेवफाई से बहुत सदमा पहुंचा था और उसने क्लब जाना ही छोड़ दिया था क्योंकि यह सब उसकी बर्दाश्त के बाहर की बात थी।

लेकिन अब विजय ने सबूरी कर ली थी और अपने दिल पर पत्थर रखकर अपना नया जीवन बिता रहा था। उसे इस बात से खुशी मिली की वह महेश के परिवार की मदद करने में कोई हाथ बँटा सके।

उधर महेश और जानकी की प्रेम कहानी जारी रही। एक साल होने को थे और उस क्लब की चार दीवारों के बीच की कृत्रिम जिन्दगी बिताते हुये महेश न चाहते हुये भी अपनी पिछले जीवन की यादों से दूर जाता रहा। शराब, शबाब,नाच गाने और झूठी शोहरत के आगे महेश ने न तो अपने घरवालों की फिक्र की और न ही उनको कोई खबर दी।

यह कहां की शराफत थी ?

इस झूठी प्रकाशमय जिंदगी में रहकर महेश यह भी भूल चुका था कि उसकी शादी गांव की एक साधारण,सुलक्षण और सुंदर लड़की से हुई थी। महेश आज एक ऐसे मुकाम पर आ पहुंचा था जो समाज से दूर, सच्चाई से परे, असलियत से बाहर और एक झूठे

जीवन का सहारा लिये हुये था । इन्सान की इस नाजुक अवस्था को हम अगर पागलपन कहें तो हम गलत नहीं हो सकते हैं । लेकिन यह तो महेश की दीवानगी ठहरी ।

जानकी और महेश की पागलपन आज उस नकली दुनिया में बड़ी सभ्यतापूर्ण लग रहा था । एक तरफ महेश एक धोखेबाज निकला और जानकी अपनी नसमझी के कारण महेश के बारे मे बिना सब कुछ जाने बूझे उसका साथ दे रही थी । यह तो साफ जाहिर हो रहा था कि महेश का मकसद कुछ और था और जानकी उसे एक सच्चा चाहने वाला समझ बैठी थी ।

जब इन्सान प्यार में इतना अन्धा हो जाता है तब उसमें भले बुरे की परख लेने की चाह ही नहीं रहती और फिर यह जरूरी शक्ति मारी जाती है । जब चेतना आती है तब बहुत देर हो चुकी होती है । जानकी का भी यही हाल हुआ था । वह एक नकली चेहरे में असली प्यार देख रही थी और उसे क्या पता था कि दुनियां में ऐसे भी फरेबी अवसर से लाभ उठाना खूब जानते हैं ।

दूसरे दिन जब सूर्य देवता अपने उजाले को लेकर परलोक चले गये, जब रात हो गई, जब दुनियां के सभ्य लोग आराम की नींद लेने चले तब यह महेश और जानकी की हसीन जोड़ी अपने अड्डे पर पहुंची । वही क्लब और वही दृश्य था और वहां वही भगदड़ मची हुई थी ।

इस दुनिया में मानों महेश और जानकी ही रहते थे । अपनो के सिवा उनको किसी और की फिक्र भी नहीं थी । इसी समय महेश ने रवि को अपने ओर आते देखा तो उसे बड़ा असमंजस हुआ क्योंकि आज कई महीनों के बाद रवि क्लब में आया था ।

रवि ने महेश को इशारे से अपने पास बुलाया और उसके पिता की मौजूदगी और उनके सभी इरादों के बारे में उसे बताया। यह सब सुनकर महेश आगबबूला हो गया और कई जली-कटी बातें भी रवि को सुनाने लगा। महेश के हाथ-पांव कांप रहे थे और सारा बदन जल रहा था। उसे कुछ सूझ नहीं रहा था।

महेश की बुरी हालत देखकर उसके पिता अब तक उसके सामने आ कर खड़े हो गये थे। बड़े प्रेम से मिलने के बाद श्यामकरन ने महेश को घर चलने को कहा। महेश की नाजुक हालत अब और खराब हो रही थी। कुछ लगातार शराब पीने का बुरा असर, कुछ रात-रात जागने का प्रभाव और कुछ अपने लोगों की मौजूदगी के फ़िक्र से महेश आज बीमार सा लग रहा था।

यह मुनासिब है की ऐसी हालत में महेश घबरा गया और उसे अब कुछ सूझ ही नहीं रहा था। उसने जानकी की ओर देखा तो वह अब तक अपना प्रोग्राम देने मंच पर जा चुकी थी। संगीत बड़ा ही मधुर था और नाच रंगीन अदाओं से भरपूर था पर आज महेश को यह सब बेफजूल हल्ला-गुल्ला लग रहा था।

अब अचानक महेश को कुछ अजीब सा महसूस होने लगा था। उसका सर चकरा रहा था, आंखों के आगे धुंधली छाने लगी थी, हाथ-पांव ढ़ीले होने लगे थे और यह साफ था की उसे दिल का दौरा पड़ने लगा था। देखते-देखते महेश लड़खड़ा कर गिरने ही वाला था की उसके पिता ने उसे संभाल लिया।

इस भीड़ भाड़ और नाचकूद में महेश की बेहोशी को किसी ने नहीं देखा पर रवि ने तुरंत एम्बुलेंस मंगाई और महेश को अस्पताल पहुंचाया। कई डाक्टर महेश के इलाज में जुट गये थे।

वहां क्लब मे जानकी मंच पर नाच रही थी और इधर अस्पताल में महेश के पिता और रवि उसकी बीमारी के फिक्र में बैठे डाक्टरों के इलाज के नतीजे के इंतजार में भगवान से महेश के ठीक होने की प्रार्थना कर रहे थे ।

समय जैसे रुक सा गया था पर जब एक नर्स बाहर आई तब सब लोग जल्दी से खड़े हो गये और महेश की हालत जानने के लिये उतावले हो उठे । नर्स ने बड़े नम्रता से कहा, 'महेश को एक बहुत बड़ा दिल का दौरा पड़ा है और हम उसको भरती करके अपना इलाज जारी रखेंगे । उसकी हालत चिन्ताजनक है पर हम अपनी भरसक कोशिश कर रहे हैं उसे ठीक करने की । आप लोग उसके लिये अपनी प्रार्थना जारी रखिये ।'

इतना कहकर नर्स चली गई । महेश के पिता और रवि तो महेश को अस्पताल में दाखिल करवाने में जुट गये पर विजय वापस क्लब पहुंचा । वहां उसने जानकी को महेश की बीमारी का हाल सुनाया । जानकी यह सब सुनकर चीख उठी और यह जानने के लिये उतावली हो गई की यह सब कैसे हो गया ।

विजय ने न चाहकर भी महेश के परिवार के बारे में सब बातें बारीकी से जानकी को बताईं और उसके साथ सहानुभूति दर्शाई ।

महेश एक विवाहित आदमी है ! उसने जानकी को पागल बनाया और प्यार का नाटक करके जानकी का दिल तोड़ा ! जानकी को यह सब सुनकर बहुत दुःख हुआ और वह तुरंत विजय को लेकर अपने घर गई। घर पहुंचते ही उसने अपनी मां से सब दुखद दास्तां का वर्णन किया । जानकी की मां एक आधुनिक विचार वाली नारी थी और उसे इस खबर से कोई भी फर्क नहीं पड़ने वाला था ।

उसने जानकी को समझाते हुये कहा, 'बेटी, भूल जाओ की तुम कभी महेश जैसे फरेबी से मिली थीं। इस दुनिया में रहना है तो पहले अपने आपसे लड़ना सीखो, फिर समाज से भिड़ो और फिर अपने सभी माहौल से समझौता करो, तभी तुम सुख से जी पाओगी।'

जानकी ने विजय के तरफ देखा और विजय ने जानकी पर नजर डाली तब उनको अपने पुराने प्यार की बुझी हुई चिराग दिखाई देने लगी लेकिन इस हादसे के बाद उनके पास न तो कोई हिम्मत थी और न ही कोई चाहत बची थी की वे उस बुझी हुई प्रेम को फिर से कायम करें।

विजय ने जानकी को समझाया की गलती सभी इन्सान से होती है। अगर हम समय पर उस गलती को सुधार लेते हैं तब हमारी जीत होती है और हम सुख की जिंदगी बिता सकते हैं। आज से तुमको अपने रहन-सहन की और अपने भविष्य के स्वरूप और मार्ग को बदलना पड़ेगा नहीं तो तुम्हारे जीवन में अंधेरा छा जायेगा। तुम सदा दुखी नजर आओगी और यह न तो तुम्हें अच्छा लगेगा और न तो किसी और को भायेगा।

विजय की इन बातों से जानकी को कुछ सुकून मिला और जानकी की मां भी इन बातों से बिलकुल सहमत हुई। जानकी ने आहिस्ते-आहिस्ते सब पुराने रिश्ते नाते को भूल कर अपना एक नया जीवन बिताने को ठान लिया था।

थोड़े ही दिनों में मिसेज़ पीपी जानकी को लेकर लन्दन अपने पति पीपी के पास उड़ गईं जिससे जानकी के सदमे को वह कुछ कम कर सकें।

जानकी जब भी उसको धोखा देने वाले महेश के बारे मे सोचती है तब उसका सारा शरीर गुस्से से कांप उठता है पर उसकी मां के आधुनिक विचार और समझ-बूझ उसके लिये मलहम पट्टी का काम करती थी । जब जानकी जैसी होशियार और आधुनिक विचार वाली युवती प्यार में धोखा खा सकती है तो साधारण वर्ग के लोगों को बहुत ज्यादा होशियारी बरतनी पड़ेगी ।

एक धोखा देने वाले ने कई लोगों के जीवन में जहर भर दिया था । महेश अस्पताल में तड़प रहा था, जानकी लन्दन में बिलख रही थी और विजय बेचारा न इधर का हुआ न उधर का । विजय ने कई बार जानकी को खत लिखा और फोन भी किया पर अब दूध की जली जानकी ने पानी भी फूंक-फूंक कर पीना सीख लिया था ।

उसने विजय से अपनी दोस्ती कायम रखी पर आगे कोई कदम उठाने की हिम्मत उसमें नहीं हुई । अन्त में विजय एक बुद्धिस्ट आश्रम में चला गया और अपना जीवन वही बिताने लगा । इस प्रकार की जनसेवा में ही उसे शान्ति मिलती थी ।

उधर महेश की हालत में जब कुछ सुधार हुआ तब उसको भी अपने किये पर बड़ा पश्चाताप हुआ । अपने दोस्त रवि से नज़र मिलाने में भी उसे लज्जा आती थी और अपने घरवालों के सामने तो उसका सर सदा नीचे ही झुका रहता था । रवि ने महेश से एक वादा लिया कि वह आज से अपनी दोस्ती भलीभांति निभायेगा और अपने परिवार की सही रक्षा करना अपना परम कर्तव्य समझेगा ।

महेश के वादे के बाद रवि ने महेश की धर्मपत्नी बिमला को गांव से बुलवाया और उनको अपने घर पर रखकर महेश की सेवा जारी रखी । इस सेवा से महेश जल्द तंदुरुस्त हो गया और बिमला ने

उसे वैसे ही माफ कर दिया जैसे हिलरी ने बिल किल्टन को माफी दे दी थी।

ऐसी सुशील और सदाचार पत्नी को हम क्या दर्जा दे सकते हैं इसका सही जवाब शायद खुद महेश के पास भी नही था पर महेश ने बिमला के समक्ष एक जटिल संकल्प लिया । वह अपने नये जीवन में अपनी पत्नी बिमला को सती सावित्री का दर्जा देकर अपने पाप कर्मों का प्रायश्चित करेगा । महेश ने सभी परिवारिकजनों से क्षमा मांगकर अपने नये जीवन का श्री गणेश किया ।

आज महेश को अपना घर छोड़े दो वर्ष हो चले थे । इस बीच उसकी पत्नी बिमला सदा यही सोचती रही और प्रार्थना करती रही की उसका पति महेश आज नही तो कल जरूर अपने घर वापस आ जायेगा । आज ऐसा ही हुआ ।

महेश के पिता श्यामकरन के घर में आज धूमधाम मची थी और बिमला और महेश के जीवन में फिर से खुशियां लौट आई थी । महेश के दोस्त रवि को भी अब क्लब के नाम से शायद कुछ-कुछ नफरत होने लगी थी ।

श्यामकरन ने बच्चों को समझाया. 'बच्चों, अगर आग पर चलोगे तो जल जाना स्वाभाविक है । कोई भी बुरा काम करने से पहले अपने बड़े बूढों से सलाह ले लेना जरूरी है ताकि बाद में महेश की तरह पश्चाताप के कडुये फल नहीं खाने पड़े ।'

आज नहीं तो कल हमारे सभी सामाजिक संस्थाओं में श्रेष्ठ व्यवहार ही होंगे। धोखा, अधर्म और पापों का नाम नहीं होगा। तब हमारा सतयुग आयेगा।

आज नहीं तो कल हमारे सभी विवाहित प्राणी एक दूजे के होकर उनका सही आदर सत्कार करना सीख लेंगे और विश्वास उनका एक मात्र लक्षय होगा, जिम्मेदारी निभाना उनका परम कर्तव्य होगा तथा निष्कपट प्यार करके वे एक आदर्श नमूना सबके सामने रखने में कामयाब होंगे।

आज नहीं तो कल हम सब अपने कर्मों, धर्मों और मानवता से अपने पारिवारिक जीवन इतना सुधार लेंगे कि हमें जन्नत या स्वर्ग यहीं इस धरती पर ही मिलेगी और कभी क्लब जाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

न जानकी जैसी लड़की को सिस्टर जैन बनने की नौबत आयेगी, न ही विजय जैसे नेक इन्सान को एक बुद्धिस्ट स्वामी बनना पड़ेगा और न ही महेश जैसे धोखेबाज को सबसे नजर चुरानी पडेंगी।

हम सब अपने-अपने समाज में सुख से रहकर खुशी और शान्ति भरा जीवन बिता सकेंगे। आज नहीं तो कल इस संसार में सतयुग फिर से आयेगा।

७

जीना इसी का नाम है

बहुत दिनों की बात है। हमारा यह देश ब्रिटिश सरकार का एक उपनिवेश या कॉलोनी था। कई जाति और धर्म के लोग इस देश के वासी थे जिन्हे सरकार विभाजित करके अपना उल्लू सीधा किये जा रही थी।

दो जातियों के बीच बैर कराके और उन्हे विभाजित रखकर सरकार चलाने की चाल तो हम विलायती रंगरूटों से ही सीख सकते हैं। आदिम निवासियों और प्रवासियों के बीच जमीन-आसमान का फासला बन गया था। इन दोनों कौम के नेता इस खाई को कम करने में लगे थे जिससे उनके भविष्य की पीढ़ी अमन-चैन और शान्ति से इस देश में रह सके।

इन दो जातियों के रहन-सहन की दूरी को कम करने में कुछ लोगों ने बहुत बड़ा योगदान दिया था। आज जो भी सहनशीलता और दो जातियों का मेल मिलाप हम देख रहे हैं वह सब ऐसे ही दूरदर्शित लोगों की मेहरबानी है।

रामपुर गांव नाबुआ शहर से आठ मील दूर समुद्र के किनारे बसा हुआ था। वहां के बाशिंदे अक्सर धान और तरकारी की खेती करते थे। जो खेती करने के लायक न थे वे नजदीक के कई होटलों में नौकरी करते थे। फिर जिनको यह सब नही सूझता तब वे अपने परिवार के जीवन निर्वाह के लिये मछली मारने के लिये चले जाते थे। पकड़े हुये समुद्री जन्तुओं को बेचकर अच्छा पैसा कमा लेते थे। मछली और केकड़े के खरीदनेवालों की कमी कभी नहीं रहती थी।

नौजवान लड़के जो पढ़ लिखकर होशियार हो गये थे उनको सरकारी काम मिलना सहज रहता था। पर जो किसी कारण बस अनपढ़ रह गये थे उनको वहीं कही न कहीं छोटी-मोटी नौकरी मिल ही जाती थी। इसलिये बेकार कोई नहीं रहता था। शायद इसीलिये उस गांव को रामपुर नाम दिया गया था। लोग अपने धर्म और संस्कृति के तरफ खूब ध्यान देते थे। भजन और रामायण मंडली बड़े अच्छे से चल रही थी।

इन्ही लोगों के बीच बिसुन नाम का एक बड़ा ही होनहार नवयुवक रहता था। वह अपने माता-पिता, शीतला और नारायन का इकलौता बेटा था। शीतला और नारायन गांव के बड़े माने जाने किसान थे। अपने बेटे को पढ़ा-लिखाकर माता-पिता ने वहीं के ड़ाकखाने में एक अच्छी नौकरी भी दिलवा दी थी। अपने निजी हुनर के कारण वह जल्द ही पोस्टमास्टर बन गया। नारायन उस गांव का मुखिया बन गया था।

इन भारतियों के गांव के पास ही एक आदिम निवासियों की टोली रहती थी। इस कोरो का नाम वाईड्रांड्रा था जिसके सभी निवासी

बड़े साधारण जीवन बिता रहे थे। उस टोली के सरदार का नाम मनासा था।

मनासा और उसकी स्त्री लातू के पास एक सुन्दर कन्या थी जिसका नाम था सूसाना, जिसे बड़े प्रेम से उन लोगो ने एक बोड़िंग स्कूल में पढ़ा-लिखाकर होशियार बना दिया था। वह एक नर्स बनकर नाबुआ हेल्थ सेन्टर में काम करने लगी थी।

मनासा और नारायन एक दूसरे के बड़े अच्छे दोस्त थे क्यों की वे सूवा ग्रेमा बोइस स्कूल में साथ-साथ पढ़े थे। उस जमाने में केवल चुने हुये लड़कों को यह अवसर प्राप्त होता था।

चार वर्षों तक सहपाठी रहने के कारण नारायन और मनासा एक दूसरे की संस्कृति और धर्म के बारे में भली-भांति जान चुके थे। मनासा हिन्दी भाषा में माहिर था तो नारायन भी मनासा के भाषा में धारावाहिक रूप से भाषण दे सकता था और वार्तालाप कर लेता था। जब मनासा गांव में आकर मंडली में भजन गाता था तब वहीं नारायन भी उसके गिरजाघर में जाकर हिमस गाया करता था। इस कृष्ण बलराम की जोड़ी को लोग बड़े इज़्ज़त से देखते थे।

समय का चक्र चलता रहा। विलायती लंगूर दोनों जातियों के बीच में दीवार खड़ी करते रहे। आदिमनिवासी और प्रवासी लोगों के बीच मनमुटाव बढ़ता रहा पर कुछ जिम्मेदार लोगों की समझदारी के कारण दोनों जातियों का मेल-मिलाप एक दम नहीं बिगड़ा।

यह बड़े खुशी की बात है की कहीं-कहीं जब भारतीय लोग काईबीतियों के घर जाते थे तो उन्हे बड़े प्रेम से और आदर सत्कार

से वे उनके साथ पेश आते थे और कहते थे “माई काना !” ठीक ऐसा ही कई भारतीय लोग किया करते थे । इसके जरिये कई स्थानों पर दोनों जातियों के बीच बहुत ही अच्छी सुम्मत थी ।

लेकिन दुख की बात यह थी कि जब कहीं-कहीं काईबीती लोग भारतीयों के घर आते थे तो उनका बड़ा तिरस्कार किया जाता था । उन्हे “जाती” कहा जाता था और अगर उनको खाने के लिये कुछ दिया भी जाता तो पुराने बर्तन काम मे लाये जाते थे । यह भी सुनने में आया था कि कहीं-कहीं काईबीतियों को काम में लाने वाले बर्तनों को अलग रखा जाता था ।

इस आधुनिक जमाने में एक इंसान दूसरे इंसान से कैसे इस तरह पेश आ सकता है और फिर यह उम्मीद रखे की दूसरे लोग उनसे अच्छा बर्ताव करेंगे । ऐसे ही बुरे बर्ताव और चलन के कारण देश में जातिए अमन-चैन आने में बहुत देर लग गई थी । दोनों जातियां एक दूसरे से दूर होते चले गये और एक दूसरे को पूरी तरह से समझ नहीं पाये ।

हमारे कई नेताओं ने भी अपनी राजनीति की धुन में इस बड़ी भूल पर ध्यान न दे पाये और अपने लम्बे चौड़े भाषण में एक दूसरे की बुराईयों को ही देखते रह गये ।

हिन्दुस्तानी नेताओं की जमीन,नागरिकता और बराबर हक की माँगें कई बार काईबीतियों के सहन करने के बाहर की बात बन जाती थीं । काईबीतियों का एक प्रमुख नेता रातू सुकूना का कहना था कि अगर उनकी जाति के लोगों से प्रेम से और सही इज़्जत से उनकी कोई भी चीज़ माँगी जाये तब वे इतने दानी है कि वे बिना किसी

झिझक के उसे देने को तैयार हो जायेंगे। पर अगर कोई उनसे जबर्दस्ती से उनकी बहूमूल्य वस्तु छीनने की कोशिश करेगा तो वे नाराज़ हो जायेंगे और वैसे लोगों को जल्द माफ नहीं करेंगे।

इसके बावजूद भी हम एक दूसरे को बुरे नजरों से देखते रहे और हम सबको एक सूत्र में बांधने में नाकामयाब हुये। इसी कारण से आज भी हम सब पश्चाताप के उस कडुये फल को चखे जा रहे हैं और इसका बुरा नतीजा भुगत रहे हैं।

हमारे सामने कई समस्याएँ हैं जिन्हें हम चाहकर भी सुलझा नहीं सकते हैं। हमारे आज के नये नेता जब इन सब बिगड़ी बातों को सुधारने की कोशिश मे लगे हैं तब कई ऐसे भी लोग हैं जो उनके विरोध में हैं। उनके लिये देश में प्रजातन्त्र या लोकतन्त्र का उल्लंघन हुआ है और वे नये नेताओं के देश सुधारने के मकसद से पूरे तौर पर समर्थ नहीं हैं। कई हाथियों की इस राजनीतिक लड़ाई में देश के घासफूस मारे जाते हैं और उन साधारण लोगों का नुकसान होता है। मंहगाई बढ़ती जा रही है देश से हुनरदार लोग निकल कर जा रहे हैं । देश बिगड़ रहा है।

अगर हम उन दिनों में ही एक दूसरे की भाषा और संस्कृति अच्छे से जान लेते तो हमारी एकता में इतना बल होता की आज हम बड़े सुख से एक दूसरे के साथ रहकर सुखी जीवन बिताने में समर्थ होते। न जमीन का झंझट, न भेदभाव के दुख होते और न ही सरकार की बिगड़ी राजनीति सामने आती। पर हम सब शन्तिपूर्वक अपना जीवन बिताते। खैर छोड़िये इन बीती गलतियों को और हम चले मनासा और नारायन के जीवन से कुछ सीखें।

अक्टूबर महीने का आखिरी सोमवार का दिन था। सुबह हो गई थी, सूर्य देवता पूरब के आकाश से उदय हो रहे थे। कड़ी धूप खिड़की से अन्दर आ रही थी।बिसुन जाग उठा और अपने खाट पर आंखें खोली। वह इस नयी सुबह की किरणों को देखना चाहता था। शायद यही सुबह उन सबके लिये कोई नई खबर ले कर आयी हो। पर उसे सभी चीजें पुरानी ही नजर आईं।

खाट पर से उतरकर कुछ कसरत करके वह सीधे पास के कुएँ की तरफ चल पड़ा क्योंकि इस गांव में नल का पानी नहीं था। स्नान किया, प्रार्थना की और घर में आकर भोजन के बाद तैयार होकर काम पर जाने लगा। महीने का अन्त होने को था इसीलिये माताजी ने उसे शाम को घर का सौदा लाने को कहा और वह अपने कामकाज में लग गईं।

सिंग ट्रांस्पोर्ट की बस आई और बिसुन उसमें चढ़ गया। इसी बस में सब दिन उसके साथ एक और काम करने वाली मनासा की लड़की सूसाना भी जाया करती थी। वे दोनों एक ही सीट पर बैठकर सवारी करते थे। वे कभी हिन्दी में, कभी अंग्रेजी में तो कभी कायबीती भाषा में बाते करते थे।

सुननेवालों को यह सब देख सुनकर ताज्जुब होता था। रोज-रोज का साथ और सभ्यतापूर्ण बातचीत कोई भी इंसानों में दोस्ती की लहरें ला ही देती है पर बिसुन और सूसाना तो एक दूसरे के साथ सरकारी काम भी करते थे। इसके अलावा उन दोनों के परिवारों का लगातार मिलन भी होता रहता था।

बिसुन और सूसाना एक दूसरे के बड़े अच्छे दोस्त बनते गये और आहिस्ते-आहिस्ते यह दोस्ती उनके अन्दर एक गहरा प्यार का रूप धारण करने लगी थी। वे दोनों एक दूसरे के बिना नही रह सकते थे। उनका खान-पान, सैर-सपाटे और घूमना-फिरना सब एक साथ होने लगा था। इनके प्यार की चर्चा सबके होंठों पर थी। धीरे-धीरे नारायन और मनासा को भी इस पवित्र रिश्ते की खबर हो गई। उनकी खुशी का ठिकाना ही न रहा। उनकी दोस्ती भी अब शायद रिश्तेदारी में बदलने जा रही थी।

पर अन्य परिवारवाले उछल पड़े। ऐसा कैसे हो सकता है ? एक हिन्दुस्तानी और एक आदिम निवासी में कैसे सम्बन्ध जुड़ सकता है। यह तो कभी हुआ ही नहीं और अब कैसे होगा ? इन सब सवालों के जवाब नारायन और मनासा के पास थे। दोनों ने सबको यह स्पष्ट कर दिया की उनको उनके बच्चों की रुचि या चाहत की परवाह है और समाज क्या सोचता है उससे उनका बहुत वास्ता नहीं है। उनके बच्चों का भविष्य बनाना उनकी एकमात्र जिम्मेदारी है।

दोनों पिताओं ने अपने-अपने बच्चों से उनके प्यार की पुष्टि करके उनकी शादी के इरादे की कदर करते हुये उनको अपना आर्शिवाद दिया। मनासा ने अपने टोली के सब लोगों को इकट्ठा करके उनको अपना निर्णय सुनाया।

उधर नारायन ने भी अपना निश्चय और अन्तिम निर्णय सबको बताते हुये कहा, "जब आज तक मेरी और मनासा की लम्बी दोस्ती से किसी को कोई एतराज नहीं हुआ तब आज यह सब फिजूल के

सामाजिक सवाल क्यों उठ रहे हैं ?" मनासा और नारायन के नेक इरादों के आगे किसी की एक न चली।

बिसुन और सूसाना अपने परिवार के इस निर्णय से बहुत खुश हुये और उनकी प्रेम की नैया ऐसे शान्ति और विश्वास से चली कि जैसे प्रशान्त महासागर में एक महान जहाज हौले-हौले ड़ोल रहा हो और आनंद से हिलकोरे ले रहा हो।

बिसुन और सूसाना की सगाई बड़े धूमधाम से की गई और कुछ दिनों के बाद उनकी शादी भी हो गई। उनका प्रेम और रहन-सहन सबके लिये एक नमूना बन गया था। नरायन और मनासा के इस ठोस कदम ने गांव के लोगों का दिल जीत लिया और सब लोग उनकी सराहना करते रहे।

सूप के चलारे सदा दिन सूप ही में तो रह नहीं सकते। शादी के बाद बिसुन और सूसाना की बदली हो गई और वे लौतोका चले गये जहां बिसुन एक बड़ा सरकारी अफसर हो गया था और सूसाना लौतोका अस्पताल की मैट्रन बन गई थी।

बड़ी-बड़ी उन्नतियाँ उनके कदम चूमने लगीं। दिन दूनी और रात चौगुनी बढती होने लगी। उनका अपना एक आलीशान मकान हो गया था, दो मोटरें थीं और भगवान के कृपा से उनके पास दो बच्चे भी हो गये थे। बेटा नील और बेटी स्टेला दोनों सुशोभित बगीचे की तरह बढ़ रहे थे।

समय-समय पर आजा-आजी और नाना-नानी के दर्शन हो जाया करते थे। जब स्कूल की छुट्टियां आती तब बच्चों का समय रामपुर

और वाईड्रांड्रा में बीतता था। धन्य हैं ऐसे परिवार जो अपने बच्चों का इतना ख्याल रखते हैं और उनके पालन-पोषण में मदद करते हैं।

यही सब अच्छे संस्कार ही हमारे पारिवारिक जीवन को सुखद बनाने में मदद करती हैं। हमारे बच्चों में सुन्दर ज्ञान, उत्तम व्यवहार और आदरणीय बर्ताव भर जाते हैं। यह बिसुन और सूसाना का अहोभाग्य था कि उनको उनके माता-पिता का पूरा सहयोग मिलता रहा।

परिवार सब मिलकर बहुत मेहनत करके बच्चों को पढ़ाया और लिखाया। दोनों बच्चों ने अपने हाईस्कूल में बड़ी मेहनत की और इस का नतीजा बहुत लाभदायक निकला। नील और स्टेला को विदेश पढ़ने की छात्रवृत्ति मिल गई और वे दोनों ओकलेन्ड़ के विश्व विद्यालय में दाखिल हो गये थे। नील अकाउंटेन्ट की और स्टेला वकालत की पढ़ाई कर रही थी।

इधर बड़े दुख की खबर आई की जिस गाड़ी मे नारायन, शीतला, मनासा और लातू सफर करके लौतोका आ रहे थे उसमें दुर्घटना हो गई और उन चारो का देहान्त हो गया। मानो बसुन और सूसाना की जड़ ही किसी ने उखाड़ कर फेंक दी हो। उनको बहुत बड़ा सदमा पहुंचा और वे अपने माता-पिता के काम क्रिया के बाद अपनी-अपनी नौकरियों से अवकाश ग्रहण कर लिया। अब वे सीनियर सीटीजन हो गये थे।

दोनों तन-मन-धन से जनता की सेवा में जुट गये थे। यही उनके मां-बाप की अन्तिम ख्वाहिश थी। इस तरह की सेवा करने से

उनको एक और फायदा हुआ था। अपने दुख पर बैठकर रोने और सोचने के बजाय जनता के सुख-दुख बांटना ज्यादा मुनासिब समझा और इसी में उनके दिन आराम से कटने लगे।

देश भर में उनकी एकता के प्रचार का असर धीरे-धीरे हो रहा था। विलायती अफसर उनकी बातों से नाराज हो रहे थे । कई बार उनकी सभा में बाधाएँ लाईं गईं पर उनकी जातिए एकता का प्रचार जारी रहा । बाधा उत्पन्न करने और कराने वाले सरकार की कठपुतली बन कर अपना काम किये जा रहे थे।

बिसुन और सूसाना जो चाहते थे उसका होना असम्भव प्रतीत होने लगा लेकिन अब जब की देश आजाद हो गया था तब तो लोगों में समझदारी का आ जाना जरुरी था। इस बीच एक गुट के लोग तो हिन्दुस्तानी लोगों को वापस भारत भेजने की योजना बना रहे थे। उनकी चाल चली तो नहीं पर जातिय एकता के प्रचार में बहुत बड़ा दखल पहुंचा। बिसुन और सूसाना ने हार नहीं मानीं।

बिसुन एक दिन उस गुट के सरदार बूता से मिला और उससे उसकी नीति और मांग पर बातें कीं। यह पूछने पर की वह क्यों भारतियों को भारत वापस भेजने की मांग कर रहा है।।

तब बूता ने कहा, "देखिये, इस दुनिया मे करोड़ो भारतीय हैं पर केवल पांच लाख काईबीती लोग हैं इसलिये हमें डर है की एक दिन हिन्दुस्तानी लोग अपने लगन और दिमाग से हम काईबीतियों पर

राज करने लगेंगे । मैं जानता हूं कि आप लोग बड़े होशियार हैं, आपके पास अच्छे घर हैं, आपके बच्चे पढ़-लिखकर विद्वान बन रहे हैं, आपका रहन-सहन बडा उम्दा है और आप लोग अच्छी मोटरगाड़ी में सवारी करते हैं । लेकिन हम लोग इन सब चीजों से वंचित रह जाते हैं क्योंकि इन सब चीजों को हिन्दुस्तानी लेते जा रहे हैं । एक दिन आयेगा की अपने ही देश मे हमारे पास कुछ भी नहीं रह जायेगा । आप लोग हमारी जमीन भी हड़पना चाहते हो ।”

बिसुन को यह सब सुनकर बडा दुख हुआ क्योंकि बूता के दिमाग में सब गलत बातें भरी पड़ी थीं । उसे कई बार बताया गया की उसे जाकर अपने लोगों मे आगे बढ़ने की चाह भरनी चाहिये जिससे वे भी हिन्दुस्तानियों की तरह सफल बन सकें पर शायद ऐसा करना उनके लिये ज्यादा कठिन था ।

पर बूता ने बिसुन को एक आश्वासन दे गया था, *‘बिसुन भाई, तुम बड़े अच्छे हिन्दुस्तानी हो इसलिये तुमको मैं सब से अन्त में भेजूँगा ।’*

बिसुन ने इन बातों को सूसाना को बताया तब दोनों खूब हंसे थे । सूसाना को एक सेनेटर बना दिया गया था और बिसुन अपने पार्टी के तरफ से धारा सभा का एक सदस्य चुन लिया गया था । अब उनका जातिये एकता का नारा देश के कोने-कोने में बज रहा था ।

बड़ी सोच की बात तो यह थी कि उनके विरोधी कुछ अपने ही लोग थे और कुछ देश के बड़े नेता थे जिनके लिये यह जातिये एकता एक खतरा बन सकती थी और उनका बोलबाला कम हो जाने का डर था। इस देश मे हाथी के पास दो दांत थे। एक से वहां के नेता खाते थे और दूसरा बाहर वाला दांत जो दिखाई पड़ता था वह केवल दिखाने के लिये था।

यही उलटी राजनीति के अजीब शतरंज के खेल में सारे देश के लोग फंसे जा रहे थे और उनको यह भी पता नहीं था की एक दिन यही जातिये विभाजन और एकतरफा व्यवहार उनके लिये संवैधानिक खतरा लेकर सामने खड़ा हो जायेगा और देश की कई व्यवस्थाओं का नाश करके रख देगा। उस समय बड़ी देर हो चुकी होगी।

राजनीति बड़ी अजीब बला है। अपना उल्लू सीधा करने के लिये कुछ नेता अपने उसूलों की बली भी चढ़ा सकते हैं और देश की ऐसी-तैसी भी करने को नहीं डरते। वे कहते और कुछ हैं और करते और कुछ हैं। यह तो 'मुँह मे राम बगल में छुरी ' वाली बात हो गई।

समय कटता गया और अब नील और स्टेला अपनी-अपनी पढ़ाई पूरी करके वापस आ गये थे। उन दोनों को अपने छात्रवृत्ति की शर्त के मुताबिक सरकार की नौकरी में जुट जाना पड़ा। यह अच्छा

ही हुआ क्योंकि अब घर के खर्च चलाने वाला तो कोई होना चाहिये था। जीवन की गाड़ी सुचारु रूप से चलती रही।

नील को सरकार में भारतीय नौकरी करने वालों के प्रति इतना जातिये भेदभाव नजर आने लगा था की उसको नौकरी छोड़ने की नौबत आ गई थी। चाहे हुनर और ज्ञान हो न हो लेकिन सीबील सेबिस में प्रोमोशन के लिये आदिम निवासी का होना जरूरी हो गया था। इस प्रथा का नाम अफेमटिब ऐकशन दिया गया था। नील ने अपने ओकलेण्ड यूनिवर्सिटी की एक साथी तानिया से विवाह करके वहीं रहने चला गया।

स्टेला भी देश के बिगड़ते हालत को देख और समझकर हैरान रह गई थी। एक होनहार वकील होते हुये जब उसने अपने प्रति और अपनी कौम के ऊपर अन्याय होते देखा तब उसका भी कलेजा फटने लगा। वह इस नाइन्साफी को सह न सकी और देश छोड़कर आगे पढ़ने अमेरिका चली गई।

बिसुन और सूसाना बूढ़े हो चले थे। उन्होने भी अवकाश ले लिया इस आस में की उनके पुरखों का जातिये मेलमिलाप और एकता के लक्ष्य की पूर्ति कभी न कभी पूरी जरूर होगी। आज नहीं तो कल यह उनका दृढ़ विश्वास था। सब कुछ तीसरी पीढ़ी के नील और स्टेला जैसे नवयुवकों के ऊपर छोड़कर उन्होने भी इस देश से चले जाने की तैयारी कर ली थी। उनका जातिये एकता और मेल-मिलाप का प्रचार तो पूरे तौर पर सफल नहीं हुआ था पर उसका

बीज बो दिया गया था जिसके पेड़ उगेंगे और फल जरूर लगेंगे। यह उनका सपना बनकर रह गया था।

आज इनते मेहनती परिवार के सभी सदस्य अपना मातृभूमि छोड़कर दूसरे देश में अपने हुनर और ज्ञान की सेवा प्रदान कर रहे हैं। यह सब केवल इसलिये की उनको अपने लोगों ने सही इज़्ज़त नहीं दी और उनके साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया।

क्या जीना इसी का नाम है ? क्या इस गलती को कभी कोई सुधारने में सफल होगा ? भविष्य जानता है या फिर देश में बचे कुचे लोगों की तकदीर बतायेगी। या तो बात बन जायेगी और न बनी तो रामधनी जाने।

जागकर एक नया सबेरा देखने का इन्तज़ार हम सब को है। पर कब उदय होगा ऐसा सूरज और कब आयेगी वह सुबह ? जीना इसी का नाम है।

जीते रहो मेरे यारों इस फिकर में की एक न एक दिन वह सुन्दर चमकता हुआ सवेरा हजार खुशियों को लेकर शायद आयेगा जिसका सपना वर्षों पहले नारायन और मनासा जैसे सज्जनों ने देखा था।

आज हम देश में हम बहुत से परिवर्तनों को देख रहे हैं। जमीन की समस्या सुलझती जा रही है। देश में पैदा हुये सभी लोगों को एक नाम दिया जायेगा। देश में मतदान करने की व्यवस्था में संशोधन

होगी । सब शिक्षा मुफत कर दी जायेगी । हम आगे-आगे देखते हैं और क्या- क्या होने वाला है ।

बस इतना ही, और भी परिवर्तनों का इन्तज़ार करो । फिलहाल खुश रहो ।

८

लौट के आजा मेरे लाल

यह कहानी कुछ पुरानी जरूर है पर उसमें के पात्र और उसकी उपकथा और वृतांत आज भी वही माने रखते हैं।

स्वर्गीय श्री सरजू जी, मनहर के आजा थे। वे उस देश के वासी थे जिस देश में गंगा बहती है। गिरमिट प्रथा के नीचे वे भारतवर्ष के उत्तरप्रदेश के अयोध्या नगरी से आकर फीजी द्वीप में सन उन्नीस सौ सात में बस गये थे। मनहर की आजी भी उनके साथ आईं थीं। नान्दी उनको अयोध्या नगरी के समान लगा था। क्यों ? ये तो राम जाने।

अपने ऊंचे संस्कार, शिष्टाचार और रहन-सहन लेकर दस वर्षों वाली गिरमिट खत्म करके वे नान्दी के साम्बेतो गांव में बस गये थे और अपने परिवारजनों के साथ अपना गुजर-बसर करने लगे थे।

किसानी की उमदा हुनर उन के परिवारवालों की नस-नस में दौड़ रही थी। सफल किसान के अलावा वे सब एक बड़े आदर्श भरा जीवन बिता रहे थे। गन्ना, धान, मकई तथा अन्य फसल उनके

खेतों में लहरा रहे थे। वे सब पशुपालन भी करते थे। गाय,बकरी, घोड़े और बैलों की भरमार थी।

उन्ही दिनों की बात है जब उस गांव में सभी लोग एक दूसरे को बड़े प्रेम और शान्तिपूर्वक देखा करते थे। उस गांव में जनता सुख की नींद सोती थी और सब नागरिक अत्यन्त देशप्रेमी और वतन भक्त थे।

मनोरम नदी का किनारा तथा ऊंचे-ऊंचे पर्वतों के बीच यह रमणीक स्थान सभी निवासियों के लिये बड़ा आनन्दायक और स्वास्थवर्धक था। सभी स्त्री, पुरूष, बाल और वृद्ध नेक काम में लगे रहते थे। उन सब का व्यव्हार और सामाजिक लेनदेन उत्तम श्रेणी का और अत्यन्त श्रेष्ट था।

यही मानो की वहां जन्नत का वातावरण था और गांववासी लगन से अपना काम करते और मगन रहते थे। तभी तो वहां अयोध्या सा लगता था।

मनहर के आजा का एक खास चाह या आकांशा थी। वे चाहते थे की उनकी कौम और परिवार के लोग न केवल सुखी रहें पर सफलता के साथ-साथ समाज में उनका मान मर्यादा बनी रहे। उनको यह पूरा विश्वास था की उनका यह सपना जरूर पूरा होगा क्योंकि उनको अपने भविष्य पर भरोसा था।

उस गांव के सब निवासी सफल किसान तो थे ही तभी सब के जीवन में सन्तोष, प्रेम और उत्साह कूट-कूट कर भरी हुयी थी।

सभी लोग स्वयं अपने बल पर खडे होने की क्षमता रखते थे । शायद इसीलिये वे पूरी तौर से आत्मनिर्भर थे ।

खाने को पर्याप्त स्वास्थ-वर्धक भोजन, पीने को स्वच्छ कुएं का जल, पहनने को उचित वस्त्र और रहने को अच्छे पर साधारण मकान सभी के लिये उपलब्ध थे । जो धनवान थे वे गरीबों की मदद करने में कभी नही हिचकिचाते थे और जो गरीब थे वे धनवानों का बड़ा मान इज्जत करते ।

सच मानिये तो साम्बेतो अयोध्या जैसा वातावरण से सुशोभित था । वहां सुन्दर मन्दिर थे, अच्छे मस्जिद थे और कई गिरजाघरों के साथ साथ एक-दो गुरुद्वारे भी बने थे । धार्मिक ज्ञान ध्यान की न तो कमी थी और न ही लोगों से कोई बुरे बर्ताव की इच्छा या उम्मीद की जा सकती थी । यही मान लो की पृथ्वी पर ही स्वर्ग का वास था ।

मनहर के आजा ने उसको एक होनहार किसान तो बना ही दिया था उन दिनों बहूतीनी इलाके में उसको एक भूमि दान भी दी थी । मनहर के आजा के लिये भूमि दान एक महान दान था । वे अपने पास वाली बड़े उपजाउ जमीन पर मनहर को बसाते हुये बड़े खुश हुये थे ।

यहीं पर मनहर और उसकी पत्नी सावित्री ने अपना एक छोटा सा मकान बनाकर अपनी खेती करने लगे । आजा के प्रोत्साहन से मनहर की खेतीबारी लहराने लगी । मनहर अपने आजा के प्रति बड़ा कृतज्ञय था ।

मनहर और सावित्री भी उस समाज में ऐसे घुलमिल गये थे जैसे दूध में चीनी मिल जाती है। वे भी बड़ी कुशलता के साथ अपने गन्ने, धान, मकई, तरकारी, और फलों की खेती में जोरतोड़ से संलग्न हो गये। सफलता उनके भी कदम चूमने लगी क्योंकि वे बड़े ईमानदार, मेहनती और संस्कारी लोग थे।

इस परिवार का मुखिया मनहर था पर उसकी पत्नी सावित्री के ऊंचे संस्कार, अच्छे स्वभाव और दूरदर्शिता के कारण वह किसान परिवार दिन दूनी रात चौगुनी सफलता अर्जित करने लगा। उनके करकमलों से गांव में उनका एक सुशोभित स्थान बन गया। मनहर जब हिंदू समाज का प्रधान बना तब सावित्री महिला मंडल की खास अध्यक्ष बन गयी।

इस सुखी परिवार की आत्म निर्भरता, ग्राम उद्धार लगन, देश सेवा और सामाजिक कार्यक्रम बढ़ते गये और वे अपने किसानी जीवन को अपने कड़ी परिश्रम से और भी सफल बनाते चले गये। उपयुक्त पशु पालन, भक्तिपूर्ण पूजा-पाठ और भरपूर जनसेवा में लगे इस परिवार को भगवान की कृपा से चार सुंदर सन्तान हुये। दो सुपुत्र और दो सुशील कन्याएँ।

समय के साथ बच्चे भी जोरों से अपनी शिक्षा दीक्षा में सफलता पाते गये। उन का जेष्ट पुत्र मानव बड़ा ही होनहार निकला और पिता के साथ खेतीबाड़ी में सही हाथ बँटाने के साथ-साथ वह पढ़ने लिखने में भी अतिउत्तम ठहरा। उसके सरल स्वभाव के कारण वह भी गांव में बड़े इज्जत का हकदार बन गया और उसकी कड़ी मेहनत और लगन ने समय के साथ-साथ उसे एक डाक्टर बना ही दिया।

यह जानकर की एक साधारण किसान का लड़का आज एक डाक्टर बन गया, मनहर और सावित्री का खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होने बड़ी धूमधाम से प्रभू गुणगान की और कई प्रकार की ईश्वर भक्ति से घर-आँगन की शोभा बढ़ाई। गांववाले भी खुशी से झूम उठे क्योंकि मानव गांव का पहला सफल विद्यार्थी था।

उनका दूसरा बेटा प्रनव भी मानव की तरह उन्नतिशील और प्रगतिशील निकला। परिवार के ऊंचे आदर्शों को अपनाते हुये वह भी किसानी के हर पहलुओं में माहिर हो गया। अपनी शिक्षा-दीक्षा में अपनी कड़ी परिश्रम के कारण वह भी एक वकील बन गया। माता पिता धन्य हो गये। उन्हों ने संतोष की सांस ली और अपने कन्याओं को शिक्षित करने में लग गये।

समय का चक्र जोरों से चलता रहा और मनहर परिवार की जीवन नाव बड़े प्रेम से आगे बढ़ रही थी। उनकी दोनों बेटियां नयना और मयना अपने माता के स्वभाव से मेलजोल पाती थीं इसलिये उनमें दया, धर्म, शान्ति, और मानसिक सुन्दरता का ढेर था। अति सुन्दर, सुशील और सुलक्षण कन्याएँ आँगन में चहचहाते और खेलते हुये परिवार का एक बहूमूल्य अंग बन गई।

दोनों भाईयों और बहनों का आपसी सहयोग और प्यार देख सुनकर सब लोगों का हौसला और भी बढ़ जाता था। बच्चों के पालन-पोषण में कोई भी त्रुटी नही आने पाई इसीलिये आज मनहर परिवार शान से रहता और सुख का जीवन व्यतीत कर रहा था।

सावित्री के उच्च्य कोटी की परवरिश और श्रेष्ट देखभाल से नयना और मयना गुणवान तो हो ही गयीं पर उनको भी पढ़ने लिखने का

बड़ा शौक था। परिवार के बड़े सहयोग और सहारे से दोनों कन्याएँ अध्यापन का कार्य करने लगीं । पास की पाठशाला में वे पढ़ाने लगीं।

अब मनहर परिवार पूरे तौर से तृप्त हो गया। धन्य हैं ऐसे सुखी लोग जिनके घर आंगन में सरस्वती का धाम होता है। आज अपने परिश्रम और लगन से परिवार का हर एक सदस्य खुश नजर आता था। गांव में उनको एक उत्तम नमूना माना जाने लगा और हर एक सदस्य समाज के लिये आदर्श बन गया।

गांव के सभी लोगों से उन की दोस्ती बढ़ती गयी । वे सभी दीन दुखियों, गरीबों, अन्य इष्ट मित्रों और पारिवारिक जनों को हमेशा मदद किया करते थे। ड़ाक्टर मानव गांव के कई लोगों का इलाज कर के उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखता था। प्रनव भी समाज में कई कानूनी सलाह दे चुका था। नयना और मयना कई बच्चों को अपने काम के बाद पढ़ने लिखने में मदद करती थीं।

कई गांववासियों का कहना था कि इस परिवार को ईश्वर ने वहां जनसेवा के ही कारण अवतरित किया है वरना इस कलयुग में ऐसा नेकी करने वाले अच्छे नियत के इंसान मिलना दुर्लभ हैं । शायद इसी के कारण आज गांव में इन की बड़ी चर्चा होती थी और सभी लोग इन को बहुत चाहने लगे थे।

जब भी गांव में कोई जलसा, सभा या पारिवारिक बटोर होता तब मनहर परिवार सब से आगे अपना सहयोग देने में और सब की मदद करने के लिये उतावले होते थे । न जाने इस परिवार को

इतना समय और सहूलियत कहां से मिलती थी पर वे कभी किसी की सेवा सत्कार से हिचकिचाते नहीं थे।

भगवन भक्ती में उन सबका मन लीन रहता था। वे रामायण मंडली में, रामलीला में, मंदिर में और पाठशाला में पुनः उपस्थित होकर बड़े प्रेम से अपना योगदान प्रदान करते रहते। यही उनका मान था, यही उनकी शान थी और यही उनका एक मात्र लक्ष्य रहा।

अपने बचे या शेष समय में मनहर और सावित्री संगीत में मस्त रहते। मानव और प्रनव गांव के टीम में फुटबाल खेलते थे। नयना और मयना सिलाई बुनाई या खान पकवान में लगी रहती थीं। ऐसे व्यस्त परिवार के लोग सदा मस्त रहते हैं।

माता पिता और चारों बच्चों का रहन-सहन एक मिसाल बनकर गांववालों में फैल गया था। कई लोग इनका सही अनुकरण करने लगे थे। धीरे-धीरे सभी फसलों की आमदनी बढ़ती गई और अब इस परिवार के पास एक सुन्दर मकान, नये कृषि औजार, सवारी के लिये पर्याप्त साधन तथा अन्य मनोरंजन की चीजें हो गई थी। आज यह परिवार अपने मेहनत से परमानन्दित हो गया था।

माता-पिता की सेवा चारों बच्चों का परम धर्म बन चुका था। सावित्री ने अपने सतित्व का सदा ध्यान रखा। उसके लिये पति सेवा जितना जरूरी था ठीक उतना ही आवश्यक था बच्चों की परवरिश और उनकी देखभाल। चारों बच्चों ने गांव के अन्य लड़के-लड़कियों से खूब दोस्ती निभाते थे।

उधर मनहर भी अपनी पत्नी को सती तो मानता ही था पर उसको सदा खुशी देखना चाहता था । उन दोनों के बीच बड़ा घनिष्ट प्रेम था । वे एक दूजे के लिये ही पैदा हुये थे । माता-पिता का प्रेम देखकर बच्चे भी बड़े प्यार से रहते थे ।

अपनी-अपनी पेशे में लगे चारों बच्चे अभी भी छुट्टियों में माता-पिता के खेतीबाड़ी और घर गृहस्थी में पूरा हाथ बँटाते थे । परिवार जो एक साथ काम करता है, एक साथ भोजन करता है और एक साथ प्रार्थना करता है उस परिवार में एकता सदा कायम रहती है और वह एक सुखी परिवार होता है ।

ऐसी स्थिति को कायम रखना हर परिवार का परम कर्तव्य होता है पर जब विपरीत विचार वाले लोगों का हस्ताक्षेप होता है तब कोई भी परिवार में तनाव और तूफान का आ जाना स्वाभाविक है ।

अच्छे से अच्छे परिवार और सुन्दर से सुन्दर माहौल का ध्वंस या नाश उलटे बुद्धि वाले मनुष्यों का आ जाने से हो सकता है । जहां सुम्मत से और प्रेम से ऊंचे आदर्श बनते हैं वहीं कुमति से पारिवारिक शान्ति का सर्वनाश निशचय हो जाता है ।

रामायन में तुलसी दास जी का कथन झूठा नहीं हो सकता । "*जहां सुमती तहां सम्पती नाना, जहां कुमती तहां विपती निधाना ।*"

समय और ऋतु या मौसम कभी नहीं थम सकते । इनका चक्र सदा चलता ही रहता है । मनहर के सुखी और खुशी परिवार में भी ऐसा भयानक और दर्दनाक तूफान आयेगा यह किसी ने भी नहीं सोचा था । लेकिन होनी को कौन टाल सकता है । "*होइहें वही जो राम*

रचि राखा, का करे तरक बढ़ावे साखा ।" यह भी तुलसी जी की गाथा है ।

अगर ऐसा हो जाये, जिसे हम नहीं चाहते हैं तब हमे बड़ा दुख होता है। किस्मत मे ऐसे भी बुरे दिन देखना था इस शान्तिमय और संस्कारी परिवार को यह हम कैसे कल्पना कर सकते हैं । लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा ही हुआ । मनहर परिवार पर भी दुख के काले बादल छा गये । हाय रे विधि ! हाय रे विड़म्बना ! हाय रे शैतानी और विपरीत बुद्धि की ताकत ।

जब बच्चे होनहार हो जाते हैं तब मां-बाप उनकी शादी विवाह के बारे में सोचते हैं । मनहर ने भी पहले अपने दोनों कन्याओं का शुभ विवाह बड़े धूमधाम से किया । नयना की शादी एक बड़े विद्वान और अनुभवी नौजवान से हो गई । उसका पति प्रबल उसको विदा करके विलायत चला गया । माता-पिता की एक लाड़ली विदा हो गई । कन्यादान जैसे महादान को करके उन्हे बड़ी शान्ति प्राप्त हुई लेकिन बच्ची का विदेश चले जाने का दर्द दिल में खटकती रही ।

मयना का विवाह भी एक बहुत होनहार और शिक्षित लड़के के साथ बड़े धूमधाम से हो गई । उसका पति मनीष मयना के भाइयों को आश्वासन दे गया की वह उनकी भगनी को सब सुख देने की कोशिश करेगा और मयना को अपने मायका छोड़ने का दुख नहीं होने देगा । मयना भी विदा होकर टोरोन्टो चली गई । दुख तो हुआ पर ऐसा होना स्वाभाविक है । हम हिंदुओं ने अपने लड़की को पराई धन माना है और उसकी शादी होने से परिवार खुश हो जाता है ।

माता-पिता और दोनों भाइयों को बहनों की विदाई से बहुत दुख हुआ पर यह सोच कर की बेटी तो पराई धन होती है उन्हें सन्तोष हो गया। खुशी इस बात की रही की गांव के लोग बड़े लगन से मनहर की पित्र जिम्मेदारी को निभाने में मदद किये । दूसरे ओर नयना और मयना के ससुराल वाले विदेश में रहते हुये भी बड़े दिलदार तथा नेक विचार के लोग ठहरे । यही अच्छाईयां हमें हमारे दुख में मरहम पट्टी की काम करती हैं । ऐसा ही इस परिवार के साथ हुआ ।

समय-समय पर बच्चियों के ससुराल से अच्छी खबरें आती रहीं जिस के कारण मनहर परिवार बड़ा खुश होता था । लड़कियों के पास से पत्र आने पर सावित्री दो चार आंसू बहा लेती थी और भाईयों से अक्सर तार द्वारा बात हो जाती थी ।

इसके बाद अब लड़कों की बारी आई । मानव की शादी सूवा के एक जाने माने सज्जन की बेटी मन्जू के साथ निश्चय हुआ और प्रनव का विवाह बा जिले के एक बड़े किसान की सुपुत्री सन्जू के साथ होने का फैसला हुआ । लड़कों की शादी भी बड़े धूमधाम से हो गई । सारे घर का काम और वातावरण खुशियों से झूम उठा ।

मनहर और सावित्री का अरमान पूरा हुआ । उनके खुशी का ठिकाना न रहा । घर में दो सुन्दर बहुओं का आगमन हुआ है । सावित्री ने सोचा की अब उनको कुछ सिखाना है और उनसे बहुत कुछ सीखना है । समय दौड़ रहा था और घर में कई परिवर्तन हो रहे थे ।

दो नई बहुयें घर को एक उपयुक्त गृहस्थी बनाने में लग गईं। अपने नये घर और वातावरण को परखने और समझने में देर तो लगता ही है। धीरे-धीरे मन्जू और सन्जू अपने ससुराल के नये गति विधि समझने लगीं और जहां भी सुधार या समाधान की जरूरत थी वे करती गईं। कभी उन्हें सहारा मिलता तो कहीं उनको अपने विचार और व्यवहार में परिवर्तन लाना पड़ता था। यही तो अच्छे परिवार के मानने वाले उसूल हैं।

पड़ोस के गांव में सावित्री की एक मुंहबोली बहन कोकिला रहती थी। वह हद से ज्यादा अपने आदत से लाचार थी। जहां भी जाती वह जरूर उस घर के अमन-चैन में आग लगा देती थी। कोकिला का मनहर के घर का आना-जाना बढ़ता ही गया।

इस मजाक से आपको कोकिला के चरित्र का ज्ञान हो जायेगा। एक दिन गांव में बिजली चली गई और कोकिला के पड़ोसी ने आकर कोकिला के दामाद से दिया सलाई मांगा।

दामाद को हंसी आ गई वह पड़ोसी से मज़ाक करते हुये कहा, "इस की क्या जरुरत है भाई, मेरे सासू जी को ले जाओ वह जहां भी जाती है उस घर में आग लगा देती हैं। अब देखो मनहर साहब के घर में तो उसका काम चल ही रहा है। अब आगे-आगे देखिये होता है क्या।"

कोकिला की भी एक अपनी बहू थी जिससे उसकी बिलकुल निभती नही थी। अब कोकिला को यह देख सुनकर दुख तो होगा ही की सावित्री के दोनों बहुयें सीता समान थीं और उन सास बहुओं में

अघात प्रेम और समझदारी थी । यह देखकर कोकिला को रहा नहीं गया और वह अपने बुरे स्वाभाव का प्रदर्शन करने लगी ।

हमने कई बुरे चरित्र और अनुचित स्वभाव के लोगों को देखा है पर कोकिला की बात निराली थी । उसकी विपरीत बुद्धि बहुत तेज चलती थी और उसके अन्दर जलनभाव पैदा होते देर नहीं लगती थी । केकई और मंथरा तो कोकिला से बहुत कुछ सीख सकती थीं ।

रस्सी के रगड़ से पत्थर और लोहा भी कट जाता है, पर कोकिला के बुरे ख्याल और भड़काने का काम तो साधारण इन्सान पर असर होने को था । धीरे-धीरे उसने सावित्री के दोनों बहुओं के कान भरने लगी और आखिर उनको अपने सास-ससुर के विरूद्ध बनाने मे सफल हो ही गई ।

कोकिला का खुशी का ठिकाना न रहता जब वह मन्जू और सन्जू को अपने सासु मां से बहस करते देखती और उन्हें जली-कटी सुनातीं । कोकिला के मकसद पूरा होने में देर नहीं रहा ।

मानव और प्रनव के शादी के पहले दो साल बड़े खुशी से बीते और हर एक प्राणी अपने-अपने जीवन का पूरा-पूरा मजा ले रहा था । बाहरी उकसावे और हस्तछेप के झपेटे में आकर मानव की बीबी मन्जू के तेवर बदलने लगे ।

अब मन्जू को अपने कुछ ही दिन पहले की पूज्य सास-ससुर के सुन्दर स्वभाव और आदरणीय शिष्टाचार में बड़ी बड़ी गलतियां और त्रुटियां दिखने लगीं ।

मन्जू के दिल और दिमाग पर कोकिला जैसी छिपकली के काले करतूतों का जादू चल ही गया । अब एक समय के आदरणीय सावित्री और मनहर आज बड़े पिछड़े और गंवार किसान दिखने लगे । बात-बात पर मन्जू अपने सास पर व्यंगात्मक व्यवहारों की बौछार देने लगी । सावित्री और मनहर बड़े असमंजस्य में पड़ गये । घर की शान्ति कायम रखने के लिये वे चुप रह जाते ।

जैसे रामराज्य में कैकई और मंथरा का होना स्वाभाविक था उसी तरह इस गांव में कोकिला जैसी चरित्रहीन नारी का होना कोई अचरज की बात नहीं थी । ऐसे लोग अक्सर खुले आम भोले-भाले इंसान को बड़ी चालाकी से बहका देते हैं और उन पर कई मुसीबतें खड़ी कर देते हैं । हम को इस का पता जब लगता है तब तक शायद बहुत देर हो जाती है ।

इन्द्रिय लोलुपता के वश होकर मनुष्य कैसे-कैसे दुष्कर्म कर डालते हैं, यह हमसे छिपा नहीं है । अपनी दुर्वासनाओं की पूर्ति के लिये वह घृणित से घृणित तथा पैशाचिक से पैशाचिक कार्य करते हुये भी नहीं हिचकिचाते ।

उनको ऐसा करने में बड़ा आन्नद मिलता है । दूसरे का दुख और बिगड़ता हुआ घर देखकर ऐसे कुलक्षण लोग तमाशा देखते हैं । सुखी परिवार के सुख-चैन में आग लगाना उनके लिये बड़ा आसान होता है और उस आग को भड़कती देखकर उनको सुकून मिलता है ।

ऐसे लोगों की झपेटों से बचना जरूरी है अगर हम अपने परिवार की अमन-चैन चाहते हैं । पर ऐसे बुरे लोगों का पोल जल्द ही खुल

जाती है। दुख इस बात का है की हम उनके काले करतूतों को देर में पहचानते हैं।

क्या करें जो होना होता है वो तो होकर ही रहता है चाहे हम लाख कोशिश करें। इसी प्रकार बेचारी सावित्री भी धोखा खा गई। 'मुंह में राम बगल में छुरी' वाली कहावत को कोकिला ने साबित करके दिखा ही दिया।

सावित्री और मनहर के इस समझदारी और सहनशीलता को मन्जू ने उनकी कमजोरी समझकर अपना त्रियाचरित्र दिखाती गई। बात रोज बिगड़ती ही जा रही थी। मन्जू अपने पति मानव को भी बड़े आसानी से भड़का ही लिया। वही मानव जो अपने मां-बाप को भगवान का दर्जा दे रखा था आज वह भी मां-बाप से चिड़चिड़ा रहने लगा और अपने पत्नी मन्जू के हर एक षडयंत्र पर विश्वास करने लगा।

उधर कोकिला मौसी का आना-जाना भी कम होने लगा क्योंकि उसकी कुचाल तो अब कामयाब हो ही रही थी। इधर सावित्री और मनहर को भी कुछ-कुछ सुकसुकी कोकिला के कुकर्मो का होने लगा था, इसलिये वे उससे दूर ही रहना जरूरी समझे। सावित्री कोकिला को सुधारने की कोशिश में लग गई और उसे अपने साथ अच्छे संगत और उपयुक्त किताबों की शिक्षा देने लगी।

जब सावित्री ने अपने बहू मन्जू को कोकिला के कुकर्मो और भड़काने वाली चाल की तरफ इशारा किया तब मन्जू चीख उठी। "सासू मां , आप क्या मुझे दूध पीती बच्ची समझती हो जिससे मैं किसी के बहकावे में आकर आपसे झगड़ा मोल ले लूं। आपके पुराने

ख्याल और मेरे आधुनिक रहन-सहन के तरीके में जमीन आसमान का फर्क दिखने लगा है इसलिये मैं आप पर नाराज़ होती हूं। आज ही मैं मानव से आपकी शिकायत करूंगी तब आप को मजा मिलेगा। ”

सावित्री के लाख मना करने और माफी मांगने पर भी मन्जू का कलेजा ठण्डा नहीं हुआ और उस रात की महाभारत मनहर और सावित्री के लिये राम बान के वार से भी भयानक और दर्दनाक साबित हुई।

जो सुपुत्र माता-पिता के चरणों की पूजन करता था वही मानव आज अपने पत्नी के तरफ से अपने माता-पिता को जली-कटी सुनाने में जरा भी नहीं हिचकिचाया। मां-बाप के प्यार और उत्तम स्वभाव अब गलतियों में बदलने लगी। हर एक कदम पर वे बूढ़े लोगों का व्यवहार असहाय होने लगा। मन्जू ने तीन में तेरह जोड़ना जारी रखा और मानव माता-पिता से दूर होता जा रहा था।

आखिर वह दिन आ ही गया जब मन्जू ने मानव को उसका बना बनाया सुन्दर घर छोड़ने के लिये लाचार कर दिया। मन्जू भी मां बननेवाली थी और उसने यह भी ढ़ोंग रच डाला की उस पुराने ख्याल के परिवार में रहने से उसके आने वाली संतान पर इसका बुरा असर पड़ेगा तथा उसके अपने बच्चे आज के आधुनिक रहन-सहन से वंचित रह जायेंगे।

मजबूरन मानव अपने पूजनीय मां-बाप का घर आंगन छोड़ने को तैयार हो गया और इस निर्णय की घोषणा उसने शाम को कर ही दी। माता-पिता इस दुखित खबर को सुनकर चीख उठे। समाचार

सहन के बाहर था। उनका हृदय दुख से भर गया और वे रो पड़े। हाथ जोड़कर अपने बच्चों के मनगढ़ंत आरोपों के लिये माफी मांगने लगे। मानव और मन्जू के कानों तक माता-पिता की करूण पुकार नहीं पहुंची। किसी तरह वह लम्बी रात कटी और सुबह मानव और मन्जू की सवारी निकल ही पड़ी।

लाख रोकने पर भी वे न रूके और कई बार पूछने पर की वे कहां जायेंगे मानव ने कह दिया की अब वे अपने ससुराल में बड़े सुकून से रहेंगे। यह सुनकर सावित्री और मनहर को बहुत सोच हुआ पर वे चाहकर भी कुछ न कर सके।

माता-पिता को यह सब देख-सुन कर दुख तो बहुत हुआ पर वे बच्चों को अपना आर्शीवाद देना कैसे भूल सकते थे। उनका कथन दर्द से भरा था।

"जब तुम लोग जा ही रहे हो तो जहां भी जाओ सदा सुखी रहो, फलो फूलो पूतों नहाओ लेकिन हमारा यह आंगन आप लोगों के लिये सदा खुला रहेगा और जब भी दिल चाहे बिना किसी हिचकिचाहट के चले आना।"

वे दोनों रोते विलापते रह गये और मानव की गाड़ी चल पड़ी। मनहर और सावित्री का कलेजा फट रहा था वे अपने आंगन में हताश बैठकर अपनी परवरिश को कोसने लगे। वे और क्या कर सकते थे सिवाय सोचने और आंसू बहाने के। फिर भी वे भगवान से प्रार्थना करने लगे की कोई मां-बाप को ऐसा बुरा दिन कभी न देखने को मिले।

कब शाम हो गई उन्हे पता ही न चला। मनहर और सावित्री की उमर तो ढ़ल रही थीं पर पुत्र वियोग ने उनको और भी कमजोर बना दिया था। सुबह शाम जब भी मानव और मन्जू की याद आती तो दो चार आंसू बह निकलते थे। मनहर ने सावित्री की बिगड़ती दशा देखकर उसे समझाने की लाख कोशिश की और सांत्वना दिलायी पर ऐसी अवस्था में एक मां का दिल आसानी से शान्त नहीं होता।

मनहर का कहना था कि उन्हे हिम्मत नहीं हारनी चाहिये क्योंकि एक दिन उनके बच्चे जरूर लौट आयेंगे तब सब ठीक हो जायेगा। यही मनहर का दृढ़ विश्वास था।

अभी उस विषाद या दुख के बादल टले नहीं थे की उनके घर पर एक और बिजली गिर पड़ी। 'देखा-देखी पुन्य और देखा-देखी पाप' वाली बातें हो गयीं। मानव और मन्जू का बिछड़ने का वियोग अभी गया नही था की आज एक साल बाद प्रनव और सन्जू भी वही रास्ते पर चलने के लिये तैयार हो गये थे।

मन्जू ने अपने अनुचित प्रभाव से सन्जू का कान भरती रही और आज वो दिन आ ही गया की प्रनव भी अपने अर्धागिनी के दबाव मे आकर घर छोड़ने का फैसला अपने माता-पिता को सुना दिया। डूबते हुये मनहर और सावित्री को जो तिनके का सहारा था वह भी छूट रहा था।

यह सुनकर की अब बूढ़े मां-बाप के पुराने ख्याल और जंगली वातावरण प्रनव और सन्जू को शोभा नहीं देते उनको समझ में आ गया पर वे भी घर छोड़कर अपनी जिन्दगी नये रूप से बिताना

चाहते हैं मनहर के लिये बर्दाश्त के बाहर की बात थी । यह सुनकर मनहर को बहुत बड़ा झटका लगा और वह इस खबर को सुनकर चकरा गया।

प्रनव और सन्जू ने भी माता-पिता की करुण पुकार को सुनने से इंकार कर दिया और घर छोड़ दिया । उनकी भी गाड़ी किसानी जिन्दगी और पिछड़े हुए रहन-सहन को छोड़कर नये रास्ते की खोज में निकल पड़ी । इनका कारवां कहां जा रहा था केवल सावित्री को मालूम था लेकिन जब उसने मनहर की बिगड़ती हुई तबीयत को देखा तो उसे एक राज बनाकर अपने मन ही में रख लिया । इनको भी ससुराल में ठिकाना मिलेगा यह सुनकर मनहर का कलेजा फट जाता ।

माता-पिता को विलापते छोड़ चले उनके अपने दुलारे । इधर मनहर को दिल का दौरा पड़ा और वह लकवा बीमारी का शिकार बन गया । सावित्री ने हिम्मत नहीं हारी और अपने बिखरे जीवन को सम्भालने में अपने शेष समय निकालने लगी ।

वह एक तरफ बीमार पति की सेवा करती और दूसरे तरफ अपने किसानी का कार्य जारी रखती । मदद के लिये गांव के लोग टूट पड़े पर उसको एक ऐसा सहारा मिला जिसे पाकर वे धन्य हो गई । इस सच्चे प्यार और दोस्ती को वे कभी नहीं भुला पाई ।

पास ही गांव के बहुतीनी कोरो का तुरंगानिकोरो अपिसाइ और उस का भाई मावा आकर इस दुखी परिवार की मदद में लग गये । मनहर ने कइ बार अपने अच्छे दिनों में उन्हे भी सहायता प्रदान की थी । उस नेक सहारे को तो शायद दोनों आदिम निवासी भूल भी

सकते थे पर आज से बीस साल पहले का राखी का धागा जो सावित्री ने अपिसाइ और मावा को बांधा था उसकी मर्यादा वे कैसे भूल जाते ।

अपिसाइ ने सावित्री को याद दिलाया की उसने उस राखी के बंधन को उसके दाहिने कलाई पर बांध कर उससे एक भाई का रिश्ता जोड़ा था । आज वह एक सच्चे भाई का फर्ज अदा कर रहा है क्योंकि उस दिन की मिठाई आज भी उसके मुंह में स्वाद बनकर एक बहन के प्यार की याद दिलाती है ।

“आप का रक्षा करना हमारा धर्म ही नही पर एक भाई के नाते यह हमारा सौभाग्य है,” अपिसाइ ने कहा और अपने बच्चों और मित्रों के साथ मनहर की खेतीबाड़ी सम्भालने में अपना सही सहयोग देकर उन सबकी रक्षा करना अपना परम कर्त्तव्य समझा ।

जब सावित्री को उस रक्षाबंधन के दिन याद आते हैं तब वह अपने भारतवर्ष वाले भाईयों के साथ-साथ अपने इस फीजी के भाई को भी याद करती है । अपिसाइ को मनहर ने भजन गाना भी सिखाया था और वह जब भी सावित्री को मिलता तो एक गाना सदा गुनगुनाया करता था । *“भईया मेरे राखी के बन्धन को निभाना ”*

मनहर का कहना था की अगर बच्चे अपने शादी के बाद माता-पिता से सलाह मशवरा करके अपने सफलता के लिये अलग होना चाहें तो उनको कोई इतराज़ नहीं है पर झगड़ा-झंझट का बहाना करके अलग होना नादानी है ।

सबका इतना प्यार और सहारा मिल जाने पर मनहर और सावित्री एक नया जीवन व्यतीत करने लगे और अपने बच्चों का बिछड़

जाने का दुख कुछ कम मालूम पड़ने लगा। कभी-कभी उनकी याद आने पर दोनो अलग-अलग अकेले मे दो चार आंसू बहा लेते थे पर हर रोज उन के प्रार्थना मे बच्चों की सही सलामती और वापस आ जाने का सन्देश होता था।

न जाने कब, कहां और कैसे बच्चों का कठोर दिल पिघल या पसीज जाये बस इसी ताक मे उनकी जीवन नैया चलती जा रही थी। सुबह और शाम के पूजन में वे यह कहना नहीं भूलते थे "आ लौट के आजा मेरे लाल "

अब क्या था मनहर और सावित्री का अकेला जीवन नीरस हो गया था पर वे उस ठोस विश्वास और आशा को अपने दिल में लिये जी रहे थे की एक न एक दिन उनकी खुशी और सुखी परिवार पुनः संगठित होगा।

हर मनुष्य के लिये आशा एक बहुत बड़ा हथियार होती है। हमारी आशा ही हम सबको प्रोत्साहन और सांत्वना दिलाती है। जब हमारी आशा कायम रहती है तो निराशा कोसों दूर रहती है।

एक हंसते-खेलते सुखी परिवार का जब छितिर-वितिर हो जाता है तब उसकी अकथ और असहाय पीड़ा सहने की क्षमता केवल प्रार्थना और भक्ति में पाई जा सकती है। मनहर और उसकी स्त्री हर सुबह पूजा पाठ करके भजन भाव का आनन्द लेकर तब अपना दिनचर्या का कार्य करते थे। फिर शाम को ईश्वर चर्चा और भक्ति मानों उनका निर्धारित कार्यक्रम हो चुका था।

इस के अलावा वे और क्या करते ? हाथ पर हाथ रख कर सोच में डूबे रहने से अच्छा था की वे अपने आपको जटिल जनसेवा और भगवत भजन की ओर आकर्शित करते।

दोनों प्राणियों ने एक और शौक या रुचि को इस बीच बड़ी खुशी से अपना लिया था। उनको जगजीत सिंह की यह गज़ल बड़ी मन भायी थी और इसीलिये उनकी रुचि इस ओर बढ़ती गई। इस गज़ल को लिखने वाले ने कमाल के शब्दों का इस्तेमाल किया है। उनके लिये यह गज़ल बहुत माने रखती थी ।

'जिन्दगी में सदा मुस्कुराते रहो'

"फासले कम करो दिल मिलाते रहो । दर्द कैसा भी हो आंख नम न करो, रात काली सही कोई गम न करो ,एक सितारा बनो जगमगाते रहो। बांटना है अगर बांट लो हर खुशी, गम न जाहिर करो तुम किसी से कभी ,दिल की गहराईयों में गम छुपाते रहो। अश्क अनमोल हैं खो न देना कहीं, इनकी हर बूंद है मोतियों से हंसी, इनको हर आंख से चुराते रहो। जिन्दगी मे सदा मुस्कुराते रहो ।"

इस संगीत की रुचि से उन्हे बड़ा सुकून मिलता था। कभी-कभी दोनों प्राणी खुद गुनगुनाते थे और अन्य समय शान्ति से बैठकर वे घण्टों सुन्दर संगीत का मजा लेते थे। यह आजमाई हुई बात है की कई लोगों के लिये यह दिलचस्पी भौतिक चिकित्सा का काम करती है।

उनकी तकलीफों के बावजूद भी परमात्मा की कृपा से उनके सब कृषि कार्य में कोई ढ़ीलापन नहीं आया था । पर वे कब तक गांववालों के सहारे अपना जीवन निर्वाह करते । समय आ गया था की उनको अपने पैरों पर स्वंय खड़े होकर अन्य लोगों को उनकी मदद से मुक्ती दे देना जरूरी हो गया था ।

उनका समय उनके उम्र के मुताबिक ठीक ही बीत रहा था पर मनहर के कहने पर सावित्री ने अपने एक भाई के लड़के शंकर को भारत के सीतापुर से बुला लिया । उनका यह भतीजा सीतापुर में आम और गन्ने की खेती में माहिर था इसलिये यहां का सब काम उसने बड़े सरलता से सम्भाल लिया । अब उनके बुढ़ापे का और कुछ हद तक उनके दुखों का सहारा मिल गया और वे अब अवकाश लेने की सोचने लगे ।

अपने सभी हितैषीगणों को एक दिन आमन्त्रित करके मनहर और सावित्री ने शंकर की आने की खबर सुनाई और उन्हें लाखों धन्यवाद दिया । लोग बहुत खुश हुये लेकिन यह आश्वासन दिया कि,"कभी भी उनकी जरूरत पड़े तब हिचकिचाने की कोई जरूरत नहीं है । उनका हाथ बँटाना जारी रहेगा । "

उस रात भोजन-पानी के बाद मनहर ने सावित्री के साथ अपना एक लोकप्रिय संगीत सबको सुनाया । सबको बड़ा आनन्द मिला ।

'जब कोई बात बिगड़ जाये, जब कोई मुश्किल पड़ जाये, तब देना साथ मेरा वो हमसफर ..'

लोगों का दिल गदगद हो गया और इस परिवार की हिम्मत और परिश्रम का दाद देते हुये खुशी-खुशी घर गये लेकिन एक और आशीर्वाद देते गये, " हम आप सबके अच्छे दिन आने की प्रार्थना करेंगे ", मनहर और सावित्री का विश्वास और उम्मीद और भी बढ़ गयी लेकिन बिछड़े हुये जनों की याद सताती रही ।

अपने असमर्थ या आशक्त होने का कभी मनहर ने अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया क्योंकि वह एक ठोस विचार और सहनशीलता से भरपूर व्यक्ति ठहरा । वह अपनी सब तकलीफों को सहन कर गया और सावित्री को भी सांत्वना दिलाने में कामयाब रहा । उसे यह ज्ञात था की सबूरी का मजदूरी सदा बहुत बड़ी होती है ।

मानव और प्रनव तो अपने-अपने ससुराल में निवास करने का मजा ले रहे थे । वे वहां के नये खातिरभाव में इतना मगन थे की उनको उनके मां-बाप की याद ही नहीं आ रही थी । मानव के ससुरालवालों ने कई बार उनसे कहा की उनको अपने माता-पिता का हाल ले लेना चाहिये पर वह मन्जू के भय से चाहकर भी ऐसा नहीं कर सका ।

मन्जू के माता-पिता ने मानव को बड़े प्यार से अपना तो लिया पर कई बार उनको अपने घर लौट जाने को कहा लेकिन मन्जू के हट के आगे किसी की न चली । अब मानव और मन्जू के पास एक अपना बच्चा हो गया था और सभी लोग उसके देखभाल में लीन रहते थे । उनके पुत्र मनोज का अपने नाना-नानी के घर सही तौर से पालन पोषण होने लगा । नाना-नानी के लिये मनोज तो उनके आंखो का तारा बन गया ।

पोता होने की खबर तो मिल गयी थी पर इस सुख और खुशी से मनहर और सावित्री वंचित रह गये । इसका अनुभव करके उन्हे बड़ा दुख होता था पर वे इस चोट को भी सहन कर गये । वे हिम्मत नहीं हारने वाले थे ।

एक दिन ऐसा आयेगा जब मनोज उनके आँगन में खेलेगा यह उनका विश्वास था । उनकी भक्ति में शक्ति जरूर होगी ।

अपने नइहर में आकर मन्जू का मिजाज भी कुछ और अजीब सा हो गया था । उसे लगा की उसको उसके माता-पिता का सहारा मिल रहा है और फिर नये बच्चे की पालन पोषण के बोझ ने उसे और भी चिड़चिड़ा और खुदगर्ज बना दिया था ।

उसकी फिजूल खर्च करने की आदत बढ़ती गयी पर उसके शौक पूरे नही हो पा रहे थे । मानव को यह खबर ही नही रहती की उसकी कमाई कहां चली जाती है ।

उसको अपनी आमदनी बढ़ाने के लिये कुछ ज्यादा काम करना पड़ रहा था फिर भी मन्जू के खर्च की पूर्ति करना कठिन हो रहा था । इस कारणवश और पैसे की लालच के लिये मानव को एक-दो गैर कानूनी काम भी करने पड़े ।

बात बनने की जगह बिगड़ती गयी और मानव बुरे संगत में पड़कर शराबी भी बन चुका था । अब उसे नशे में घर आकर मन्जू को कुछ मुंह तोड़ जवाब भी देने की हिम्मत हो गयी थी । इस पर अब घर में और ज्यादा झंझट होने लगे । पत्नी और सास-ससुर के जली-कटी सुनते-सुनते उसके कान पक गये थे ।

मन्जू तो आसानी से सुधरने वाली नहीं थी । दिन में मनोज की देखभाल तो नाना-नानी कर ही रहे थे पर अब मन्जू के रात भी बाहर दोस्तों के साथ गुजरने लगी । इसमें खर्चा और भी बढ़ने लगा तथा घर की शान्ति भी जाती रही ।

मानव और मन्जू अब एक दूसरे से दूर होने लगे थे । न मन्जू में सुधार आने की सम्भावना थी न मानव की हालत बदल सकती थी । उनकी बुरी आदतें गम्भीर रूप धारण करने लगीं । मन्जू को नशे की हालत में गाड़ी चलाते पकड़ा गया और उसका लाईसेंस रद्द कर दिया गया । मानव को गर्भपात के अपराध में सजा हो गई और उसका काम भी छूट गया । अब वो जाये तो जाये कहां ? कौन उसका मददगार बनेगा? यही सोचकर मानव का दिल घबड़ाने लगता था ।

यह सब देख सुनकर मन्जू और उसके माता-पिता भी मानव पर बरस पड़े । आमदनी बन्द हो गई । मन्जू के पास खर्च के पैसे भी नहीं रहते थे लेकिन फिर भी वह दोस्तो के साथ घूमने से बाज नही आई थी । अब जब मानव घर पर ही रहता था तब उसे ही मनोज की देखभाल करने पड़ते थे । बात बढ़ती गई और हालात बिगड़ते गये ।

एक दिन मन्जू की काली करतूतों के कारण मानव के सर तक पानी चढ़ आया और वह अपने गुस्से को नही रोक सका । अपनी पत्नी के चरित्र पर शक करने की नौबत आ पड़ी । बचाये हुआ धन सब खत्म हो चुका था इसीलिये मानव मन्जू की फिजूलखर्चो पर पाबंदी लगाने की कोशिश भी की और उसे रोकना चाहा ।

अब उस आजाद पंछी को रोकना नामुमकिन था। उसे अब पिंजड़े में बन्द करने को कहा जा रहा था। मन्जू चीख उठी और उसने चिल्लाना शुरू कर दिया। मानव पर जुल्म ढोने लगी। घर में कोहराम मचने लगा। मानव इन सबसे तंग हो चुका था। उसे कुछ सूझता नहीं था। उसको कुछ-कुछ होश आने लगा था और अपने किये पर पश्चाताप हो रहा था।

उसने अपने शराबी होने का इलाज कराना शुरू किया और उसे इसमें सफलता भी मिली पर मन्जू का इलाज ढूंढना कठिन हो गया। उसकी मानसिक बीमारी इतनी खराब हो गई की मानव ने उसे छोड़ देने की सोचने लगा। मानव और मन्जू का बना बनाया घर दूसरी बार उजड़ गया।

सास-ससुर ने मानव को समझाने की लाख कोशिश की पर मन्जू के काले करतूतों से वह थक चुका था। उसके जाने ही में सबकी भलाई दिखाई पड़ी। अगले दिन मानव चुपचाप घर से निकल पड़ा। वह जाये तो जाये कहां ? उसे कौन सहारा देगा? यही सोचते-सोचते वह सूवा बस सटेंड पर जा निकला। चुप मार कर वहीं बैठ गया और सोच में डूब गया।

न जाने कब तक वह वहां अपने ख्यालो में खोया था। उसे होश तब आया जब किसी ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर उसको उसके नाम से पुकारा। "मानव ब्रदर, तुम कैसे है?" मानव ने जब अपना सर उठाकर देखा तो उसके आगे उसके गांव के अपिसाइ का लड़का तिमोदी खड़ा उसकी ओर बड़े ध्यान से देख रहा था।

मानव के आंखों से अकस्मात ही आंसू बहने लगे तब तिमोदी को महसूस हुआ की मानव कोई भारी तकलीफ में फंसा है और वह भी वही बेंच पर बैठ गया। मानव ने अपनी पूरी राम कहानी तिमोदी से कह दी तब उसके दिल का बोझ कुछ हलका हुआ।

तिमोदी अब पेसिफिक ट्रांसपोर्ट के सूवा-लौतोका वाली बस का ड्रायवर था और वह मानव को हिम्मत दिला कर अपने साथ बस में बिठा लिया और बस नांदी की ओर चल पड़ी। मानव अकेला सीट पर बैठा सोच में डूब गया।

मानव अब सड़क पर आ गया था तब उसे अपने किये पर बहुत लज्जा आ रही थी। अब उसे ज्ञात हो रहा था की मन्जू की बातों में आकर उसने कितने दुख काटे हैं। नयी झूठी दुनिया की खोज में वह अपने हीरे जैसे मां-बाप के दिल को दुखा कर बहुत बड़ा पाप कर बैठा। इसका अति कडुआ फल वह आज चख रहा है जिससे उसे बड़ी शर्मिन्दगी हो रही थी।

मानव अपने माता-पिता को याद करके अपना सर आगे की सीट पर छिपा कर रोया, गिड़गिड़ाया, सिसकियां भरा और प्रायश्चित करता गया।

उसकी नींद तब खुली जब उसका मोबाइल बज उठा और प्रनव से उसकी बातें हुई। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा यह जानकर की दोनों भाईयों का मिलन जल्द ही होने वाला है।

उसकी सवारी कब सम्बेतो टांकी पर तिमोदी ने रोका उसे खबर ही न हुई पर उसके इशारे पर वह बस से उतरकर तिमोदी को

धन्यवाद देकर अपने भूले और बीते हुये दिनो की खोज में बहूतीनी की ओर चल पड़ा । उसे याद आया की प्रनव ने उसे वहीं अगोरने को कहा था ।

लगभग चार बज चुके थे । मानव वहीं के पास वाले बस स्टेंड़ पर बैठ गया और अपने बिछड़े हुये भाई की राह देखने लगा । अब वहां उसे थोड़ी सी हिचकिचाहट आई की कैसे वह अपने घर वापस जाकर अपने माता-पिता से माफी मांगेगा ।

आज की अगोर या इन्तजार उसको मुद्दतों की तरह मालूम देने लगी और उसके दिमाग मे हजारों सवाल उठने लगे पर किसी का सही जवाब उसके पास नही था । लेकिन वह अपने मां-बाप की ममता और प्रेम में लीन होकर वहीं सब्र करने लगा । कब आयेगा उसका प्रनव ?

प्रनव की कहानी मानव के वृतांत से ज्यादा दर्दनाक निकला । प्रनव और सन्जू बा शहर पहुंचकर सन्जू के माता-पिता के घर में निवास करने लगे थे और उनका खूब सेवा सत्कार हुआ । पहले महीने प्रनव को ससुराल में बड़ा मान, खान और शान मिला । दूसरे महीने में प्रनव थोड़ा सा बोझ बन गया पर तीसरे महीने में उसके ससुराल वाले उससे दूर रहने लगे और बहुत कम मेलजोल रखने लगे ।

प्रनव को ऐसा बर्ताव कुछ ताज्जुब सा लगा पर वह इन व्यवहारों को अपने स्वार्थ के लिये नज़रअन्दाज़ कर गया । समय बीतता गया और प्रनव पर व्यंगबाणों की बौछार होने लगी ।

गुस्से में अक्सर सासजी गरज पड़तीं थी और कभी ससुरजी भी बरस पड़ते थे। उनका कहना भी सही था की जो बेटा अपने मां-बाप का न हुआ वो सास-ससुर के कब काम में आयेगा।

बेइज्जती सहते-सहते प्रनव थक सा गया और एक दिन सन्जू से इसकी शिकायत कर बैठा पर उसने इसकी बात अनसुनी कर दी। दूसरे बार कहने पर सन्जू का पारा चढ़ गया।

उसने भी प्रनव को जली-कटी सुनाते हुये कहा, "अगर तुम्हे यहां नहीं अच्छा लगता है तो तुम क्यों नही एक किराये का फ्लैट ले लेते हो। वहां तुम खुशी से रहना पर मै यहां से नहीं जाऊंगी क्योंकि मैं अपने बच्चे को एक झोपड़ी में नहीं पालना चाहती।"

अब प्रनव को पता चला की वह भी एक बाप बनने वाला है। पर उसे ताज्जुब हुआ की मन्जू ने उससे यह खुशी को बताना जरूरी नहीं समझा।

प्रनव को बहुत क्रोध आया और वह सचमुच ही एक किराये का मकान लेकर उसमें रहने लगा। उसने यह सोच रखा था की कुछ दिनों के बाद जब सन्जू का दिमाग ठण्ड़ा हो जायेगा तब वह उसके साथ रहने आ जायेगी। पर ऐसा नहीं हुआ।

बच्चा हो जाने पर भी सन्जू अपने माता-पिता के शानदार घर में निवास करती रही और कई बार प्रनव के बुलाने पर भी वह नहीं मानी। उनका बेटा कमल अपने नाना-नानी के घर पलने लगा।

धीरे-धीरे सन्जू प्रनव से दूर होने लगी और अब तो उनका मिलना-जुलना भी बन्द हो गया। प्रनव अब बिलकुल अकेला हो गया था।

उस पर भी दुख के पहाड़ टूट पड़े और वह भी अपने कर्म को कोसने लगा। 'अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत' क्यों की अब तो जो होना था सो हो चुका था। फिर भी उसको अपने किये पर बहुत शर्म आया।

सन्जू के बहकावे में आकर वह भी क्या कर बैठा। वह भी मानव की तरह असमंजस में पड़ गया और उसे कुछ सूझता नहीं था। इसी बीच उसे मानव का हाल मिला और उसकी दशा सुनकर प्रनव के दुख के बादल और भी काले दिखने लगे। लेकिन मुसीबत में अपनी हिम्मत न हारना उसने अपने माता-पिता से सीखा था।

अब एक और मुसीबत आ खड़ी हो गई। प्रनव पर ट्रस्ट अकाउन्ट का पैसा गड़बडी करने के लिये एक झूठा इल्जाम लगाकर मुकदमा चलाया गया। उसने सोचा की यह भी मन्जू और उसके चालाक पिता की चालबाजी थी।

बा के एक जाने माने वकील गोबिन्द ने प्रनव की पैरवी करके उसे इस जाल से बचा लिया पर वह बिल्कुल टूट चुका था और अब एक भी मिनट वह वहां नहीं रहना चाहता था।

वह दर-दर की ठोकरे खाने से अच्छा अपने माता-पिता के चरणों में जाना जरूरी समझा। बस फिर क्या था उसने मानव से मोबाइल द्वारा सम्पर्क किया तब पता चला की वह भी पेसिफिक बस से सफर करता हुआ तिमोदी के साथ साम्बेतो की ओर जा रहा है।

प्रनव ने अपनी गाड़ी साम्बेतो की ओर दौड़ा दी । रास्ते में न जाने कितने बार वो अपने भूल पर तरस खाया और अपने माता-पिता को मिलने के लिये आतुर या व्याकुल हो रहा था ।

मानो उसका समय कट ही नहीं रहा हो पर किसी तरह वह भी साम्बेतो टांकी के जंक्शन पर जा रुका और मानव का इंतजार करने लगा ।

अचानक बस स्टेंड़ में बैठे मानव पर उसकी नजर गई और उसकी खुशी का ठिकाना न रहा । प्रनव ने गाड़ी रोकी, उस पर से तुरन्त उतरा और दौड़कर अपने भाई के गले लग गया ।

बड़ी देर तक वे एक दूजे से लिपटे रहे मानो उनको यह डर था की कहीं वे फिर न बिछड़ जायें । इस राम और भरत की मिलाप देखकर लोग भी दंग रह गये ।उनके पास बातें तो लाखों प्रकार की थीं पर वे चुपचाप जाकर गाड़ी में बैठकर कुछ देर तक एक दूसरे को देखते रहे, यही मानो की वे अपनी प्रायश्चित कर रहे हों ।

जब उन्हे उनके ठिकाने का होश हुआ तब वे अपनी-अपनी बीती दुखों और सुखों पर गौर करना शुरू किया । दोनों की राम कहानी कुछ लम्बी थी और वे चलती गाड़ी में एक दूसरे से कहते और सुनते चले जा रहे थे ।

शाम के पांच बज रहे थे और अचानक बिजली चमकने लगी और जोरों से बारिश होने लगी ।

पक्की सड़क तक मोटर चलती रही पर उनको अपने घर पहुंचने के लिये कच्ची पगड़ण्डी से होकर जाना पड़ता था और आज जब

घमासान वर्षा हो रही थी तब मोटर को पक्की सड़क पर खड़ा करके उन्हे पैदल चलना पड़ा । बारिश रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी और इन दोनों भाईयों को जल्दी घर पहुंचने की धुन थी ।

दोनों भाईयों ने एक लम्बी सांस ली और उसी बरसते पानी मे भीगते हुये उस पवित्र स्थान की तरफ चल पड़े जहां उनका जन्म और परवरिश हुई थी । दोनों भाई भीग रहे थे । यही मानों की वह बरसात उनके पापों को और बुरे कर्मों को धो रही थी । बिजली का चमकना भी उनके लिये कुछ अच्छे दिन की आकांक्षा दे रही थी ।

घर पहुंचते-पहुंचते वर्षा थम गई और बादल का गरजना भी बन्द हो गया पर दोनों भाईयों के पाँव रुक गये । वे असमंजस में पड़ गये थे । सोचने लगे की उनसे उनके जन्मदाताओं से कैसा मिलाप होगा !

उस दिन मनहर और सावित्री अपने दिन भर के कार्य से छुटकारा पा कर प्रार्थना में लीन थे । विसर्जन और शान्ति पाठ के बाद वे दोनों आपस में अपने पुराने जीवन की चर्चा कर रहे थे । कुछ हद तक वे उन बीते दिनों की हलचल में खोये हुये थे की अचानक दरवाजे पर एक हलकी सी दस्तक सुनाई पड़ी ।

मनहर के इशारे पर सावित्री चौंक कर उठी और दरवाजे के तरफ बढ़ने लगी, “ कौन है ? ”

अत्यंत मीठी सी आवाज वहां गूंज उठी । “मां !” दरवाजा खुलते ही दो प्राणियों को अपने पैरों पर गिरते देखकर सावित्री का आश्चर्य का ठिकाना न रहा ।

"मां हमको माफ कर दो " दोनो भाई एक साथ बोल उठे । सावित्री थोड़ी देर तक अवाक देखती रह गई । उसे उसकी सब दिन की प्रार्थना याद आने लगी । 'लौट के आजा मेरे लाल !' उसने इस प्रार्थना को हजारों बार रटनी लगाया था और आज ईश्वर ने उसकी सुन ली ।

सावित्री के आंख भर आये और आंसुओ की धार बेमिसाल बह रही थी पर आज ये खुशी के आंसू थे । उसने बच्चों को उठाया और अपने कलेजे के टुकड़ों को गले लगाया । इतने में मनहर की आवाज आई, "सावित्री देर क्यों कर रही हो,जल्दी आओ दिये में घी खत्म हो गया है । "

जब बच्चों को लेकर सावित्री मनहर के पास पूजा के कमरे में गई तब मनहर को खुशी का ठिकाना न रहा । उसको भी उसकी प्रार्थना की रटनी याद आ गई । मनहर का अपंग शरीर मानो उत्तेजित हो पड़ा और वह जल्दी से खड़ा होकर बच्चों को गले लगाना चाहता था ।

इसी समय एक बार बिजली फिर चमकी और जोरों से बादल गरजने की आवाज कमरे में गूंज उठी । एक अजीब चमत्कार हो गया । मनहर अपने बल पर खड़ा हुआ और दोनों लड़कों को अपने छाती से लगाया। इस बीच किसी ने यह नहीं देखा की मनहर स्वस्थ हो गया और अब चल फिर रहा है ।

थोड़ी देर में जब सब को इसका ज्ञात हुआ तब सावित्री ने जल्दी से दिये में घी डाला और अपने अधूरी प्रार्थना की पूर्ती करने लगी

“ हे दुनिया के सबसे बड़े जादूगर, तुम धन्य हो भगवन ! आपने लौटा दिये मेरे खुशी के दिन! ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति ! ”

घर में कई आरतियों की गूंज होने लगी और मनहर परिवार फिर से खुशी में झूम रहा था । शंकर यह सब देखकर बड़े असमन्जस में पड़ गया । अब उसका क्या होगा ? मनहर अच्छे हो गये थे, दोनो भाई वापस आ गये, सावित्री खुशी से झूम रही थी । सबको याद आया की घर में एक और भी कीमती इन्सान है ।

सावित्री ने शंकर की ओर इशारा करते हुये अपने बच्चों को उसका सही परिचय दिया । “ यही हमारा शंकर है और जब हम दुख से पीड़ित थे तब इसी शंकर ने आकर हमें उबारा था । यही दयालु , होनहार और मेहनती शंकर ने हमारा सब दुख दूर करने में मदद की है और आज वह हमारा तीसरा हाथ और आंख है । इस बेटे को हम इतना प्यार और आदर देंगे की वह कभी भी हमसे दूर न हो जाये । ”

मानव, प्रनव ओर शंकर का मिलाप हुआ और माता-पिता का दिल गद्‌गद्‌ हो गया । आज मनहर परिवार फिर से धन्य हो गया था । चारों तरफ खुशी ही खुशी थी पर तभी सावित्री को एक कमी महसूस हुई और वह पूछ बैठी, “बेटे , मेरी बहुयें और पोते कहां हैं ?”

इस सवाल का जवाब देना उतना आसान नहीं था इसलिये मानव और प्रनव ने चुप रहना ही मुनासिब समझा । उनकी मौन धारण बहुत कुछ कह गई इसीलिये मां-बाप भी चुपचाप सोचते रह गये ।

उन्होंने सोचा की आज के लिये इतनी ही खुशी उनके दिल, दिमाग और शरीर में पूरे तौर से समाती नहीं है वे और खबर बाद में सुनेंगे ।

उस रात का चांद भी उस खुश परिवार के साथ में झूम रहा था और अपने शीतल चमक से सबको आनन्दित कर रहा था । आज मनहर भी बहुत प्रसन्न था । उसने अपने संगीत के स्वर और साज लेकर बच्चों का मनोरंजन करने लगा । वही तीन गानों से उनका मन बहलाया जिसे उसने अपने जीवन का आधार बना लिया था ।

- जिंदगी में सदा मुस्कुराते रहो ..
- जब कोई बात बिगड़ जाये, जब कोई मुश्किल पड़ जाये..
- आ लौट के आजा मेरे मीत तुझे मेरे गीत बुलाते हैं ..

रात ढल चुकी थी । सब लोगों के दिल और दिमाग में बहुत सी बातें उथल-पुथल मचा रहीं थीं । लेकिन आराम करना जरूरी था । घर के सभी लोग सुन्दर और एक नये सुबह के इन्तजार मे सुख चैन की नींद में सो गये ।

दिसम्बर का महीना था । प्रातःकाल के साथ ही साथ साम्बेता में एक नवीन जीवन का संचार हो गया । सूर्य देवता पूरब दिशा में खिलखिला उठे । उनकी सुनहरी किरणों ने मनहर परिवार को नये उत्साह और उमंग से भर दिया था । आज का सूरज उस परिवार के लिये एक नया सन्देश लाया था । घर में बड़ी चहल-पहल थी ।

मनहर और सावित्री ने इस खुशी के अवसर पर गांववालों के साथ जश्न मनाया । कई लोग उनकी अच्छी तकदीर और उच्च ततबीर

की तारीफ कर रहे थे । यह उनका अहोभाग्य था की आज उनका उजड़ा हुआ चमन फिर से खिल उठा था । मनहर की तन्दुरूस्ती भी सुधर गई थी, उनके विश्वास का सही फल मिला और उनकी भक्ति में शक्ति का अनुभव हुआ ।

जश्न, पूजापाठ, भजन कीर्तन, गज़ल और गीतों का खास प्रबन्ध था । एक सप्ताह कैसे बीत गया किसी को पता भी नहीं चला । आज जलसे का आखरी दिन था, सावित्री ने अपनी खुशी को भी सबके साथ बांटने का निश्चय किया । मनहर के साथ उसने एक डुयेट याने युगल गीत गाया जिसे लोग सुनते रह गये ।

मेरे प्यार की उमर हो इतनी सनम, तेरे नाम से शुरू तेरे नाम से खतम । तेरे खुशी से है खुशी , तेरे गम से है गम . .

अब उनके जीवन में कुछ-कुछ खुशियां लौटने लगी थीं पर उनका जी अभी पूरे तौर से भरा नहीं था । उनका एक और विश्वास बाकी था । वे अपने बहुओं और पोतों का साथ चाहते थे । यह कैसे होगा यही सोचकर बच्चों के साथ गुफ्तगू करना शुरू किया ।

इस बातचीत के दौरान बच्चों की सब दुख-सुख की कहानियों को ध्यानपूर्वक सुन लेने के बाद और अपनी बीती जिन्दगी के वृतांत कहने के बाद आज मनहर के मन में कई ख्वाहिशें और उमंगे हिलकोरे ले रही थीं । वे दोनों पति-पत्नी यह सोच रहे थे कि अगर सुबह का भूला शाम तक वापस घर आ जाये तो उसे भूला नहीं कहना चाहिये ।

दोनों बेटों को तो वे माफी दे चुके हैं लेकिन एक जरूरी बात का अभी भी समाधान नही हो पाया है । मानव और प्रनव के परिवारों को फिर से मिलाना उनका एकमात्र लक्ष्य बन गया था । वे रोज़ यही ताक में रहते थे की कब अच्छा मौका आये और वे इस प्रस्ताव को अपने बेटों के समक्ष रखें ।

बड़े दिन का त्यौहार और नये साल की हलचल खत्म हो गई तब एक शाम को उन्होने मानव और प्रनव के समक्ष अपना प्रस्ताव रखा । कई घण्टों तक उनकी बातचीत जारी रही I । अन्त मे यह फैसला हुआ की दोनों बच्चो के ससुराल एक-एक प्रतिनिधि-मण्डल भेजा जाये ।

प्रेम और समझदारी से कितना भी बिगड़ा हुआ काम बन सकता है । इसी धारणा को मन में रखकर पंडित राजबली महाराज को लेकर बड़े विश्वास के साथ यह प्रतिनिधि मण्डल पहले मन्जू के माता-पिता के घर पहुंचा ।

उनको इस गोष्ठी की सूचना पहले दे दी गई थी इसीलिये वहां उनका स्वागत बड़े प्रेमपूर्वक किया गया । यही तो ऊंचे संस्कार और सदभावना के लोगों का सही शिष्टाचार है ।

मानव और मन्जू की दूरियां और विपरीत विचारों को बदलने के लिये उनको कुछ देर तक अकेले में अपने बच्चे के साथ रहने दिया गया । वे दोनों शिक्षित और होनहार प्राणी थे इसीलिये वे अपना हल खुद निकालने में सफल हो सकने की क्षमता रखते थे ।

उनका बेटा मनोज उनके सामने खेल रहा था और मानव और मन्जू अपने विवाहित जिन्दगी को एक मौका और दे देने का विचार में डूबे थे।

कुछ बहस हुई, कुछ गम्भीर समस्याओं का समाधान मिला, कुछ निर्णय लिये गये, कुछ प्रेम की बातें भी हुईं और अन्त में जीत मनोज की हुई क्योंकि उसे अब अपने मां-बाप दोनो का प्यार और दुलार मिलने ही वाला था।

उधर पंड़ित राजबलीजी ने दोनों पक्षों को फिर से संगठित और एक हो जाने का प्रयास जारी रखा था। समझबूझ, बुद्धिमानी और मेलमिलाप होने की चर्चा चल ही रही थी की मानव और मन्जू मनोज के साथ उस समाधान-सभा की शोभा बढ़ा दिये यह कहकर की हम सब का मुंह मीठा कराने आये हैं। भोजन के बाद मन्जू और मनोज हमारे साथ साम्बेतो चलेंगे।

तालियों से घर गूंज उठा और मनहर ने तुरन्त तार द्वारा सावित्री तक इस खुशखबरी को पहुंचा ही दिया जिससे उनका स्वागत करने को वह पूरी तरह से उस हसीन शाम को तैयार रहे। अब लोगों ने बड़े प्रेम से मध्याह्न का भोजन किया तत्पश्चात मन्जू और मनोज को तैयार कर के उसके माता-पिता ने बड़े स्नेह के साथ उनको विदा किया।

विवेकी प्रतिनिधि-मण्डल का मिशन सफल हुआ और मानव का बिछड़ा हुआ परिवार पुनः एक हो गया और सावित्री को उसके घर का चिराग मिल गया। मन्जू अपनी सास को मां का दर्जा देकर प्रेम

से रहने लगी और यह भी सोच लिया की वह अब अपने देवर प्रनव के परिवार को भी मिला कर दम लेगी।

मानव को उसका नया जीवन फिर से आरम्भ करने का शुभ अवसर मिला और वह अपने बेटे और पत्नी को पाकर धन्य हो गया। पंड़ितजी से शनि ग्रह का पूजा पाठ करवाया और परिवार के प्रेम बन्धन में बन्ध गया।

समय बहुत बलवान होता है। मन्जू अब एक परिर्वतनशील नारी थी, एक आदर्श पत्नी ठहरी, और अपने ससुराल को सुखी बनाने के अलावा वह एक अच्छी मां बन जाने के लिए शपथ ले रखी थी। मन्जू ने सन्जू को सुधारने का जो बीड़ा लिया था अब वह उस लक्ष्य की पूर्ति में जुट गई।

इसके लिये उसने बा के जाने माने वकील का सहारा लिया जिसने प्रनव की पैरवी की थी। वकील साहब सन्जू से और उसके परिवारवालों से सलाह मश्वरा करने लगे।

सन्जू तो अपने पति और बेटे का मान रखने के लिये शायद राजी भी हो जाती पर उसका बाप बड़ा जिद्दी आदमी निकला। उसे मनाना मानों लोहे के चने चबाने के समान था। लेकिन न तो मन्जू और न ही उसका वकील हार मानने वाले थे। चाहे कितना भी समय लग जाये पर इसका समाधान ढूंढना बहुत जरूरी था। मन्जू भी समय पाकर सन्जू से टेलिफोन द्वारा बातें करती रहती और उसे समझाने की कोशिश करती रही।

ताजमहल एक रोज में नही बना था। किसी भी कठिन काम को होने में देर तो लगती ही है। मन्जू के वकील में हिम्मत, सबूरी, बुद्धि, सहनशीलता, समझौता वार्ता करने का सही तरीका और अन्य प्रकार के कौशल भरे पड़े थे इसीलिये उसको उन पर पूरा भरोसा था।

दो महीने, चार महीने और छः महीने भी बीत चुके थे पर कोई सुलह नहीं हो पा रही थी। वकील ने एक अवकाश लिये अध्यापक दमपत्ति रामदत और शीला का सहारा लेकर सन्जू को सही रास्ते पर लाने की कोशिश की और तब जाकर उनको सफलता मिली। सन्जू के दिमाग पर असर हुआ और वह अपने बेटे कमल के भविष्य के लिये अपना गुस्सा थूककर प्रनव के घर जाने को तैयार हो गई।

सन्जू को यह मानना पड़ा की प्रनव ने कभी उसे नहीं सताया था। वह खुद अपने झूठे अभिमान के कारण और परिवार के बहकावे में आकर उस गलती को कर बैठी थी जिसके लिये आज वह पश्चाताप कर रही थी।

इस समझ को आते ही उसने मन्जू को सम्पर्क किया और वापस जाने को राजी हो गई। मन्जू मारे खुशी के नाच उठी और उसी दिन सुबह प्रनव को लेकर बा शहर की ओर चल पड़ी। उसका प्रण पूरा होने वाला था।

शाम होते-होते मन्जू, प्रनव, सन्जू और कमल सब साम्बेतो पहुंचे तो वहां एक महायज्ञ की आयोजन हो रहा था। पंड़ित राजबली महाराज जी बेदी पर बैठे सुन्दर-सुन्दर मन्त्रों का उच्चारण कर रहे

थे । प्रनव और सन्जू को बड़े आदर से बेदी पर आसन दिया गया और उनके नये जीवन का शुरूआत इस महा मन्त्र से हुई ।

मंगलम भगवान विष्णू, मंगलम गरूड़ध्वज, मंगलम पुंड़रीकाक्ष, मंगलम तनो हरी ।

इस कलियुग में अगर मनहर परिवार की तरह समझबूझ सभी लोगों में आ जाये तो कई झंझटों से इन्सान बच जायेगा और उनके जीवन की नैया सुखी से चलने लगेगी । अफसोस इस बात का है की अभी भी हमारे बीच कई कोकिला, मन्जू और सन्जू जैसे लोग हैं जो हमारे परिवार में जहर घोलते रहते हैं । उनसे बचकर रहना ही समझदारी है । उनको समझाना भी जरूरी है ।

लौट के आ गये उनके लाल और यह साबित हो गया की हम सबसे गलतियां हो जाती हैं लेकिन उन गलतियों को सुधारकर अपने परिवार की रक्षा करना हम सबका कर्तव्य बन जाता है ।

पति-पत्नी का घर-घर में अगर सच्चा प्यार हो जाये तब हमारे समाज में प्रेम की गङ्गा बहने लगेगी और सब नर-नारी सुखी हो जायेंगे । शिक्षित और मधुर वाणी वाली देवियों से हमारा परिवार खुश रहेगा । अच्छी धर्म की शिक्षा बच्चों को विद्वान और आज्ञाकारी जरूर बनायेगी । सभी सास बहू का नाता पुत्री और माता के समान होना जरूरी है तभी हमारे समाज का कल्याण होगा ।

क्या हम ऐसा कर सकते हैं ? आप ही बताइये ।

९

प्रीत किये सुख होय

यह दुनिया एक प्रेम नगर ही तो है जहां हर एक इन्सान किसी न किसी तरह प्रेम के बन्धन में बन्धा हुआ है । किसी को देश से प्यार है तो किसी को दौलत से लगाव है । कोई जानवरों को चाहता है तो कोई एक दूसरे इन्सान के दिल में बसा है । प्रेम ही वह ड़ोर है जिसके जरिये हम सभी का दिल जीत सकते हैं ।

पवित्र प्यार की कदर वही लोग करते हैं जो खुद कभी प्यार के सुन्दर बन्धन में बन्धकर उसका लुत्फ उठा चुके हों । वह प्यार चाहे कैसा भी हो, माता-पिता का, स्त्री-पुरुष का, या फिर भाई-बहन का हो । यही एक रिश्ता है जो हम सबको एक सूत्र में बान्ध रखा है । जो न समझे उसे हम अनाड़ी कहेंगे और जो समझे उसे तो हम प्यार के पुजारी ही कहेंगे ।

कुछ प्रेम के पुजारी और कुछ बेबस अनाड़ी उस शहर के इर्दगिर्द रहते थे जहां हमने इस कहानी को जन्म दिया। हम उनमें से कुछ लोगों को अच्छी तरह से पहचानते थे पर कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्हें ठीक से जानना कठिन था। इस खोजबीन के जरिये हमने अपनी कहानी के पात्रों को ढूंढ निकाला।

हम अपने पाठकों को इन्सान की सबसे बड़ी शक्ति के बारे में बतलाना जरुरी समझते हैं। प्यार हर एक इन्सान के लिये एक जरुरी अनुभव है। यह एक ऐसी धारणा है जिसे कोई मामूली चीज़ नहीं समझा जा सकता है। प्यार इन्सान के लिये वह बारिश है जो उसकी आत्मा को भिगो देती है। प्यार में ऐसी ताकत होती है जो तन और मन पर हर समय छाई रहती है। इसलिये हम कहते हैं कि "प्रीत किये सुख होय।"

हम आपको उस सुनहरे शहर और गांव में ले चलते हैं जहां तीन परिवारों के अजीब सम्बंध जुटे हुये थे। बरनड़ोली और बालेबूतो बा शहर के नजदीक के दो बड़े रमणीक स्थान हैं। बा जिले में रहकर कोई भी बड़े आनंद और सुख का अनुभव कर सकता है क्योंकि यहां के निवासी प्रेम के उस पवित्र बन्धन को भलिभांति समझते थे जिससे इन्सान बड़ी से बड़ी जंग को जीत सकता है, अत्यन्त सुखी जीवन बिताने में सदा समर्थ रह सकता है और जनसेवा में लगा रह सकता है।

बड़े दुःख की बात है की हमारे आज के युग के कई लोग अपने जिंदगी में बैर भाव के बीज को बोकर समाज, गांव और देश में

लड़ाई-झगड़ा और नफरत फैलाने में कामयाब हो रहे हैं । इसीलिये शायद हमारा भविष्य सुखमय नज़र नहीं आता है । कौरव और पांडव की लड़ाई, राम और रावण की लड़ाई, पहली और दूसरे संसार का महायुद्ध, वियतनाम की लड़ाई और इराक-ईरान की मुठभेड़, इन सब में लोगों ने प्रेम से मुख मोड़कर बैर भाव को अपनाया था और आज उनका बुरा प्रभाव तथा नतीजा हमारे सामने है ।

यहीं पर हमारे सेठ मूलचंद अपना प्यार केवल अपनी दौलत तक ही सीमित रखना जरुरी समझते थे । उन्हें ऐसा लगता था कि वे अपने पैसे से सब चीज़ें खरीद सकते हैं । पर यह उनकी एक और भूल थी । उसी शहर के इर्दगिर्द ज्वाला प्रसाद और बुधराम जैसे नेक इन्सान भी रहते थे जिनको अपने परिवार, देश और समाज से बेहद लगाव था । वे गरीब थे पर प्रेम के धन से उनके दिल और दिमाग सदा भरे रहते थे ।

जीवन के सफर में राही मिलते हैं कई कारणों के लिये । कुछ लोगों का मिलना उनकी किस्मत में होता है । कुछ लोग मिलते हैं बिछड़ जाने के लिये । फिर कुछ लोग ऐसे मिलते हैं कि उनको जुदा करना बहुत मुश्किल हो जाता है । हम चाहे लाख जतन कर लें लेकिन उनकी जुदाई हो ही नहीं सकती । उनको ईश्वर ने जैसे एक-दूजे के लिये ही बनाया हो ।

गीता और दिनेश को परमात्मा ने एक हंस के उस जोड़े की तरह पैदा किया था जिनको मरकर भी जुदा करना असम्भव मालूम पड़ता

था। मिलन जैसा भी हो पर यह हर इन्सान के लिये लाभदायक है। पर जब दो चाहने वाले सच्चे दिल से मिलते हैं तब उनका मिलन समुद्र की लहरों की तरह अपने किनारे पर आकर टिक जाता है। उन्हें सहारा मिल जाता है और वे खुशी से जीना सीख जाते हैं।

इसी को शायद हम प्यार कहते हैं। वो मोहब्बत जिसे हम समाज के बन्धनों से नहीं पर एक इन्सानियत का तकाज़ा मानते हैं। जो इस इम्तिहान में पास होते हैं उनका पारिवारिक जीवन सुखमय और सरल बन जाता है। जो लोग धन, दौलत और झूठी मान मर्यादा के चक्कर में फंस कर सच्चे प्यार की हंसी उड़ाते हैं वे कभी भी अपने नये युग के नौजवानों के हितैषी नहीं बन सकते हैं। उन्हें हम प्यार के दुश्मन का नाम देना मुनासिब समझते हैं।

अगर हम सब इन्सान प्यार के असली मतलब को समझकर अपने लोगों की सच्ची मोहब्बत का आदर करना सीख लें तो हमारा समाज और परिवार खुशियों और सुखों की गंगा में आराम से तैरने लगे। यही तो हम सच्चे प्यार करने वालों का रोना है।

हमारे दुश्मन न तो कभी सच्ची प्यार खुद करते हैं और न दूसरों के पवित्र प्यार का आदर करते हैं। उन्हें तो केवल कत्ल करना और दूसरों को तड़पाने में ही आनन्द मिलता है। निर्दयी हैं वो जो न जानते हैं की प्यार हो जाता है किया नहीं जाता। पर उन्हें कौन समझाये कि प्यार में जाति, वर्ग, धन, वैभव और धर्म नहीं होते हैं। केवल एक इन्सान से दूसरे इन्सान का वास्ता रहता है।

गीता एक गरीब किसान की इकलौती बेटी थी । उसके माता-पिता, ज्वाला प्रसाद और सुभागवती ने उसे बड़े प्यार-दुलार से पाल पोसकर उसे अति सुन्दर स्वभाव वाली, सुड़ौल पर एक अत्यन्त साधारण मिज़ाज की युवती बना दिया था । वह गुणवन्ती तो थी ही और उसके सुलक्षणता की चर्चा उसके सभी अध्यापकगण हर वक्त किया करते थे । हिंदू धर्म और संस्कृति का ज्ञान उसमें बहुत गहरा था।

मां की अपार दोस्ती और पिता का बेहद प्यार पाकर गीता अपने आत्मसम्मान को कायम रखना अपना परम कर्तव्य समझती थी । इन तीन प्राणियों में इतनी घनिष्ठता थी कि वे एक-दूसरे के दिल की बात और दिमाग का हाल उनके चेहरे को देखकर जान जाते थे । ऐसा तभी होता है जब हम एक-दूसरे पर पूरा विश्वास करते हैं । जो परिवार विश्वास पर चलता है वहां खुशियों का राज होता है । इस छोटे से घर में भी सुख और खुशी की भरमार रहती थी ।

गीता को इस वर्ष के अन्त में अपने कालेज का अन्तिम इम्तिहान देना था और उसके बाद वह एक हाईस्कूल की अध्यापिका बन जायेगी । मां-बाप उसके इस लक्ष्य को पूरा करने में तनिक भी कमी या लापरवाही नहीं देखना चाहते थे । इसीलिये वे उसके लिये एक प्रोफेसर की ट्यूशन का भी प्रबंध कर रखा था । इसी वातावरण में गीता की मुलाकात दिनेश से हो गई थी । दिनेश एक अच्छे दोस्त के साथ-साथ एक बहुत ही होशियार विार्थी ठहरा जो गीता की पढ़ाई में भी बेहद मदद करता था ।

दिनेश शहर के जाने-माने व्यापारी का जेष्ठ पुत्र था । सेठ मूलचंद के पास दौलत की कमी तो थी नहीं और उनकी पत्नी बिमला समाज के कई संस्थाओं की प्रधान थीं । उनकी सुपुत्री नयना भी कालेज की एक प्रतिष्ठित छात्रा थी । दिनेश और गीता की दोस्ती के कारण नयना भी गीता से मेलजोल रखने लगी थी ।

यह रोज़-रोज़ की थोड़ी-थोड़ी और छोटी-छोटी मिलन आहिस्ता-आहिस्ता इतने गहरे, पवित्र और घनिष्ठ प्यार में बदल जायेगा ऐसा तो गीता ने कभी नहीं सोचा था पर होता वही है जो तकदीर में लिखा होता है । गीता पास के हाईस्कूल में पढ़ाने लगी और दिनेश अपने पिता के बिजनेस में जुट गया । दुनियावालों से दूर, परिवारवालों से चोरी-छिपे दिनेश और गीता के मिलन होते रहे । उनकी दो जान मानो एक शरीर में रहने लगी ।

वैसा सौन्दर्य ! वैसी निराभिमानता ! सहजता ! सरलता ! इससे पूर्व दिनेश ने कभी नहीं देखी थी और अब जब वह गीता को देखता तो अपने सपनों की दुनियाा में खो जाता था । वह गीता को अपनी जीवन संगनी बनाकर ही दम लेगा चाहे सारे जमाने से उसे लड़ना पड़े । वह अनुभव कर रहा था और यह जानता भी था कि एक दिन ऐसा आयेगा जब उसे धनी और गरीब के बीच की उस ऊंची दीवार को खुद लांघना और तोड़ना पड़ेगा ।

समय कहां रुकता है । दिन बीतते गये रात चलती रही । वे दोनों एक दूसरे में समाते चले गये और उनकी घनिष्टता बढ़ती गई । प्यार की आग दोनों तरफ बराबर लगी थी । धीरे-धीरे बात फैलने

लगी। लोगों में कानाफूसी होने लगी। हमारी यह दुनिया सदा से दो प्यार करने वालों से जलती रही है।

जलनभाव ही हमारी इन्सानियत की सबसे बड़ी कमजोरी है। हमारे लाखों दुःखों का कारण हमारा एक-दूसरे से जलन करने से होता है। गांववाले तो ज्वाला प्रसाद के कान भर ही रहे थे लेकिन शहरी जलन ने तो सेठ मूलचन्द को दो सच्चे प्रेमियों को उजाड़ने के लिये मजबूर कर ही दिया था। उनकी तेज छुरी गीता और दिनेश के पवित्र प्यार पर चल ही गई।

उस रात को भोजन के बाद सेठजी ने दिनेश को अपने कमरे में बुलाकर उसे अपनी नापसंदगी का परिचय दिलाते हुये कहा, “बेटे मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारी दोस्ती उस गरीब किसान की बेटी से कुछ ज्यादा ही बढ़ रही है। अगर इसे तुम एक मजे उड़ाने वाली शौक या हॉबी तक सीमित रखना चाहते हो तब तो ठीक है पर अगर तुम्हारा इरादा उस लड़की से सम्बन्ध जोड़ने का है तब आज ही उसे खत्म कर देना पड़ेगा नहीं तो नतीजा बहुत बुरा हो सकता है। मैं तुम्हें सावधान किये देता हूं। मेरे लिये दोस्ती केवल समानता के लोगों से की जाये तो बेहतर रहता है।”

दिनेश चौंक गया, मानो उसके पैरों तले जमीन खिसक गई हो और उसके अन्दर एक भयंकर तूफान चल पड़ा। वह चीखने ही वाला था कि उसकी मां ने कमरे में आकर उसके सभी इरादों पर पानी फेर दिया, “दिनेश बेटा हम तुमको अगले महीने अपने एक दोस्त की बेटी, मीना से मिलवायेंगे क्योंकि हम तुम्हारी शादी उसी के साथ

करने का फैसला बहुत दिन पहले कर चुके थे । वह अपने परिवार के साथ विलायत से आ रही है । तुम उसके परिवार के बारे में इस वीडियो को देखकर सबकुछ जान जाओगे ।"

दिनेश पर जैसे कई बिजलियां एक साथ गिर पड़ी हों । वह अवाक खड़ा थोड़ी देर तक सोचता रह गया । एक तरफ मां-बाप का दावा और दूसरे तरफ उसके प्यार की सच्चाई । वह जाये तो जाये कहां ? पर उसे उसकी मंजिल तक तो जरूर पहुंचना है । लेकिन जल्दबाजी करने से सब काम बिगड़ जाते हैं । यही सोचकर उसने इस वक्त चुप ही रहना ठीक समझा और चुपचाप मां से वीडियो को लेकर वह अपने कमरे में चला गया । मां-बाप को दिनेश की खामोशी ने उनकी शादी के इरादे को आगे बढ़ाने का मौका दे दिया ।

उधर दिनेश अपने कमरे में अकेला सोचता रह गया । वीडियो चल रहा था लेकिन दिनेश उससे कहीं बहुत दूर देख रहा था । वह सोच रहा था आदमी क्यों अपने आदतों का गुलाम बन जाता है और फिर चाहकर भी वह उस गुलामी से मुक्ति नहीं पा पाता । वह कैसे कहे की उसका प्यार उसके लिये उतना ही महत्व रखता है जितना उसके मां-बाप की कही हुई बातें । वह अब करें तो क्या करे ?

पर गीता में श्री कृष्ण ने कहा था, " हे अर्जुन ! अज्ञान से उत्पन्न हुये चित्त के इस संशय को ज्ञानरूपी तलवार से काटकर मेरे बताये हुये कर्मयोग को करने के लिये प्रस्तुत हो जाओ । "

इस गीता ज्ञान को लेकर दिनेश अपने गीता के लिये अपना सही करम करने को अपने आपको तैयार करने के इरादे को और भी मज़बूत बना लिया था। अब वह एक शान्ति क्रान्ति करने जा रहा था।

माता-पिता की आज्ञा का पालन करना हर सुपुत्र का फर्ज बनता है पर अगर उनके कहने पर चलने से बेटे का जीवन बिगड़ता हो तब हर समझदार बेटे को अपनी सही बातचीत और युक्ति से मां-बाप को समझा बुझाकर सलाह-मशविरा करके बिगड़ी बात को बना लेना ही बुद्धिमानी है।

एक तरफ पिता की बेशुमार दौलत और इतना बड़ा कारोबार जिससे उसका जीवन जुड़ा हुआ है और वह उन सबका एकमात्र वारिस है और दूसरी ओर उसकी गीता और उसका प्यार जिसे पाने को वह कुछ भी कर सकता है। पर वह न तो अपने मां-बाप को छोड़ने का और न तो गीता से दूर होने का दुख सहने के काबिल था। तब दिनेश ने एक बात अपने मन में ठान ली। उसे अपने माता-पिता को अपने प्यार की गहराई, पवित्रता और सच्चाई का अनुभव कराना होगा जिससे सांप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।

यही एक सुपुत्र के सही लक्षण हैं लेकिन इसके लिये दिनेश को कोई ठोस कदम उठाना पड़ेगा जिससे सब लोग खुश रहें। इसके लिये उसे समय और संयम दोनों की जरूरत पड़ेगी। वह यह बात अच्छी तरह से जानता था की आदमी की आत्मा पर जब धन-दौलत और

पूंजी का नशा चढ़ जाता है तब उस चमक-दमक से बाहर निकलना मुश्किल ही नही पर कभी-कभी असम्भव हो जाता है। इस तरह के जमे हुये परदे को फाड़कर उसे उसके विरोधियों को बाहर निकलना ही होगा तभी उसे उसकी गीता मिल सकती है।

दिनेश की शादी वाली इस भयानक और दर्दनाक खबर को जब उसकी गीता सुनेगी तो वह टूटकर चूर-चूर हो जायेगी यही सोचकर वह दूसरे दिन गीता से मिलने की राह देखने लगा। वह गीता को अपने दिल की बात बताना चाहता था जिससे उसके मन में कोई सोच और फिकर की गुन्जाइश ही न रहे।

उसे क्या पता था की चुगली करने वालों ने गीता के घर में भी वही आग लगाकर तमाशा देखने की ताक में थे। तीन में तेरह जोड़कर बताना तो कोई इन आरकाठियों से सीखे लेकिन हम इन दुश्मनों से जितना दूर रहे उतना ही भला है।

दुनिया बनाने वाले ने कुछ ऐसा गलत वरदान कुछ ऐसे ही बुरे लोगों को दे रखा है जिससे हमारे समाज में हंगामे होते रहे हैं। अच्छे लोग उनकी चपेट में फंसकर दुख उठाये जा रहे हैं और बाद में सुख की खोज जारी रखते हैं। यही विधि का विधान समझो।

शुक्रवार की शाम स्कूल बन्द होने के बाद अक्सर दिनेश और गीता थोड़ी देर एक दूसरे के साथ इस एकान्त स्थान पर बिता लिया करते थे। पर आज काले घने बादल बरस-बरस कर बिखर गये

थे । पहाड़ियों से छोटी-छोटी नालियों से पानी झरने के तरह बहती नीचे की ओर चली आ रही थी ।

दिनेश और गीता की गाड़ी इसी समय आकर उस रमणीक समुद्र के तट पर रुकी । बातिया पॉइन्ट के समीप दिनेश अपने अन्दर के ज्वालामुखी को फोड़ने की हिम्मत ढूंढ रहा था ।

गीता अपने प्यार के धुन में अपना एक प्रिय गाना गुनगुना रही थी । दिनेश ने आज पहली बार उसे रोका और उसकी बाहों को थामकर अपनी दर्दभरी आवाज में कहना शुरू किया," गीता मैं तुम से एक बहुत बड़ी मदद मांगने जा रहा हूं । तुमको कुछ दिन तक मुझसे दूर रहना पड़ेगा ।" इतना कहकर दिनेश कुछ रुक गया क्योंकी उसके गले से आवाज ही नहीं निकल रही थी ।

यह सुनकर गीता को लगा जैसे तड़ाक से कड़कड़ाती बिजली उसके सिर पर आ गिरी हो । वह कुछ देर तक दिनेश की ओर देखती रह गई । उसकी खुशी गम में बदल गई । उसकी आंखे छलछला उठी । उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था की उसका दिनेश उसको मिले बिना एक दिन भी रह सकता है पर आज वह उसको अपने से दूर करना चाहता है । आखिर ऐसा क्यों ?

गीता की आखों में यह सवाल पढ़कर दिनेश ने अपने माता-पिता की बातों को समझाने की कोशिश की पर अब तक गीता को एक बहुत बड़ी चोट लग चुकी थी । वह दिनेश की गाड़ी से तुरंत उतरी और एक टेक्सी लेकर अपने घर के लिये चल पड़ी । दिनेश अवाक

देखता रह गया और चाहकर भी अपनी कोई सफाई न दे सका। वह वहीं समुद्र की ऊंची-ऊंची लहरों से टकरा-टकरा कर चोट खाता हुआ बैठा रहा। गीता एक बड़ी गलतफहमी में पड़ गई थी क्योंकि उसने दिनेश की पूरी बातें नहीं सुनना चाही थीं।

दिनेश तुरंत तार द्वारा ज्वालाप्रसाद से अपने मां-बाप की नापसंदगी की बात बताकर गीता के रूठकर चले जाने वाली खबर सुनाई। वह इस दलदल से निकलने के लिए अपने उपाय को बताने ही वाला था की गीता के पिता ने भी फोन काट दिया। उनमें और कुछ सुनने की हिम्मत नहीं रही। दिनेश हताश होकर घर लौट गया।

गीता के पिता चुपचाप सब सुनकर वही जमीन पर बैठ गये। ज्वाला प्रसाद की गुस्से की आग भड़क रही थी और उन्होने फिलहाल गीता को दिनेश से मिलने-जुलने पर पाबन्दी लगा दी। उनसे भी वही गलती हो गई जो उनकी बेटी से हुई। वे भी दिनेश की पूरी बातों को सुने बगैर कदम उठा रहे थे।

उस दिन गीता कितना दुखित थी इसका अन्दाजा शायद हम साधारण लोग कभी नहीं लगा पायेंगे। उसकी आंखों में एक अजीब सा भीगापन था। वह चाहकर भी नहीं रोना चाहती थी। अपनी भावनाओं को छुपाना गीता ने शायद अपने मां से ही सीखा था। लेकिन उसे उसके प्यार पर भरोसा होते हुये भी गहरी चोट पहुंच रही थी।

गीता के मां से उसका यह दुख देखा नहीं जाता था । उनको यह बात समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब कैसे हो गया । अभी पिछले हफ्ते तक तो गीता मानों एक चहचहाती बुलबुल थी । एक कोयल जैसी थी जो गाती थी, हंसती थी और अपने खुशी जीवन के मजे लूट रही थी पर आज उसे देखकर दिल कांप उठता है । वह एक हंसमुख,चंचल और मनमौजी मैना थी पर आज उसकी दशा कुछ और हो गया था । कोई नहीं जानता था की वे सब एक गलतफहमी के शिकार हो गये हैं ।

आज वही गीता के चेहरे की खिलती हुई मुस्कान कोसों दूर चली गई थी । उसकी आत्मा रो रही थी । उसके दिल में एक बड़ा अंगार धधक रहा था । वह जल रही थी । यह सब गीता के माता-पिता के सहन शक्ति के परे था लेकिन न जाने क्यों वे भी सब सहे जा रहे थे । शायद उनको भी अपने बच्चों के प्यार पर भरोसा था ।

यह सब सुभागवती के समझ के बाहर की बात थी फिर भी उसने अपने लाड़ली बेटी को समझाने की कई कोशिशों के बाद यह संकल्प कर बैठी की वह अपने पति को समझायेगी की गीता और दिनेश के प्यार को सफल बनाने में उसका साथ दें ।

हाय रे पीड़ा ! असहाय दुख ! अपरिमित वेदना ! दो प्यार करने वालों को अलग करने वालों की चाल तो देखो । समाज में मानों उनका ही बोलबाला है । गीता की मां दूर खड़ी सब देख रही थी । सोच रही थी । अपने विचारों में डूबी थी ।

एक सन्नाटा सा छाया हुआ था। मन में कई सवाल उठ रहे थे पर जवाब ढूंढना कठिन लग रहा था। पर उनकी कोशिश जारी थी। अगर कोशिश न करे इन्सान तब सफलता नहीं मिलती पर अगर कठिन कोशिश जारी रखे तब कड़ी से कड़ी तकलीफ से छुटकारा मिल सकता है।

ऐसे ही समय में इन्सान के आत्म सम्मान और आत्मबल की परीक्षा होती है और वह या तो हार मानकर चुपचाप बैठ जाता है या तो अपनी किस्मत से लड़ने को तैयार हो जाता है। सुभागवती हार मानने वाली नहीं थी। उसको आज मालूम हो रहा था कि पैसा आदमी-आदमी में कितना अन्तर ला देता है। धन दौलत का झूठा अभिमान कुछ लोगों को शैतान बनाकर गरीबों पर जुल्म ढाने की मनमाना छूट दे रखा है। इस विधान को हम आसानी से मिटा तो नही सकते पर कोई समझदारी पर तो पहुंच सकते हैं जिसमें हम सबका भला हो।

गीता बेजान सी हो गई थी मानो थकान से ऊंचे पहाड़ चढ़ रही थी। उसके जीवन में यह कैसा परिवर्तन हो रहा था। खुशी और आनन्द के सीमा से गिरना बड़ा दर्दनाक हो रहा था लेकिन वह सहे जा रही थी केवल इसलिये की उसका दिनेश ने अभी कोई और फैसला नहीं दिया है। वह उसका इन्तजार करेगी तब कोई कदम उठायेगी। ऐसे में इन्तजार की घड़ियां बड़ी लम्बी लगने लगती हैं।

गीता अपने कपड़ों को समेट कर रख चुकी थी। वह आलमारी का सहारा लेकर खड़ी होने लगी तभी उसे ऐसा लगा की वह बेहोश

होकर गिरने जा रही है, वह लड़खड़ाती है , उसके हाथ-पांव में ताकत कम हो रही थी । वह पास में रखी कुर्सी का सहारा लेकर रुक गई तब उसे महसूस होने लगा की उस पर कोई बिजली गिर पड़ी है । उसके अन्दर एक बड़ा तूफान चल रहा था और वह कुछ पागलों की तरह व्यवहार करने लगी थी । ऐसी अवस्था में कुछ ऐसा ही होता है ।

अपनी मां को अपने पास देखकर उसे ऐसा लगा जैसे रेगिस्तान में प्यासे को पानी मिल गया हो । गीता अपनी मां से लिपटकर फूट-फूट कर रोने लगी । सुभागवती ने उसे थोड़े देर तक रोने दिया जिससे शायद उसका दुख कुछ कम हो जायेगा ।

मां के सहानुभूति के दो-चार शब्द गीता के लिये बर्फ का काम कर रहे थे फिर भी वह मां के गोद में सिमट जाना चाहती थी । गीता अपनी माता की बाहों का सहारा ढूंढ रही थी । वह उनका विश्वास चाहती थी । ऐसे नाजुक समय में बच्चे अपनी मां के सहारे के लिये भूखे हो जाते हैं । ठीक यही हाल अब गीता का भी था ।

जो सांत्वना बच्चों को अपने माता-पिता के गले लगने और आलिंगन से मिलता है वह कहीं और से मिल ही नहीं सकता । इसी व्यवहार को हम अच्छे संस्कार कहते हैं । मां-बाप ही अपने बच्चों का सही दुख-सुख का ध्यान रख सकते हैं । हम बच्चे तो सदा उनके ऋणी रहेंगे । इसका सही आभास हमें तब होता है जब हम खुद मां-बाप बन जाते हैं ।

"गीता बेटी, तू थक गई है। चल जाकर आराम कर ले ! मैं घर का सब बाकी काम कर लूंगी। " इतना कहकर गीता की मां ने उसके कांपते हुये हाथों को सहारा दिया और उसे उसके कमरे तक पहुंचाया। अपने खाट पर बैठते ही गीता फिर से चीख उठी और अपने चेहरे को मां के गोद में रखकर सिसक-सिसक कर आहें भरने लगी। उसके रोने का अन्त ही नहीं हो रहा था। वह केवल यही कह रही थी, "अम्मा ! कुछ करो ! "

बच्ची को रोते छोड़ माता कैसे जा सकती थी इसीलिये वह उसको खाट पर लिटाकर उसके बिस्तर ठीक-ठाक करके उसे एक नीन्द की गोली खिलाकर सुभागवती चलने को तैयार हुई। गीता ने एक लम्बी आह भरी, भीगी पलकों को झुकाया और अपने तकिये का सहारा लेकर शान्त हो गई। बेचारी और क्या कर सकती थी। हां ! वो एक नयी सुबह का इन्तजार कर रही थी।

मां अपने दिल पर पत्थर रखकर आहिस्ते-आहिस्ते गीता के कमरे से बाहर चली गई। उनके मन में यह आस थी की उनकी बेटी अब गहरी नींद में खो जायेगी और एक नया सवेरे का इन्तजार करेगी। अब मां का दिल भी रो रहा था और अपने बेटी की जिंदगी सम्भालने के उस इरादे को उसने बहुत मजबूत बना लिया था।

कमरे से बाहर आते ही उसने अपने पति के चेहरे की रुदन और सोचनिये दशा देखकर हताश रह गई। अब सुभागवती को मालूम हुआ की उसके पतिदेव भी अपने बेटी के लिये उतने ही दुखी हैं। वह सोच रही थी की शायद ज्वालाप्रसाद अपने नाराजगी में कुछ

अंट-शंट कर बैठेंगे । पर यह उसकी भूल थी । ज्वाला प्रसाद भी उतना ही उत्सुक था अपनी बच्ची का जीवन सुधारने के लिये जितना कि सुभागवती थी । ज्वाला प्रसाद की आवाज़ कांप रही थी क्योंकि वे भी बहुत दुखी थे लेकिन उन्होंने भी हार मानने से इंकार कर दिया । वे कोई हल निकालने की सोच में लीन हो गये ।

इतना होते हुये भी उन्होंने अपनी पत्नी को आश्वासन दिलाया की वह अब जरूर ऐसा कुछ करेंगे जिससे उनकी प्यारी बेटी खुश रहे । वे अपनी पत्नी को गीता का देखभाल करने के लिये बहुत धन्यवाद देते हुये खुद शान्तिपूर्वक सुभागवती के पास बैठ गये और दोनों दम्पत्ति एक दूसरे से सलाह करते-करते इस नतीजे पर पहुँचे की कल इसके बारे में दिनेश से विचार-विमर्श करना जरूरी है ।

रात कैसे बीती उनको होश ही नहीं रहा पर एक नयी सुबह देखकर वे बहुत खुश हुये क्योंकि उनको आज दिनेश से मिलना है । इन्तजार करते-करते शाम हो गई और निर्धारित समय पर दिनेश की शानदार गाड़ी आकर उनके आँगन में खड़ी हो गई । श्रेष्ट आचार-विचार के मुताबिक सबने दिनेश का स्वागत किया और उसको बड़े आदर के साथ घर के अन्दर ले गये ।

बुलाने का कारण समझाते हुये ज्वालाप्रसाद ने बड़ी सावधानी के साथ दिनेश से बातें करना आरम्भ की "दिनेश बाबू , आज हमने आपको एक खास काम के लिये बुलाया है । हम आप पर कोई दबाव नहीं ड़ालना चाहते हैं पर गीता के माता-पिता होने के नाते हमें आपसे कुछ सवाल करने हैं और आपको सही जवाब देना है

जिससे हम अपनी बेटी के भविष्य के बारे में फैसला कर सकें। ” ज्वाला प्रसाद ने गोष्टी शुरू की।

“आपके सभी सवालों के जवाब तो शायद आज हमारे पास नहीं हैं। लेकिन मैं उस समझौते के तलाश में हूं जिससे मैं और गीता हमारे दोनों परिवारों के बीच की गलतफहमियों को दूर करके अपने जीवन को सफल बनाने में कामयाब हो सकें। मैं एक बड़े नाजुक समय से गुज़र रहा हूं और अगर आप लोग हमारी मदद करे तो मैं आप लोगों का बहुत आभारी होउंगा। मेरे पिताजी ने मेरे ऊपर गीता से मिलने के लिये पाबन्दी लगा रखी है क्योंकि वे यह नहीं चाहते है कि मैं एक गरीब परिवार से अपना नाता जोड़ूं। ” दिनेश ने अपने मन की बात कह दी।

“यह तो बड़े दुख की बात है पर हमें इससे निपटना बहुत जरुरी है नहीं तो आप दोनों के जीवन की नैया तो डूब जायेगी। हम सबका मकसद एक ही है। हम भी तो यही चाहते हैं कि आपके माता-पिता इस अमीरी और गरीबी के दीवार को तोड़कर आप दोनों को अपना लें। पर यह सब होगा कैसे ? ” गीता के पिता ने कहा। “मैं समझता हूं की तुम दोनों की हालत शायद उस नदी के बाढ़ में फंसे लोगों की तरह हो गई है जो किनारा छू नहीं पा रहे हैं पर यह मेरा विश्वास है की तुम जल्द ही कोई किनारा पा जाओगे। ”

“ यही बात तो मैं आप को कल फोन पर बताना और समझाना चाहता था पर आपने फोन काट दिया। ” दिनेश के चेहरे पर कुछ

खुशी नजर आई। गीता को भी मानों तिनके का सहारा मिल गया और वह भी दूसरे कमरे से जल्द निकल कर आई।

उसने अपने कल वाली जल्दबाजी और नसमझी के लिये दिनेश से हाथ जोड़कर माफी मांग कर उसके पास बैठ गई। एक दूसरे को पास पा कर उनके मन में कोई गलतफहमी की गुन्जाइश ही न रही। उनकी गोष्टी चालू रही और उन सबका फैसला एक ही था।

अब आगे का सब विचार विमर्श दिनेश के ऊपर छोड़ दिया गया जिससे वह समय देखकर अपने पिता से सलाह-मशविरा करेगा और कोई उपाय ढूंढकर अपने कौशल से सबको खुश करने की कोशिश करेगा।

उस रात का भोजन गीता ने बड़े शौक से पकाया और पूरे परिवार ने ईश्वर को धन्यवाद देते हुये बड़े प्रेम से खाना खाया। दिल में दिल आया और सब दिनेश के सामने की जटिल समस्या को सही रूप से सुलझा लेने के लिये प्रार्थना करके चैन की नीद सो गये।

अपने लिये जीना छोटी बात नहीं है पर जब हम दूसरे के उद्देश्य के लिये जीने लगें तब हम अपने आपसे बड़े हो उठते हैं। तब हमें लगता है जैसे हम आम इन्सान के धरातल से कुछ और ऊपर उठकर जी रहे हैं। दिनेश को अब गीता के लिये जीने की राह मिल गई थी।

अब समाज के ठेकेदार और उसके अपने परिवार को वह विश्वास दिलाकर रहेगा की उसका पावन प्रेम उसके रोम-रोम में प्रतिपल प्रतिक्षण छलकता रहता है। न तो समाज, न ही विरोध करने वाले परिवारजन और न ही दौलत उसे अपना प्यार पाने से रोक सकता था।

दिनेश के पास कुछ ही समय बचा था। अगर उसके ठोस कदम उठाने से पहले उसके माता-पिता के विलायत वाले सम्बन्धी पहुंच गये तो अनर्थ हो जायेगा। वह ऐसा नहीं होने देना चाहता था।

इसी बीच सेठ मूलचंद के ऊपर भी एक पहाड़ सी मुसीबत आ खड़ी हुई। नयना, उसकी बेटी, एक मजदूर के बेटे के साथ बिना उनको बताये चली गई क्योंकि वह जानती थी की उसके माता-पिता कभी उसकी शादी उसके प्रेमी मदन से करने के लिये राजी नहीं होंगे। वह अपनी जिन्दगी दिनेश के तरह नहीं बिताना चाहती थी। उसका होने वाला पति मदन एक मजदूर का बेटा जरूर था पर वह एक होनहार और सुन्दर नौजवान के अलावे एक ऊंचे दर्जे का अध्यापक था।

सेठ मूलचंद की नाक कट चुकी थी। जो समाज का प्रमुख ठेकेदार था उसे आज अपनी किस्मत पर केवल रोना ही आता था। उनकी पत्नी का रुदन तो बंद ही नहीं हो रहा था। वह अपनी बेटी के चले जाने की सोच में इतना बीमार पड़ीं की उन्हें अस्पताल में इलाज कराने के लिये दाखिल किया गया। सेठजी की तबीयत भी बहुत

खराब होने लगी। वे अपनी तकदीर को कोसते और अपनी झूठी दौलत के नशे का बुरा असर अपने परिवार पर देख रहे थे।

फिलहाल अपने विलायत वाले दोस्त से उन्हे दिनेश के शादी की बात रोकनी पड़ी और उनसे कहीं और नाता जोड़ने की सलाह दे दी गई। यह सुनकर दिनेश के मन को कुछ शान्ति मिली और वह तुरन्त इस की खबर गीता के पास पहुंचाकर चैन के सांस लेने लगा।

आदमी अपनी आदतों का गुलाम बन जाता है और फिर वह चाहकर भी उस गुलामी से मुक्ति नहीं पा पाता है। लेकिन हम यह भी जानते हैं की अच्छाइयां और बुराइयां हर आदमी, हर समाज में होती हैं। अमीरों में भी जहां इतनी बुराइयां हैं, वहीं समय और हालात के कारण कुछ अच्छाइयां भी आ जाती हैं। अगर ऐसा न होता तो दुनिया में अमीरी जाने कब की मिट गई होती।

आज सेठजी को यह महसूस हो रहा था की वे अपने धन-दौलत के अभिमान में कितने पागल और अंधे हो गये थे। उनको अपने खुद की खुशी के आगे उनके बच्चों की भविष्य नज़र ही नहीं आता था। आज सेठजी को ऐसा लग रहा था जैसे की शराफत और अमीरी नदी के उन दो किनारों की तरह हैं जो कभी मिल नहीं सकते। लेकिन आज के हालात को देखकर उनको इस विचार को बदल देने की धुन सवार हो गई। वे उन दो किनारों को मिला तो नहीं सकते थे पर कुछ नजदीक तो कर सकते थे।

सेठ मूलचंद की हालत, उस पेड़ के टूटे हुये सूखे पत्ते की तरह, मुरझा और बिखर गया था जो फिर से जुट नहीं सकता था । सेठजी को ऐसा आत्म ज्ञान हुआ की वे अब केवल अपने बच्चों के भविष्य की चिन्ता करने लगे । समय के साथ उनकी यह सोच भी परिवर्तित होती गई । इस परिर्वतन का कारण चाहे कुछ भी हो पर उनके दोस्त जयमंगल का इसमें बड़ा योगदान था ।

जयमंगल अक्सर सेठजी के घर शतरंज खेलने आया करता था । कुछ दिनों से सेठजी कुछ मुरझाये से लग रहे थे । अपने दोस्त जयमंगल को अपने दिल की सब बातें बता कर सेठजी अपने दिल की बोझ कुछ कम करना चाहते थे । अन्त में सेठ का कहना हुआ की वे चाहते थे की अपने दोनों बच्चों की शादी ऐसी धूमधाम से करें जिसे देखकर दुनियां दंग रह जाये । पर अब सब काम बिगड़ चुका है ।

अच्छे दोस्त का मिलना इस कलयुग में दुर्लभ है लेकिन जब दो व्यक्तियों में जटिल दोस्ती हो जाती है तब वे एक दूसरे के लिये कुछ भी करने को तैयार रहते हैं । जयमंगल ने भी सेठजी के साथ वैसा ही किया ।

“ मेरे यार, आदमी का सब सोचा हुआ शायद पूरा नहीं होता पर इस का मतलब यह तो नहीं की वह कभी भी पूरा न हो । अभी भी हम तुम्हारे उस अरमान को असली रूप दे सकते हैं । केवल हमें हमारे बच्चों के प्रति अपने पुराने ख्याल बदलने पड़ेंगे ।”जयमंगल

कहे जा रहा था और सेठजी एक शान्त श्रोतागण की तरह चुपचाप सुन रहे थे।

“ आज के हमारे नये पीढ़ी के बच्चे एक नई दुनियां में रहते हैं और वे नये ढ़ंग से सोच-विचार करते हैं। अगर हम पारिवारिक अमन-चैन को कायम रखना चाहते हैं तब हमें अपने बच्चों की सोच-समझ और रहन-सहन का ख्याल रखना बहुत जरूरी है। अब हमें ही ले लीजिये, हमनें अपने चार बच्चों से जो भी इल्म और संसारिक चीजों को सीखा है । उन ज्ञानों को हम संसार की कोई भी यूनिवर्सिटी या कालेज में हरगिज़ नहीं सीख सकते थे । इसीलिये मेरे दोस्त, हमारा कहना है की अभी भी कुछ देर नहीं हुयी है । सुबह का भूला हुआ प्राणी अगर शाम तब अपनी भूल को मानकर उसे सुधार ले तो मान लो उसे एक बहुत बड़ी राहत और शान्ति मिल गई है। ” इतना कहकर जयमंगल ने सेठजी के तरफ अपनी नज़र दौड़ाई तो देखा की सेठजी की आंखों में आंसू थे।

उस दिन शतरंज के खेल नही खेले गये थे पर सेठजी की जीत होने वाली थी क्योंकि उनमें एक बहुत भारी परिर्वतन आने वाला था ई आज बहुत दिनों बाद बारिश हो रही थी और जयमंगल के चले जाने के बाद सेठजी अपनी पत्नी के साथ बैठे खुली खिड़कियों से आती हुई मन्द-मन्द हवाओं का लुत्फ ले रहे थे। ये हवायें मानो उनसे बहुत कुछ कह रही थीं पर वे अपनी गहरी विचारधारा मे इतना डूबे हुये थे कि उन्हे यह भी पता न चला की उनमें लाखों परिर्वतन हो रहे हैं।

उधर नयना और मदन का फैसला अटल था और वे नजदीक के एक मंदिर में जाकर अपने भविष्य के लिये प्रार्थना करने के बाद वहीं एक पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगे। क्या उनकी करतूत को उनके परिवारवाले स्वीकार करेंगे ? अगर नहीं ! तब उन्हें अब क्या करना चाहिये ? दोनों ने अपने इस कर्तव्य या हरकत को न्यायसंगत बनाना जरूरी समझा।

मदन के पिता, बुधराम एक अवकाश लिये हुये या सेवानिवृत मज़दूर जरूर थे पर समाज में उनका अच्छा बोलबाला था। उनके पास अपने धर्म और संस्कृति का ठोस ज्ञान था। बुधराम और उनकी स्त्री मंगली पूजा पाठ में लगे रहते थे।

मदन और नयना को ऐसे परिवार से अगर नाता जोड़ना है तब उनको इस परिवार का आर्शीवाद मिलना अत्यन्त जरूरी है। यह सब सोच विचार कर वे हिम्मत बांध कर अपने घर की तरफ चल पड़े। मदन जब अपनी मोटर को अपने पिता के आंगन में रोककर नयना को लेकर उतरा तब वह हर रोज़ की तरह सीधे घर में न जाकर दरवाजे को आहिस्ते से खटखटाया।

उसकी मां ने दरवाजा खोला और मदन को देख कर कह उठी , “ अरे बेटा, तेरी चाभी कहां है जो तुझे आज दरवाजा खटखटाने की नौबत आ पड़ी। ” मदन कुछ सकुचाया पर कहना पड़ा, “ मां ! मैं नयना को अपने साथ लाया हूं । और अब वह यहीं रहेगी। ”

मां घबड़ा गई और तुरंत अपने पति को पुकारा,“अरे जी , सुनते हो ! मदन बेटा नयना को लाया है यहां रहने के लिये ।” बुधराम पूजा समाप्त करके जल्दी से आया और नयना का बड़े प्यार से स्वागत किया । सभी रोज की तरह मदन को अपने छाती से लगाया । यह सब देखकर मंगली भी नयना को बड़े प्रेम से आलिंगन करके बैठने को कहा ।

तब मदन को होश आया की उसके माता-पिता गैर मां-बाप से कितना फर्क हैं और वह पूरी घटना का सही वर्णन अपने पूज्य पिताजी को देकर उनकी प्रतिक्रिया या उत्तर की राह देखने लगा । बुधराम ने एक लम्बी सांस ली और कुछ देर तक खामोश सोचते रहे ।

“ बेटी नयना मैं अपने घर में आपका तहे दिल से स्वागत करता हूं । आप आज हमारे घर में एक अतिथि के रुप में आई हो । आप जब तक चाहें यहां रह सकती हो क्योंकि हमारे लिये अतिथि भगवान का स्वरूप होते हैं । अतिथि देवो भवः, यह हमारे ग्रन्थों में लिखा है । अब मैं जो अपने बेटे से कहने जा रहा हूं आप हमारी इन बातों का गलत मतलब मत लगाना । मैं जो कुछ कहने जा रहा हूं वह सब मदन के लिये है । ”

यह कहकर बुधराम मदन की ओर इशारा करते हुये थोड़ी देर उसके कन्धे पर अपना हाथ रखकर चुपचाप सोचते रहे । जब हम अपने बच्चों से अधिक प्रेम करते हैं और जब वे होनहार हो जाते हैं तब हमें उनसे कोई भी बात करने से पहले यह सोचना पड़ता है की

कहीं हम उनको दुख तो न पहुंचायेगे अपने कोई कथन से । यही कारण था बुधराम के सावधानी बरतने का । पर उसे अपने परिवार के सुख और शान्ति के लिये यह सब करना और कहना जरूरी था ।

“ बेटा मदन, मैं आपके प्यार मोहब्बत के दावे को भलिभांति समझता हूं और यह भी मुझे मालूम है की सेठ मूलचंदजी आप और नयना की शादी से राजी नहीं होते पर जो आप दोनों ने किया वह हमारी नज़रों में एक गलत बात है । मैं इस बात को कभी भी मानने को तैयार नहीं हूं की इन्सान एक दूसरे इन्सान को समझाने में असमर्थ है । हमको कोई भी गलत कदम उठाने से पहले एक बार शान्ति से फर्श पर बैठकर विचार-विमर्श या सलाह-मशविरा कर लेना जरुरी है । यही इन्सानियत का तकाज़ा है । ”

इतना कहकर बुधराम ने अपनी पत्नी और पुत्री रंजना की ओर देखा और फिर थोड़ी देर सोचने के बाद कहना शुरु किया,“ बेटा अगर कोई ऐसा ही बर्ताव तुम्हारी बहन रंजना के साथ करता तब आपको जरुर बुरा लगता । इसलिये मैं चाहता हूं की आप नयना को हमारे साथ सेठजी के घर ले चलो जिससे मैं उनसे अपने बच्चों के भविष्य के प्रति कुछ विनती कर सकूं । मैं आप दोनों को अपने में विचार करने के लिये कुछ समय देता हूं । इस बीच मैं, तुम्हारी मां और रंजना सब चलने के लिये तैयारी करते हैं । ”

यह कहकर वे सब कमरा खाली करके सेठजी के घर जाने की तैयारी करने चले गये । बुधराम बाहर बैठ कर सेठजी से मिलने

की तरकीब सोचने लगा और अपने भगवान से प्रार्थना करने लगा जिससे उसका कार्य सफल हो ।

मदन और नयना को उनके पिता की बातें समझ में आने लगी और वे अपने प्यार को एक सुनहरा मौका देने को तैयार हो गये । नयना ने सोचा की अगर मदन के पिता के तरह सब लोग सोचने और करने लगें तब सभी प्यार करने वाले यही नारा लगाने लगेंगे " प्रीत किये सुख होय " ।

थोड़ी देर में बुधराम के घर से पांच लोगों को लेकर उन की मोटर सीधे सेठ मूलचंद के बंगले की ओर चल पड़ी । वहां पहुँचने पर नौकर ने फाटक खोला और मोटर सेठजी के आंगन में रुक गई । सेठजी खुद मोटर के पास आये और बुधराम परिवार को वहां देखकर पहले तो उनका खून खौल गया लेकिन जब उन्होने अपनी बेटी नयना को उस मोटर में से उतरते देखा तो वे चकरा गये । ऐसा कैसे हो सकता है ? उनके अन्दर से एक बहुत ही गम्भीर सवाल उठा ।

इसका सही जवाब बुधराम ने दिया । " सेठजी हमारे लिये आपकी और मेरी बेटियों में कोई फर्क नहीं है । जब आपकी बेटी मेरे घर पहुंची और मैं ने यह सुना की यह सब बिना आपकी मर्जी से हुआ है तब मैंने तुरंत इनको समझाया और लेकर आपके घर आना अपना परम कर्तव्य समझा । मैं चाहता हूं की आप सबके साथ हम बैठकर विचार करें ताकि एक ऐसे नतीजे पर पहुंचे जिससे हम सबका कल्याण हो । "

सेठजी सुन रहे थे और बुधराम की बातें अभी पूरे तौर से खत्म नहीं हुई थी,“ आपकी नाराज़गी जायज़ है लेकिन बच्चों की भावनाओं को हम इतनी आसानी से नहीं हटा और मिटा सकते हैं। हमें अपने बच्चों के भावनाओं से खेलने और अपना हर एक कदम उठाने से पहले शायद हज़ार बार सोचना पड़े तब भी हमारे लिये यह कम है। जहां हमारे बच्चों की खुशी का सवाल है वहां हमें बड़ी सावधानी से काम करना जरुरी है। आगे आप की मर्जी।”

एक साधारण मजदूर आज हालात आने पर बड़ी-बड़ी बातें करने लगा था लेकिन अपने दोस्त जयमंगल के सलाह के बाद आज सेठजी को बुधराम के कही बातों से सहमत होने में कोई तकलीफ नहीं हो रही थी। बड़े ध्यान से सुनने के बाद सेठजी की आंखें खुली। तब सेठजी का कलेजा ठण्डा हुआ और उन्हें उनके दोस्त जयमंगल की बातों पर पूरा विश्वास हो गया। सब इन्सान एक बराबर होते है। न कोई ऊंचा है, न कोई नीचा है और न कोई गरीब है, न धनी।

आज खुद सेठजी एक अजीब गरीबी को महसूस कर रहे थे। अपने आपको सम्हालते हुये सेठजी ने तुरंत अपने पत्नी को बुलाया और बड़े प्रेम से सभी का आदर सत्कार करके सब लोगों को अपने आलीशान मकान के अन्दर चलने को कहा।

अभी पूरे तौर पर दोनों परिवारों की भड़क नहीं गई थी पर वे एक दूसरे को समझने की कोशिश में लगे थे। सेठजी का बेटा दिनेश

सब का मन बहला रहा था और अपनी बहन नयना को उसकी बहादुरी के लिये मन ही मन मे बढ़ाई कर रहा था। काश! वो भी अपनी गीता के लिये कुछ ऐसा ही कार्य कर सकता !

मैं ने सुन रखा था और पढ़ा भी था कि सभी आदमी बराबर और आजाद पैदा होते हैं लेकिन इस धरती पर आकर उनमें इतना फर्क क्यों हो जाता है ? एक ही स्थान पर इतना अन्तर क्यों ? धनी और निर्धन में इतना फासला किस लिये ? क्यों हमें एक के झूठे अभिमान से नीचे उतारने के लिये उससे इतनी मिन्नते करनी पड़ती हैं ? इन प्रश्नों का सही जवाब हम खोजते रहते हैं।

विचार-विमर्श चलता रहा और इसके साथ-साथ लोगों के राय और ख़्याल में भी परिवर्तन आ रहा था। मौका देखकर बुधराम ने अपने मन की बात कह ही दी।

"हमारे धर्म ग्रन्थों में लिखा है की सीता जैसी सती के प्यार से उसे उसका राम जरुर मिल गया था। एक अच्छे घर की संस्कारी लड़की जिन्दगी में केवल एक बार और केवल एक लड़के से प्यार करती है। हमारे समझदार बच्चे जब एक दूसरे को इतना चाहते हैं तब इसमें हम माता-पिता का भी कुछ कर्तव्य बनता है की हम उनको जीवन भर के लिये एक कर दें। " हिम्मत करके बुधराम कहता गया और सेठजी सुनते गये।

इसके बाद बुधराम ने सेठजी से विनती कि की नयना और मदन की नादानी के लिये उनको माफ कर दिया जाये और मदन से

नयना की शादी जल्द कर दी जाये। यही बात अगर कोई सेठजी से कुछ दिन पहले कहता तो सेठ जी उसे कटी जली जरुर सुनाते पर आज वही सेठ मूलचंद अपने बच्चों की खुशी के लिये कुछ भी करने को तैयार थे। यह शादी का प्रस्ताव तो उन्हें भगवान के प्रसाद की तरह लगा।

सेठजी और उनकी पत्नी चुपचाप बुधराम की बातों को गौर से सुन रहे थे और अपने बच्चों के भविष्य के बारे में सोच रहे थे। एक बड़ा हवा का झोंका खुली खिड़की से अन्दर आया और मानों सेठ-सेठानी पर एक गम्भीर परिवर्तन करके चला गया। उनका दौलत और अभिमान का नशा उतर चुका था।

सेठजी सबसे क्षमायाचना मांगकर सेठानी के साथ दूसरे कमरे में चले गये। उधर बुधराम के साथ दिनेश का अपना वार्तालाप जारी रहा। बुधराम की दूरदर्शिता को देख समझकर दिनेश ने अपनी और गीता की कहानी भी उनको सुनाई।

“ बेटा यह मेरा विश्वास है की अब तुम्हारे पिता समय आने पर तुम्हें भी अपना आर्शीवाद जरुर देंगे लेकिन तुम्हें उन्हें कुछ समय देना
होगा। मैं भी तुम्हारी कुछ मदद करुंगा लेकिन जो लोग अपनी मदद खुद करना सीख जाते हैं उनका जीवन सुखमय बन जाता है।” बुधराम दिनेश को अपना आश्वासन दिलाते हुये उठ खड़े हुये क्योंकि सेठजी वापस आ गये थे।

सेठजी ने सबके समक्ष कमरे में खड़े होकर एक खास घोषणा की ,“ मैं सेठ मूलचंद अपनी पत्नी के साथ आज अपने पूरे होशहवास में यह एलान करता हूं की मेरी कन्या नयना का शुभ विवाह श्री बुधरामजी के सुपुत्र मदन के साथ जल्द ही होगा । ” सब लोग मारे खुशी के झूम उठे और बिमला ने बड़े प्रेम से सबका मुह मीठा किया । उस रात कितनी प्रकार की बातें इन दोनों नये परिवारों के बीच हुई होंगी पाठकगण इसका अन्दाज़ा नहीं लगा सकते हैं । अन्त में सेठजी के घरवालों ने बुधराम परिवार को बड़ी इज़्ज़त के साथ विदा किया ।

नयना और मदन की खुशी का ठिकाना ही न रहा । नयना से विदा लेकर मदन मन में लाखों उमंग लिये मोटर में जा बैठा । सबके चेहरे पर एक अजीब सी खुशी नजर आ रही थी ।

मदन ने अपने पिता को धन्यवाद दिया और उनकी सवारी धूल उड़ाती पों-पों करती चल पड़ी । मदन की बहन रंजना ने उसको बधाई दी और अपनी भाभी को जल्द घर लाने को कहा । मदन मुस्कराया और घर पहुंचने पर सब भगवान से प्रार्थना करके अपने काम में लग गये ।

सेठजी का कारोबार बड़े जोरों से चल रहा था । दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति हो रही थी । इस सबका एक मात्र श्रेय सेठजी अपने बेटे दिनेश के कर कमलों पर दे रहे थे । इसके बाद दिनेश में बहुत मन लगाकर और लगन से काम करने का जोश आ गया था ।

आहिस्ते-आहिस्ते सेठजी अपने बेटे से सभी पारिवारिक और व्यापारिक विषयों पर खुलकर बातें करने लगे थे। दिनेश भी अपने पिता के साथ बहुत घुलमिल गया था और उन्हें अपने खास दोस्तों की तरह मानने लगा था। अब बाप-बेटे के प्यार में घनिष्टता और भी बढ़ रही थी। कभी-कभी मदन और नयना के साथ सब परिवार पिकनिक पर भी जाने लग गया था।

इसी बीच सेठजी के कहने पर दिनेश उनको लेकर ज्वाला प्रसाद के घर गया और उनकी बेटी की शादी दिनेश से करने का प्रस्ताव दिया। इस फैसले को गुप्त रखने की मांग सेठजी ने गीता के परिवार से करके अपने घर लौट आये। गीता के परिवार को मदन और नयना की सगाई के लिये आमन्त्रित भी किया जिससे दोनों परिवारों में और भी अच्छी समझबूझ बढ़ गई।

सेठजी के इस खुली सामाजिक तबदिली को देखकर लोग ताज्जुब करने लगे थे तभी सेठजी ने नयना और मदन की सगाई करने का ऐलान किया। अपने ईष्ट मित्रों और परिवारवालों को आमन्त्रित करके इस रिश्ते की स्वीकृति दी। उस दिन के जलसे का प्रमुख सेठजी का निजी दोस्त जयमंगल था। पार्टी में सभी लोग झूम रहे थे। मस्ती की कमी कहीं नहीं थी।

सेठजी ने बुधराम और मंगली के परिवार को बड़े आदर सत्कार और इज़्ज़त के साथ आसन दिलवाया था और मदन के साथ नयना मंच पर चमक रही थी। उनकी खुशी का आज कोई ठिकाना

ही न रहा । दिनेश आज अपनी बहन की सगाई से बहुत खुश था पर उसे अपनी गीता की याद आ जाती तब वह तड़प उठता था ।

इतने में उस जलसे के प्रबन्धक जयमंगल ने सबको सम्बोधित करते हुये कार्य की शुरुआत की," उपस्थित सज्जनों और देवियों,भाईयो और बहनों, मैं आप सबको सेठजी के परिवार की तरफ से हार्दिक स्वागत करता हूं और आशा करता हूं की आज की इस सगाई की पार्टी का आप सब भरपूर आनंद उठा रहे हैं । मजा लेते रहिये पर सेठजी से एक खास घोषणा सुन लीजिये । "

सेठ मूलचंदजी मंच पर खड़े हुये और कहना शुरु किया ," सबसे पहले मैं अपने कुछ खास मेहमानों को आप से परिचय दिलवाना चाहता हूं । प्रथम मेरे नये सम्बन्धी मदन के माता-पिता,श्री बुधराम जी और उनकी पत्नी, श्रीमती मंगली जी ,का हम अपने तहे दिल से स्वागत करते हैं । " यह सुनकर उस सभामण्डप में सब लोगों ने खड़े होकर तालियों की गूंज से बुधराम और उनके परिवार की स्वागत किया ।

जब सब लोग फिर से शान्तिपूर्वक बैठ गये तब सेठजी ने कहना आरम्भ किया, " इतना ही नहीं, आज हमारे घर आंगन में वह हो रहा है जिसको महसूस करके हमारा दिल गदगद हो रहा है । हमारे भाग्य जाग गये हैं । मैं और मेरे परिवार की इज़्ज़त में मानों आज चार चांद लग गये हैं । " सेठजी ने पीछे के बन्द दरवाज़े की तरफ इशारा करते हुये कहना आरम्भ किया," हम सब यही चाहते हैं की आप हमारे दूसरे सम्बन्धी श्री ज्वाला प्रसाद, उनकी पत्नी श्रीमती

सुभागवती और मेरी होने वाली बहू गीता का स्वागत जोरदार तालियों से करें।" उन नये अतिथियों को बड़े प्रेम से आसन दिया गया। गीता को आखिर उसका प्यार दिनेश मिल ही गया।

लोगों में कुछ खलबली मच गई। दिनेश मारे खुशी से नाच उठा। उसे इन सब बातों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। उसकी आखों में हज़ार खुशी के आंसू आ जमा हुये थे। उसे सब धुंधली सी दिख पड़ रही थी। इतने में सेठजी ने दिनेश को गीता को लेकर मंच पर जाने को कहा। अब दिनेश के समझ में आया कि क्यों मंच पर दो अलग आसन सजाये गये थे। गीता को लेकर वह अपने माता-पिता के चरण छूने के बाद मंच पर जा बैठा।

आज दोनों भाई और बहन, दिनेश और नयना, को यह वातावरण इतना सुहावना लग रहा था जिस का वर्णन सहज में नहीं किया जा सकता था। उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। आज वे अपने पिता को एक देवता के रूप में देख रहे थे। उस रात सेठजी सभी लोगों से ऐसे मिल रहे थे जैसे उनके लिये सब ऊंच-नीच के भेदभाव ख़त्म हो गये थे और अब सब लोग एक बराबर थे।

दिनेश और गीता के लिये अब और कुछ करने की जरूरत ही नहीं थी। नयना ने उनके रास्ते को साफ कर दिया था। मदन और नयना के मन में तो पहले से ही खुशी के लड्डू पक रहे थे। ऐसे ही मनोरम माहौल में दोनों बच्चों की सगाई हो गई। जब सब लोग उस हॉल से आनंदपूर्वक अपने-अपने धाम को चले गये तब सेठजी

ने अपने दोनों सम्बन्धियों को उनके परिवार सहित अपने घर चलने को कहा ।

ज्वाला प्रसाद और बुधराम का पुनः मिलन हुआ और उनके परिवार के अन्य सदस्यों को भी एक दूसरे से परिचित कराया गया । आज का यह शुभ मिलन सबके लिये सुमधुर ठहरा इसलिये यह आन्ददायक संगम कितने पुराने यादों को ताजा कर रहा था ।

सेठजी के घर पहुंचकर सब लोग बड़े आराम से उनके आलीशान बैठकी में प्रेम से विराजमान हुये । चाय कॉफी के बाद सेठजी ने दोनों परिवारों से माफी मांगने चले पर ज्वाला प्रसाद और बुधराम ने उनको रोका और उन्हें सब पुरानी बातों को भूलकर अपने बच्चों के भविष्य बना देने की सराहना करते हुये उनको बहुत धन्यवाद दिया ।

उस रात में कितनी और भी बातें हुई ा हंसी मज़ाक भी खूब हुई ा समय का चक्र चलता रहा ा गाना बजाना भी हुआ ा

इसी खुशियाली में एक महान निर्णय भी लिया गया ा सेठजी ने फैसला सुनाया कि अगले महीने उन के दोनों बच्चों की शादी इतने धूमधाम से होगी कि सारा समाज याद रखेगा और खुशी से झूम उठेगा ा

लेकिन सुभागवती और ज्वाला प्रसाद, बुधराम और मंगली के साथ मिलकर इस गाने को दुहराकर सोने में सुहागे वाली बात को साबित कर दी ।

"आज हमारे दिल में अजब ऐ उलझन है ,गाने बैठे गाना सामने समधन है हम कुछ आज सुनाये या उनका भी मन है,गाने बैठे गाना सामने समधन है . . "

इस गाने की मधुर धुन के बाद परिवार वाले मिलते रहे । खुशी में झूमते रहे और उनकी प्रीत बढ़ती गई । इसी खुशी को मन में लिये सब परिवार वाले शादी की तैयारी में जुट गये । वे सब इन रिश्तों को एक महान रूप देने के लिये उत्सुक थे ।

कुछ दिनों बाद बड़े धूमधाम से बच्चों की शादी हो गई और सभी लोग का विश्वास सही निकला कि यही सामाजिक सत्य है की 'प्र ीत किये सुख होय ।'

इस 'प्रीत' शब्द में बड़ी ताकत है । जो भी मनुष्य इसका मतलब अच्छी तरह से जान जाता है वह सुख से अपना जीवन बिताता है और दूसरों को भी सुख देता है । प्रीत, प्रेम, और प्यार,यह सब हमें सुख ही प्रदान करते हैं ।

इस के विपरीत जो भी भावनायें इनसान एक दूसरे को दिखाते हैं वे सब उन के समाज और उन के परिवार को दुख ही पहुंचाते हैं ।

१०

साजन की पड़ोसन

रमेश और रमीला बचपन से ही पड़ोसी थे।

रमेश के पिता जयराज अपने स्त्री सोनमती के साथ एक साधारण खेतीबारी में लगे थे। रमेश उनका जेष्ट पुत्र था और चांदनी उनकी बेटी थी। इस खेती की कमाई से सबका पालन पोषण हो जाता था। जयराज परिवार बड़े प्रेम से अपना जीवन निर्वाह कर रहा था।

रमीला अपने माता-पिता चिमनलाल और जयश्री की एकलौती बेटी थी। चिमनलाल का एक बहुत ही बड़ा व्यापार था। उनका कारोबार खूब जोर से चल रहा था। कई दुकानें थीं, न जाने कितने मकान किराये पर थे और कई माल ढोने वाली गाड़ियां भी थीं।

पड़ोसी होने के नाते चिमनलाल और जयराज की बड़ी दोस्ती हो गई थी और उनका रोज का उठना-बैठना लगा रहता था। दोनों परिवारों के बीच एक अजीब सा रिश्ता बन गया था।

एक तरफ अपार दौलत और अमीरी से भरपूर जीवन और दूसरी तरफ बड़ी साधारण और सादा रहन-सहन । पर जब उन दोनों परिवारों की मित्रता शुरू हुई थी तब कोई भी धनी और गरीब की दीवार कहीं देखने को नही मिलती थी । एक दूसरे की मदद के लिये दोनों परिवारवाले आतुर रहते थे और सदा तैयार मिलते थे ।

बच्चे बड़े हो रहे थे, साथ-साथ स्कूल जाते थे, खेलते थे, लड़ते थे, झगड़ते थे, हँसते थे, गाते थे, खाते थे, पीते थे और क्या-क्या नहीं करते थे । यही सब तो हमारी दोस्ती के असली चिन्ह हैं । धन, दौलत, वैभव, बड़प्पन और माल खजाने से दोस्ती को तौलने वाले मतलबी होते हैं । इन दोनों परिवारों के सदस्यों के पास समय ही नहीं था कि वे एक दूसरे की सहायता छोड़कर अन्य कोई रास्ता अपनाने की कोशिश करें । निस्वार्थ भाव से उनका मिलन होता रहा और उनकी चर्चा समाज में होती रही ।

रमेश पढ़ने में बड़ा होशियार था इसलिये जयराज ने उसका हाई स्कूल ख़त्म कर लेने के बाद विदेश में पढ़ने के लिये प्रबंध कर दिया था पर इसके लिये उन्हें अपने दूकानदार मगनलाल से कर्ज लेना पड़ा था । यही मगनलाल के दूकान से जयराज के परिवार की सभी घरेलू सौदा कर्ज पर ली जाती थी और फिर जब फसल कटने पर पैसा मिलता था तब उस कर्जे को आहिस्ते-आहिस्ते भर दिया जाता था ।

जयराज ने कभी मगनलाल से अपने कर्जे की हिसाब-किताब या सूची नही मांगी थी क्योंकि वह अपने महाजन को पूरा विश्वास करता था । जब सब सौदा खरीदा जाता थी तब मगनलाल अपनी

एक बड़ी पुस्तक में सौदे का नाम और दाम लिख लिया करता था। मगनलाल के सिवा इस पुस्तक को कोई और नहीं देखता था।

मगनलाल ठहरा एक चालाक व्यापारी और जब जयराज के घर का कोई भी सदस्य आलू खरीदता तब वे अपने हिसाब के सूची में प्याज भी लिख लेते थे हाँलाकि किसी ने उस वस्तु को खरीदा ही नहीं था। इसी तरह जयराज का कर्जा बढ़ता ही जाता था और लगातार भरते रहने पर भी कभी कम ही नहीं होता था। फिर सूद पर सूद चढ़ता जाता था।

यही हमारे जमाने के भोलेभाले किसानों को मनमानी से ठगने का सही रास्ता बन गया था। लोग कर्जे में डुबे जा रहे थे और व्यापारी अपना उल्लू सीधा किये जा रहे थे। उन दिनों उन्हें रोकने टोकने वाला कोई उपभोक्ता समिति या सरकार की संस्था नहीं थी।

अब तो मगनलाल ने जयराज को रमेश के पढ़ने के लिये कर्जा भी दे रखा था और इस कर्ज पर मनमाना सूद और ब्याज चढ़ता जा रहा था। सिवाय मगनलाल के कोई और इस हिसाब-किताब को नहीं देख सकता था। वह जो चाहे उस खाते में दर्ज कर लेता था।

रमेश की पढ़ाई सुचारू रूप से चल रही थी और इस बीच चिमनलाल ने अपनी बेटी रमीला को भी रमेश की यूनिवर्सिटी में पढ़ने के लिये भेज दिया था। कभी-कभार रमेश और रमीला की मुलाकात हो जाती थी और रमीला रमेश पर बड़ी मेहरबान होकर उस पर पैसों की बौछार कर देती थी। लेकिन उनके बीच सिवाय पड़ोसन की दोस्ती के और कुछ लगाव नहीं बन पाया था। रमीला

और रमेश के मिज़ाज और चरित्र में जमीन-आसमान का फर्क भी था।

चार साल में रमेश अपनी पढ़ाई सफलतापूर्वक पूरी करके जब घर लौटा तब उसके पिता जयराज अस्पताल में थे। उन्हे शुगर की बीमारी हो गई थी और उनका एक पैर भी डाक्टरों ने काट दिया था। वे अब एक अपाहिज की जिन्दगी बिता रहे थे पर उन्हें एक बहुत बड़ी रकम का कर्ज चुकाना था। यही सोच फिक्र उनको खाये जा रही थी।

जयराज अब खेती तो कर नहीं पा रहे थे और उनका कर्जा बढ़ता ही जा रहा था। उनके मित्र चिमनलाल कुछ मदद किया करते थे पर जयराज और सोनमती का अपना आत्म सम्मान भी तो था जिससे वे किसी के आगे अपना हाथ भी नहीं फैला सकते थे।

खुशी की बात तो यह थी की रमेश की एक अच्छी सरकारी नौकरी लग गई थी। उसने अपने माता-पिता की देखभाल, खेती का काम और अपनी बहन चांदनी का विवाह भी रचा दिया था। इन सब जिम्मेदारियों को रमेश बड़े अच्छे से निभा रहा था और उसके माता-पिता उसके व्यवहार और लगन से बहुत प्रभावित थे।

रमेश की बहन चांदनी केशव से शादी करके पड़ोस के गांव मे अपने परिवार के साथ अपनी जिन्दगी बहुत सुख से बिता रही थी। उधर उसके बचपन की दोस्त और पड़ोसन रमीला ने जब विदेश मे अपनी पढ़ाई में पांच सालों मे कुछ भी हासिल नहीं कर पाई तब उसके पिता चिमनलाल ने मजबूरन उसे वापस बुला लिया था। अब

उसके लिये एक अच्छे और होनहार लड़के की तलाश थी जिससे उसकी शादी कर दी जाये।

रमीला एक धनी बाप की बिगड़ी हुई बेटी थी। उसका स्वभाव बड़ा चिड़चिड़ा था और उसके विचार बड़े गजब थे इसलिये किसी से मेल नहीं खाते थे। वह अपनी ही अजीब दुनियां में स्वतंत्र रूप से रहना पसंद करती थी। दिन में दोस्तों के साथ बेफिजूल बिताना और रात को घर पर संगीत और नृित्य कला सीखना बस यही उसका शौक बन गया था।

एक दिन रमीला की मां ने उसको संगीत सिखाने वाले व्यक्ति के साथ समुद्र के किनारे मोटर में कुछ अनैतिक आचरण करते हुये पकड़ लिया था। उस दिन से उसका संगीत और नृत्य कला का शौक भी बन्द हो गया था। इस बड़े गुनाह को एक बड़ा राज ही रखा गया जिस से रमीला के आचरण पर कोई उंगली न उठाये। लोक प्रसिद्धि या सब समाज की जानकारी से उसे बचा लिया गया जिससे उसकी शादी करने में कोई बाधा न उत्पन्न हो।

लेकिन उसके मां-बाप के लिये अब तो रमीला के चुनरी में दाग लग ही गया था और अब वे उसकी शादी के लिये उतावले हो गये थे। इसी बीच उनको जयराज की बीमारी की बिगड़ती हालत की खबर मिली और चिमनलाल उनसे मिलने उसके घर गये। बातों-बातों मे पता चला कि उनका महाजन मगनलाल उन पर अपने सब कर्ज भर देने का दावा कर रहा है।

चिमनलाल को तुरंत एक उपाय सूझा और वह जयराज और सोनमती के सामने अपने बेटी रमीला का विवाह रमेश से कर देने

का प्रस्ताव रखा। 'जयराज, मेरे दोस्त तुमने हमको पहले क्यों नही बताया था कि तुम इतनी मुसीबत में फंसे हो। जब मेरे जैसा मित्र तुम्हारे पास है तब तुम्हे फिक्र करने की क्या जरूरत है । हम तुम्हारा सब कर्ज भर देंगे बस रमेश और रमीला की शादी हो जाने दीजिये ,' चिमनलाल ने बड़े नम्रता से कहा।

ऐसा बात सुनकर जयराज और सोनमती चौंक तो गये पर उनके पास अब कोई और उपाय नहीं था । उन्होने चिमनलाल को यह आश्वासन दिया कि वे रमेश से इस बारे में सलाह करके उनको खबर करेंगे । उन्हें यह भी नहीं ज्ञात था कि उनका दोस्त चिमन सच में दोस्ती निभा रहा है या इसमें उनका कोई स्वार्थ है।

उस शाम को जयराज और सोनमती चिमन के प्रस्ताव को लेकर अपने बेटे रमेश के सामने रखा। बात इतनी सरल नहीं थी जितनी आसानी से चिमन ने कह दी थी। फिर कर्ज भी इतना बड़ा था की उसको भरना इस गरीब परिवार के लिये लगभग असम्भव ही था। रमेश की नई नौकरी थी और चांदनी की शादी में भी काफी खर्च हो गया था। फिर दवा-दारू और रोजाना खान-पान का खर्चा भी तो रमेश की ही जिम्मेवारी थी।

कुछ देर एक अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ था फिर रमेश ने कहा, 'पिताजी, आप अच्छी तरह से जानते है कि मेरा और रमीला का कोई भी ऐसा आचरण और चरित्र नही है जो एक-दूसरे से मिलता-जुलता हो, फिर भी मैं वही करने को तैयार हूं जो आप लोग चाहते हैं। अब उचित और अनुचित का सवाल ही नही उठता है क्योंकि बिना चिमन काका के मदद से हम इतने बड़े कर्ज से छुटकारा नहीं पा सकते हैं।'

जयराज और सोनमती खामोश थे और लाचार थे इसलिये केवल इतना ही कहना ठीक समझा, 'बेटा तुम जैसा समझो वैसा ही करो । हम तुम्हारी हाँ से भी सहमत हैं और तुम्हारे इंकार से हमें कोई फर्क नही पड़ने वाला है क्योंकि मगनलाल हमारी सब जायदाद नीलाम ही करवा कर दम लेगा । फिर उसके बाद जो कुछ कर्जा बचेगा उसे भी तुम्हीं को भरना पड़ेगा ।'

'लेकिन पिताजी, अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो हमें कुछ दिनों की मोहलत चाहिये अपने इस फैसले के लिये,' रमेश बड़ी इज़्ज़त से अपने माता-पिता से कहकर अपने कमरे में चला गया ।

उस रात को रमेश कितने करवटे लेता हुआ अपने नींद बुलाता रहा पर वह भी कमबख्त दूर खड़ी हंस रही थी और सबेरा हो गया । सुबह होते ही रमेश अपने माता-पिता के साथ नाश्ता करते वक्त यह आश्वासन देता गया की अब उनको कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह अपने सब तकलीफों का सही हल जल्द ही खोज निकालेगा ।

रमेश के दिल और दिमाग पर एक तरफ मगनलाल के कर्ज का दावा दस्तक दे रहा था और दूसरे ओर उसकी पड़ोसन रमीला से सम्बन्ध जोड़ने की खलबली मची थी ।

काम पर पहुंचते ही रमेश ने अपने एक वकील दोस्त साहू से मगनलाल के कर्ज के बारे में सलाह ली तब पता चला की मगनलाल ने ऐसे कितने भोलेभाले अनजान गरीबों की जिन्दगी बर्बाद की थी । उसका लेखा विधि और हिसाब-किताब बड़े सन्देहजनक और बनावटी था । कई बार कचहरी में यह साबित कर

दिया गया था कि एक तरफ मगनलाल कर्ज को बढ़ा-चढ़ाकर लिखता था और फिर उस पर मनमानी सूद पर सूद जोड़े जा रहा था । उसके खाते में वह भी लिखा होता था जो सौदा ग्राहक ने उससे खरीदा ही नहीं था ।

यह तो सरासर बेइमानी थी पर मगनलाल के व्यापार में यह सब जायज और सही था । उसके पास शर्म लाज तो थी ही नहीं ।

साहू एक जाने-माने वकील थे और उन्होंने रमेश से सब जानकारी लेकर मगनलाल के दावे का कड़ा विरोध किया । मशहूर वकील का नाम सुनते ही मगनलाल के नस ढीले पड़ गये और वह डर के मारे कोर्ट मे जाने से पहले ही अपने कर्ज के दावे को आधा कर दिया । पर उसने एक शर्त लगाई कि उसका सब कर्जा सात दिनों में ही भर दिया जाये । साहू की सलाह पर रमेश इस फैसले पर राजी हो गया ।

रमेश के पास समय कम था इसीलिये उसने चिमन काका के परिवार को उस शाम को अपने घर बुलाया । दोनों पड़ोसियों का पुनः मिलन हुआ और बहुत ही बातें हुई । रमीला आज एक भीगी बिल्ली के तरह बैठी थी और उसने यह भी कह दिया की जो भी उसके माता-पिता चाहते हैं वह उसी में राजी थी ।

रमेश जितना रमीला को जानता था वह आज उन सब जानकारी के विपरीत बर्ताव या अपने चरित्र का प्रदर्शन कर रही थी । रमेश को दाल में कुछ काला नजर आ रहा था पर उसके पास कोई और चारा भी नही था सिवाय इसके की वह रमीला से शादी करने को

राजी हो जाये । हुआ वही जो चिमन काका चाहते थे । रमेश न चाहकर भी बनने जा रहा था अपने पड़ोसन का साजन ।

जयराज के कर्ज अदा कर देने से मगनलाल खुश हो गया और रमीला की शादी से चिमन काका का बोझ हल्का हो गया । लेकिन दुःख तो इस बात का था की इन सब फैसले से रमेश बेचारा बहुत बुरी तरह से फंस गया था । अब उसे शायद जिन्दगी भर पश्चाताप के नमकीन फल समय-समय पर चीखने को मिलेगा ।

चिमनलाल इस शहर का धनवान व्यापारी था पर कई कारणवश रमेश और रमीला की शादी एक बहुत ही साधारण रूप ले रखा था । रमेश को इससे ताज्जुब तो हुआ पर बेफिजूल खर्च से अब वो भी डरने लगा था । फिर भी कई नाच गाने हुये और खास मेहमानों का भीड़ तो लगी ही थी । रमीला के हाथों में मेंहदी लगी, उसकी सगाई हुई और उसे रमेश विदा करके अपने घर ले गया । रमेश की पड़ोसन आज उसकी दुल्हन बन गई थी ।

घर पहुंचकर जब महेश की मां ने अपनी बहू का स्वागत आरती लेकर करने चली तब रमीला ने अपना असली रूप दिखा ही दिया । उसने अपनी सास सोनमती को सम्बोधित करते हुये कहा, 'मुझे इन पुराने रीति रिवाज बिलकुल पसंद नहीं हैं । इन सब चीजों को मुझ से दूर ही रखें तो अच्छा होगा ।'

सोनमती चौंक गई और अपनी आरती की थाली अलग रखकर रमीला से गले मिलकर उसका स्वागत करना चाहा पर इसका भी निरादर रमीला ने कर दिया और सीधे रमेश के कमरे में चली गई ।

रमेश के पिता जयराज अपने खाट पर लेटे-लेटे सब देख सुन रहे थे पर कुछ कहने की शक्ति उनमें अब नहीं बची थी। अपनी बीमारी के कारण अब वे थोड़े ही दिनों के मेहमान थे। उनको रमीला के व्यवहार से बहुत बुरा लगा क्योंकि वही रमीला शादी से पहले क्या थी और अब क्या कर रही थी। यह दुनिया भी अजीब है। लोग अपने मतलब के लिये इतना जल्दी बदल जाते हैं।

रमेश की शादी के एक साल बाद उसके पिता जयराज का स्वर्गवास हो गया और अब घर में केवल रमेश, रमीला और रमेश की मां सोनमती ही रहते थे। रमीला और उसकी सास की रोज की कुकुरझौंझौं से रमेश तंग हो गया था।

रमेश ने कई बार रमीला को समझाने की कोशिश की यह कह कर की उसकी मां एक देवी है जो केवल प्यार देना और अपने बच्चों की खुशी ही चाहती है पर रमीला ने इन सब बातों पर ध्यान ही नहीं दिया। रमीला अब रमेश को भी जली-कटी सुनाने मे हिचकिचाती नहीं थी।

घर में शान्ति कायम रखने के लिये अब रमेश भी रमीला को कुछ नहीं कहता था। रमीला ने इसका उलटा मतलब निकाल लिया था कि रमेश अब उसका गुलफाम या गुलाम बन बैठा है। वह अपनी मनमानी किये जा रही थी और अपनी बेहूदेपन तथा झूठी अभिमान के कारण घर में अशान्ति बढ़ाये जा रही थी।

समय बीतता गया और रमीला एक बच्ची की मां भी बन गई पर आज भी उसको अपनी बेहूदगी और चिड़चिड़ेपन से लगाव था।

रमेश की मां भी अब इस जिन्दगी से थक गई थी और अपने अंदरूनी बीमारियों के कारण वो भी चल बसीं।

अब कुछ दिनों से रमीला का आना जाना रमेश की बहन चांदनी के यहां होने लगा था। हफ्ते के पांच दिन जब रमेश काम पर रहता तब फोन पर रमीला अपने सभी मित्रों से बातें करती रहती और अपने बेटी कविता की देखभाल करती थी। पर शनिवार और रविवार को रमीला को अपने घर पर पाना मुश्किल ही नहीं बल्कि असंभव था। रमेश अपने बेटी के साथ बड़े प्रेम से बिता देता था।

आज शनिवार था और सुबह ही रमीला सज-धजकर रमेश के कमरे में प्रवेश करते हुये कहा, 'क्या हो रहा है जी ?'

रमेश एक पत्रिका पढ़ रहा था। उसने अपना सर उठाकर रमीला की ओर देखा,' हाय ! क्यों बिजली गिरा रही हो मेरे दिल पर इस तरह के नखरे से ? कहां जाने का इरादा है आपका ? जरा मैं भी तो सुनू।'

'तुम कहीं जाते हो तो क्या मुझे बताकर जाते हो जो आज मैं अपने जाने का पता बताती जाऊं। हफ्ते भर तो घर ही में पड़ी रहती हूं और सप्ताह अन्त जब थोड़ी सी जी बहलाने चली तो जनाब चीख उठते हैं। यह कहां की अन्धेर है ? मैं चांदनी के साथ शहर जा रही हूं। कुछ शापिंग करने के बाद हम दोनों एक फिल्म देखेंगे और फिर घर आते-आते शाम हो जायेगी। कविता सो रही है और जब वह जाग जाये तब उसकी देखभाल करना न भूलना।' रमीला दरवाजे पर से इतना कहकर चलती बनीं और दरवाजा बन्द कर दिया।

रमेश बंद दरवाजे को एकटक देखता रहा । उसका सप्ताहांत ऐसे ही बीतता था जब रमीला जैसी पत्नी उसकी हर सीधी बात का उलटा ही मतलब निकालता था ।

रमेश पिछले चार वर्षों में रमीला के कारण जो भी मुसीबतें झेली थी उनका कोई अंदाजा ही नहीं लगा सकता है । ससुर की बेइज्जती, सास का अपमान, पति का तिरस्कार, बच्ची से नफरत और अपने बाप की दौलत का झूठा नशा यही सब रमीला के करतूत थे I यही रमीला का रंग-ढंग था और दुःख की बात तो यह थी की रमेश उनमें कोई परिवर्तन नहीं ला पाया था ।

रमेश का हाथ रमीला के पिता चिमनलाल के उपकारों से दबा था क्योंकि उन्हीं की मेहरबानी से मगनलाल जैसे लालची के कर्ज वह चुका सका था । इसी कारण से रमेश का मुंह बन्द रहता था और रमीला की जबान तीखी होती जा रही थी । रमेश चाहकर भी रमीला के साथ कोई सुधारने वाला ठोस कदम नही उठा पा रहा था । बात-बात पर कर्जे की याद दिलाकर रमीला उसे शर्मिंदा करती रहती थी ।

लेकिन अब पानी सर के ऊपर से गुजर रहा था और उसे कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा नहीं तो वह जीवन भर इसी नरक में भुगतता रहेगा । अब जब भी रमीला घर से बाहर रहती तभी रमेश कोई न कोई योजना या तरकीब सोचता रहता जिससे रमीला के हाव-भाव और रवैये में सुधार आ सके ।

उसने अपने बहन बहनोई को उन समस्याओं के हल निकालने की सिफारिश की और वे कुछ करने की तैयारी करने लगे थे ।

रमेश की बहन चांदनी अब रमीला की सबसे बड़ी दोस्त बन गई थी । चांदनी और उसका पति केशव आजकल वहीं नजदीक ही अपने मकान में रहते थे और आज रमीला वहीं पहुंची । दरवाजे पर से ही चांदनी को घरवाले कपड़े में देखकर रमीला का पारा चढ़ गया,'यह क्या है चांदनी ? अभी तक तुम तैयार नहीं हुईं ! क्या हमारे आने और प्लान की खबर नहीं मिली थी ? '

'अन्दर आओ भाभी जी ! मैं सब बताती हूं । तुम्हारे आने की खबर भी मिली थी और मैं तैयार भी हो जाऊंगी । अभी इतनी जल्दी भी क्या है । मेरे पतिदेव जरा टहलने गये हैं वे जैसे आ जायें तो मैं उनसे पूछकर तैयार हो जाऊंगी । बिना उनसे पूछे तो मैं जा नहीं सकती,' चांदनी ने रमीला को घर में बैठाते हुये कहा ।

'मालूम पड़ता है कि प्रभू की आज्ञा अभी नहीं मिली है,' जरा सी चुटकी लेती हुई रमीला ने कहा ।

चांदनी का सुन्दर चेहरा एक मधुर मुस्कान से भर गया क्योंकि रमीला ने उसके पति को प्रभू कहा था, 'भाभी जी, अभी दासी ने अर्जी ही नहीं पेश की है लेकिन यह आशा है की अर्जी पेश करने पर नामंजूर नही होगी ।'

रमीला और भी नाराज हो उठी और पूछा, .तो क्यों नही पूछी ? खबर तो मैं ने बहुत पहले दे दी थी !'

'तब हिम्मत नहीं पड़ी क्योंकि जब वे आज सुबह जागे तब बोले की उनके सर में दर्द है । इसलिये मैंने सोचा की नाश्ते के बाद जब वे

घुम फिर आयेंगे और तबियत भी ठीक हो जायेगी तब पूछ लूंगी। वे बस आते ही होंगे,' चांदनी ने सफाई देते हुये हंस कर कहा।

'मालूम नहीं चांदनी तुम को कैसे हंसी आ रही है क्योंकि मैं तो ऐसा होने पर शर्म के मारे शायद मर जाती। अरे कोई अड़ोस-पड़ोस से बताकर नहीं चल सकती हो तुम ?' रमीला ने पूछा।

चांदनी चौंक पडी, 'बाप रे ! तब तो घर से बाहर ही कर देंगे और इस जन्म में फिर मुंह भी न देखेंगे।'

रमीला ने क्रोध और आश्चर्य से अवाक होकर कहा,'निकाल देंगे ? किस कानून से ? किस अधिकार से ? कुछ कहो तो भला !'

चांदनी ने निहायत स्वभाविक भाव से जवाब दिया, 'भाभी जी, इसमें बाधा ही क्या है, वे घर के मालिक हैं और मैं उनकी अर्धांगिनी हूं। यदि दासी को वे निकाल देते हैं तो कौन आ के उन्हें रोकेगा बताओ ?'

'रोकेगा हमारा कानून ! रोकेगी सरकार ! पर यह सब जाये चूल्हे के भाड़ में चांदनी। मुझे तो तुम्हारे ही मुंह से अपने आपको दासी बना लेना बहुत शर्म की बात लगती है। पति क्या कोई बादशाह है और स्त्री क्या उसकी खरीदी हुई गुलाम है ? मैं तो अपने आपको इतना नीचे कभी भी नही समझ सकती ,' रमीला ने कहा।

चांदनी को रमीला के गुस्से को देखकर बड़ा मजा आ रहा था और वह बोली, 'भाभी, तुम्हारी ननद तो एक साधारण औरत ठहरी इसलिये वह अपने पति को घर का मालिक समझती है। पर मैं

तुमसे पूछती हूं की तुम जो इतना अकड़ रही हो, क्या तुम अपने घर से चली आई हो बिना भैया के हुकुम लिये ?'

'हुकुम क्यों ? किसलिये ? मैं ने बस इतना कह दिया की मैं जा रही हूं, कविता का ख्याल रखना,' पल भर चुप रहकर रमीला फिर बोली,'पर मैं यह मानती हूं की मेरे जैसे गुणवान और अच्छे पति बहुत कम स्त्रियों को मिलते हैं । मेरी किसी भी इच्छा में वे बाधा नहीं डालते लेकिन अगर ऐसा नही भी होता तो मैं अपने अधिकार और सम्मान की रक्षा खुद कर सकती थी । मैं कभी भी आपकी तरह भूलकर भी अपने आपको उनकी दासी नहीं मानती क्योंकि मैं उनकी संगनी हूं । मेरा भी बराबरी का हक है ।'

इतने मे चांदनी के पति केशव वापस आ गये और इस ननद भौजाई का वार्तालाप स्थगित हो गया । केशव ने रमीला को वहां देखकर यह समझ गया कि आज वह चांदनी को लेकर कहीं जाने वाली है इसीलिये वह बिना कुछ पूछे चांदनी को जल्दी से तैयार हो जाने को कहा जिस से वह रमीला के साथ जा सके ।

केशव के इस बर्ताव को देख सुनकर रमीला घबरा गई और शहर जाते समय रास्ते में उसने चांदनी से पूछा, 'यह कैसे हो गया कि तुम ने कुछ कहा भी नही और केशव ने तुम्हें मेरे साथ जाने को कह दिया?'

चांदनी ने कहा, 'यही तो हमारे तुम्हारे रहन-सहन मे फर्क है । हम एक दूसरे की गति विधि और हालचाल का अनुमान इसलिये लगा लेते हैं क्योंकि हम एक दूसरे को बेहद चाहते हैं । हमारे जीवन की नैया विश्वास पर चलती है । हम एक दूसरे की इज़्ज़त करते हैं

और बराबरी का हक रखते हैं । न कोई बड़ा है न कोई छोटा है । रमेश भैया और तुम्हारे बीच एक दूसरे की जरूरतों की समझदारी की एक बहुत बड़ी खाई है । जब तक इस कमी की पूर्ती नहीं होगी तब तक तुम दोनो में दूरियां बनी रहेंगी ।'

ऐसी कड़वे सत्य वचन को सुनकर रमीला सोचने लग गई और उस दिन की खरीदबीन और सिनेमा का लुत्फ भी पूरे तौर पर उठा नहीं सकी । उसके दिमाग मे चांदनी के एक-एक शब्द घूम फिर कर कोलाहल मचा रहे थे ।

रमीला को कई प्रकार के आत्म ज्ञान आने लगे । क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि रमेश और रमीला भी केशव और चांदनी के तरह प्रेम से भरा जीवन बिता सकें ? रमीला ने अपने अन्दर झांककर देखा तो कसूरवार वही ठहरी । उसे अब अपना रहन-सहन, हाव-भाव और विचार बदलने पड़ेंगे अगर वह अपने परिवार की खुशी और सुख देखना चाहती है । देर तो हो गई है पर अभी भी समय है सुधरने का ।

शाम को जब रमीला अपने घर पहुँची तब रमेश और कविता एक दूसरे के साथ खेल रहे थे । रमीला भी उन के खेल में शामिल हो गई । रमेश को रमीला के इस अचानक परिवर्तन से असमंजस तो हुआ पर वह खुश भी बहुत हुआ ।

रमीला का सब प्रकार का नशा मानो धीरे-धीरे उतर रहा था । उसने अपने आपसे यह संकल्प कर लिया था की आज से वह अपना चिड़चिड़ापन, अपना दिखावटी अभिमान, अपने बाप के

दौलत का नशा और अपने बातचीत करने का कदर कायदा सब सुधारकर अपने आप में एक नये रमीला को जन्म देगी I

रमेश रोज व रोज रमीला में नए-नए परिवर्तन देखता गया और एक दिन शाम को जब कविता सो गई थी तब उसने रमीला को अपने बाहों में जकड़ लिया और बड़े प्यार से एक लम्बी सी चुम्बन लेकर दुलार से बोला, 'रमीला तुम आज तक मेरी पड़ोसन ही थी लेकिन अब मुझे मालूम हो गया है की हम तुम एक आदर्श पति पत्नी बन गये हैं । यह सब कैसे हो गया हमें नही मालूम पर मैं आज बहुत खुश हूं ।' रमेश थोड़ी देर रुका अपना प्यार जताने के लिये ।

'आज मैं रमीला के अन्दर एक अति सुन्दर देवी को देख रहा हूं जो इस परिवार को एक स्वर्ग बनाने की पूरी कोशिश में है । यह मैं वादा करता हूं की मैं तुम्हारे इस नेक इरादे को सफल बनाने मे तुम्हारी पूरी मदद करूंगा और तुम्हें सदा सब सहारा दूंगा ।' रमेश ने कहा और रमीला को अपने बाहों में फिर जकड़ लिया ।

रमीला इतना सब सुनकर और अपने पति का घनिष्ट प्यार पाकर गद्गद् हो गई । वह खुशी से झूम उठी और रमेश के मदहोश आलिंगन में फंसी हुई थी पर यह कहना उचित समझा, 'डार्लिंग ! मेरे इस परिवर्तन के पीछे तुम्हारे बहन बहनोई, चांदनी और केशव का बहुत बड़ा योगदान है । '

'जब से मैं अपने फिजूल साथियों को छोड़ कर चांदनी और केशव से मिलजुल रही हूं तब से मैं उनका अनुकरण करने को तरस रही हूं । मैंने कई दिनों से अपने पुराने आचार-विचार बदल डालने की

कसम खा रखी थी। आज मुझे भी बड़ी खुशी हो रही है की आपने भी इस महान् परिवर्तन का अनुभव करके देख लिया है। '

रमीला थोड़ी देर रुकी पर उसको कुछ और कहना बाकी था, 'रमेश, अगर हो सके तो मेरी सब गलतियों को माफ कर देना। मैंने तुम्हे और तुम्हारे परिवार को अपने झूठी गुरूर और बनावटी जीवन से बहुत दुःख दिया है। इन सब के लिये मैं बहुत शर्मिन्दा हूं। मेरे लिये अब तुम्हारा प्यार ही सबसे कीमती चीज है।' इतना कहकर रमीला रो पड़ी।

रमेश ने रमीला को आश्वासन दिलाया पर इस सब बातों का जवाब देने की जरूरत ही नहीं रही। वह अपना असीम प्यार रमीला पर चढ़ाये जा रहा था और रमीला इस भोग विलास का पूरा आनंद उठा रही थी।

रात बड़ी सुन्दरतापूर्वक कटी और उनका नया सबेरा एक नये जीवन की हरियाली लेकर बड़े जोरों से चल पड़ी थी। थोड़े ही दिनों में रमेश के परिवार में तीन से चार लोगों की खुशियां लहराने लगीं।

बेटी कविता और बेटे कबीर के लिये रमेश और रमीला एक आदर्श माता-पिता बन गये थे। रमीला के माता-पिता, चिमनलाल और जयश्री ने अपने नाती नातिन, कबीर और कविता को अपना बराबरी का वारिस बना दिया।

रमेश की पड़ोसन रमीला ने अपने कर कमलों से तथा अपने अन्दर के परिवर्तनों से एक ऐसा कमाल दिखाया कि उसके सभी अवगुण सदगुण में बदल गये।

वही चिमनलाल और जयश्री की बिगड़ी हुई बेटी रमीला ने आज एक सती सावित्री का स्थान ले लिया था। वह कबीर और कविता की एक प्यारी मां बनकर उनके जीवन का उद्धार करने लगी।

यह सब कैसे हुआ और क्यों हुआ ? यह सब जयराज और सोनमती का आशीर्वाद था। रमेश की सहनशीलता और नेक इरादों का फल था। पर सबसे अहम बात तो यह है की चांदनी और केशव के ज्ञान की बातों ने रमीला पर जादू कर दिया था।

नमूने से भरपूर विवाहित जीवन की सीख से आज रमेश और रमीला का परिवार खुशी, सुख और शान्ति से भरपूर है।

११

प्यार का बन्धन

सुनीता आज चांद से भी ज्यादा सुन्दर लग रही थी। वह एक खिलते हुये फूल-सी लहरा रही थी और मानो अनूप जलोटा जैसे शायर की ख्वाब बन कर खड़ी थी। लगता था की वह किसी का इंतजार कर रही थी। इंतजार की घड़ियों को गिनना उसके लिये मुश्किल होता जा रहा था।

छः बज चुके थे और इस शान्त वातावरण में किसी खास व्यक्ति का इंतजार करने का मजा तो कोई उसी का चेहरा देखकर अनुमान लगा सकता था। सुनीता के दिल की धड़कने बढने लगीं थीं और समय तो मानो चल ही नहीं रहा था। वह खिड़की से सड़क के तरफ झांक रही थी।

बाहर एक सफेद झलकती हुई मोटर आकर रुकी। मनीष को देखकर सुनीता के दिल के सभी तार मानों एक साथ बज उठे। मनीष उसके बचपन का साथी ही नहीं पर उसके कॉलेज का यार, उसका प्यार और उसके जीवन का आधार बन चुका था।

मोटर से उतरकर मनीष ने अंगड़ाई ली और घर के तरफ देखा तो उसे ऐसा लगा जैसे एक तिनके को सहारा मिल गया हो। उसने

अपनी तरफ बढ़ती हुई सुनीता को देखा और अपने प्यार में खो गया। सुनीता खिंची चली आ रही थी और दूसरे ही पल वह मनीष की बाहों में जकड़ गई थी। इस शान्त और जटिल आलिंगन से दोनो का मन प्रेम के सागर में हिलकोरे लेने लगा। कुछ देर तक समय रुक सा गया और दो प्रेमी एक दूसरे में समाते गये।

कहते हैं कि जब प्यार बोल रहा हो तब शब्दों की जरूरत नही पड़ती लेकिन जब कुछ देर में उनको होश हुआ तब शब्दों की बौछार ऐसे हुई जैसे जगजीत सिंह ने कोई गज़ल छेड़ दी हो। वे दोनों अपनी-अपनी कहे जा रहे थे पर सुनने वाला कोई न था। हम यही समझ लें की वे एक साल का वियोग कुछ ही पल में पूरी करना चाहते थे।

आज सुनीता और मनीष पूरे एक साल के बाद मिल रहे थे। बचपन से साथ-साथ रहकर और फिर जवानी मे कॉलेज के दिन बिताने के बाद वे दोनो एक वर्ष तक एक दूसरे से दूर रहकर अपने प्यार को और भी घनिष्ट कर चुके थे। प्यार करने वाले कहते हैं की दूरियां प्रेमियों को और भी नजदीक कर देती हैं।

कॉलेज के बाद सुनीता घर आ गई थी और मनीष आगे की पढ़ाई करने विदेश चला गया था। इस बीते साल में कितने प्रेम पत्र लिखे गये और कई बार टेलीफोन से प्यार भरी बातें हुई थीं इसका अन्दाजा लगाना हम साधारण लोगों के लिये बहुत मुश्किल होगा। केवल सच्चे प्यार में उलझे प्राणी ही इन सब हथियारों को सही तौर पर काम में ला सकते हैं।

इन्टरनेट पर स्काइप के जरिये लाखों हंसी मज़ाक भी होती रहीं पर कभी दिल नहीं भरता था। अब जब एक दूसरे के बाहों में थे और

फिर से मिल गये थे तब अब तो बातें करने का मजा ही कुछ अलग था ।

सुनीता को अपने तरफ आते देख कर मनीष को ऐसा लगा जैसे कोई नाचता हुआ मोर उसके पास आ गया है और मधुर वीणा की तान सुना रहा है । इस उजली की रात में उन दोनों के मन मन्दिर में कितने दिये जल पड़े और वहां की ठन्ड़ी हवा की खुशबू उन्हे आहिस्ते-आहस्ति प्यार के नशे में ऐसे मस्त कर दी थी जैसे उनके सामने कोई भी नहीं है ।

पर जब घर के अन्य लोग निकल कर मनीष का स्वागत करने लगे तब उन्हें होश आया की वे कहां हैं । सुनीता ने मनीष के हाथ पकड़ कर उसे खींचती हुई घर में ले चली मानो उसके मनीष को उससे कोई चुरा लेगा । मनीष कुछ शर्माया, कुछ सकुचाया, घबड़ाया भी और कुछ रुका पर अब तक तो सुनीता चिड़िये की तरह फुदकती, चहचहाती हुई मनीष को घर के अन्दर ले आई थी ।

घरवालों ने मनीष का बड़ा खातिर भाव किया और फिर कितनी बातें हुई । मौका देखकर मनीष ने सुनीता को इशारे से बुलाया और उसके कानों में कुछ कहा । तुरंत सुनीता ने ऐलान किया, “हम थोड़ी देर के लिये एक जरूरी काम से बाहर जा रहे हैं ।”

यह कहकर वे दोनों सैर सपाटा करने निकल पड़े । घर में सब अपने-अपने काम में व्यस्त हो गये । सुनीता के माता-पिता शंकर और पारो बड़े खुशी नजर आ रहे थे । अब सुनीता के हाथ पीले करने में देर नहीं होनी चाहिये वे यही सोच में लगे थे ।

उधर मनीष की गाड़ी जाकर सवेनी बीच पर रुकी । समुद्र का किनारा, चांदनी रात और एक दूसरे से खेलते हुये मस्त लहरें इन दोनों प्रेमियों को एक नये दुनियां में पहुंचा दिया था ।

इस शान्त वातावरण के मन्द-मन्द हवा के झोंखे और किलोल करते हुये हिलकोरे उन्हे ऐसे अजीब ख्याली माहौल पर ला पटका था जिसमें वे ऐसे खो गये थे जैसे किसी ड़ाक्टर ने उन्हे कोई दवा देकर बेहोश कर दिया हो । वे इतने मगन थे की उनको उस हालत से बाहर निकलने का मन ही नहीं करता था ।

जो भयंकर तूफान मनीष के अन्दर चल रहा था उसके बारे में किसी को भी पता नहीं था । उस खौफनाक खबर का कडवापन मनीष के लब तक कई बार आ आ कर रुक जाता था ।

फिर भी उसने हिम्मत करके सुनीता के दोनो कन्धों को पकड़कर कहना शुरु किया, "सुनीता, हमे ऐसा लग रहा है की हम आज कई मुद्दतों के बाद मिले हैं । आज तुम एक हिरनी जैसी लग रही हो, मानो मेरी परियों की रानी हो, मेरे लिये एक रेशम की डोर हो जिसे मैं कभी छोड़ना नहीं चाहता । " इतना कहकर मनीष कुछ रुक गया जैसे उसके गले में कुछ अटक गया हो ।

सुनीता के हाथों को अपने हाथ में लेकर मनीष ने उसे चूम लिया और फिर कहने लगा, " मैं तुमको देखे बिना कैसे रहूंगा ?" सुनीता यह सुनकर चौंक पड़ी । उसको कुछ दाल में काला नजर आने लगा था । जैसे वह गहरे नींद से अचानक जाग उठी और बोल उठी, "मनीष, तुम ऐसा क्यों कहते हो ?"

मनीष के शरीर का खून जैसे सूखने लगा और उसको उसके ड़ाक्टर के गम्भीर स्वर उसके कानो में गूंज उठे । वह करे तो क्या

करे । सच्ची बात तो सुनीता को बताना ही पड़ेगी । मनीष की आंखों से आंसू टपक रहे थे और वह कुछ भी कह नहीं पा रहा था ।

सुनीता उस समय तड़प उठी । उसको सदाबहार मनीष के चेहरे पर उदासी के घने बादल देखकर बहुत ताज्जुब हुआ । उसके पैरों तले से जैसे जमीन खिंच गई थी और वे दोनों मोटर से उतरकर समुद्र के तट पर चुपचाप बैठ गये । मनीष के हावभाव देखकर सुनीता भी रो पड़ी और मनीष से विनती करके कहा,"चाहे कुछ भी हो मनीष,या चाहे कैसी भी बुरी खबर हो, तुमको साफ-साफ बताना पड़ेगा ।"

उसका मनीष अपने आंखों से लगातार मोतियों की कीमती लड़ी की तरह अपने बहूमूल आंसू बहा रहा था और सुनीता उसे टकटकी लगाये देख रही थी । वह अपनी आंखें बन्द नहीं करना चाहती थी । उसे डर था की कहीं उसका मनीष उसके आंखों से ओझल न हो जाये । मनीष अपने प्यार को अपने बाहों में समेट लेना चाहता था लेकिन वह आज बड़ा लाचार था । चाहकर भी वह ऐसा नहीं कर पा रहा था ।

उसे उसके ड़ॉक्टर की दर्दनाक बातें फिर उसके कानों में गूंजने लगी थी । वह ऐसे जोरदार दरिया की कड़ी मझधार में बहता जा रहा था कि जहां से किनारा दूर होता जा रहा था । पर हिम्मत करके उसने कहना शुरू किया, " सुनीता मुझे कैंसर है और हमारे ड़ाक्टर ने कहा है कि मैं अब थोड़े ही दिनों का मेहमान हूं . . ." इससे आगे वह कुछ न कह सका ।

सुनीता को मनीष की बातों पर यकीन ही नहीं हो रहा था । वह रोने के सिवाय और क्या कर सकती थी पर उसने मनीष को आश्वासन दिलाते हुये कहा, " मनीष, तुम मेरे हो और तुमको मुझ

से कोई भी छीन नहीं सकता । चाहे दुनियां इधर से उधर हो जाये पर हमारे प्यार का बन्धन कमजोर नहीं होगा । मैं बड़े से बड़े अस्पताल में तुम्हारा इलाज़ करावाऊंगी, आज तुमसे यह हमारा वादा है ।"

मनीष चुप मारकर सुनीता के गोद में लेट गया और ऊपर खुले आसमान को तांकने लगा । दुनिया इतनी बड़ी क्यों न हो पर आज उसे सब इतनी छोटी लग रही थी । उसकी कल की लम्बी जिन्दगी आज उसे केवल एक पल सी लग रही थी । उसे यही चिन्ता सताये जा रही थी । अब उसकी सुनीता का क्या होगा । उधर सुनीता अपने प्यार के उदास चेहरे को देखकर अपने भविष्य की रेखाओं को समझने की कोशिश कर रही थी ।

हजारों करने योग्य योजनायें उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहीं थीं पर उसे कुछ सूझ नहीं रहा था । एक बिजली चमकी और बादल का गरजना शुरु हुआ । बारिश होने लगी । दोनों उठकर मोटर के अन्दर चले गये पर उनको ऐसा लगा जैसे आज आसमान भी उनके प्यार पर तरस खा कर रो पड़ा हो । एक तरफ बारिश होती रही पर उन दोनों प्यार करने वालों का कलेजा जल रहा था ।

यह जीवन अजीब है । अभी कुछ समय पहले सुनीता एक खिली कली के तरह झूम रही थी पर अब वह एक मुरझाई हुई पत्ती थी जो अपने पेड़ से टूट कर जमीन पर आ गिरी थी । उसकी तड़प असहाय थे पर फिर भी वह सब सहे जा रही थी । उसके लिये अब बहस या बात बकवास की कोई गुन्जाइश नहीं रह गई थी । उसने फैसला कर लिया था कि मनीष और उसकी शादी पहले होगी और फिर मनीष का इलाज जारी होगा ।

मनीष के लाख समझाने पर भी सुनीता ने अपना जिद्द नहीं छोड़ी और घर पहुंचते ही उसने अपने माता-पिता से अपने विवाह के बारे में उन का राजीनामा ले लिया। माता-पिता तो यही चाहते थे की उनके बेटी के हाथ जल्दी ही पीले कर दिया जाये। पर उनको मनीष के बीमारी के बारे में कुछ भी पता नहीं था। सुनीता ने मनीष से कसम जो ले रखी थी कि उन दोनों और उनके ड़ाक्टर के सिवाय तीसरा कोई भी इस राज को उनके शादी हो जाने तक नहीं जान पायेगा।

मनीष के माँ-बाप को खबर दी गई। वे अब अमेरिका के मोड़ेसटो शहर में अपनी एक छोटी सी व्यापार चला रहे थे। उनका इकलौता बेटा अपने बचपन की एक दोस्त से शादी कर रहा है यह जानकर वे भी खुशी से झूम उठे। वे कई बार पहले सुनीता से मिल चुके थे और उन्हे अपने बेटे की पसंदगी पर नाज़ था।

दोनो तरफ के परिवार वाले शादी की तैयारियां करने में लग गये बिना मनीष के बीमारी की असलियत को जाने हुये। मनीष के अपने घर में केवल वह अकेला बचा था और जब तक उसके माता-पिता नहीं आ जाते उसके लिये उसका घर उसे काटने दौड़ता था।

इस अकेलेपन को दूर रखने के लिये सुनीता, मां-बाप के मना करने के बावजूद भी, खुद आकर मनीष के साथ रहने लगी थी। इससे मनीष को बहुत सुकून मिलता था और उसके चेहरे की थकावट और सोच फिकर कोसों दूर भाग गई थी। उसे लगा की जिन्दगी चाहे थोड़ी ही क्यों न हो पर खुशी से कट जाये तो बड़ा आराम मिलता है।

सुनीता ने यह संकल्प कर लिया था कि वह मनीष को खुशी और सुखी रखने के लिये बड़े से बड़े बलिदान देने में कभी भी नहीं

हिचकिचायेगी। चाहे लोग उसके प्यार का बन्धन समझें या उसके दिल की पुकार पर हंसें इससे उसके पवित्र प्रेम के लिये कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था।

हफ्ते के अन्त होते ही मनीष के माता-पिता, सुरेश और ललीता आ पहुंचे और दोनों परिवारवालों की सलाह और सहमति से मनीष और सुनीता की शादी हो गई। सभी संस्कार पूरे हुये, गाने हुये, नाच भी हुआ क्योंकि यह सब सुनीता की मांग और इच्छा थी। वह नहीं चाहती थी की कोई भी बाधा उन दोनों प्यार करने वालों के बीच में कभी भी आ पाये।

ऐसा ही हुआ और शादी हो जाने के बाद जब केवल दोनों बच्चों के माता-पिता इकट्ठे हुये तब सुनीता ने बड़े दुख के साथ मनीष की बीमारी की दर्दनाक खबर सब को सुना दी। सब लोग घबरा गये और दुखों के आंसू सब के आंखों से छलक पड़े, पर जब अपनी योजना के बारे में सुनीता ने विस्तारपूर्वक सबको बताया तब सब के जी में जी आया।

सुनीता ने सबको आश्वासन दिलाया की उसने मनीष के कैंसर का इलाज इण्डिया के एक मशहूर अस्पताल में करवाने का बन्दोबस्त कर दिया है और वे कल ही घर से चले जायेंगे। अब तो उनके माता-पिता के दुख सहने की शक्ति भी नहीं रही पर सुनीता के आत्मविश्वास के कारण वे बाहर से अपने बच्चों की योजना पर खुश हुये और खर्च के पैसों की तैयारी करने लगे। कुछ पैसे बीमा से, कुछ सुरेश और ललीता के तरफ से और बाकी शंकर और पारो ने बटोरे। ऐसे दुखों के समय परिवार की एकता, उनकी समझबूझ और वफादारी ही काम आती है।

इन्सान के दुखों के कारण तीन हैं अशक्ति, अज्ञान और अभाव पर आज परमात्मा के कृपा और दया से इन दोनों परिवारों में बहुत शक्ति आ गई थी, उनके पास अच्छा ज्ञान हो गया था और फिर न तो उनके पास हिम्मत की और न ही प्यार और श्रेष्ट आचार-विचार की कोई कमी थी । उन्हें भगवान पर पूरा भरोसा था । हिन्दुस्तान के माहिर चिकित्सकों या ड़ाक्टरों पर बड़ा विश्वास था । असली बात तो यह थी की उन सबको सुनीता और मनीष के पवित्र प्रेम पर बहुत गर्व था ।

सुरेश और ललीता वापस अपने घर मोड़ेस्टो लौट गये क्योंकि उन्हे अपना कारोबार सम्भालना था । वे सुनीता और मनीष को अपना आर्शीवाद देकर उनको यह आश्वासन दिलाया की उनकी किसी भी मदद के लिये वे सदा तैयार रहेंगे । जल्दी से सब कारोबार की देखभाल किसी को सौंप कर वे भी हिन्दुस्तान पहुंचेंगे अपने बच्चों की मदद के लिये ।

शंकर और पारो ने सुनीता और मनीष को विदा करके अपने श्रृद्धा भक्ति की लगन को और भी मज़बूत बनाया । उनके पूजापाठ मे मनीष के स्वास्थ होने की विनती और सुनीता के सदा सुहागन रहने का प्रार्थना लगातार उचित स्थान रखती थी । उनके जीवन में इसके सिवाये अब और कुछ मतलब ही नहीं रखता था ।

हिन्दुस्तान पहुंचते ही मनीष का सही इलाज शुरु हो गया । उन दिनों उस अस्पताल में अमेरिका के दो प्रमुख कैंसर के ज्ञानी और बड़े होनहार स्पेशलिस्ट सर्जन रोटरी क्लब की तरफ से आये हुये थे । वहां के सब ड़ाक्टरों ने बड़े लगन और कोशिश से मनीष का इलाज जारी रखा । सुनीता उसी अस्पताल में एक वॉलनटियर नर्स का काम करने लगी थी ।

समय का चक्र चलता रहा और मनीष का इलाज जारी रहा । दवा और दुआ दोनों का चमत्कार होता रहा । तीन महीने के दिन कैसे निकल गये यह किसी को मालूम ही नहीं हुआ । सुरेश और ललीता भी अब सुनीता के साथ हो लिये थे और उसी अस्पताल के एक कर्मचारी के परिवार ने इन सबको अपने घर में रहने का बन्दोबस्त करके इन्हे कृतार्थ किया था ।

इस कलियुग में अभी भी ऐसे नेक,दयालु ,दानी और प्रेमी लोग भरे पड़े हैं जिन के असीम कृपा और अतिथि सेवा का हम पूरे तौर से कभी भी बखान नहीं कर सकते हैं । एक दूसरे के दुख को वे ऐसे बांट लेते हैं कि जैसे यह उनका ही दुख हो । धन्य है वैसे कृपालु जन जो एक अतिथि को भगवान का रुप समझते हैं और उनकी सेवा में जुट जाते हैं । मनीष के परिवार की जो भी सेवा सत्कार वहां हुई उसका वर्णन करना कठिन ही नहीं बल्कि बिलकुल नामुमकिन है ।

धीरे धीरे छः महीने बीत गये और मनीष का स्वास्थ्य अब सुधर रहा था । अमेरिका के ड़ाक्टरों का जाने का समय हो गया था पर वे सुनीता की लगन, प्यार और पतिव्रता धर्म को देख सुन कर उससे एक वादा कर गये थे । उनके जाने के कुछ ही समय बाद अमेरिका से खबर आई की मनीष को वहां के एक बहुत प्रसिद्ध कैंसर के सेन्टर में इलाज के लिये दाखिला मिल गया है ।

इस सहूलियत और मौके से लाभ उठाना जरूरी हो गया था और हिन्दुस्तान के चिकित्सक मनीष के सुधरते हालत से बहुत खुश थे । शायद इसीलिये वे उसके जाने की इजाजत और प्रबन्ध करने में तनिक भी नहीं हिचकिचाये ।

सुनीता और मनीष अपने माता-पिता के साथ उन सब दयावान भारतियों और सेवा से भरपूर मेहनती हिन्दुस्तानियों से विदा लेकर और उन्हे कोटि-कोटि धन्यवाद देते हुये अमेरिका के लिये प्रस्थान कर गये । यहां मनीष की अंतिम चिकित्सा की गई और कुछ ही दिनो में वह पूरे तौर से ठीक होकर अपने घर अपने खुशी परिवार के साथ रहने मोड़ेस्टो आ गया ।

आज सुनीता और मनीष के शादी की पहली सालगिरह है । सुनीता के माता-पिता, शंकर और पारो, वहां आकर सोने पे सुहागा का काम कर दिये हैं । इस जश्न में खुशी ही खुशी नज़र आती है । जलसे में सभी लोग मनीष और सुनीता को बधाईयां दे रहे हैं और पार्टी का सही लुत्फ उठा रहे हैं । बाजे बज रहे हैं, नाच-गाना हो रहा है, गुफतगू हो रही है और कई भाषण भी होने को थे ।

सुरेश और ललीता ने अपने सभी मेहमानों को सम्बोधित करते हुये कहा, “दोस्तों ! हमारे परिवार की कहानी कई महान धार्मिक संस्कारों, नेक कुरबानियों और अच्छाईयों से सुसज्जित है इसलिये आज हम उस परम पिता परमेशवर को कोटी बार प्रणाम करते हैं और धन्यवाद देते हैं जिनकी असीम कृपा से आज हम सब उस भयंकर तूफान से बच निकले हैं । ”

सुरेश सुनीता को अपने पास बुलाते हुये फिर कहना शुरु किया,“यह हमारे घर की लाज है । जिसे हम सुनीता कहते हैं वो हमारी बहू ही नहीं, मनीष की पत्नी ही नहीं पर इस युग की सती सावित्री है ।” तालियों से घर गूंज उठा । सुनीता की आखों में कितने प्रकार के आंसू थे । थोड़ी खुशी के, कुछ गम के और कुछ कीमती मोतियों को तो वह चीन्ह ही नही पा रही थी ।

“मेरे प्यारे मित्रों ! आज से एक साल पहले इस परिवार पर एक बड़ी जबर्दस्त बिजली गिरी थी । हमारे इकलौते पुत्र मनीष को ड़ाक्टरों ने केवल थोड़े ही दिन के मेहमान बनाकर सुनीता के झेली में ड़ाल दिया था । यह हमारा अहोभाग्य है की हमारी बहू सुनीता ने मनीष को यमदूत के पंजे से छुड़ाकर हमारे परिवार की शान और आन बढ़ाई है । हम धन्य हैं ऐसी बहू पाकर जिसने जमीन आसमान एक करके कई ड़ाक्टरों और मशहूर अस्पतालों की मदद से मनीष के कैंसर का सही इलाज कराया है । ”

सुरेश का गला रुंध गया था पर उसकी बातें अभी खत्म नहीं हुई थीं । वह आज अपने दिल का दारुण दर्द और मन की मार्मिक मंथन सबके सामने रखने का ठोस प्रयत्न कर रहा था । वह शायद सबको यह बता देना चाहता था की उसके परिवार में सुनीता का आ जाना एक ईश्वरीय चमत्कार था, एक बहुत बड़ा अलौकिक कर्म ठहरा । एक वरदान था जिसके पवित्र प्रसाद का मीठा स्वाद वे सब चख रहे थे ।

सुरेश कहता गया और उपस्थित लोग सुनते गये । “आज से हमारा परिवार तीन मद पर अमल करेगा । दान, दया और दमन । हम बिल किलंटन की पुस्तक मंगिबिंग्र का सही मतलब दुनिया को बता देंगे । दान की महानता हमने अपने समधी और समधिन श्रीमान और श्रीमती शंकर और पारो से सीखी है जिनके सौजन्य से आज हमारे घर में सुनीता जैसी लक्ष्मी का पदार्पण हुआ है । इस कन्यादान से हमारे भाग जगा दिये हैं । यही नहीं कई लोगों ने हमारे दुख में हमें अपना बहुमूल्य समय और हुनर की दान देकर कृतार्थ किया है । उनका हम तहेदिल से शुक्रिया अदा करते हैं । ”

सुरेश यही समझने लगा था कि दयावान होना, जनसमूह पर सहानुभूति दिखाना और किसी पर अनुकम्पा प्रकट करना तब तक

नहीं हो सकता है जब तक हम अपने आपको भगवान के सही चरणों में न सौंप दें। सब कुछ मिल जाने के बाद उसको ऐसा लग रहा था की उसका परिवार अब दान, दया और दमन को अपना लक्ष्य बनायेगा।

सुरेश कहता रहा, " घमण्ड, शेखी और दम्भ हमारे दुखों के कारण हैं और हम इन बुरी भावनाओं से जितना दूर रहें हमारे परिवार की उतना ही भलाई होगी। आज से हम यही प्रचार करेंगे जिससे समाज में सभी लोग इन सब बुरी भावनाओं का दमन कर सकें। हम अपने पुत्र को मौत के इतने नजदीक से निकाल लाये हैं इसलिये हम आज इतने उल्लास के साथ कह रहे हैं की हम जाग गये हैं और जागते रहेंगें। यही समझ लीजिये की हम दानव से मानव बन गये हैं और देवता बनने की कोशिश करते रहेंगे। "

पंडित मथुरा महाराज ने एक प्रार्थना की और उस स्थान के बाल समाज के बच्चों ने एक गीत गाया। "*अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में, है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में* "

जश्न समाप्त हुआ। सब लोगों का विसर्जन हुआ। घर में शान्ति का वातावरण छाया हुआ था। मनीष सुनीता के साथ पलंग पर बैठा था। उनके प्यार के बन्धन ने आज अपना ऊंचा संस्कार सामने रख ही दिया। वे एक-दूसरे को बड़ी देर तक देखते रहे और मनीष ने सुनीता को गले से लगाकर कहा, " सुनीता, तुमने अपना सब कुछ हम पर अर्पण करके हमें एक ऐसे पवित्र बन्धन में बान्ध लिया है जिससे हम कभी भी छुटकारा नहीं चाहेंगे। हमें ऐसे ही बान्धे रखना जिससे हमारे बाकी जीवन मे केवल सुख, खुशी और प्यार भरा रहे। "

सुनीता और मनीष सभी प्रेम करने वालों के लिये एक नमूना बन गये थे । उन्हे एक दूजे की उतनी की चाह और लगन लगी रहती थी की जितना वे अपने माता-पिता का देखभाल और ख्याल रखते थे । यह राम और सीता की जोड़ी दशरथ और कौशल्या के राज्य में अमन चैन से रहने लगी थी ।

उनके प्यार के बन्धन का एक और फल मिला । एक नन्हा सा मनीष,जो आजा-आजी को प्राणों से भी प्यारा था, अब उनके आंगन में खेलने लगा था । सुमित को देखकर उन सबको ऐसा लगता था जैसे स्वर्ग यही धरती पर ही है जहां अशक्ति, अज्ञान और अभाव का कोई नाम और निशान नहीं था । केवल दान, दया और दमन ही इस खुश परिवार का नारा था ।

१२

गांव की दिवाली

मीना एक दस साल की बच्ची थी जो गांव के एक मामुली गरीब किसान की बेटी थी । मनोज उस का आठ साल का भाई था । उन के माता पिता गिरधारी और उस की पत्नी लक्षमी गन्ने, धान, मकई और अन्य अनाज की खेती कर के अपना गुजर बसर साधारण तरह से करते थे । दोनो बच्चे पास के स्कूल मे पढ़ते थे ।

इस परिवार की कुछ खास खूबियां थी । पहले तो वे अपने घर आंगन और खुद की सफाई पर बहुत ध्यान दिया करते थे । दूसरी वे अपने पास पड़ोसियों से बड़े प्रेम से मिलते जुलते थे । उन के पड़ोसी सेठ चमनलाल की दोस्ती बहुत जंचती थी । तीसरा वे अपने पूजा पाठ बड़े लगन और भक्ति से किया करते थे ।

ऐसे सज्जन लोग इस कलियुग मे बहुत कम मिलते हैं । जो भी कुछ उन के पास होता था वे उस मे पूरे तौर से संतुष्ट होते थे । *संतोष्म परम सुखम* ही उन के परिवार का एकमात्र नारा था । उन का घर और रहन सहन साधारण जरूर था पर जब कोई त्योहार आ जाता

था तब वे उस को बड़े प्रेम और शौक से मनाते थे । सफाई, सजावट, खान-पकवान और पूजा पाठ को बड़े लगन से करते थे ।

सेठ चमनलाल और गिरधारी की मित्रता के बीच कभी भी अमीर गरीब की फर्क नहीं रहती थी । चमनलाल और उन की बीबी लीला के भी दो बच्चे थे । अनिल और अमरा वही पाठशाला मे पढ़ते थे जहां मीना और मनोज जाते थे । उन बच्चों की भी खूब निभती थी कयोंकि वे सब एक ही उमर और खयाल के थे ।

हर रविवार को ऐ दोनो परिवार एक घर पर बटुर कर युपयुक्त पूजन किया करते थे । बच्चों को भजन कीर्तन और शास्त्रों की ग्यान मिलती थी । अच्छे अच्छे पकवान बनते थे और उन को पूजन के प्रसाद स्वीकार करने के बाद बड़े प्रेम से सब मिल कर खाते थे । इस मिलन और सतसंगत से दोनों परिवार के बीच श्रेष्ट आचंर और अति उत्तम विचार पैदा होते थे ।

इस वर्ष की दिवाली आने ही वाली थी और गांव के सभी लोग इस पवित्र त्योहार की तैयारी मे लगे थे । चमनलाल ने इस साल अपने पत्नी के साथ गांव के सभी लोगो के घर पधार कर उन सब को अपना आर्शीवाद दिया और सभी बच्चों को खिलौने बांटे । यह उन की उदारता और बड़पन थी ।

दीवाली की रात पूरे गांव को सब लोग रंग बिरंगे दीपों और बत्तियों से जगमगा दिये थे और बड़े प्रेम से अपने अपने घर पर पूरे परिवार के साथ लक्षमी पूजन किये । दूसरे दिन गांव के सब लोग सेठ चमनलाल के घर जा कर उन को उन के उदारता के लिये

धन्यवाद दिया और उन के परिवार के साथ मिलजुल कर नये साल की जशन मनाया ।

सब बच्चों को एक जगह देख कर गिरधारी और लक्ष्मी भी बड़े खुश नज़र आ रहे थे । सब बच्चे सेठ चमनलाल के आंगन मे खेल कूद रहे थे । इस के बाद लक्ष्मी ने गांव के अन्य सहेलियों के साथ मिल कर एक सुन्दर नृत्य किया और सब का मन बहलाया ।

गिरधारी का तो कहना ही कया था । उस ने बड़े प्रेम से अपने और चमनलाल के चारो बच्चो को ले कर सब लोगो को कई भक्तिपूर्ण भजन कीर्तन सुनाया । मीना और मनोज तथा अनिल और अमरा भी अपने एक लक्ष्मी माता पर निर्धारित नाटक को प्रदर्शन कर के सब का मन मोह लिया था । ऐसे ही सुन्दर माहोल मे पूरे गांव के लोग खुशी से झुम रहे थे ।

उस दिन गांव के सब लोग मिल कर कई मेवा मिष्ठान और पकवान बना कर बड़े प्रेम पूर्वक एक साथ बैठ कर भोजन किया । सभी लोगों का आनन्द और खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा । शाम हो चली थी और सब लोग अपने भविष्य के शान्ति के लिये प्रार्थना किये और अपने अपने घर जाने को तैयार हुये । तभी चमनलाल की बीबी लीला ने अपने अंतिम भाषण से जैसे सोने मे सुहागा मिला दिया था ।

"भाईयो और बहनो, बच्चे और बुजुर्ग, आप सब को नया वर्ष मंगलमय हो और आप सब का जीवन अति शान्तिपूर्ण हो । आप सब के लिये यही हमारे परिवार की शुभकामना है । मुझे पूरा विशवास है कि हमारे रहन सहन को देख कर लक्ष्मी माता के

आसीम कृपा हमारे गांव के सभी परिवार के जीवन पर होता रहेगा ।

हमे बहुत खुशी हो रही है कि आज हम सब गांव वाले एक मंच पर बैठ कर जहां धनी और गरीब की दिवार को तोड़ दिया है वहीं हम ने अपने बच्चों को यह दिखा दिया है कि परसपारिक प्रेम, भक्ति और लगन मे कितनी ताकत होती है, कितना सुख मिलता है । हमारे गांव की एकता और प्रेम भाव को देख सुन कर अन्य लोग भी हमारी अनुकरण करते हैं । इस का हमे हरदम याद रहना चाहिये तथा अपने सभी काम को बड़े सावधानी से करना चाहिये ।

हम ने मिल जुल कर अपने घर आंगन, गांव गली तथा अपने तन, मन, दिल और दिमाग को इतना साफ सुथरा कर लिया है कि हमारे सब प्रकार की समाजिक, धार्मिक, आर्थिक और शारीरिक बिमारियां भगवान के दया से हम से सदा के लिये दूर होती चली गई हैं । आज हम एक अति अमन चैन का जीवन व्यतीत कर रहे हैं । आप सब धन्य हैं । आप सब की जय हो !

आज के इस नये साल के उपलक्ष पर मैं आप सब से अनुरोध करती हूँ कि हम सब अपने गांव को एक ओर भी सुखी, खुशी, शान्तिपूर्ण और अमनचैन की अनुपम नमूना बना कर दुनियां को यह दिखा दें कि आज भी इस कलियुग मे सच्चे, सुन्दर सौभाव वाले और अच्छे गुणो से परिपूर्ण लोगों का निवास है ।

हमारे एकता मे बल है । हमारे मेल भाव मे आदर सत्कार भरा है । हमारे लोगों मे मनुष्यता के वह सभी गुण हैं जिन पर हमे गर्व है । हमारे नौजवान और नवयुतियां एक दूसरे से बहुत ही समझदारी से

पेश आते हैं । हमारे बच्चे बड़े मेहनती और शिक्षित हैं । हम बड़े लोग एक दूसरे की मदद करने को सदा उत्सुक और तैयार रहते हैं ।

हम और हमारे बच्चे दिवाली और नये वर्ष की असली मतलब को भलिभांति समझते हैं । हम मानव एकता के पुजारी हैं , हम दया, दान और दमन का ज्ञान रखते हैं , हमारे मे भक्ति भी है और जीने की शक्ति भी है , हमारे सभी आचार विचार श्रेष्ट हैं तथा हम सब मिल जुल कर आगे बढ़ने के लिये आतुर हैं । यही सब हमारी सब से बड़ी खूबी है । इन उमदे तौर तरीकों को कायम रखना हम सब का फर्ज बनता है ।

आज जब हम अपने अपने घर लौटे तो एक बात को बहुत ठीक से याद रख कर अपना जीवन निर्वाह करने का प्रयत्न करे । मेहनत और मोहबत, नियम और संयम, मेल और मिलाप तथा सोच और विचार से ही हम को हमारे अपने तथा अन्य लोग हम को अच्छी तरह से पहचानते हैं । हम सब कोशिश कर के हर रोज अपने घर आंगन, गांव और परिवार मे दिवाली और नये साल की कीमत को कायम रखने की संकल्प करें । यही हमारे लिये लाभदायक और कल्याणकारी होगी । धन्यवाद । ”

लीला की बातो को सुन कर सब की तालियों और जय जय कार से वहां का वातावर्ण गूंज उठा और सब ने बड़े प्यार और श्रद्धा से अपने अपने धाम को प्रस्थान किया ।

रास्ते मे घर जाते हुये सब बच्चे, बूढ़े और जवान लोग यही सोचते रहे ।

काश इस तरह के त्योहार सभी स्थान पर मानाये जाने लगे तब तो हमारे गांव, घर ओर जीवन मे खुशी ही खुशी भर जायेगी । इसी धरती पर हम सब स्वर्ग का अनुभव करने लगेंगे ।

मीना और मनोज तथा अनिल और अमरा एक साथ बोल उठे ।

जब दिल मे लगन हो सच्ची तो हम सब कुछ भी कर सकते हैं तथा हमारे लिये सब कुछ बिलकुल सम्भव हो सकता है । इस गांव की जय हो !

इस गांव की दिवाली और नये साल के जशन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं । जरा इन विचारों पर फिर से ध्यान दे कर देखिये तब आप का घर आंगन, गांव गली और सभी सड़क मैदान भी इस दिवाली और नये साल को खुशी से भर देगा ।

आप सब को यह दिवाली शुभ हो और आने वाला नया साल मंगलमय और कल्याणकारी साबित हो । यही हम सब की मनोकामना है । याद रहे कि हमारे हर त्योहार मनाने का एक खास मकसद होता है और वह है आपसी प्रेम भाव, समाजिक अमन चैन और विश्व शान्ति ।

याद रहे कि आज भी हमारे कई गांव मे कितने सेठ चमल लाल और लीला तथा बहुत गिरधारी और लक्ष्मी जैसे व्यक्ति समाज कल्याण मे जुटे हैं । उन सब को हम तहे दिल से शुक्रिया अदा करते हैं तथा अभिवादन करते हैं और यही आशा करते हैं कि हमारे हर गांव और घर नगर मे ऐसे लाखों लोगों की बहुतायत हो तथा बढन्ती होती रहे जिस से हमारा भविष्य उज्वल हो और हम शान्ति

पूर्वक अपने जीवन की निर्वाह कर सकें । इन के करकमलो के जरिये ही हमारे बच्चे मीना, मनोज तथा अनिल और अमरा के तरह शिक्षित, भक्तिमान, गुणवान और श्रेष्ट आचार वाले बनेंगे ।

तभी हमारा देश, हमारा भेस और रहन सहन परोपकारी, क्रियाशील, कलात्मक, संतुलित, प्रगतिशील और कुशल होगा और तभी हम अपने सभी त्योहारो को उचित रूप से मनाते रहेंगे ।

हर साल आप सब को दिवाली शुभ हो ।

१३

उस का रोना गजब हो गया

एक कलपित व्यंग्यात्मक कहानी

आप शायद मेरे पड़ोसी को जानते हैं। उन्हें मैं चालिस सालों से हंसी-मजाक करते सदा हंसते हुये देखते आया हूं। अकल और शकल से महेश जी पूरे शेखचिल्ली या मसखरे लगते हैं। आज के तनावभरे और व्यस्त जीवन में भी उन्हे हंसने-हंसाने की सूझ लगी रहती है। अभी कल ही की बात है कि उन्होंने मुझे एक अपना छोटा सा मजाक सुनाया था और मैं हंस पड़ा था।

एक बड़े राजनीतिज्ञ, लालू प्रसादजी, अपने मोटर में प्रचार करने निकले थे कि उनके ड्रायवर से एक सुअर के बच्चे को धक्का लगा और सुअर का बच्चा मर गया। लालूजी ने गाड़ी रुकवाई और ड्रायवर से कहा की जाओ और पता लगाओ की यह किस का सुअर का बच्चा था। मैं उनसे माफी मांगना चाहता हूं। ड्रायवर पास वाले गांव में गया और थोड़ी देर में फूलों की माला पहने और माथे पर टीका लगाये लालू के पास लौटा। " लालूजी मुझे तो कोई नही मिला जो इस सुअर के बच्चे का मालिक हो पर लोगों ने मेरी बातें सुनते ही मुझे माला पहनाई, टीका लगाया और कई नारे लगाये।" तुमने उनसे क्या कहा था। मैंने तो यही कहा,"मैं लालू प्रसाद जी का ड्रायवर हूं और मैंने सुआर के बच्चे को मार ड़ाला। "

महेश जब दूसरे दिन फिर आ धमका तो मैं उस की एक और मजाकिया सुनने के लिये तैयार हो गया था पर आज वह कोई दूसरे मूड में था और बोल उठा, “रामू भाई, आज आओ हम थोड़ा सा रो लें क्योंकि बीबी मायके चली गई है। और मेरा समय ऐसा है की ससुरा कटता ही नहीं है। ”

महेश की बातें सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ । सब दिन हंसने वाला और सबको हंसाने वाला आज क्यों रोने की बात कर रहा है। मैंने साहस करके पूछा, “महेश भईया, आज यह उलटी जुवार कैसे चढ़ रही है। सदा हंसने-हंसाने वाला आज कैसे रोने की बात कर रहा है ? तुम तो तब नहीं रोये थे जब तुम्हारी पहली पत्नी गुजर गई थी और तब भी शायद न रोए थे जब तुम्हारा बाप मर गया था। पर आज तुम से रोने की बात सुनकर ताज्जुब हो रहा है। अजीब बात है, तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ? ”

महेश के चेहरे पर एक नकली हंसी आ गई , “अरे तुरांगा ! आज ही हम अपना पूरा मेडिकल चेकअप ड़ाक्टर पटेल से कराके आये हैं। कोई गड़बड़ी नहीं है। दिल साफ है, मन ठीक है, तन चुस्त है, धन की कमी नही है, खान-पान भी चौकस है और दिमाग तो चरफर है । सब कुछ नार्मल है फिर भी पता नहीं काहे को कल सांझ से हमें रोने का दिल कर रहा है । मैं इसलिये नहीं रोना चाहता हू कि मेरी बीबी मायके चली गई है । मैं तो चाहता हूँ की जब मैं रोऊं तो कोई सुनने वाला हो इसीलिये मैं तुम्हारे पास चला आया। दुख में दोस्त ही काम आते है। ”

“महेश भाई, इस आर्थिक, मानसिक और राजनीतिक कठिनाई के समय तो सभी को रोना आ सकता है पर मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है की तुम्हें आज रोने की क्या आवश्यकता पड़ गई है ?”

"धत तेरे की ! हम तो समझे हैं की आज के बिगड़ते बाज़ार और वातावरण से आप भी हैरान हैं और मेरे साथ थोड़ी देर रोकर दिल को शान्त कर लेंगे पर मालूम पड़ता है तुमको गैस, पानी, तेल का भाव नहीं मालूम है । साल में इन सबके दाम तीन चार बार चढ़ते है और उतरने का नाम ही नहीं लेते । ऐसे हालात को देखकर भला कौन मूर्ख है जो खुलकर हंस सकता है ?"

"सभी नगर और जिलों में मार-काट हो रही है, चोरी ड़कैती बढ़ रही है, सबकी शान्ति भंग हो रही है और हमारे नेता सब सुख की नींद में सो रहे हैं । इतना ही नहीं, हमारे खाने पीने की चीजों का दाम आसमान पर पहुंच चुका है और उसके पार भी जा सकता है, तब हम सब भूखे मरने लगेंगे । यह सब हंसने की बात तो नहीं हो सकती है । यही कुछ हमारे रोने के कारण हैं पर कितने और भी होंगे । "

" पति तो पहले पत्नि को पीटता ही रहा पर अब पत्नि पतिदेव को मार रही है, बेटे-बेटियां मां-बाप का खुलेआम अपमान कर रहें हैं, परिवार बिखर रहे हैं, भाई-भाई में बैर बढ़ रहा है और हमारे नये जमाने की बहनें हमारे धर्म पर धब्बा बनती जा रही हैं । अगर ऐसा हो रहा हो तो हंसना किस बेवकूफ के चेहरे पर देखने को मिलेगा ?"

" लोगों का अपहरण हो रहा है, बेकसूर नागरिक पिट रहे हैं, नेता कमीने काम करके बच जाते हैं, न्यायधीश घूसखोरी कर रहे हों और बेकुसूर जनता को सजा दे रहे हों और गरीबों पर अत्याचार होते हों तब भला किसको रोना नहीं आयेगा ? "

" सारी दुनिया आतंकवादियों के ड़र के मारे कांप रही है, आतंकवादी जगह-जगह विस्फोट करके जीवन और मकानों का नुकसान किये जा रहे हैं, हवाई जहाज, रेलगाड़ी और अन्य सवारी

में यात्रा करने से डर लगने लगा है और हमारे देश और उसके नेतागण इन सबके खिलाफ कोई ठोस कदम उठाने से डरते हैं। तब आप ही बताइये हम रोये नहीं तो क्या हंसकर अपना दिल बहलायें ?"

" मेरे यार, शायद गालिब ने ठीक ही कहा था । *कभी खुद पर कभी हालात पर रोना आया, बात निकली तब हर बात पर रोना आया ।* हम तो कहते हैं की हमें अपने आप पर और देश के बिगड़ते हुये हालात पर जोर-जोर से रोना चाहिये जिससे मन को सुकून मिले । हमको रोते देखकर शायद हंसने वाले नेता और उनकी सरकार कुच्छ भलाई कर सके।"

मैं तो चुपचाप महेश की बातों को सुनता रहा और उसके रोने के सही कारणों पर अमल करने लगा । फिर भी मैं ने उससे एक अंतिम सवाल कर ही लिया," महेश बाबू , अब हम को क्या करना चाहिये ?"

" ढिंढोरा पीटो और सबको रोना सिखाओ जिससे सुनने वालों के कान के तले जूं रेंगे और वे हमारे जीवन और हमारे वातावरण को सुधारने की कोशिश में लग जायें। जीवन में जो आदमी रोना नहीं जानता उसका जीना बेकार है। अब इस संसार में बिना रोये कुच्छ मिलने वाला नही है। आप तो जानते हैं की जब तक बच्चे रोते नहीं तब तक उन्हें मां खाना नहीं देने वाली है। पर यह भी याद रखना,

रोऊं मैं सागर के किनारे और सागर हंसी उड़ाये ,

इसलिये जब रोना है तो इतना जोर से रो की सारी दुनियां सुन सके और वे आपकी हंसी नहीं उड़ा सके पर कुच्छ सही और लाभ वाली चीज़ करके दिखा सके।"

" रामू भाई, आप ने कभी रोया है ? उसके बारे में सोचिये और फिर से रोईये पर इस बार ऐसा रोना की आपके पड़ोसी ही नहीं पर पूरे मुहल्ले और पूरी दुनियां के लोग भी सुन सकें। याद रहे की माता पार्वती भी रो पड़ी थीं जब शिवजी ने उनके रचे हुये पुत्र का गला काट कर हाथी के सिर लगाया था।

श्री रामचंद्र तो कई बार रोये थे। सीता माता के हरण के बाद, लखन के मुर्छित होने से, धोबी के इल्जाम पर और सीताजी के धरती मे समा जाने के बाद भी श्री रामजी रोये थे। पर उनका रोना और आज के हमारे रोने मे जमीन-आसमान का फर्क है।"

" हमें एक और घटना याद आ गई। श्रीकृष्ण ने अपने जन्म के समय जब रोने की मुद्रा बनाई तब यशोदा माता ने उनके मुंह पर हाथ रखकर कहा था : " मेरे लाल रोना नहीं, तुम्हारे रोने की आवाज़ सुन कर पहरेदार जाग जायेंगे और कंस आकर तुमको भी ले जायेगा। अगर बालक रो देता तो आज हमारे शास्त्र ही बदल जाते। "

इतना कहकर महेश मेरे कन्धे पर अपना सर रखकर बड़ी देर तक रोता रहा।

"लखन रोकर देख लो, क्योंकि रोता है सारा संसार।

जो न रोया आज तक, यही समझो की वह है बेकार॥ "

आज के लिये इतना ही !

अब रोना बस करो और अपनी बिगड़ी बनाने की कोशिश करो !

१४

मथुरा के कंस बने मेहमान हमारे !

एक व्यंग्यात्मक कलपित कहानी

पिछले शुक्रवार को शाम के पूजा-पाठ और भोजन के बाद सब दिनों की तरह मैं अपने बरामदे में बैठकर एक कप चाय की चुस्की ले रहा था। शायद कुछ लिखने की सोच रहा था कि आगे दरवाज़े पर एक हल्की सी दस्तक सुनाई दी। मैंने सोचा हवा के झोंकों ने या चूहों की दौड़धूप ने इस आवाज़ को मेरे कानों तक पहुंचाया होगा। यही सोचकर मैं धीरे-धीरे अपनी चाय की चुस्कियां लेता रहा और आलसियों की तरह वहीं बैठा रहा।

थोड़ी देर में इस बार दरवाज़े की घण्टी बज उठी। मैं उठ खड़ा हुआ, दरवाज़ा खोला और बाहर निकला। वहां खड़े हुये व्यक्ति को देखकर मेरे होश ही उड़ गये थे। मैंने अपने सामने मथुरा नरेश राजा कंस को खड़े देख अवाक सा रह गया। बोली वाणी सब बन्द हो गई थी।

इससे पहले की मैं कुछ कहूं, वह स्वयं ही बोल पड़ा, “अरे भाई ! अन्दर आने को नहीं कहोगे ? सुना है आप कलयुग के लोग अतिथि को भगवान मानते हो ।”

मैं ने सहमति से सर हिलाया और कंस को अन्दर आने को कहा । वे घर के अन्दर आकर आराम से बैठ गये । मेरे पास इसके सिवाय और कोई चारा भी नहीं था । जब उन्होने बड़े-बड़े योद्धाओं के छक्के छुड़ा दिये थे तो मेरी तो उनके आगे कोई गिनती ही नहीं थी ।

फिर भी मैंने कुछ हिम्मत बांधकर उनसे पूछ ही लिया, “देखिये हम तो श्रीकृष्ण के भक्त हैं और आप हमारे यहां आये हो, यह बात हमारे समझ में नहीं आती !”

कंस जोर से हंस पड़ा, “देखिये भाई साहब, आप कलयुग के लोगों में इतना कुकर्म है और बुराइयां हैं कि जब आप कृष्ण का नाम लेते हो तो आप लोगों के दिल और दिमाग में कंस का नाम आ जाता है । मेरा भांजा कृष्ण तो आपकी झूठी पुकार को सुन नहीं पाते हैं पर उनकी जगह हमें ही आना पड़ता हैं ’ । अब लो मैं आ गया जितने भी खराब काम करने को हैं मुझे बता दीजिये और मैं एक क्षण में कर दूंगा । ”

“कंस जी, यह बताइये की आप क्या-क्या कर सकते हैं ?” मैंने पूछा ।

“ अरे भाई, इतिहास और आपका शास्त्र गवाह है कि मैं अपनी बहन बहनोई को कारागार में बन्द करके उनके सात नवजात

शिशुओं की हत्या करके अपनी मौत से बच सकता हूं। " कंस एक सांस में सब कह गया।

"पर यह तो महा पाप होगा, जनाब। " मैंने उसे याद दिलाया।

" क्या हमारी मौत की बिजली जो धमकी थी वह पाप नहीं था ? ऐसे बात करते हो जैसे मेरे मारने वाले की सातों खून माफ कर दी गई
हो। " कंस ने गुस्से में आकर कहा। मेरा तो ड़र के मारे जुलाब ही होने वाला था पर इस वक्त कंस ने मेरा चाय का कप उठाकर सब चाय एक ही घूंट में पी गया और मैं देखता रह गया।

मैं सोचने लगा कि यह मुसीबत मेरे ही ऊपर क्यों आ पड़ी है की आज मेरे घर आंगन मे कृष्ण की जगह कंस का अवतार हुआ है। वह जैसे मेरे मन की बात सुन रहा था चाय का कप मेज़ पर रखकर एक लम्बी सांस लेकर फिर शुरु हुआ, "देखिये जनाब, मुसीबत तो आप ही बुलाते हो और मुझे बदनाम करते हो। जब सतयुग की श्रृद्धा भक्ति से कृष्ण को पुकारोगे तभी वे दौड़ते आयेंगे और अगर मैले मन से आराधना करोगे तो तुमको हम जैसे दुष्टों से ही काम चलाना पड़ेगा। समझ में आया ? "

अब बात समझ में न भी आया होता तो भी हम उसके सामने कैसे कहते। बस सिर हिला कर हां में हां मिलाते रहे। कंस चुप ही नहीं हो रहा था और हमारे ही घर में हमारी ही बुराई किये जा रहा था। हम लाचार होकर और डर के मारे सब सुन रहे थे।

"हमने तो न चाहकर भी केवल कुछ ही छोटी मोटी ही गलतियों को अपने जीवन काल में की थी और उनकी कड़ी सजा हम आज

भी भुगत रहे हैं। पर तुम लोग इस धरती के बोझ बन बैठे हो और हजारों पापों और कुकर्मों को करने के बाद भी आजाद घूमते फिरते हो। तुम लोगों को तो शायद कोई शर्म लाज है ही नहीं। " कंस की इन कड़वी बातें सुनकर मैं हैरान हो रहा था और उसे फटकारने को दिल कर रहा था। पर जब गुस्से वाला हाथी वार कर रहा हो तो ताकत की नहीं तरकीब की जरुरत पड़ती है। यही सोचकर मैं कोई कुटिल नीति अपनाना चाहता था।

" कंस जी, आप तो बहुत बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हो लेकिन तुम तो राजा जरासंध की दो बेटियों से उनकी मर्जी के बिना और जबर्दस्ती विवाह कर ले आये थे। यह कहां का न्याय था ? " मैंने अपने दिल की बात पूछ ली।

कंस की गुस्से की सीमा फूट चुकी थी। वह बड़े जोर से गरजा और अपनी सफाई देने लगा, "मेरे यार, इस छोटी सी बात को तुम समझते क्यों नही हो ? मेरे में वह शक्ति थी की मैं कई स्त्रियों को रखकर उन्हे सन्तुष्ट कर सकता था पर इस धरती पर तो आदमी इतना कमजोर हो गया है कि वह एक ही पत्नी की इच्छा की पूर्ति नहीं कर पाता है और उसकी स्त्री दूसरे के साथ भाग जाती है। मैंने तो उन दोनों बहनों का उद्धार किया था। "

ऐसी भद्दी बात को सुनकर मेरा खून खौलने लगा था और मैंने उस पर अपना हथौड़ा चला ही दिया ," पर तुमने तो अपने पूज्य पिता के राजपाट को छीन लिया था। इतना बुरा काम करते हुये तुम को शर्म नहीं आई ?"

"हद करते हो दोस्त मेरे ! तुम्हारे इस संसार मे कितने ऐसे असभ्य लोग हंस रहे हैं हमसे भी बुरे काम करके पर मैं तो उनकी

शिकायत अपने भतीजे कृष्ण से नही करता । जहां तक मेरे पिता का सवाल है वह बात तो सबके समझ में आ जाना चाहिये कि वे महारानी एलिजबेथ की तरह बूढ़े हो चले थे और राजगद्दी पर जमे रहना चाहते थे ।

राजकुमार चार्ल्स तो ऐसा न कर सका पर मैं इस में कोई दिक्कत की बात नही देखता हूं । और फिर मजे की बात तो यह है की राजा उगरसेन मेरे सगे पिता नही थे । मैं तो असल में एक राक्षस का बेटा हूं जिसने मेरी माता पदमावती को धोखा देकर उनके साथ मेरे पिता जैसा व्यवहार किया था । इसलिये आप हमसे कोई अच्छी उम्मीद तो रख ही नही सकते हो ? आखिर में वह सब राजपाट हमारा ही तो होता फिर मैं इन्तज़ार क्यों करता । ”

मुझसे अब सहा नही गया “कंस जी तब तो बड़ा अच्छा हुआ की मेरे ईश्वर श्रीकृष्ण ने तुम्हारा वध कर ड़ाला था नही तो तुम हमारे जीवन को और बड़ा नरक बना देते . . । ”

अब तक कंस की आंखे लाल हो चली थी और उसने अपनी तेज तलवार निकाली और मुझ पर वार करने ही वाला था कि पुलिसवालों ने श्रीकृष्ण का रुप रखकर उसे गिरफ्तार कर ले गये । हमें इस कलयुग में ऐसे अतिथि से बचकर रहना चाहिये नहीं तो हमारा धर्म, कर्म सब नर्म हो जायेगा ।

१५

शैतान से सौदा फरिशता का ज्ञान

एक और कल्पित छोटी कहानी ।

नन्दू एक बहुत ही समझदार और सुन्दर स्वाभाव का लड़का था । वह सब दिन अपने भजन कीर्तन मे लीन और मगन रहता था । नन्दू अपने बड़े बूढ़ों की बहुत आदर सत्कार करता था । अपने माता पिता को तो वह भगवान स्वारुप ही मानता था । नन्दू का यह अटल विशवास था कि उस के अच्छे आचरणों और कायों के कारण उस को ईशवर का असीम आर्शीवाद सदा मिलता रहेगा लेकिन उस को बहुत दुख हुआ उस दिन जिस दिन उस की मां उसे केवल सोलह वर्ष के उमर मे डाकटर के पास ले गई थी उस बुरे खबर सुनने के लिये ।

डाक्टर मनोज ने कहा, "नन्दू की मां, मुझे नन्दू के दिल के बिमारी के बारे मे बहुत सोच है पर मैं उस को ठीक करने के लिये अभी कुछ भी नहीं कर सकता हूं ।"

“आप ऐसा कयों कह रहे हो डाक्टर साहब ?” नन्दू की मां ने पूछा ।

“नन्दू की मां, यह बिमारी नन्दू को जन्म लेने से पहले आप के र्गभ मे हुआ था इसलिये न ही नन्दू और न ही आप इस को ठीक करने के लिये कुछ भी कर सकते थे । मैं नन्दू को अपने अस्पताल के मरीज़ो को सबर करने वाले सुचि मे कर दी है और जैसे ही हम को कोई दिल का दानी मिल जायेगा हम नन्दू के दिल को टरांस्पलान्ट कर देंगे । बिना उस के दिल को एक नये दिल से बदले नन्दू शायद ही अटठारह वर्षो तक ही जी पायेगा ।” डाक्टर मनोज ने समझाया ।

इस के बाद नन्दू और उस की मां संतोष कर के अपने घर चले गये । घर पहुँच कर नन्दू ने अपने पंड़ित पिता से एक सवाल किया, “पिता जी, मैं और आप इतना भक्ति करते रहते हैं और परमात्मा मे बहुत विशवास रखते हैं पर फिर भी उस ने हमारे साथ ऐसा कयों किया ? मेरे दिल को ही इतना बुरा बना दिया कि मैं अब केवल दो साल तक जी सकता हूँ ?”

“ बेटा, हम भगवान को अपने दुखों के बारे मे कोई दोष नहीं दे सकते हैं । हम उन के नेक इरादे पर शक भी नहीं कर सकते हैं और हम उन के दिल और दिमाग मे कया रहता है उस के बारे मे भी नहीं जान सकते हैं । ईशवर के विचार और इरादे बहुत ऊँचे और नेक होते हैं । उन के हावभाव और तरीके भी बहुत ही गहरे और दयालू होते हैं ।” पंड़ित जी ने कहा ।

“यह तो आप ने मुझे बड़े पते की बात बताई है पिता जी पर मैं भगवान से अपने बिमारी को ठीक करने के लिये कया मांग सकता

हूँ ? आप तो जानते ही हैं कि मैं उन का एक सच्चा भक्त हूँ और रातो दिन उन की अराधना करता रहता हूँ ।" नन्दू ने कहा ।

"भगवान अपने भक्तों से कोई सौदा नहीं करता है मेरे बेटे । सौदा तो केवल शैतान ही करते हैं । शैतान की हर मांग को पूरा करना साधारण मनुष्य के लिये बड़े मुश्किल की बात हो जाती है ।" नन्दू के पिता जी ने कहा ।

"पर मैं शैतान से सौदा करने के लिये तैयार हूँ पिता जी, बसरते मेरी बीमारी ठीक हो जाये और हम को जीने के लिये और भी समय मिल जाये । न मैं अभी मरना चंहता हूँ और न ही मैं किसी और के दिल को अपने अन्दर लगवाना चाहता हूँ ।" नन्दू ने अपने पिता से कहा ।

"थोड़े देर के लिये तुम सोचो बेटे कि तुम कया अजीब बात कह रहे हो । कया तुम जानते हो कि तुम कया कह रहे हो ? कहीं शैतान तुम्हारी बातों को सुन न रहा हो," पिता जी ने नन्दू को सचेत किया ।

"वह सुन लेता तो मेरा काम ही बन जाता, पिता जी । ओ शैतान ! आप मेरी बातों को सुन रहे हो न ? समय देख कर आ जाना । तुम्हारी सभी शर्तों को मैं मानने के लिये तैयार हूँ अगर तुम मुझ को और भी लम्बी उमर दिला सकते हो ।" नन्दू ने आकाश की ओर ताक कर कहा ।

शैतान तो नन्दू की सब बातें साफ साफ सुन रहा था कयोंकि नारद मुनी के तरह उस की भी आंख और कान सभी जगह पर लगे रहते हैं । उस रात को जब शैतान नन्दू के सोने वाले कमरे मे आया तब

नन्दू ने देखा कि वह एक बहुत ही छोटा आदमी का रुप बना रखा था ओर वह काले कपड़े को पहन रखा था । उस के सर पर एक नीली टोपी थी तथा वह बड़े प्यार से एक दोस्त और माल बेचने वाले व्यक्ति के तरह दया दिखा कर चिकनी चुपड़ी बाते कर रहा था । उस की लुभावनी बातों को सुन कर नन्दू मुग्ध हो गया और उस की सभी बातों पर अमल करने के लिये तैयार हो गया ।

“हमारे तुम्हारे बीच के सौदे को हम दोनों को भलिभांति समझ लेना जरूरी है, नन्दू भाई,” शैतान ने कहना शुरू किया । “मैं तुम्हारे दिल की बिमारी को बिलकुल ठीक कर दूँगा और तुम इस के बदले मे अपने मरने के बाद अपने आत्मा को मेरे हवाले कर दोगे ।”

नन्दू के पिता ने उस को गरुड़पुरान की दन्तकथाये सुनाई थी इसलिये वह जानता था कि शैतान बड़े चालाक होते हैं और अकसर इनसान को बेवकूफ बना कर उन को चकमा दे देते है । अगर हम होशियार न रहें तो शैतान के चाल से उस के जाल मे बुरी तरह से फंस जाया करते हैं ।

इसलिये नन्दू बहुत ही सतर्क हो कर उस शैतान के शर्त को फिर से उस के सामने दोहराया । “मेरे डाक्टर का कहना है कि मेरी मौत अटठार साल के उमर मे ही हो जायेगी पर मैं इस से ज्यादा जीना चाहता हूँ । मैं अपने *लाइफ स्पेन* याने *जीवन काल* को दुगना करना चाहता हूँ ।”

“तथास्तु ! मुझे तुम्हारी यह शर्त मंजूर है नन्दू । बस मरने के बाद तुम को अपने आत्मा को मेरे पास कर देना पड़ेगा ।” शैतान ने कहा ।

“जरा मुझ को ठीक से समझा दीजिये इस का मतलब । तुम हमारे आत्मा को कैसे ले लोगे ?” नन्दू ने शैतान से पूछा ।

“तुम मेरे ही साथ रहोगे जब तुम्हारे शरीर से तुम्हारा जान निकल जायेगा,” शैतान ने नन्दू को समझाया ।

“तुम्हारा मतलब है कि जब मेरी मौत होगी और जब मेरे शरीर को लोग अंतिम संस्कार कर देंगे तब मैं तुम्हारे साथ नरक के महान गर्मी मे रहने लगूँगा जहां मुझे सताया जायेगा और दुख दिया जायेगा ।” नन्दू चौंक गया ।

“ओ हो नन्दू ! तुम बहुत दिन अपने पिता के साथ मंदिर मे रहे और भजन कीर्तन करते रहे । तुम्हारे पंड़ितों ने तुम को नरक के बारे मे सब सच्च नहीं बताया है । नरक असल मे उतना खराब नहीं है जितना तुम्हारे पंड़ितों ने तुम को बताया है । हम अपने अतिथियों को न मारते हैं, न सताते हैं और न ही उन को कोई कष्ट पहुँचाते हैं । हां हमारे यहां सभी लोग आग जैसी गरमी मे रहने की हिम्मत रखते हैं जैसे तुम्हारे धरती पर कुछ पुजारी लोग समय समय पर आग पर चलते हैं । हमारे यहां तो लोग हर रोज वैसे ही आग मे रहते हैं । तुम थोड़े ही देर मे हमारे वातावरन से परिचित हो जाओगे तब तुम को कोई तकलीफ नहीं होगी ।” बड़े बिस्तार पूर्वक शैतान ने नन्दू को बताया ।

“ अब मैं सब समझ गया शैतान भाई । मैं अपने जीवन भर से गरम देश मे रहने की आदत लगा ली है तो हमारे आत्मा को कोई तकलीफ नहीं होगी तुम्हारी मेहमान नवाजी करने मे शैतान साहब । क्या मुझे कोई कागज़ात पर दस्तखत करना पड़ेगा ?” नन्दू ने पूछा ।

" हम नरक वासी अपने जबान के बड़े पक्के होते हैं । हम को कोई कागज़ पत्तर की जरूरत ही नहीं होती है । जब हम कोई सौदा करते हैं तो उस को अच्छे तरह से निभाते भी हैं । अब मैं तुम को तुम्हारे *जीवन काल* के दुगने समय के बाद देखूँगा कयोंकि तब हमारा तुम्हारा सौदा पूरा हो जायेगा ।" शैतान अपने मनहूस चेहरे पर एक कुटील मुस्कान को लिये हुये कहा और वहां से बड़े खुशी से चलता बना ।

समय का चकर धारावाहिक रूप से चलता रहा और नन्दू अब दया नन्द शर्मा के नाम से जाना जाता था । वह यूनिबेसिटी मे पढ़ लिख कर कई डिगरी हासिल कर के एक बहुत बड़े व्यवसाय का एक बहुत ही होनहार मनेजर हो गया था । बड़ी तलब, शानदार महल, चमकती मोटर और सुखी जीवन के होते हुये भी दया नन्द शर्मा ने अभी तक शादी नहीं की थी । उसे डर था कि कहीं उस के बच्चे भी दिल के बिमारी के शिकार न हो जायें ।

उस का समय बहुत ही सुख और खुशी से बीत रहा था । आज दया नन्द की छत्तीसवी वर्ष गांठ थी और उस के कम्पनी वाले उस के जन्मदिन मनाने के लिये शहर के कई मान्नीय लोगों को बुलाया था । नाच, गाना, बजाना, भाषण और भोजन की अच्छी सुबिधा की गई थी । सब लोग मगन थे और मौज मना रहे थे । दया नन्द तो मारे खुशी के शायद सातवे आसमान पर घूम रहा था ।

अचानक एक बड़ा धमाका हुआ और सब लोग दरवाजे के तरफ देखने लगे । वहां एक लाल कपड़े को धारन किये हुये, विचित्र चेहरे वाला, सर पर दो सिघं लिये, लम्बे पूंछ, मैले दांत और हांथ मे लाठी पकड़े खड़ा था । जब सब लोग चुप हो गये तब वह कहने लगा, "नन्दू मेरे यार ! आज हमारे सौदा का आखरी दिन है और

हमारे शर्त के मुताबिक मैं तुम को लेने आया हूँ । तुम्हारा इस संसार को छोड़ कर जाने का समय आ गया है ।” शैतान ने अपने दांत को दिखाते हुये कहा ।

“मांफ करना शैतान ! तुम्हारी यह बहुत बड़ी बेसमझी है ।” दया नन्द शर्मा अपने रंगमन्च से कहा ।

“ अब तुम को अपने सौदे और शर्त से कोई नहीं निकाल सकता है नन्दू । तुम ने अपने *जीवन काल* को दूना करने की बात की थी और मैं ने तुम्हारे अटठारह वर्ष को दूना कर के छत्तीस कर दिया है । मेरे मन मे कोई गलत फेहमी नहीं रही और उस शर्त का पलन तो तुम को करना ही पड़ेगा । चलने के लिये तैयार हो जाओ नहीं तो मुझ को जबरदस्ती करनी पड़ेगी ।” शैतान ने चिल्लाते हुये दहाढ़ मारा ।

“ तुम ने हम को दूना ***जीवन काल*** नहीं दिया है और इस लिये हमारे शर्तनामे के मुताबिक तुम बहुत बड़ी भूल कर रहे हो शैतान । जरा अपने शर्तनामे पर गौर से नज़र दौड़ाईये । मैं ने तुम से अपने ***जीवन काल*** को दूनी करने को कहा था और तुम इस शर्त का सौदा मुझ से बिना कोई हिचकिचाहट के कर ली थी । याद रहे ***जीवन काल*** हमारे ग्रन्थों के मुताबिक सत्तर वर्ष की अवधि होती है ।” दया नन्द ने शैतान को समझाने की कोशिश की ।

“नन्दू यह कैसे हो सकता है ?” शैतान ने जोर दे कर पूछा ।

“बात तो बहुत सरल है शैतान । हमारे ग्रंथो मे और बाइबल मे भी साफ तौर से लिखा है कि एक इनसान का ***जीवन काल*** सत्तर वर्ष की होती है । अगर तुम को विशवास नहीं होता हो तो मेरे आदर्नीय अतिथि पादरी देवकी जी से पूछ लो ।” दया नन्द ने पादरी देवकी से आग्रह किया कि

शैतान को इनसान के ***जीवन काल*** के बारे मे सब बता दें और शर्तनामे की शर्त को सुलझाने की कोशिश करें ।

पादरी साहब ने शैतान के नज़दीक जा कर उसे ठीक से समझाया, "शैतान सावधान ! तुम आज तक हमारे भक्तों को सताते रहे पर आज तुम्हारे शर्त के मुताबिक तुम दया नन्द को नहीं ले जा सकते हो क्योंकि हमारे बाइबल मे साफ साफ लिखा है कि इनसान का ***जीवन काल*** तीन बीस और एक दस वर्ष की अवधि होती है ।(*three scores and ten years*) जिस को हम सत्तर साल की अवधि समझते हैं ।" पादरी थोड़े देर रूके । शैतान के चेहरे पर मातम देख कर फिर कहा, "शैतान ! इस लिये तुम आज लौट जाओ और जब तुम्हारे शर्तनामे के मुताबिक दया नन्द की ***जीवन काल*** दूनी हो जाये तब तुम अपना सौदा करने खुशी से वापस चले आना । तब तक तुम्हारी यहां कोई दाल नहीं गलने वाली है ।"

पादरी देवकी की बातें सुन कर शैतान आग बबूला हो गया । तब दया नन्द ने उस के गहरे जख़्म पर जैसे और भी नमक छिड़ते हुये कहा, "शैतान ! अब इस का मतलब यह हुआ कि तुम अपने शर्त को अपने कहने के मुताबिक मानयता नहीं दे रहे हो । मेरा ***जीवन काल*** का अन्त होने मे अभी एक सौ वर्ष से भी ज्यादा समय बचा है । अब तुम यहां से जा सकते हो और हम सब को अपने जशन मनाने मे कोई दखल नहीं दे सकते हो ।"

शैतान के लाल कपड़े ही नहीं पर उस की पूरी देंह अब आग के तरह लाल हो चली थी । वह बड़बड़ाने लगा था, शाप देने लगा और कई दुर्वचन भी कहने लगा था, "*धोखा ! अन्याय ! विशवासघात !*" शैतान बड़े जोरदार शब्दों मे कहा, "मेरे साथ अन्याय हो रहा है । मैं न्याय चाहता हूँ । अब हम को मध्यस्थता की जरूरत है और मैं पंचनिर्णय

चाहता हूँ । मुझे कोई एक ऊँच्च न्यायधीश चाहिये ।" शैतान के मुख से ऐसी बाते सुन कर सभी लोग चकीत हो गये । इतने मे वहां एक बेजोड़ और आंख को चकाचौंध कर देने वाली रोशनी हुई । उस दैवी रोशनी को देख कर लोगों के आंख बन्द हो गये और सुन्दर मोहनी जोरदार शब्दो को सुन कर सब के कान बन्द हो गये ।

थोड़े देर बाद उस रोशनीदार स्थान से निकलती दया नन्द ने एक धर्मात्मा की ईशवरिये बाणी सुनी । "हे शैतान तू किस भ्रम मे पड़ा है । तेरे शर्तनामे को गौर से देखने और समझने के बाद मुझे यह साफ जाहिर होता है कि तू गलत रास्ते पर जा रहा है । अभी भी वक्त है सम्हल जा नहीं तो मैं तेरा नाश कर दूंगा । दया नन्द शर्मा और पादरी देवकी की बातें सोलहो आने सच्च और माननीय हैं । मनुष्य की सामान्य *जीवन काल* सचमुच सत्तर वर्षों की होती है । यह बाइबल मे भी लिखा है और कई अन्य धार्मिक ग्रन्थों की कथन भी यही है । हां अगर ईशवर चाहे तो इस अवधि को बढ़ा और घटा भी सकते हैं लेकिन तुम इस को कभी भी बदल नहीं सकते हो ।" शैतान यह सब बड़े शान्तिपूर्वक सुन रहा था ।

वह ईशवरिये बाणी फिर से शुरू हुई , "शैतान अब तुम को समझ मे आ गया होगा कि तेरे शर्तनामे के सौदे के मुताबिक तुम को दया नन्द शर्मा को एक और ***जीवन काल*** का समय बिना कोई अन्य टालमटोल किये ही देना पड़ेगा । हां आगे से जब भी तुम मेरे किसी बी भक्त से कोई सौदा करना तब अपने वकीलों से खूब अच्छे से सलाह मशवरा कर लिया करना । हम जानते हैं कि तुम्हारे नरक मे लाखों माहिर वकील भरे पड़े हैं जिन की मदद तुम कभी भी मांग सकते हो ।" उस ईशवरिये धर्मात्मा ने मुस्कुरा कर कहा और वहां से अचानक लापता हो गये । शैतान को वहां से फौरन भाग जाना पड़ा ।

दया नन्द के जन्मदिन की जलसा खतम हुई और वह शाम तक अपने घर पहुँचा । रात मे अपने कमरे मे आराम करते समय उस के समक्ष एक फरिशता उपस्थित हुआ । वह छाया दया नन्द के खाट के कोने पर बैठ कर कहना शुरू किया, " दया नन्द, मेरी बातों को ठीक से सुनो कयोंकि मैं तुम्हारा संरक्षक फरिशता हूँ । आज आप को अपने भगवान को धन्यवाद करना है कयोंकि उन्हों ने तुम को अमर पद दिलवा दिया है । अब शैतान और उस के यमदूत लोग चाहे कितना भी जोर लगा लें पर तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकते हैं । यही सच्चे भक्ति और अटल अराधना के महत्वपूर्ण नतीजा और फल हैं ।" दया नन्द शर्मा के संरक्षक ने उस के हांथ को पकड़ कर फिर कहना शुरू किया, "आज से तुम को अपने सभी धन दौलत, मान मर्यादा, रिशते नाते, मित्र सखा और माल असबाब को त्याग कर अपने आप को परम पिता परमेशवर को सौंप देना होगा तभी तुम्हरा कल्याण हो सकता है ।"

दया नन्द बड़े ध्यान से अपने संरक्षक के कथन को सुन रहा था और जब संरक्षक कुछ देर के लिये रुके तब दया नन्द ने उन से सवाल किया, "मैं यह सब कैसे कर सकता हूँ ?"

"अगर तुम सोचते हो कि इस कलियुग मे अमर पद पाना इतना सहज और कानूनी दांव पेंच का मामला है तो वह तुम्हारी भूल है । परम पिता परमेशवर का ऐसा बरदान पाना उतना सरल नहीं है जितना तुम सोच रहे हो । इस के लिये न ही नियम, संयम, लगन और भक्ति की जरूरत होती है पर तुम को निस्वार्थ रूप से त्याग कर के संन्यास लेने की जरूरत है । यह आत्मत्याग ही इस कलियुग मे तुम को दुख बिमारी, सोच फिकर, बाढ़ तूफान और अन्य अड़चनों से बचा कर तरन तारन कर सकती है । भले ही तुम एक सौ पचास वर्ष तक जी सकते हो लेकिन तुम बिना इस साधन से जिन्दा तो रहोगे पर तुम को संसारिक कलेश, दुख बिमारी, परिवारि कलह और अनेक पीड़ा सदा घेरे रहेंगे और सताते

रहेंगे । इस का सही चुनाव तुम्हारे ही हांथों मे है ।" उस फरिशते ने दया नन्द को समझाया ।

दया नन्द शर्मा जैसे कोई गहरी नींद से जाग गया हो । उस ने अपने इस नये सुख चैन के उत्तम जीवन मे इतना मौज उठाया था कि उन सब सुख सम्पति को त्यागने का सवाल कभी भी उस के सामने नहीं आया था । इसलिये आज जब आत्मत्याग और परमेशवर को अपने सब कुछ सौंपने की बात उस फरिशते ने उठाई तो वह जानना चाहता था कि यह सब इस कलियुग मे कैसे मुमकिन हो सकता था । दया नन्द ने अपने संरक्षक फरिशते से पूछा, "मैं कया कर सकता हूँ ?"

"तुम को अपनी यह शैतान की लड़ाई करने से पहले सोचना चाहिये था । पर अभी भी बहुत कुछ बिगड़ा नहीं है । अगर तुम मेरी कहना मानने के लिये तैयार हो तो मैं तुम को इस मुसीबत से निकालने की कोशिश करूँगा ।" फरिशते ने कहा ।

"आप जो भी सलाह हम को देंगे मैं कठिन से कठिन कार्य करने के लिये तैयार हूँ कयोकि मैं केवल जीना नहीं चाहता पर मैं बड़े शान से इस कलियुग मे अपने लोगों की सेवा सत्कार भी करना चाहता हूँ ।" दया नन्द शमा को जैसे एक गहरी नींद आ गई और उस का फरिशता कहता गया । दया नन्द को लगा जैसे उस के सपने मे खुद परम पिता परमेशवर आ कर उस को अपनी मोहनी मूरत दिखा दिये थे ।

दया नन्द शर्मा के संरक्षक फरिशते की कथन :

'यह संसार ही हर मनुष्य के तरह नाशवान है । इस का शुरुआत भी है और इस का अन्त भी निशचय है । यह सब कब होगा किसी

को आज तक पता नहीं चल पाया है । ठीक इसीलिये हम उस सब को बनाने वाले भगवान की अराधना करते रहते हैं ।

विष्णू,ब्रहमां और महेश या शिव ही हमारे त्री मूर्ति के रूप में एक ही महान शक्ति हैं जो हमारे निर्माता, विधाता, परिरक्षक और विध्वंसक हैं जिन का हर वैशनवजन सदा पूजन करते हैं । यह तीन महान संसारिक शक्तियां ही हम सब के लिये पूजनीय हैं । यही हमारे एकमात्र भगवान हैं ।

जैसे जैसे युग बदलता है और जरूरत होती है वैसे वैसे मनुष्य रूप में इन का अवतार होता है । कभी वे कृष्ण बन कर, तो कभी राम के रूप लेकर इस धरती पर हमारी रक्षा करने और हमें सही ज्ञान देने चले आते आते हैं ।

इन सब की कहानियां और उपदेशों को हमारे ज्ञानीजन हमारे लिये शास्त्रों में बखान कर चुके हैं और हम उन सब को ग्रहण करके अपना अपना निजी पारिवारिक तथा समाजिक जीवन सुधारते रहते हैं ।

उन की अच्छाइयों से और उन के अन्य पात्रों की गलतियों से हम अपना जीवन सम्भालते रहते हैं और उस परम पिता परमेशवर के चरणों में बैठ कर प्रार्थना करते रहते हैं की वे हमारी सही रक्षा करें, हमें अपना भक्त बनाये रहें, हमारे सभी बोलीवाणी. चालचलन और शिष्टाचार को समाज के नियम के अनुकूल रखें तथा हम सब को हमारे मोक्ष का सही राह दिखाते रहें । हम सब कृष्ण तो नहीं बन सकते हैं और न ही राम के आदर्शों पर पूरे तौर से चल सकते

हैं पर हम अपना कोशिश तो कर सकते हैं जिस से इस संसार में प्रेम, शान्ति, अमनचैन बढ़ती रहे और धर्म की रक्षा होती रहे ।

कृष्ण,बलराम और सुदामा की गहरी मिंत्रता को हम कैसे भुला सकते हैं ? उन की गीता ज्ञान को ले कर हम अपना सारा जीवन सुधार सकते हैं ।

राम,लक्षमन,भरत और शत्रुघन के पुनीत भ्रात्र प्रेम और उत्तम रिशते को हम याद कर के अपने जीवन को सार्थ बना सकते हैं ।

दसरथ जैसे महान पिता के राह पर हम चल सकते हैं और अपने बच्चों को शिक्षित और गुणवान बना सकते हैं । अपने हिन्दू ग्रंथों में कई सुन्दर सौभाव की माताओं का वर्नण है । कौशल्या,देवकी और जशोदा जैसी मांताओं के गुन इतने पवित्र हैं जिन के आदर्शों को अमल में ला कर हम एक सुखी परिवार का निर्माण कर सकते हैं ।

सीता,सावित्री,पारवती,द्रोपति और अहिल्या जैसी सती पत्नियों के शुभ लक्षनों को हम अमल में ला कर अपने पारिवारिक जीवन को सुख, शान्ति और खुशी से भर सकते हैं ।

निशाद, केवट और शबरी जैसे भक्तों का तो कहना ही कया है जिन के भक्ति को हम पूरे तौर पर समझ कर प्रभु के चरणों में लीन हो जा सकते हैं ।

जब इन सब शिक्षाओं और उमदे ज्ञान से भरपूर हमारी हिन्दू धर्म भरी पड़ी है तब हम न जाने कयों रावन, कन्स और बालि के अवगुनों के तरफ झुके जा रहे हैं ?

यहीं पर हमारे धर्म के कुछ ठेकेदारों या पुरोहितों ने हमे अपने घिसेपिटे और बेमतलब के पोपलीलाओं तथा पूजन और प्रचार के पुराने, बेकार और अप्रचलित नियमों को हम पर लाद कर हमे धोखा देते आये हैं । सब पाखंड़ अब बस कर के हिन्दू धर्म को बचाना हम सब यजमानो का परम कर्तव्य है ।

कितना कहें कयोंकि सच्चाई सुनने की हिम्मत और चाह होनी चाहिये । अब गरुड पुरान को ही ले लीजिये । इस को हम ग्रन्थ कहते हैं लेकिन इस मे मन गढ़ंत बाते भरी पड़ी हैं जिन से लोगों मे भय भरी जाती है । जैसे उस गरुड़ पुरान के मुताबिक अगर कोई व्यक्ति का देहान्त हो जाये और उस के अन्तिम संस्कार के बाद अगर तेरही, छेमाही और सलीना के पोपलीला न किया गया तो परिवार मे पांच लोगो की मृत्यू हो जायेगी । जब हम उस काम को अन्तिम संस्कार कहते हैं तो फिर यह सब तेरही, छमाही और सलीना का ढकोसला कहां से आ गया । यह ब्राहमनो के पेट भरने और आज के पोंगे पंड़ितो का जेब भरने का गैर कानूनी पैतड़ा है ।

नतीजा बहुत बुरा हो रहा है जब हमारे नये युग के लोग न तो हिन्दी भाषा का ग्यान रखते हैं और न ही हिन्दू धर्म की स्वतंत्रता और असलियत पर ध्यान दे पा रहे हैं । हम अपने भावी संतानो को सरल भाषा और सरल उपाय से दूर किये जा रहे हैं । एक दिन ऐसा आ जायेगा जब हमारा सुन्दर,पवित्र, आजाद तथा महान हिन्दू धर्म को हमारे ही लोग बिगाड़ बैठेंगे तब बहुत देर हो चुकी होगी । ***जागो और जगाओ*** का नारा बजाना अतियंत जरूरी है ।

सतयुग को तो हम वापस ला नहीं सकते हैं पर कलियुग की धधकती धर्म की आग को हम शान्त कर के अगले मोहिनी युग में

अपने हिन्दू धर्म में सही परिवर्तन ला कर अपना और अपने समाज का जीवन सफल बना सकते हैं । दया नन्द शर्मा आप जरा कोशिश तो कीजिये !

एक बात और याद रखने की है तुम को दया नन्द जी । अगर भला किसी का कर न सको तो बुरा किसी का मत करना । अगर किसी के लिये पुष्प नहीं बन सकते हो तो तुम कांटे भी बन कर मत रहना । बन न सको भगवान अगर तुम तो कम से कम इनसान तो बनो । नहीं कभी शैतान बनो तुम और नहीं कभी हैवान बनो तुम । यह भी याद करने की बात है कि अगर सदाचार अपना न सको तो पापों में पग मत धरना ।

मैं तुम जैसे साधारण इनसान से क्या क्या कहूँ पर आज जब तुम ने पूछ ही लिया है तो मुझ को दिल खोल कर कहने दो ।

अगर तुम सत्य वचन न बोल सको तो झूठ कभी भी मत बोलो तथा मौन रहने से तो सब ही अच्छा होगा क्योंकि कम से कम किसी के जीवन मे तुम विष तो मत घोलोगे ।

यदी जो भी तुम को बोलना हो तब सब से पहले तुम उस बात को ठीक से तोलो फिर अपने मुंह को खोलने की हिम्मत करो । यदी धर न किसी का बसा सको तो किसी की झोपड़ियों को न जला देना । फिर गर मरहम पट्टी किसी की कर न सको तो घाव में भी नमक मत लगा देना । अगर दीपक बन कर किसी के लिये जल न सको तो उस के लिये अंधियारा भी मत करना ।

जब आप मे बल ही नहीं है कि किसी नेक इनसान को अमृत पिला सको तो अपने जानते हुये कभी भी किसी को जहर पिलने से ड़रते रहना । अगर तुम अपने लोगों को धीरज बन्धा नहीं सकते तो उन को ही नहीं पर किसी के तन मन मे भी घाव मत कर देना । दया नन्द जी आप ऐसे ही ईशवर की माला जपते रहना तथा हर सुबहो शाम भजन कीर्तन करते रहना ।

हमारी एक और अनोखे ज्ञान को समरण करना । आप के हर सच्चाई की राह में बेशक कष्ट अनेको मिलते रहेंगे पर यह भी याद रकना कि कांटो के बीच में देखो फूल भी हमेशा खिलते रहते हैं इसलिये सूरज की भांति खुद जल कर सब जग को रोशन करते रहना तभी मैं तुम्हारे लिये तुम्हारा संरक्षक बन सकूँगा ।

अब समय आ गया है कि हम अपने इस जीवन का सब भार परम पिता परमेशवर के हांथों मे सौंप दें जिस से हमारी जीत भी उन्ही के हांथों मे हो और हमारी सभी हार भी उन के हांथो मे हो ।

दया नन्द शर्मा जी आज से आप यह संकलप कर लें कि आप का एक ही निशचय हो और वह यह हो कि कभी एक बार भी जो तुम उस परम पिता परमेशवर को अगर कोशिश कर के पा जाओ तब दुनियां भर के सब प्यार, भक्ति और चाह तुम बिना कोई भी संकोच और हिचकिचाहट के उन के ही हांथों मे खुशी खुशी अर्पण कर दोगे ।

अब तो तुम को इस जग मे रहना ही पड़ेगा इसलिये तुम आज से यहां ऐसे रहना सीख लो जैसे निर्मल जल मे एक सुन्दर कमल का फूल रहता है । ऐसा होने से तुम्हारे सभी गुण, अवगुण, दोष और

कपट भगवान के पवित्र चरणों मे समर्पित हो जायेंगे और तुम अपने सभी कर्मो और सोच मे सफल होगे ।

फिर तो चाहे तुम इस जग से दूर उस पार रहो या फिर इस जग के कोई कोने मे भी रहो पर तब तुम ऐसे रहने लगोगे कि इस पार भी तुम उन के हांथों मे रहोगे और उस पार भी उन के साथ रहोगे । यदी मनुष्य का जनम तुम को फिर मिले तो उन के श्रीचरणो का ही तुम प्रेम पुजारी बन कर रहना सीख लो ।

तब यह मेरा दावा है कि तुम जैसे पूजक की एक एक रग का हो जायेगा तार उन्ही के हाथों से और जब जब तुम इस संसार का कैदी बन कर लौटोगे तब तब तुम निष्काम भाव से अपने सभी काम को करते रहोगे । फिर अन्त समय मे जब तुम अपनी जीवन काल को पूर्ण कर के प्राण तजोगे तब तुम निराकार उन्ही के हाथों मे होगे और उन मे लीन हो जाओगे ।

अन्त मे यह बात भी याद रखना कि तुम मे और उन मे बस भेद यही कि तुम सदा नर ही रहोगे और ईशवर तुम्हारे नारायन बने रहेंगे तथा तुम इस संसार के हांथों मे रहोगे पर सारा संसार उन के पवित्र और पावन हाथों मे रहेगा

दया नन्द शर्मा जी, अब तुम को इतना ऊँचा उठना है कि जितना ऊँचा हमारा आकाश है, हमारे बादल हैं और हमारे विचार हैं । पर तुम यह कैसे कर सकते हो ?

अपने सभी सम्पती का त्याग तो तुम कर ही रहे हो पर इस के बाद तुम को सारे दुनियां के लोगों को एक ही दृष्टि से देखना होगा । जो

लोग जाति भेद-भाव के, धर्म-वेश की और काले गोरे की ज्वालाओं मे जल रहें हैं उन सब को शीतल कर के खुद ऐसे बहो जैसे समुद्र के किनारे मंद मंद पवन चलती है ।

अगर तुम्हारे पास सही उमंग और प्रेर्णा है तो तुम अपने नये विचार से संसार के वर्तमान झगड़ा झंझट, मार काट और चोरी चंडाली को सॅवारने मे मदद करोगे । तुम्हारे सभी चित्रण, सभी स्वर, भाषा और रहन सहन इतने नये होंगे कि लोग तुम को सज्ञन तो कहेंगे ही पर तुम खुद एक अजीब मौलिकता का अनुभव करने लगोगे ।

अपने बीते दिनों और अतीत से ठीक उतने ही ज्ञान और सामान लो जितना तुम हजम कर सको क्योंकि अकसर पुराने वस्तुओ का मोह बहुत घातक होता है । झूठे और कमजोर बन्धनों को तोड़ दो और परिवर्तन की ओर कदम बढ़ाओ । अगर चाहते हो इस धरती को फिर से स्वर्ग बनाना तो जा कर खोज करो उस स्वर्ग का और इस धरती पर लाओ । इस से सभी कुरूप रूप को तुम सलोना बना कर अपनी और अपने जनों की सुन्दरता और आकर्षण मे चार चांद लगा दोगे ।'

इस के बाद एक जोर का धमाका हुआ और एक अनोखी रोशनी जल उठी और संरक्षक फरिशता बोल उठा, "जागो दया नन्द शर्मा जी जागो ! अब तुम्हारे कार्य करने का समय आ गया है ।जाओ और अब फूलो फलो !"

दया नन्द शर्मा की तो जिन्दगी ही बदल गई थी । उस ने अपने सभी धन दौलत, माल खजाना, मान अपमान, जन समाज और घर परिवार को त्याग कर अपने सभी नौकरों, मित्रों और परिवारिक जनो को सौंप कर

अपनी एक नई दुनियां बना ली है । अब वहां वे केवल सुख, शान्ति और भक्ति का जीवन बिता रहे हैं । आप भी उन के इस पवित्र और पावन धाम पर पधार सकते हैं पर क्या आप उस तरह के आत्मत्याग कर सकते हैं ?

यह हम सब के सोचने और चिन्ता करने की सम्सया है क्योंकि हमारी यह दुनियां ही पतन की ओर बड़े जोर से भाग रही है । हम सब सज्जनो और देवियों को मिल कर इस बिगड़े संसार की हालत को सुधारने का बीरा उठाना पड़ेगा ।

हम चलते हैं और आप भी आईये ।

१६

अपहरण

इस नए ज़माने या आधुनिक सभ्यता की दो बहुत ही महत्वपूर्ण संघर्ष हैं. महिलावों को उन के गुलामी, आधीनता या दमन से छुटकारा दिलाना और बच्चों को सभी तरह के अनुचित व्योहार तथा दुरूपयोग से बचाना. पश्चिमी सभ्यता के देशों में इन जटिल अंतर्राष्त्रिये सामाजिक समस्यावों पर काफी परिवर्तन हो रहें हैं. यह बड़े ख़ुशी की बात है की कहीं कहीं खुद सरकार के लोग तथा अन्य स्वयं सेवा संस्थाएं महिलावों के सामान अधिकार और उन के दमन का और बच्चों को तमाम प्रकार के अनुचित व्योहार से बचाने की देख रेख करने लगे हैं. जैसे जैसे हमारे समाज में इन समस्यावों का और भी जानकारी तथा प्रचार होगा वैसे वैसे हम सब में इन पर और भी बड़ी संघर्ष करने की हिम्मत और चाह बढती रहेगी .यादें जिन्हें भुलाना मुश्किल है |

पर दुःख तो इस बात की है कि कई देशों में हर एक बंद दरवाजे के पीछे इन दोनों अनुचित व्योहारों की कहानी बड़ी भयानक और दर्दनाक है. कई घरों और देशों में अभी भी ऐसे निमरद नजर आतें हैं जो अपनी झूठी मर्दूनी और ताकत दिखा कर अपने पत्नियों, बच्चों - बच्चियों तथा अन्य महिलावों पर जुर्म ढातें हैं, सतातें हैं, धम्कातें हैं, मारतें हैं और कई अन्य प्रकार के कष्ट पहुँचातें हैं और उन के साथ

दुर्व्योहार करते हैं. इस संसार में बच्चों और महिलावों पर योन सम्बन्धी अनुचित व्योहार की खबर देख सुन कर हर एक सभ्य इंसान को बहुत अचम्भा होता है. जब की हमारे यहाँ उचित शिक्षा का इतना मान मर्यादा है तब हमारे समाज में ऐसे नीचे विचार और व्योहार कहाँ से उत्पन्न हो जातें हैं ?

कई जमाना हो गया जब गुलामी की प्रथा संसार से विलियम विल्बेफर्फोर्स ने मिटा दिया था पर कितने घरों समाजों और देशों में हजारों बच्चे महिलायें आज भी गुलामी कर रहे हैं. इन लाखों गरीबों के दुःख दर्द को कोई सुनने वाला नहीं है और उन से अनुचित लाभ हमारे धनी वर्ग के सज्जन बड़े निर्दयता से उठा रहे हैं. इन गरीब को उन के हालात के कारण उन्हें वेश्या बृति में लगा दिया जाता है, छोटे उम्र में ही शादी कर दी जाती है या फिर कम से कम तलब पर उन से कड़े से कड़े नौकरी कराई जाती है. न जाने कितने माता पिता अपने गरीबी के कारन अपने बच्चों को सेठों के हाँथ बेच देते हैं|

मेरे इस कहानी की मुख्य नायिका का नाम जयश्री है. उस ने अपनी दर्दनाक और दुःख भरी दास्ताँ को मुझे बड़े तकलीफों से हिचकिचाते हुए सुनाया था. अपनी भूली हुई यादों को ताजा करते समय जयश्री ने बहुत सी ठंडी आहों को भरा था, रोया था, बिलखा था और लाखों आंसू बहाया था |

जयश्री के अतीत की कहानी आप में से कुछ पढने वालो के लिए बड़ी अजीब लगेगी और शायद ठीक से समझ में भी नहीं आ सके लेकिन पाठकगन को यह याद रखना जरूरी है कि वह उस अजीब और दूषित वातावरण की चर्चा कर रही थी जहां इंसान नहीं पर शैतानों और हैवानों का राज था |

वह अपनी बहुमूल्य जीवन के तीन चार साल उस मनहूस जगह पर बिता चुकी थी. उस के अतीत को सही रूप से समझने के लिए पाठकगन को खुद उस के जगह पर हो के ही उस के सभी हालातों को भलिभांति समझने की छमता रखनी होगी. हालाकिं मै यह हरगिज़ नहीं चाहूँगा की कोई अन्य व्यक्ति को जयश्री जैसा भयंकर, दर्दनाक और खतरनाक अतीत भोगना पड़े. जयश्री ने अपने उन तीन चार वर्षों को जितने मुसीबतों और दुखों से काटा था उन का सही अंदाजा हम आम व्यक्ति बहुत मुश्किल से लगा पायेंगे |

यह जयश्री की ही कहानी है और खुद उस की ही जुबानी है. मै ने तो केवल अपने कलम से इसे संभाला संवारा है. वह बेचारी दुखिया बच्ची अपनी अतीत इसी संकट में हो के इन महान तकलीफों में गुजारी थी. उस के अंतर आत्मा की दुःख भरे पुकार और विचारों को हम ने बड़े मुश्किल से निचोड़ कर निकाला है जिससे पढने वाले ऐसी घिनोनी घटने को अपने संसार, अपने परिवार और समाज में फिर कभी नहीं होने दें क्योंकि इस राक्षसी घटने से हर एक व्यक्ति के सारे जीवन में आग तो लग ही जायेगी पर ये उन के पूरे भविष्य को नष्ट भ्रष्ट कर के रख देगी. परमात्मा करे ऐसी दूषित व्यभिचार कभी किसी के जीवन में न बीते |

तो चलिए अब उसी के मुखारबिंद से उस की ही दलित दास्ताँ सुनिए. ये उस की ही कहानी उसी की जुबानी में है |

'मेरा नाम जयश्री है और जब मै ग्यारह वर्ष की कन्या थी तब मेरा अपहरण कर लिया गया था. लगभग तीन चार लम्बे और वीराने वर्षों तक मुझे एक काले कोठरी में कैदी बना कर रखा गया था. इस कारागार में मै ने अपने सभी आजादी, सभी शर्म लाज, सभी इज्जत आबरू और सभी परिवार वालों को खो दिया था. इस दर्दनाक और घृणित घटने ने मेरे सारे जीवन को बदल के उस में उथल पुथल मचा

दिया था. मै अपने सभी भूली हुई यादों को न चाहते हुए भी दोहरा रही हूँ केवल दो कारणों के लिए |

पहली तो यह है की जिससे मेरे अपहरण करता जसवंत और उस की नाजायज पत्नी शीला जैसे नीचे आचरण और कुटिल कष्ट देने वाले शैतानों की पूरी पोल खोली जा सके. इन दोनों अश्लील लोगों ने ही मिल कर मेरे हरेभरे खुशहाल बचपन के जीवन में आग भर के मुझे मेरे परिवार से अलग कर दिया था पर उन बुद्धिहीन और पापी लोगों ने ही मेरा पूरा भविष्य मुझ से छीन और चुरा कर नाश कर दिया था |

इन शैतानों को मै और मेरे परिवार के सदस्य कभी भी माफ़ नहीं कर सकते हैं. इस सभ्य समाज में वैसे दुर्जनों के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए पर खेद इस बात की है की आज भी हमारे समाज में ऐसे नीच और खराब लोग लुका छिपे अपनी वार करते रहते हैं. न ही क़ानून और न ही हमारे धर्म के ठेकेदार उन का कोई बाल भी बांका कर पाते हैं. दुःख है की हम अपने आप को एक सभ्य समाज का अंग मानते है लेकिन खेद है की इसी समाज में कई हैवानो का राज बढ़ता जाता है |

इस दुखित कहानी को बताने का मेरा दूसरा कारण यह है की फिर ऐसी अधर्मी और नीच घटना कभी किसी और बच्ची पर न बीते. समाज, माता पिता और सब परिवार ऐसे दुर्जनों से अपना पूरा बचाओ कर सकें |

यह वास्तविक बात है की लोग अक्सर अपहरण और बलात्कार की कहानी सुन कर चकित हो जातें हैं और घबरा जाया करते हैं पर जब कभी उन पर ऐसी दुखित घटना घटी तब वे क्या कर सकते हैं? क्या इस का ख्याल उन के मन में कभी आया है?

अपहरण और बलात्कार जैसे घिनौने अपराध के बाद जो लज्जाजनक सवाल एक पीड़ित युवती से क़ानून के रखवाले अपने तहकीकात के दौरान पूछते हैं वैसे व्योहार से दोषी को ज्यादा प्रोत्साहन मिलती है और विपत्ति ग्रस्त को सताया जाता है. आज कल के आधुनिक तकनिकी दुनियां में कोई भी बेमतलब के सवाल की जरूरत ही नहीं है जब विज्ञान ने डी एन अय से सभी मुजरिमों की कार्यवाहियों का पूरा पूरा पता लगा सकती है |

फिर उधर हमारे अदालतों के न्यायधीशों और वकीलों का तो कहना ही क्या है. वे जो जो दुर्दशा हमारे अपहरण और बलात्कार के शिकार महिलावों की अपने बेहूदे सवालों से करते हैं उन से तो खुद उन को ही शर्म आनी चाहिए |

यह भी जाहिर है की हमारा न्याय करने वाला संस्था अपहरण कर्ता और बलात्कारियों को पर्याप्त सजा ही नहीं देती है. थोड़े ही दिनों में वे कैद से छूट जाते हैं और फिर दोहरा कर वही हरकतें करते रहतें हैं. अक्सर यह भी देखा जाता है कि वैसे उटपटांग सवालों से जब विपत्ति ग्रस्त शरम के मारे सही जवाब नहीं दे पाते हैं तब सबूत नहीं मिलने के कारण मुजरिमों को सजा ही नहीं मिलती है |

यह है हमारे समाज कि न्याय करने कि प्रणाली जिस को सुधारने कि बहुत जरूरी है पर उस बिल्ली के गले में कौन घंटी बांधेगा?

मेरा मकसद बस यही है की मै अपने इन भूली यादों को ताजा कर के समाज को ऐसे घृणित कार्यों के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित करू और सभी दुखी परिवार वालों को प्रेरणा दूं की वे जब भी कभी कोई अनहोनी या बुरी वाक्या को होते देखें या सुने तो उन के विरुद्ध चीख पड़े और चिल्लाहट मचा दें . हमें इस बात की दुःख है की हम ऐसे ज़माने में रहने लगे हैं जहाँ अब ज्यादा से ज्यादा लोग

स्वार्थी होते जा रहे हैं और कोई भी बुरी बात या कर्तव्य को नजरअंदाज कर देते हैं |

लेकिन यह भी तो मानने वाली बात है की जब हम किसी ऐसे कुकर्म के बारे में आवाज उठातें हैं तो हमारी सही बातों को सुनने वाले नहीं मिलते हैं . अब इस ज़माने में जैसे अश्लील लोगों की ही बोलबाला होने लगी है .भगवान् करें जल्द ही हमारे धर्म और समाज के लोगों में कुछ बदलाव आ जाए ताकि बढ़ते हुए पापों पर काबू पाया जा सके .मै जानती हूँ कि केवल मै ही एक ऐसी अभागिन नहीं हूँ जिस पर यह मुसीबतों का पहाड़ गिर पड़ा है पर न जाने कितने परिवार में इस से भी बुरे व्योहार हो जातें हैं लेकिन या तो शर्म के मारे या किसी और डर से हम इन कुकर्मों पर पर्दा डाल देतें हैं. पर मेरे इस कहानी से अगर एक भी बच्ची की इज्जत आबरू बच जाए तो मेरे लिए बहुत ख़ुशी कि बात होगी |

मै अपने तीन वर्षों के कलह और दुर्दशा को बता कर यह साबित करना चाहती हूँ की कड़ी से भी कठिन समय और व्योहार से हम बच कर अपना सुरक्षा कर सकते हैं. मै ने अपने कारागार में बेहद्द जुर्म, अत्यंत दुर्दशा, बहुत सूनापन और न जाने कितने अनगिनत दुर्व्योहारों को सहा है पर मै यह नहीं चाहती की कोई और वैसे बुरे लोगों के जाल में फंस जाए. मै तो किसी विधि से उस जंजाल से बाहर निकल आयी हूँ पर हमारे कहानी को सुनने पढने वाले अपना बचाओ कैसे करेंगे? इस कथन को सुनने पढने वाले कैसे अपना सुरक्षा करेंगे ये मुझ को नहीं मालूम है पर मै इतना कह सकती हूँ की मेरी पूरी दास्ताँ सुन लेने के बाद आप कोई न कोई रास्ता ढूंढ ही लेंगे |

मेरी परिस्तिथि अनोखी थी पर मुझ को यह भी नहीं मालूम कि अन्य लोग अपने आप को इस तरह के स्तिथि में पा कर क्या करते होंगे. हाँ मै इतना जरूर दावे के साथ कह सकती हूँ कि हर इंसान में

कठिन समय में संघर्ष और परिश्रम करने की जोश अकस्मात् ही आ जाती है जैसे मुझ जैसे अभागिन के अन्दर उस वक्त आ गई थी. इतिहास हमारा गवाह है कि जब भी इंसान को ऐसा महसूस होने लगता है कि उस के पास खतरे से बचने का अब कोई चारा नहीं बचा है फिर भी आशा तृष्णा उस के दिलो जान से लिपटी ही रहती है और हमारी मदद करने को उतावली रहती है. हम को केवल हिम्मत और प्रेरणा कि जरुरत होती है |

एक तरफ देखा जाए तो मै बहुत ही खुश नसीब हूँ और मेरे पास एक अजीब सी पुरखों कि आशीर्वाद है जिस से मेरे अन्दर कुदरत के लाखों सुनहरे देन हैं जिन से मै अपने जीवन में क्या नहीं कर सकती हूँ अगर मै अपने लगन, समय और संतोष को पुरे तरह से इस्तेमाल करूं. हमारी जीवन बहुत छोटी है उन सभी चीजों के बारे में सोचने के लिए जो हमारे पास नहीं हैं पर जो सब ताकत और इल्लम हमारे पास है हमें उन को ठीक से इस्तेमाल करने कि छमता होनी चाहिए तभी हम सफलता हासिल कर सकतें हैं |

हम को प्रोत्साहित करने वाला हमारे अन्दर छुपा बैठा है इस लिए हम जितना जल्दी उस शक्ति को जगा लेते हैं हमारे लिए उतना ही लाभदायक हो जाता है. मै अपने जीवन के उस कठिन अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण कभी नहीं होती अगर मै अपने अन्दर के सोये हुए शेर जैसे सिपाही को समय पर न जगा लेती . जीवन एक संघर्ष ही है और हमारे लिए कोई भी साहसिक कार्य करना अति आवश्यक है. हमें अपने जीवन काल के हर रोज को पूरे तौर से जीने की चाह रखनी चाहिए चाहे हमारे हर दिन कैसी भी परिस्तिथि हमारे सामने ला कर खड़ी कर दें |

मै कोई सेठ की बेटी नहीं हूँ और न ही कोई धनवान परिवार से सम्बन्ध रखती हूँ. हमें वह सोमवार की सुबह बहुत अच्छे से याद है. सन उन्नीस सौ इकान्बे की जून महीने की १७ तारीख थी. मै जाग तो

गई थी पर अपने कमरे के आरामदार खटिये पर लेटी रोज के तरह अपने मां को काम पे जाने से पहले अपने कमरे में आने की राह देख रही थी. मेरी माँ सब दिन काम पे जाने से पहले हमें बिना दुलार किये नहीं जाती थी |

अभी कल रात को ही हम ने माताजी को इस जरुरी मात्र प्रेम दर्शाने के लिए याद दिलाई थी क्यों की कभी कभी सोमवार के भागदौड़ में वे मुझे चुम्बन लेने और आलिंगन करना भूल जाती थीं . लेकिन आज तो फिर गजब हो गई . इधर मै अपने मखमली मुलायम खाट पर पड़ी उन का इंतज़ार कर रही थी और उधर नीचे घर के आगे के दरवाजे की बंद होने की आवाज मुझे सुनाई दी . मेरी माँ आज फिर काम पर चली गई हम से बिना अलविदा कहे .हमें बिना आलिंगन किये. हमें बिना चुम्मा दिए . आज जब वे काम से लौट के आएँगी तब मै उन को पुनः याद दिल दूँगी की आइन्दा फिर कभी ऐसी भूल न करें |

मै थोड़े देर और लेटी रही जब तक मेरे घडी की घंटी ने मुझे चिल्ला कर यह न बता दिया कि अब अपने खाट से उठने का समय हो गया है. धीरे धीरे मै अपने खाट से नीचे उतर तो गई पर अभी भी हमें कुछ आलसी घेरे थी इस लिए मै अपने गहने गुड़ियों की निरक्छन करने लगी. मेरी एक अंगूठी जो हम ने कल बाज़ार से खरीदी थी वह गायब थी. शायद कहीं गिर गई थी . मै ने बहुत ढूँढा पर वह कहीं मिलने का नाम ही नहीं ले रही थी . अगर मै उस को खोजने में और ज्यादा समय लगावूँगी तो मुझे स्कूल जाने में देर हो जायेगी तथा हमारी बस भी छूट जायेगी. इस हालात में मेरे सौतेले पिता सुरेश मेरे ऊपर बहुत नाराज होंगे क्योंकि उन को अपने मोटर में मुझे स्कूल छोड़ना पड़ेगा जो वे नहीं चाहते थे |.

मेरे सौतेले पिता हमारे बहुत से कामों से नाखुश रहते थे और मै उन को हम से और नापसंद होने के लिए एक और मौका नहीं देना

चाहती थी. इसलिए मै ने अपनी खोई हुई अंगूठी को खोजने की कार्य समाप्त कर के अपने माँ की दी हुई चार साल पहले वाली चांदी की तितली की अंगूठी अपने कानी अंगुली में पहन ली और स्कूल जाने के लिए तैयार हो गई. जाड़ा का मौसम था इस लिए हम ने अपने युनिफोम के ऊपर से एक काडिगन भी डाल ली. जाने से पहले मै ने बगल वाले कमरे में अपने बेबी बहन इंद्रा से अलविदा करने गई पर जब मै ने देखा कि वह सो रही है तब मै चुपचाप बाहर निकल आई |

न जाने क्यों आज सुबह मै कुछ सुस्ती का अनुभव कर रही थी इसलिए थोड़े देर के लिए मै ने सोचा कि मै अपने सौतेले पिता सुरेश से कह दूं कि मै आज स्कूल नहीं जाना चाहती हूँ क्योंकि मै बीमार हूँ. पर मै ने ऐसा करने से अपने आप को रोक लिया क्योंकि मै उन के साथ कोई अन्य प्रकार के तर्क बितर्क नहीं करना चाहती थी. सच्चाई तो यह थी कि मै उन के साथ घर पर रहना ही नहीं चाहती थी. फिर मै स्कूल जाने कि राह रोज देखा करती थी जिससे मै अपने सौतेले पिता के टीका टिप्पणी से बच जावूँ|

शायद अच्छा नाश्ता करने के बाद मेरी तबियत ठीक हो जाये इस लिए हम ने रसोई में जा के अपना नाश्ता किया और अपने दोपहर का भोजन भी अपने डिब्बे में भर लिया. रसोई कि दीवाल घडी में साढ़े छ बज चुके थे और अब समय हो गया था कि मै अपने स्कूल बस पकड़ने के लिए जल्द ही निकल पड़ूँ |

हमारे घर से बस स्टैंड तक जाने के लिए कम से कम दस मिनट तो लग ही जाते हैं इस लिए हम ने सुरेश को इतला कर दी कि मै स्कूल जा रही हूँ पर जैसे वे न तो मुझे सुने और न ही मुझ को कोई जवाब दिए . मेरे कदम बस स्टैंड के तरफ चल पड़े. चलते चलते मै अपने स्कूल के कार्यक्रमों के बारे में सोचती रही . स्कूल की छुट्टी होने में सिर्फ दो हफ्ते बचे थे और फिर दो हफ्ते की छुट्टियों में हुम ने अपने सहेली नयना के साथ उस के पिता के रेंच पर जाने कि प्लान बना ली

थी .वहाँ हम घुड़सवारी करेंगे, झील में नहायेंगे ,सैर सपाटा करेंगे और न जाने क्या क्या करेंगे. मै वहां जाने के लिए बहुत उत्सुक थी|

जैसे जैसे बस स्टैंड नजदीक आ रहा था वैसे वैसे मै न जाने क्या क्या सोच रही थी. इसी पहाड़ी के पास हम को रास्ते के उस पार जाना था क्योकि बस स्टैंड उस पार था. यहाँ सड़क पार करने के लिए मुझे मेरे सौतेले पिता सुरेश ने कई बार सतर्क किया था. वे मुझे सावधानी बरतने के लिए कहे थे क्योंकि एक तरफ जंगल झड़ी थी और दूसरे तरफ चढ़ाई होने के कारण सड़क साफ़ नजर नहीं दीखता था . जैसे ही मै सड़क पार करने चली की मुझे एक मोटर की आवाज सुनाई दी और मै वहीँ खड़ी हो के उस मोटर को चले जाने का इंतज़ार करने लगी पर वह मोटर आ के मेरे बगल में ही रुक गई|

मै अपने विचारों में इतना लीन थी कि उस समय उस मोटर चालक के संदेहजनक हावभाव या असामान्य व्योहार हमारे दिमाग में कोई संदेह नहीं पैदा किया और मै वही खड़ी हो गई. मोटर चालक ने अपने तरफ वाली शीशे को नीचे किया और अपना सर बाहर कर के मुझ से वहाँ से आगे जाने का रास्ता पूछने के बहाने अपने गाडी में से उतर के मेरे तरफ बढ़ा. उस के हांथों में कोई काली औजार थी जिसको उस ने मेरे तरफ कर के स्प्रे किया. मेरे सामने सब कुछ धुंधला सा हो गया और मै जैसे अपंग होने लगी|

मोटर का दरवाजा खुला और उस आदमी ने मुझे खींच खांच के अपने मोटर के पिछले सीट पर पटक के किसी को मुझे कम्बल से ढँक देने का आदेश दे कर मोटर चलाने लगा. मै छटपटाती रही और मेरा सारा बदन ढीला होने लगा. मै केवल जोर जोर से चिल्लाती रही पर मेरी आवाज मेरे मुह से बाहर नहीं निकल रही थी. मेरा शरीर और दिमाग सब ढीला हो गया और मै चुप हो गई. शायद इस के बाद मै बेहोश हो गई थी. मोटर चलती गई और इस के बाद हमें जब होश आया तब मै अपने आप को एक काले अँधेरे बंद कोठरी के

अन्दर में पाया जहां दो लोग आपस में वार्तालाप कर रहे थे. एक मर्द था और एक औरत की आवाज थी पर हमें कुछ समझ में नहीं आ रहा था|

जहाँ एक तरफ वे दोनों अपने जीत पर हंस रहे थे, ख़ुशी हो रहे थे वहीँ मैं अपने किस्मत पर रो रही थी, मातम मना रही थी. मै स्कूल जाना चाहती थी. अपने माँ के पास जाना चाहती थी. अपने घर जाना चाहती थी. पर उन के भयानक चेहरे को देख के और उन दोनों के कडवी और नीरस बोली बानी सुन के मै कुछ भी करने को मजबूर थी. मै बहुत डर गई थी लेकिन भीतर भीतर मै गुस्से से आग बबूला हो रही थी. मेरी मजबूरी उन की ताकत बन गई थी. मुझे उन के बातचीत से पता चला कि उस लम्बे चौड़े आदमी का नाम जसवंत था पर उस की महिला साथी का नाम मुझे नहीं मालूम हो पाया था|

मेरा दिल तो करता था की मै वहां से निकलूँ और भाग पडूं लेकिन मै जाऊं तो कहाँ जाऊं क्योंकि हम को तो यह भी नहीं मालूम था की मै कहाँ हूँ. बस यही सोच रही थी की हम पर यह बिजली कैसे गिर पड़ी? ये सब हम पे क्यों हुआ? ये लोग कौन हैं और हम से क्या चाहते हैं? मेरे पास इन सवालों का कोई जवाब नहीं था. मुझे यह सब एक भयंकर सपना सा लग रहा था पर हम ने अपने जीवन में कभी भी ऐसी बुरी सपने का अनुभव नहीं किया था. दुःख तो इस बात की थी की यह सब सच में हो रहा था|

मै एक बेहद्द घबराई हुई छोटी लड़की दो भयंकर शैतानो के बीच उन के दया की भीख मांगने जा रही थी पर उन को दया नाम की कोई भी शब्द से कोई मतलब ही नहीं था.उन के बातों से हम को मालूम पड़ा की वे हमारा अपहरण कर के मेरे परिवार से और सरकार से बहुत धन की मांग करने की सोच रहे थे|

जब उन की बेहूदे गुफ्तगू ख़तम हुए तब उन को मेरा ख्याल आया. मेरा गला सूख रहा था बड़े जोर की प्यास लगी थी और जब मै उन से पानी की मांग की तो हम को न जाने कितने दुध्कार के बाद एक ग्लास में पानी मिला. पानी पीने के पश्चात तबियत कुछ हलकी हुई पर घबराहट और भी बढ़ गई जब वहाँ से वह महिला चली गई. अब मै और केवल हमारा अपहरनकर्ता उस काली कोठरी में बचे थे. उस ने मुझ को एक दम चुप रहने का आदेश दिया. कुछ भी हल्ला हुआ तो उस के खूखार कुत्ते नाराज हो जायेंगे और वह हम को फिर से उस औजार से बेहोश कर देगा|

इस के बाद वह आदमी मेरे तरफ बढ़ा और पास आ कर मझे अपने कपडे उतारने का आदेश दिया. जब मै उस के इस उलटे आदेश का पालन करने से इनकार कर दिया तब उस ने हम को वही काला अवजार दिखा कर कहा कि अगर मै उस कि बातों को नहीं मानूंगी तो वह उस स्टन गन को फिर इस्तेमाल कर के हमें बेहोश कर देगा और हम को इतना सताएगा की उस का हमें पता भी नहीं है. इस के पश्चात उस ने मुझ को दो चार तमाचे भी जमा दिए. अपने जीवन में हम ने कभी ऐसी निर्दयता का अनुभव नहीं किया था इसलिए डर के मारे मेरे पिसाब निकल गए. उस दिन को याद कर के अब भी मेरे शरीर में एक अजीब सी कम्पन होने लगती है, सर चकराने लगता है और दिमाग में उथल पुथल मच जाता है. मै केवल ग्यारह वर्ष कि बच्ची थी और अकेली थी इस लिए बहुत ही डरी हुई थी. मुझे कुछ भी पता नहीं था कि वह आदमी मेरे साथ क्या करेगा और आगे उस के क्या इरादे थे|

अब मै उस आदमी के हर इशारे पर नाचने के लिए मजबूर थी. मेरे पास इस के अलावे और कोई चारा नहीं था. कहीं भागने और छुपने की जगह भी नहीं थी. मै अब केवल अपने माँ को आकर मुझे बचाने की राह देख रही थी. काश मै अपने घर चली जाती और अपने सौतेले पिता के सभी डांट डपट, सभी झिडकियां और सभी टिपण्णी

को सुनने के लिए तैयार थी पर इस दानव के चंगुल से तो छुटकारा मिल जाए |

जसवंत ने मुझे ढकेल कर नहानघर में कर दिया और मेरे सभी कपड़ों को मेरे बदन से जबरदस्ती उतार दिया. मै नंग धडंग मारे लज्जा से भरी एक अजनबी आदमी के सामने एक नहानघर में खड़ी थी. उस ने अपने सभी कपडे उतर दिए पर मै उस के नग्न शरीर को नहीं देखना चाहती थी फिर भी उस ने मुझे ऐसा करने से मजबूर कर दिया था इस लिए हम को वही करना पड़ रहा था. उस ने मुझे अपने पास खींच कर अपने बाहों में जकड लिया और नल का पानी खोल कर हम दोनों को नहलाया. फिर उस नहानघर से बाहर निकाल कर उस ने मुझे फर्श पर सुला कर मेरे ऊपर सो गया. मुझे इस बुरे व्योहार का कोई अनुभव नहीं था . उस ने मेरे साथ जबरदस्ती सम्भोग किया और मै अथाह पीड़ा से चीखती रही |

मेरा बलात्कार हो गया था. जब उस ने अपना काम तमाम कर लिया तब मुझे फिर से नहानघर में ढकेल कर अपने आप को साफ़ करने को कहा. मेरा नीचे का बदन पीड़ा से जल रहा था और खून से लथपथ था. मै रो रही थी पर अपने आप को साफ़ कर के जब बाहर निकली तब जसवंत ने मेरे हांथों को पीछे कर के उन में हथकड़ी डाल दी. इस के बाद वह मुझ को वही काले कोठरी में छोड़ कर उस कमरे को बाहर से ताला लगा कर कहीं चला गया |

इस के बाद जो भी कुछ हमारे साथ जसवंत ने किया उस की चर्चा करते खुद मुझे शर्म आती है. वह हर शाम को मेरे पास आता था मेरे लिए कुछ खाने पीने के लिए लाता था और अपने आप वहीँ उस काली कोठरी में चरस गांजा का लुत्फ़ उठता था. जब वह पुरे नशे में हो जाता था तब वह मुझे एक दो बार बलात्कार कर के मुझे बंद कर के वापस चला जाता था |

मेरे पास दुःख तकलीफों और दर्द की इतनी ढेर थी की अब मुझे कोई पीड़ा भी नहीं होती थी. मेरा सारा शरीर जैसे सुन्न हो चला था. मेरे साथ कैसे बुरे बुरे बर्ताव हो रहे थे बहार दुनिया को और मेरे घर वालों को कोई पता नहीं था. मै ने जसवंत से कई बार उस के महिला साथी के बारे में पूछने की कोशिश की पर उस ने हमें नहीं बताया |

अगर मेरा उस महिला से संपर्क हो जाता तो एक औरत होने के नाते शायद उस से मै कोई शिकायत करती और वह सब कुछ सुन कर मेरी कुछ मदद कर देती. जसवंत जेसे जानवर तो केवल अपना हवाश मिटाने हमारे पास आता था |

समय बीतता गया और धीरे धीरे छ: महीने बीत गए लेकिन अभी तक किसी ने भी मेरी सुध बुध नहीं लिया था. एक दिन नशे में चूर जसवंत जब मेरे साथ बेअदबी कर रहा था तब मै ने उस से बड़े प्रेम से पूछा कि क्या उसे मेरे छोड़ने के लिए कुछ धन दौलत मिलने कि आशा है. जसवंत चीख पड़ा और अनाप सनाप बकने लगा. उस का कहना था कि मेरे परिवार वालों के पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं है और सरकार तो उन कि मदद ही नहीं करना चाहती है इसलिए अब मुझे वहीँ उस कैद में जीवन भर पड़े रहना पड़ेगा |

मेरी जो भी थोड़ी सी आशा की झलक थी कि मुझे थोड़े दिनों में वहां से मुक्ति मिल जायेगी उस भरोसे पर जसवंत कि बातें सुन कर पानी फिर गया. अब मुझे न दिन में चैन रहती और न रातों को नींद आती थी. जसवंत कि नशेबाजी और मेरे ऊपर उस की अत्याचार बढ़ते जा रहे थे लेकिन मेरा उस कैद से छुटकारा मिलने का कोई आसरा नहीं दीख पड़ता था. मै निराशा की एक पुतली बनी अपने दिन रात किसी तरह गुजारती रही. मेरे अन्दर की विश्वास लगभग मर चुकी थी. मुझे हर इंसान से नफरत हो रही थी. मै अपने आप से भी बहुत नाराज हो जाया करती थी. भले मेरे अपने हांथों में हथकड़ी लगे हुए थे फिर भी मै कभी कभी अपने सर को जोर जोर से पास के दीवाल से टकरा के

अपने आप को कोसती थी. इस के अलावे मै और क्या कर सकती थी?

इसी तरह के दुखित और दूषित वातावरण में मेरा हर रोज गुजर रहा था. मै तड़प रही थी, रो रही थी, सभी तरह के पीड़ा सह रही थी पर केवल वहां से निकल कर भाग नहीं सकती थी. अब मेरा वहां लगभग तीन या चार साल बीत चुके थे..इन वर्षों में वह दोषी जसवंत ने मेरी क्या काल कर दी थी उस का वर्णन करना मेरे लिए कोई सरल काम नहीं है. हा मै इतना जरूर कह सकती हूँ की मै बिलकुल टूट चुकी थी और अब इस से ज्यादा दुःख तकलीफ सहने के लिए मेरे पास शक्ति ही नहीं बची थी. फिर भी जसवंत जैसे राक्षश के चंगुल से मेरा छूटना अब असंभव हो गया था|

उस दिन मै शायद चौदह या पंद्रह वर्ष कि हो गई थी और अगर मै अपने माँ के साथ होती तो आज बड़े धूम धाम से मेरी जन्मदिन मनाई जाती. लेकिन उस काली अँधेरी कोठरी में मुझे ऐसा कुछ नहीं होने वाला था. पर उस दिन एक अजूबा जरूर हो गया था जिस के बाद मेरी दुनियां धीरे धीरे बदलने लगी थी. अब मुझे आहिस्ते आहिस्ते उस काले अँधेरे कोठरी में कहीं से कुछ रोशनी आने की अनुभव हो रहा था. देर तो हो गई थी पर अब ऐसा लगता था की मै इन सब अंधेरों से उन्जाले के तरफ बढ़ रही हूँ. अब ऐसा लगने लगा था की भगवान् ने मेरी रोज की गिडगिडाना, प्राथना और आराधना को सुन ही लिया था|

उस दिन शाम को सब रोज की तरह जब उस काले कमरे का दरवाजा खुला तब वहाँ जसवंत नहीं पर वही महिला खड़ी थी जो मुझे पहले दिन थोड़े देर के लिए उस अपहरण करने वालों के साथ थी. वह मुझ को मोटर के पिछले सीट पर मिली थी. उस दिन उस के हांथों में मुझे छिपाने के लिए काले कम्बल थे पर आज उस के हाथों में मेरे खाने पीने के चीज थे. वह मेरे पास आ कर सब चीजों को फर्श

पर रख के पास वाली कुर्सी पर बैठ गई. मै हक्की बक्की हो कर उस के तरफ देखती रही, थोड़े देर के खामोशी के बाद उस ने बोलना शुरू किया|

"मेरा नाम शीला है. मै जसवंत की बीबी हूँ. जसवंत कुछ दीन के लिए किसी काम से शहर से बाहर गया है और अब मै ही तुम्हारा देख भाल करूंगी." शीला ने कहा और फिर मेरे तरफ इशारा कर के मुझे खाना खाने को बताया. मुझे तो भूख लगी थी इस लिए मै खाना खाने लगी. शिला फिर थोड़े देर चुप रह कर बोलने लगी, "मै यहीं नजदीक में एक छोटे से अस्पताल में काम करती हूँ. हम ने जब तुम्हारा अपहरण किया था तब यही सोचा था की हम उस रेनसम के पैसे से जल्दी धनी हो जायेंगे और दुनियां का भ्रमण करेंगे पर अब तो कोई भी पैसा वैसा आने की संभावना नहीं है इस लिए अब जसवंत शायद तुम्हारा कोई और प्रबंध करेगा. पर मै यह नहीं जानती की वह तुम्हारा क्या करेगा क्योंकि वह हमें सब कुछ नहीं बताता है," शीला ने कहा और मेरे तरफ बड़े ध्यान से देखती रही|

इस बीच मुझे उलटी आने लगी तो उस को कुछ शक हुआ और वह मेरे पेट का भलिभांति निरक्षण किया और बहुत घबरा कर मुझ से कितने सवाल करती रही. यह सब कैसे हुआ ? यह किस का बच्चा है ? तुम इस काले कमरे में क्या क्या काली करतूत करती रही ? उस के सभी सवालों के जवाब मै सही सही देती गई और जो जो कुकर्म जसवंत हमारे साथ करता था उन सब का भंडा फोड़ किया. शीला मारे गुस्सा के कांपने लगी थी. उस कमरे में थोड़ी देर तक इधर से उधर चलती रही फिर मेरे पास आ कर बैठ गई और मुझ से बहुत सहानुभूति से पेश आई|

उस ने अपने पति के सभी कुचालों और कुकर्मों के लिए बहुत अफ़सोस प्रकट किया और हम को बताया, "मै यह कभी नहीं चाहती थी. जसवंत ने न ही केवल तुम पर जुर्म किया है पर उस ने

मुझे भी बहुत बड़ा धोखा दिया है. पर जो हो गया सो हो गया अब मै तुम पर और मुझ पर और ज्यादा जुर्म नहीं होने दूँगी. मै जसवंत से आज कि टेलेफोन से बात कर के सफाई मांगूंगी. अगर वह कुछ भी आना कानी किया तो मुझ से बुरा और कोई नहीं होगा." इतना कह कर शीला वहाँ से उठी, दरवाजा बंद किया और जल्दी से बाहर निकल गई. मै फिर अकेली उसी बंद कमरे में अपने और शिला के बारे में सोचती रही |

मुझे मेरी प्रेग्नेन्सी की खबर सुन कर बहुत असमंजस हुई पर मै अब एक और मुसीबत में फंस गई थी. मै सोच भी नहीं सकती थी की मै क्या करूं. एक दिल तो किया की मै अपना सर उस दीवाल में मार के तोड़ फोड़ लूं और अपना जान दे दूं पर यह भी करने की हिम्मत मुझ में नहीं रही |

मै वहीँ फर्श पर पड़े पड़े शीला के बारे में सोचती रही. कोई भी पत्नी को अपने पति के धोखेबाजी और लुकाछिपी कार्य से कभी ख़ुशी नहीं होती. मुझे खुद अपनी माँ कि बात याद आई. मेरे पिता ने भी मेरी माँ को हमारे पैदा होने के तीन साल बाद बहुत सताया था और उनको धोखा दिया था इसलिए मेरी माँ ने मुझे लेकर घर छोड़ कर चली आई थी फिर कुछ दिनों में मेरे सौतेले पिता सुरेश के साथ सम्बन्ध जोड़ लिया था. हो सकता है की जो आग शीला के कलेजे में भड़क उठी है उस का नतीजा मेरे लिए कुछ अच्छा ही साबित हो. आगे मेरा क्या होगा इस का तो हम को कोई ज्ञान ही नहीं था पर मुझे बस शीला के प्रतिक्रिया का सबूरी करना था |

मेरी एक रात और सोच फिकर में रोते रोते गुजर गई लेकिन अब मेरी चिंता बहुत ज्यादा हो गई थी क्योंकि मुझे पता चल गया था कि मेरे पेट में जसवंत का बचा पल रहा था और शीला उस की बीबी है. मै भी माँ बन्ने जा रही थी. मुझे शीला ने मेरे प्रसूति हालात को समझाया था पर घबराहट तो होने लगी थी |

दुसरे दिन मध्यान को हमारे काले कोठरी के बाहर के ताले की खुलने की आवाज सुनाई दी और जब दरवाजा खुला तब मेरे सामने एक नई शीला खड़ी थी. उस के चेहरे के हावभाव को देख कर यह जाहिर हो रहा था की उस ने कोई भूत को देख लिया था. वह बहुत घबराई हुई थी और उस का सारा चेहरा चिंता, मायूसी और व्याकुलता से भरा था|

वह अपने सर पे अपने दोनों हांथों को रख के मेरे पास बैठ गई और कहने लगी, "जयश्री जो भी तुम्हारे साथ हुआ है उस की आधी जिम्मेदारी मेरी है. मै जसवंत के इस अपहरण वाले योजना में शामिल थी पर आज मुझे पता चला है की यह मेरी सब से बड़ी भूल थी. उस ने मुझ को बहुत बड़ा धोखा दिया है. वह आज तक मुझ से सब कुछ छिपाता रहा." शीला थोड़ी देर रुकी पर फिर कहना शुरू किया|

"मै अपने किये पर बहुत शर्मिंदा हूँ और तुम से माफ़ी चाहती हूँ. मै ने यह कभी नहीं सोचा था की जसवंत मुझ से इतना बड़ा उल्टा खेल खेलेगा. वह हम से झूठ बोला है की वह शहर से कहीं बाहर कोई काम से गया है. यह सब सरासर फरेब है." मै चुपचाप सुनती रही और शीला अपने बातों को जारी रखा|

"सच तो यह है की वह आज खुद कैदखाने में बंद है क्योंकि उसे चरस गांजा रखने और बेचने के जुर्म में गिरफ्तार किया गया है. जल्द ही उस पर इस जुर्म के लिए मुकदमा चलाया जाएगा और हो सकता है की उस को लम्बी कैद की सजा हो जाए." कुछ रुक कर शीला ने फिर कहा|

"मै न तो उस की कोई जमानत देने जा रही हूँ और न ही उस के बचाओ के लिए कोई वकील करने का मेरा इरादा है," शीला कहती

जा रही थी और गुस्से से काँप रही थी. उस के आँखों से लगातार आंसू बह रहे थे. उस के चेहरे पर महान प्रायश्चित के चिन्ह नजर आ रहे थे|

शीला ने मुझे बड़े प्रेम से भोजन कराया और जो नए कपडे मेरे लिए उस ने लाये थे उन को हमें पहनने को कहा. इस के बाद शीला ने हमें अपना आगे का पूरा प्लान समझाते हुए कहा, "जयश्री, मै चाहती हूँ की तुम जल्द से जल्द यहाँ से निकल कर भाग जावो और जा कर नजदीक के पुलिस को तुरंत अपना पूरा दास्ताँ सुनावो जिससे वे तुम को सही सलामत तुम्हारे घर पहुंचाएं और जसवंत पर कानूनी कारवाही करें. मै यह भी जानती हूँ की तुम्हारे अपहरण के लिए उस पर अन्य मुकदमा दायर किया जाएगा. मै उस की सब भेदों का भंडा फोड़ करूंगी."|

मुझे शीला के इन सभी बातों पर यकीन ही नहीं हो रहा था. आज जब खुद शीला पर जसवंत के अत्याचार और बुरे आचार का असर पड़ा तब वह एक दम बदल गई थी. वही शीला जो पैसे के लालच और जल्द धनी होने के ख्याल से शुरू शुरू में मेरे अपहरण में x]]मिल थी आज अपने पति के उस के प्रति बुरे नियत और धोखेबाजी को जान कर उस को क़ानून के हवाले करने को तैयार थी|

यह इस नारी का दूसरा रूप था जो मेरे लिए आजादी का मार्ग बनाने जा रहा था. मै इतना परेशान थी की खुद यह नहीं समझ पा रही थी की शीला की बातो को मानू या न मानू. पिछले दिनों की अपनी सब दुर्दशा को याद करते हुए मेरा यह संदेह शायद सही था पर शीला ने मुझ को आश्वासन दिया की वो अब जो भी कर रही है वह हमारे रिहाई से ज्यादा अपने भले के लिए ही कर रही है. वह चाहती थी की मै उस कारावास से आजाद हो के अपने परिवार से जा मिलूँ और

जसवंत को उस के किये पर शक्त से शक्त सजा मिले. शीला ने मुझे बताया की वह खुद पुलिस की मुख्य गवाह हो जायेगी |

जब शीला ने यह सब उदारता दिखाया और मुझ को विस्तार पूर्वक समझाया तब जा कर मुझे विश्वास होने लगा की उस का यह योजना सही और सफल होगा. पहले शीला ने मुझे कुछ पैसे दिए और फिर अपने मोबाइल फोन से एक टैक्सी मंगाया मुझे पुलिस थाने ले जाने के लिए. फिर उस ने पुलिस को बताया की वह जयश्री को जसवंत के चंगुल और कारावास से आजाद कर के टैक्सी द्वारा उन के पास भेज रही है. एक औरत ने दुसरे औरत का दुःख दर्द समझ के उस की मदद करने को तैयार हो गई थी क्यों की एक गैरजिम्मेदार मर्द ने उस के साथ फरेब किया और उस को बहुत बड़ा धोखा दिया था |

इस के बाद उस ने उस काले कोठरी के दरवाजे को खोल के मुझे बहार टैक्सी का इंतज़ार करने को कह के खुद जाने को तैयार हो गई .मै ने उस को लाखों धन्यबाद दिया, उस के गले लगी और बड़ी देर तक आलिंगन करती रही |

जब शीला वहाँ से चली गई तब मुझे आज तीन चार वर्षों के बाद उस काले कोठरी के बाहर मेरे इस नए आजादी का सही मतलब महसूस हुआ. मुझे बाहर सब नया नया लग रहा था. वहां के हवा बयार, पेड़ पालो, जमीन जगह, बाग बगीचा, जल थल , सड़क नदी, घर दुवार और अन्य चीजें सब नए लग रहे थे. वैसे तो मै इस कारावास में आने से पहले एक स्वतंत्र जीवन अपने माँ और सौतेले पिता के साथ बिताती थी पर आज इस अपहरण के कैद के बाद मुझे असली आजादी का माने समझ में आने लगा था. लेकिन न जाने मेरी ये नई स्वतंत्रता मुझे क्या क्या रंग दिखाती है |

जसवंत ने पिछले तीन चार वर्षों में हमें बहुत डराया धमकाया था और मेरे रग रग में भय समां गई थी तथा इस भयानक भय को एक दम अपने दिल और दिमाग से निकलना मेरे लिए आसान नहीं था. मै अभी भी बहुत डरी हुई थी पर अपने आप में हिम्मत लाने की पूरी कोशिश कर रही थी. जसवंत के खतरनाक कुत्तों का तो कहीं नामो निशान नहीं था क्योकि उस ने हम को झूठ मूठ को उन के बारे में बता के मेरे दिल में डर पैदा किया था. जसवंत के सभी अनुचित व्योहार अब मुझे बहुत बड़ी मनोविज्ञानिक पीड़ा पहुंचा रही थी. मुझे समझ में नहीं आ रहा था की मै आगे जाती हूँ या पीछे की ओर चल रही हूँ|

मै इश्वर के इतना शुक्रगुजार थी की मेरी साँसें अभी भी चल रही थी और मै जीवित थी. जान है तो जहान है इसलिए जो कुछ भी हम ने पिछले तीन चार सालों में खोया था मुझे यकीन था की मै उन को वापस ढूंढ लूंगी. मुझे समय चाहिए. समय बड़ा बलवान होता है. समय ही हमारे सभी अंदरूनी पीड़ा को हर लेता है और हमें पुनः जीने की राह दिखा देता है. मेरी यही उम्मीद थी और कुदरत से यही दुआ था. इतने में मेरी टैक्सी आ गई और मै उस में सवार हो के पुलिस थाने की ओर चल पड़ी|

जहाँ एक तरफ मेरे आजाद हो जाने की अथाह ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा वहीँ दुसरे ओर मेरे दिल और दिमाग में लाखों ऐसे सवाल उठ रहे थे जिन का जवाब खोजना मेरे लिए अभी आसान नहीं था. अब तो मेरी परेशानियाँ और भी बढ़ रही थीं. मै एक खाली डिब्बे के तरह लग रही थी जिस में जो चाहो भर सकते हो|

मेरा तीन चार साल का भयानक अतीत मुझे पकडे बैठा था इसलिए मै अपने भविष्य को ठीक से देख ही नहीं सकती थी. पता नहीं मेरा कोई भविष्य है या नहीं यह तो मै अपने परिवार और दोस्तों से मिलने पर ही तय कर पाउंगी. क्या मेरे सौतेले पिता सुरेश मुझ को स्वीकार

करेंगे या नहीं! मेरी माँ मुझ से क्या कहेगी और कैसे पेश आएगी? मेरी नन्ही सी बहन इंद्रा न जाने मुझे पहचान भी सकेगी या नहीं! अब तो वह छ: साल की हो गई होगी. मेरी सभी सखी सहेलियां मेरे बारे में क्या सोचती होंगी? मेरा स्कूल का क्या होगा ? यही सब कल्पना करते करते पुलिस थाना भी आ गया. मै ने टैक्सी चालक को पैसे दे कर विदा कर दिया और धीरे धीरे पुलिस थाने के अन्दर प्रवेश किया. आज भी एक सोमवार का दिन था. दिन के एक बजे थे जब मै पुलिस स्टेसन पहुंची।

पुलिस थाने पर मेरी इन्तजार बड़े बेसबरी से की जा रही थी. मुझे देख कर इंस्पेक्टर सुनील बहुत खुश हुआ और मेरा स्वागत करते हुए मुझ को बगल वाले कमरे में अन्य महिला अफसरों के साथ बड़े इज्जत से बैठाया. मुझ को कुछ चाय पानी पिलाया और मुझ से बड़े प्रेम से पेश आया. शीला से मेरे मिलने के खबर मिलते ही पुलिस वालों ने मेरे माँ को इत्लाह कर दिया था. मेरी माँ को पुलिस वालों ने पास के होटल में ठहराया था. मेरा सब बयान ले लेने के बाद एक महिला पुलिस अफसर ने मुझ को उस होटल तक पहुँचाया जहाँ मेरी माँ ठहरी थी।

इसलिए सब से पहले मै अपने माँ से मिली. सोमवार के दिन में तीन बजे थे और जैसे मैं स्कूल से घर वापस पहुंची थी. पर आज का हमारा ये माँ बेटी का मिलन भारत मिलाप से भी भावपूर्ण था और कृष्ण सुदामा के भेंट से भी कीमती था. आज मेरी माँ मुझ से तीन चार वर्षों के बाद मिल रही थी. उस सोमवार को सुबह जब मेरी माँ मुझ से बिना मिले और आलिंगन किये अपने काम पर चली गई थी तो आज जैसे वह पिछले तीन चार सालों की बाकी चुम्बन, आलिंगन और गले मिलने की कमी की पूर्ती कर रही थी. मै भी अपने माँ का प्यार भरा सम्पर्क पा के जैसे पुरे तरह से तृप्त हो गई थी।

इस पुनर्मिलन के लिए मै बहुत अधीर थी. मेरी माँ भी शायद इतनी ही बेचैन थी पर हम दोनों की विकलता को समझना आम जनता के लिए इतना आसान नहीं था. मेरी माँ ने अपना वही पुराना करुनामय भाव प्रदर्शित करते हुए मुझे लाखों दिलासा देती रही और मुझे हजारों सांत्वना प्रदान किया जिन को देख सुन के मै अपनी सभी दुःख तकलीफ और बाहरी तथा अंदरूनी पीड़ा को थोड़े देर के लिए एक दम भूल गई थी क्योंकि मै अपने प्यारी माँ के सुखद बांहों में लिपटी थी|

माँ आखिर माँ ही होती है उस के गोद में आते ही बच्चे बहुत ही संतोष का अनुभव करने लगते हैं चाहे वो छोटे हों या कितने भी बड़े हो जाएँ. न जाने कितने देर के ख़ामोशी के बाद हम माँ बेटी एक दुसरे से बाते करने के लिए तैयार हुए. इस ख़ामोशी के समय हम केवल एक दूजे के शरीर के सम्पर्क से और आँखों से बातें कर रहे थे. ऐसी गुप्त वार्तालाप हम दुखित लोगों को बहुत शांति और सांत्वना प्रदान करती है|

मेरी प्यारी माँ अपनी दी हुए तितली वाली अंगूठी को मेरे कानी उंगली में देख कर बहुत खुश हुई. मै ने उन से बताया की हो सकता है की यही तितली ने उन के गैर उपस्तिथि में मेरी देखभाल करती रही. मेरी ऐसी बच्चों जैसी बाते सुन कर उस मातम के समय में भी मेरी माँ के चेहरे पर एक छोटी सी मुस्कान आ गई थी|

हम दोनों ने न जाने कितने ग्लास ठन्डे पानी पी लिए थे. सर्वप्रथम मै ने अपने माँ के हजारों सवालों के कुछ जवाबों को देने की कोशिश की और फिर बहुत से अपने सवालों को पूछा. कभी हमारे सवालों के जवाब सवाल से ही दिए जाते थे और कभी हमारे सवालों के जवाब बड़े कठिनाई से हमारे जबान से निकल पाते थे|

कैसे हमारा चार पांच घंटे का समय निकल गया हम को पता भी नहीं चला. उस दिन हम ने अपने होटल के कमरे में ही अपना शाम का भोजन मंगवाया और बड़े प्रेम से हम माँ बेटी ने एक दुसरे को अपने हांथों से खाना खिलते रहे और जैसे चार वर्षों की जुदाई को सिर्फ चार घंटों के मिलन में ही पूरा कर लेना चाहते थे |

इस बीच मेरी माँ ने मेरे प्रेगनेंसी याने मेरे पेट में जसवंत के पलते हुए बच्चे के बारे में जान पाई. उन को अपार दुःख हुआ और मै ने देखा की जैसे उन के सर पे कोई बहुत बड़ा पहाड़ गिर पड़ा था. लेकिन जब मै ने उन को शीला के उदारता के बारे में बताया तब मेरी माँ पुरे बात को ठीक से समझ पाई. मेरी माँ ने शीला से मिल कर उसे धन्यबाद देना चाहती थी |

लेकिन मेरी माँ ने अपने आप को सँभालते हुए हम को आश्वासन दिया कि मेरा वापस मिल जाना उन के लिए जितना ख़ुशी ला चुकी है वे उस से बहुत संतुष्ट हैं. जिस हालात में मै प्रसूति माँ बनने जा रही थी उस को मेरी माँ भलिभांति समझती थी इसलिए उस परिस्थिति से समझौता कर लेना ही सही होगा |

रात तो हम ने किसी तरह से गुजार दी. सुबह हमें पुलिस को अपनी पूरी बयान देना था जिस से जसवंत जैसे अपराधी पर मुकदमा दायर किया जा सके. इस के बाद हमें अपने माँ को शीला से मुलाकात करना था. पहले तो हम ने पुलिस के कार्य से छुटकारा पा लिया फिर शीला से मिल कर उस को शुक्रिया अदा करने के बाद हम और मेरी माँ अपने घर की और चल पड़े |

असल में हमारा घर हमारे काली कोठरी से थोड़े ही दूर पर थी क्योंकि हम लगभग आधे घंटे में अपने घर पहुँच गए थे. हम माँ बेटी को बहुत ताजुब हुआ की मै अपने चार सालों के बहुमूल्य समय अपने परिवार और घर से दूर थी पर केवल आधे घंटे के फासले पर

मुझे कैद कर के जसवंत मेरा सब कुछ लूटता रहा. बड़े दुःख की बात थी की किसी को मेरी खबर ही नहीं मिली थी|

घर पहुँचने से पहले मेरी माँ ने मुझ को एक खुशखबरी दी. मेरा सौतेला पिता सुरेश अब मेरी माँ के साथ नहीं रहता था. मेरी माँ अब मेरी छोटी बहन इंदिरा औरे मेरी मासी सुमिन्त्रा के साथ रहती थी. सुरेश उसी दिन मेरी माँ से लड़ झगड़ के घर से निकल गया था जिस दिन जसवंत ने मेरे रिहाई के लिए एक लाख की मांग की थी. उस दिन से मेरी माँ मेरे खोज में न जाने कितने लोगों के आगे अपना हाँथ जोड़ा था और भीख माँगा था लेकिन किसी ने कोई मदद नहीं की थी|

मेरी माँ मेरे लिए तड़पती रही और आंसू बहाती रही. कभी सरकारी अफसरों से तो कभी वकीलों के सामने अपना दुखडा रोती रही. केवल पुलिस वाले ही मेरी माता को मेरे मिलने का दिलासा देते रहे लेकिन कोई भी जसवंत के काली कोठरी का पता नहीं लगा सका था. धन्य थी मेरी सहेली शीला जिस की आँखे ठीक समय पर खुल गई और वह मेरी मदद कर के मुझे आजाद करा दिया|

सर्वप्रथम मुझे मेरी मौसी सुमिन्त्रा ने मुझे मेरे घर के दहलीज पर ही स्वागत किया, गले मिली और आलिंगन किया. मेरी छोटी बहन इंदिरा बगल में खड़ी मुझ से मिलने की राह देख रही थी. जब हम एक दुसरे से मिले तब ऐसा लगा की हम कभी बिछड़े ही नहीं थे. मुझे मेरा परिवार मिल गया था, मै ने अपना घर पा लिया था, मुझे अपने सखी सहेलियां मिल गई थी और एक प्रकार से मै आजाद तो हो गई थी पर मेरा खोया हुआ चार साल मुझे अभी भी वही काले कोठरी में खीच के ले जाता था. मै उस भयंकर, दुखित और दर्दनाक घटना को भूल नहीं पा रही थी. उस कुकरम, कुस्वप्न और दुर्व्योहार को भूलना मेरे लिए बहुत मुश्किल था पर मै कोशिश कर रही थी|

जसवंत जैसे हैवान ने मेरे जीवन में इतना बड़ा आग लगा दी थी की उस को बुझाने के लिए मुझे कोई भी गंगा जल नहीं मिल सकती थी. हलाकि जसवंत को दस साल की कैद की सजा सुना दी गई थी और शीला को जमानत पर छोड़ा गया था पर मै तो अब अपना उम्र कैद भुगत रही थी. मुझे इस जनम कैद की सजा से कौन मुक्त करेगा? मुझे कई डाक्टरों ने मेरा मानसिक इलाज करने के लिए मिले थे और दो चार सरकारी समाज कल्याण महिलायें भी मेरी चिकित्सा में लगी थी पर मेरे बीमारी का इलाज इतना सरल नहीं था की वो दो चार दिनों में ही ठीक हो जाए. मै तो एक ऐसी घायल थी जिस का चिकित्सा शायद तभी मुमकिन हो सकता था जब मुझे यह मौका दिया जाए की मै भी जसवंत के साथ वही बर्ताव करूँ पर क्या ये इंसानियत की अच्छी और श्रेष्ट आचार होगी?

मेरा और मेरे पेट में पल रहे बच्चे का क्या होगा? इस का किसी को पता नहीं था और न ही मेरे माँ के सिवाय किसी और को कोई फिकर था. अब मुझे समझ में आया की मुसीबत में इस संसार में किसी का साथ देने वाले बहुत कम होते हैं. यही इस ज़माने का तकाजा है पर इंसानियत के खातिर इस विचार को बदलने की जरूरत है. सुख में भले कोई हमारा साथ कोई दे या न दे पर दुःख में हमे साथी की ही नहीं पर लाखों मददगारों की जरूरत पड़ती है यही तो सभी समाज में होना चाहिए पर अक्सर ऐसा होता नहीं है |

अब तो पास पड़ोस वालों से मुझे कोई सहानुभूति नहीं मिलती है, कोई कोई मेरे साथी भी हम से दूर हो गए हैं. समाज के कई ठेकेदार तो हमें एक छूत की बिमारी समझ रहे है. कोई संस्था नहीं है जो मेरी मानसिक, आर्थिक और सामाजिक तकलीफों को समझ के मेरी सही मदद कर सके. मेरा जीवन केवल मेरी माँ, मेरी मौसी और मेरी बहन तक सीमित है |

मुझे नहीं मालूम की कब तक मेरा यह दुर्दशा जारी रहेगा लेकिन मै अपना बच्चा हो जाने के बाद खुद एक ऐसा संस्था को जनम दूंगी जो मेरे जैसे अभागिन की मदद करेगा. यही मेरा धय होगा और यही मेरी एक मात्र लक्ष होगी |

मेरी इस दर्दनाक अपहरण की कथा और सभी भयानक घटनाएं, दुर्व्योहार, असहाय कष्ट और कठिन परेशानियों को भूलना हमारे लिए बहुत मुश्किल है पर मै यह भी नहीं चाहती की ऐसी गैर जिम्मेदार घटना किसी अन्य लड़की पर फिर कभी बीते |

मेरे इस व्यक्तिगत विनाशकारी, भयानक, असहाय और महा घृणित काण्ड से मै ने बहुत कुछ सीखा है. कुछ थोडा सा हंस के सीखा है तो बहुत कुछ रो के सीखा है. इस दुर्घटना से जो सब से बहूमूल्य ज्ञान मुझे मिला है वह है आत्म विश्वास. अब मुझे मेरे अपने इल्लम, अपने ताकत और अपने बल पर पूरा भरोसा हो गया है. हिम्मत हारना कमजोरी है और कोई भी मुसीबत में अपने आप पर भरोसा रखना समझदारी है. दुःख सुख तो इस संसार में सब पर आती है पर हम को जहां हंसने की मौका मिलती है वहीँ रोने का समय भी आता है इसलिए हमारे जीवन में इन दोनों की चाह बराबर होनी चाहिए. जो हो गया सो हो गया इसलिए अपने अतीत को पकड़ के रोने से कोई लाभ नहीं है. यही मुनासिब है की हम अपने अतीत से कुछ सीख के अपने भविष्य को सजाते सँभालने की कोशिश करते रहें |

मेरे तरफ से अब बस इतना ही है! नहीं तो मेरा कलेजा फटने लगेगा.' |

पाठकगन तो जयश्री की करुणाजनक गाथा को खुद उस के जुबानी से सुन ली है पर अब हम उस के जैसे अभागन को किस तरह के सहारा कैसे दे सकते हैं? यह हमारे लिए और हमारे समाज के सभी संस्थावों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती

है. आशा है की ऐसी घृणित घटनाएं जो बड़े जोर से सभी देशो और समाज में बढ़ रही है अब धीरे धीरे हमारे समाज से ख़तम हो जायेंगी. मालूम पड़ता है की हमारी नारी समाज और अन्य बड़े बूढ़े इस बढ़ते हुए अपराधों से बहुत चिंतित हैं और उन के कई प्रदर्शनों से यह पता चलता है की इस पर अब सम्बंधित क़ानून को रचने वाले तथा समाज के अन्य नेता कोई ठोस कदम उठाने के लिए जाग चुके हैं. अब हमे यह देखना है की कितना जल्दी इन घृणित अपराधों पर काबू पाया जा सकता है|

हमारा एक ही नारा होना चाहिए इन अपराधों के विरुद्ध "जागो हे सोने वाले !" यहाँ हमें उस भजन की याद आती है " उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रेन कहाँ जो सोवत है"|

इन बुरे व्योहारों को जितना जल्द हम सब मिल जुल के अंnत कर देंगे उतना सुख और शांति हमारे जीवन में लहराएगी. लेकिन यह तभी हो सकेंगी जब हमारे सभी जिम्मेदार नेता इस बुरे बर्ताव और अपराधों पर गहराई से नजर दौडायेंगे और जल्द से जल्द कोई समाधान खोज कर सभी प्रकार के अपहरण और बलात्कार के अपराधों का अंत करने की कोशिश करेंगे. हम तो यही आशा को लिए बड़े बेसब्री से इन्तजार करते हैं. आप सब नेक सज्जनों और देवियों की जय हो|

१७

प्रीत की रीत

प्रीत की रीत अजीब होती है । कब किसी से प्रीत हो जाये यह कोई अगध प्रीत करने वाले को तब तक नहीं पता चलता जब तक उस का सही इजहार दोनो तरफ से नहीं हो जाता है । प्रीत की रीत तभी ठीक होती है जब एक दूजे को सही मीत मिल जाते हैं ।

एक सच्चा मीत तो बस इतना ही जानता है कि इशक के बिना ये जमाना खाक ही है । चाहे लाखों तीरथ कर ले इनसान पर प्यार के बराबर इबादत इस संसार मे और कोई नहीं है । सच्चे दिल से प्रेम करने वाले के लिये प्यार एक पवित्र पूजा है ।

एक सही यार के पांव जब भी अपने गली मे पड़ जाते हैं तब तो मानो अपने दिल दिमाग और आंगन मे प्यार के कितने सुन्दर फूल खिल जाते हैं । यही मान लेते हैं कि अब उन को सब कुछ मिल गया है इसलिये और कहीं भी आने जाने की जरूरत ही नहीं रहती बस एक दूजे से हिलमिल के जीवन बिताने की कसमे खा लेते हैं ।

फिर इस के सिवा दो प्यार करने वालो के लिये और कया चाहिये कयोंकि ये जवानी तो केवल दो चार दिनो की ही है पर प्यार की कहानी बड़ी लम्बी तथा रौचक होती है । प्यार करने वालो के लिये धूप, छांव, वारिश हो या सूखा हो, हवा हो या तूफान हो या घर हो

तथा बाहर हो इन सब का कोई मतलब ही नहीं रहता है कयोकि वे तो अपने मन मंदिर मे इशक ही इशक भरे रहते हैं ।

निखिल पाण्डेय का जनम तो एक चमत्कार ही था. उस के माता पिता दस साल से अपने एक बच्चे के चाह में न जाने कितने प्रार्थना, अनेक उपाए और हजारों तरकीबों को अपनाया था. आखिर में उन की पुकार जन्मदाता ने सुन ही लिया और आरती पाण्डेय ने अपने पति डॉक्टर ब्रिजमोहन पाण्डेय को एक सुन्दर पुत्र दे ही दिया.

निखिल की परवरिश एक शाही राजकुमार के तरह होने लगी थी. उस की सभी मांगों की पूर्ति की जाती थी यहाँ तक की उसे बिना मांगे ही सब कुछ मिल जाता था. ऐसे माहोल में पलने से निखिल भले एक बिगड़ा बाबू बन सकता था पर वह एक बहुत ही होशियार बालक हो चला था. घर आंगन, पास पड़ोस और सारे सिडनी शहर में निखिल के ज्ञान ध्यान और विद्वता की बड़ी चरचा होने लग गई थी और अपने किंग्स कॉलेज के सभी पढाई और अन्य काम में तो उस की बराबरी का कोई भी बालक नजर ही नहीं आता था.

अपनी प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करने के बाद निखिल को कितने तगमे, पुरस्त्कार और छात्रिवितियों से सम्मानित किया गया था और उसे संसार प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में चिकित्सा या डाक्टरी की पढाई करने की दाखिला मिल गया था. सिर्फ सत्रह वर्ष के कच्चे उम्र में निखिल पाण्डेय हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के

मेडिकल फैकल्टी का एक खास छात्र बन गया था. उस के माता पिता के खुशियों का कोई ठिकाना ही न रहा.

पांच वर्षों के कड़ी मसकत, लगन और पढाई के बाद एक साधारण निखिल पाण्डेय आज बाइस वर्ष के उम्र में डॉक्टर निखिल पाण्डेय हो गया था. सिडनी लौटने पर उस के माता पिता ने उस के लिए एक बहुत बड़ी वेल्कोम पार्टी रखा था. इस के बाद डॉक्टर बृजमोहन पाण्डेय के सिपारिश पर डॉक्टर निखिल पाण्डेय को रॉयल जनरल सिडनी अस्पताल में प्रारम्भिक काम मिल गया था. वह वहां के विख्यात डॉक्टर रणजीत सिन्हा हेड ऑफ़ कार्डियोलॉजी के साथ काम करने लगा था.

उधर पन्ना लाला के छोटे से जीवन के सब से खराब दिन के एक हफ्ते के बाद उस ने अपने पिता का घर एकदम से छोड़ कर चल देने का निश्चय कर लिया था. उसे सब दिन से ऐसा लगता था कि एक न एक दिन वह ऐसी ही कुछ हरकत कर बैठेगी पर वह तब तक सबर कर रही थी जब तक उस के स्कूल कि छुट्टियां न आ जाएँ. लेकिन फिर उस को ऐसी करने कि भी क्या जरूरत थी क्यों कि उस के स्कूल के पढाई के रिकॉर्ड भी तो कुछ अच्छे नजर नहीं आते थे. इसलिए चाहे उस के स्कूल की छुट्टी हो या न हो इस से उसे क्या फर्क पड़ता था. उस के लिए जैसे छप्पन वैसे गप्पन रहते थे.

पिछले तीन महीनो से वह अपने कुछ बिमारी के कारण बराबर स्कूल नहीं जाती थी तो जाहिर है कि उस के नतीजे तो बुरे ही

होते. पन्ना लाला का कथन था कि अगर वह चाहती तो उस के भी इम्तिहान के नतीजे उस के अन्य सभी सहपाठियों से ऊँचे होते और उस के कॉन्वेंट के फादर और सिस्टर उस की भी तारीफ़ करते रहते. उस ने अपने स्कूल के सभी अध्यापकों से यह साफ़ कर दिया था कि उस को आर्ट स्कूल जाना था जहां वह अपने प्राकृतिक चित्र बनाने की कला को और भी हुनार दार तथा मजबूत बनाना चाहती थी. यहाँ तक की पास के एक मशहूर आर्ट स्कूल में उस को दाखिला भी मिल चुका था और उस के पिता भूषण लाला ने उस के पहले टेम का फीस भी चुका दिया था. न जाने ये फीस उन को वह आर्ट स्कूल वापस करेगा या नहीं.

पर पन्ना के तकदीर में शायद कुछ और लिखा था इसलिए उस का अपना सब सोचा नष्ट भ्रष्ट होने लगा था. बचपन में उस की माँ चंचल देवी एक दिन अचानक घर से किसी को कुछ बताये बिना अपना सब कुछ छोड़ कर चलती बनी थी. उस समय पन्ना केवल आठ साल की लड़की थी. पन्ना के पिता की खुशहाल पारिवारिक जीवन तहस नहस हो गई थी और उन्हों ने अपने बेटी के लिए माँ और बाप दोनों का फ़र्ज़ अदा करने की ठान ली थी. आज जब पन्ना १७ साल की हो गई थी तब भूषन लाला को अपने बेटी के बारे में एक अजीब सी चिंता लगी रहती थी.

अपने पिता को पन्ना बेहद्द प्यार और आदर करती थी लेकिन जैसे वह अपने इस जीवन से भागने के लिए मजबूर थी. पर घर से जाने से पहले पन्ना ने अपने पिता के लिए एक ख़त लिखना

चाहा और अपने कमरे के मेज के पास बैठ कर सोचना शुरू किया लेकिन उस का अपना अतीत सामने आ कर खड़ा हो गया और उस के सामने एक चलचित्र के तरह उस का पिछला जीवन आ गया.

पन्ना के पिता भूषण लाला एक अच्छे आविष्कारक थे और अपने जीवन काल में उन्हों ने कई औजारों को बनाया था पर दुःख इस बात की थी की उन से पहले किसी और ने उस औजार को बना कर उस पर अपना हक़ जमा लिया था. इस लिए भूषण लाला अपने समय में कोई भी खास नए आविष्कार नहीं कर पाए थे. भूषण लाला बेचारे सब दिन नए आविष्कारकों से एक कदम पीछे ही रहते थे. फिर भी कुछ छोटी छोटी आविष्कारों को वे कर चुके थे जिन के लिए उन ¿o अपने हुनर पर बहुत गुमान था.

भूषण लाला आज से करीबन बीस साल पहले जब वह खुद एक अट्ठारह वर्ष का नौजवान था तब अफ्रीका से आ कर ब्रिसबन में बसा था और यहाँ आने के एक साल बाद जब उस की मुलाकात चिनचिला गाँव की चंचल देवी से हुई तब उन के जीवन में जैसे अजीब बहार आ गया था. चंचल देवी गाँव में पली एक हंसमुख युवती थी. जहां वह एक होशियार घुड़सवार थी वहीँ उन की सुन्दरता बेजोड़ और बहुत ही लुभायमान थी. भूषण लाला तो चंचल देवी के रूप, गुण और वैभव को देख कर पहले ही नजर में लट्टू हो गया था. केवल तीन ही महीने की प्यार की मेलजोल के बाद उन दोनों की शादी हो गई थी.

थोड़े ही दिनों में उस दम्पति ने एक अति प्यारी और सुन्दर कन्या को जनम दिया था जिस का नाम वे बड़े शौक से पन्ना रक्खा था. अपने एकलौती बेटी के लिए दोनों भूषण लाला और चंचल देवी सब कुछ करने और देने को हर वक़्त तैयार रहते थे. पन्ना को पास के कान्वेंट स्कूल में भरती करवा के उस के शिक्षा दीक्षा का बहुत अच्छा ध्यान देते रहे.

अपने माँ के अचानक घर छोड़ कर चले जाने से पन्ना को बहुत मानसिक तकलीफ हुआ था पर भूषण लाला ने अपने बेटी की देख रेख इतने समझबूझ और खूबसूरती से किया तथा उसे इतना दुलार प्यार दिया की पन्ना ने थोड़े ही दिनों में अपने माँ की गैरहाजिरी को जैसे भूल ही गई थी. फिर भी पन्ना अपने माँ के कमी के कारण अपने जीवन में बहुत ही उथल पुथल देखती रही.

भूषण लाला एक बहुत ही मेहनती और इमानदार व्यक्ति था जो अपने आप को तम्बाकू और शराब जैसे जहर से सब दिन बचा के रखा था. उस के लिए धर्म से बढ़ के उस के अपने नियमित कर्म थे. वह अपने परमात्मा का आराधना और पूजा पाठ खुद किया करता था. उस के लिए सभी ब्राह्मणों के अंधविश्वास, पाखंड और उन के दिमाग में बसी उंच नीच की बर्ताव एक धर्म प्रेमी सज्जन के लिए बहुत बड़ी बाधा थी. वह सर्व शक्तिमान परम पिता परमेश्वर को अपना सब कुछ मान कर अपने सभी कर्म करता था. भूषण लाला के विचार में यह धरती हम सब के लिए एक थोड़ी देर रुकने वाली ट्रेन स्टेशन

थी जहां पर हमे जल्दी से अपना सब काम कर के हम सब को चलते रहना है. उस के लिए उस का घर ही उस का सब से बड़ा और पवित्र मंदिर था.

उस का सुबह सब दिन इस प्रार्थना से शुरू होता था।

अब सौप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में है
जीत तुम्हारे हाथो में और हार तुम्हारे हाथों में
मेरा निश्चय बस एक यही : एक बार तुम्हे मै पा जाऊं .
अर्पण कर दूं दुनिया भर का सब प्यार तुम्हारे हाथों में
जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ , जो जल में कमल का फूल रहे
मेरे अवगुण दोष समर्पित हो, भगवान् , तुम्हारे हाथों में .
जब जब संसार का कैदी बनू , निष्काम भाव से कर्म करूं.
फिर अंत समय मै प्राण तजु , निराकार , तुम्हारे हाथो में
मुझ में तुझ में बस भेद यही : मै नर हूँ , आप नारायण हो
मै हूँ संसार के हाथों में , संसार तुम्हारे हाथों में

भूषण लाला के दो दिलचस्प ग्रंथों के कथा थे. पहला था 'जान आदि कवी नाम प्रतापा, भये सिद्ध करी उल्टा जापा' और दूसरा था बाली और सुग्रीव की कहानी. दोनों कहानियों में उन को दोष नजर आते थे. उन को बहुत दुःख लगता था यह जान कर की बाल्मिक जैसे व्याधा और बाली जैसे दुष्ट भाई की तुलसीदास जैसे कवी ने बड़ी चर्चा की थी. जिस पुरुष में गलती

करने और पाप करने की चाह हो हमारे ग्रंथों ने उन की खूब बड़ाई की थी जब की उन को धिकारना चाहिए था. पाप कर के छमा मागने से बेहतर था पापों से सदा दूर रहने की शमता रखना. भूषण लाला सभी गलती करने वालों को माफ़ कर सकते थे पर उन की गलतियों को कभी नजर अंदाज़ नहीं कर सकते थे.

भूषण लाला अपने बेटी पन्ना के स्कूल के नतीजे से बड़े दुखी थे और बहुत चिंतित भी थे पर वे पन्ना को कामयाबी पाने के लिए एक और मौका देना चाहते थे. इसीलिए वे उसे अपने कला प्रदर्शन और चित्रकारी के हुनर को इतना जबरदस्त बना देना चाहते थे की पन्ना आगे चल के संसार में सब से बड़ी चित्रकार या कलाकार बन जाए.लेकिन पन्ना का इरादा तो कुछ और था. उस ने अपने पिता के पास ख़त लिखते वक्त और अपने जरूरी सामान अपने बेग में भरते समय अपने पिता की सभी इरादों और प्यार दुलार पर बहुत गौर किया. वास्तव में पन्ना अपने घर से भाग नहीं रही थी. वास १८ साल की युवती थी जिसे अपने मर्जी से कहीं भी आने जाने की छूट थी. जब पन्ना को होश आया की वह अपने पिता के लिए एक ख़त लिख कर छोड़ जाना चाहती है तब उस ने केवल इतना ही लिख कर ख़त को अपने पिता के कमरे में रख कर चल पड़ी.

'पिता जी, मै आप को बहुत प्यार करती हूँ. मुझे माफ़ कर देना. मै जहां भी रहूंगी हमारे लिए सब ठीक ही होगा. मेरी चिंता मत करना. आप की बेटी पन्ना.'

रोमा स्ट्रीट ट्रेन स्टेशन पहुँचने से पहले पन्ना ने अपने कुछ जरूरी पुस्तकों और अपनी कुछ चित्रकारी को पास के साहूकार की दूकान में बेच कर अपने भाड़े और अन्य जरूरी खर्च भर के पैसे बटोर लिया था. ब्रिसबन से सिडनी की ट्रेन पन्ना को ले कर सुबह आठ बजे चल पड़ी और अगले दस बारह घंटे में वह एक नए जगह पर पहुच जायेगी जहाँ उस को कोई जानता भी नहीं होगा. ट्रेन चलती रही और पन्ना अपने आगे के जीवन के बारे में सोचती रही. रास्ते में ट्रेन कई जगह पर रुकी और चार पांच घंटों के बाद पन्ना को नींद आ गई. पर जब उस की आँख खुली तब सिडनी ट्रेन स्टेशन की हल्ला गुल्ला और भीड़ भाड़ से निकल कर वो सड़क के किनारे अपना छोटा सा बैग ले कर बैठ गई जैसे उसे किसी का इन्तजार था.

पन्ना के बगल में एक अंग्रेज युवती आ कर बैठ गई और अपना पहचान कराया.'हाय ! माय नेम इस डोरीन,' पन्ना ने डोरीन से हाँथ मिलाया और उन दोनों की गुफ्तगू चालू हो गई. बातों बात में वे दोनों एक दुसरे के बारे में लगबग सब कुछ जान लिए. उन दोनों की हालत एक सी थी. दोनों अपने घर से भाग निकली थी और एक नए जीवन की तलाश में भटक रही थी. राम मिलाये जोड़ी, एक लंगड़ा, एक लूला. डोरीन को सिडनी के बारे में कुछ अनुभव था इसलिए वह पन्ना को लेकर अपने एक सहेली के घर ब्लैक टाउन पहुंची और फिलहाल वहीँ अपना डेरा जमाया. उन के सहेली जेसिका के मदद से उन

दोनों को पास वाले एक छोटे से भोजनालय में उन को काम मिल गया.

एक दो दिन बीत जाने के बाद पन्ना ने अपने पिता के पास कलेक्ट फोन कॉल किया. जैसे भूषण लाला ने फ़ोन उठाया की पन्ना बिना उन को कोई मौका दिए बोल पड़ी, 'मै वापस घर नहीं आ रही हूँ ' थोड़े देर तक चुप रह कर भूषण लाला ने एक साधारण सा जवाब दिया, ' कभी ऐसा नहीं कहना बेटी क्योंकि तुम्हारे यही शब्द एक दिन लौट कर तुम को बहुत सतायेंगे.'

पन्ना ने अपने फोन को जकड कर पकड़ लिया की कहीं वह उस के हाँथ से छूट न जाए. वह सोचने लगी की उस के पिता जो उस के जीवन के एक ही आधार थे और उस के एक ही सहारा रहे उन्हीं ने उस के लिए कोई खास सोच फिकर नहीं दिखाई. यह जाहिर था की पन्ना के पिता उस से खफा थे पर पन्ना को यह भी विश्वास था की उस के पिता सब दिन उस के लिए समय आने पर सब कुछ करने को तैयार मिलेंगे. पन्ना यही सब सोचती रही की उस के पिता ने फिर बड़े शांति से कहा,' बेटी मै अभी भी तुम को उतना ही प्यार करता हूँ लेकिन यह अच्छा होता की तुम हम को यह बता देती की तुम अभी कहाँ हो,'

'पिता जी मै सिडनी में हूँ लेकिन फिलहाल मै आप को केवल इतना ही बता सकती हूँ. मै आगे पढाई नहीं करना चाहती थी.' पन्ना ने अपना सफाई देते हुए कहा.

'लेकिन यह तो कोई खास कारण ही नहीं हुई घर छोड़ के जाने की बेटी. तुम जाने से पहले मुझ से सलाह मशवरा तो कर सकती थी,' भूषण लाला ने बड़े शांति पूर्वक कहा.

'पिता जी, क्या आप पुलिस में हमारे गायब हो जाने का खबर किया है ? क्या कोई भी हमारे इस तरह घर से चले आने के बारे में जानता है? ' पन्ना ने पुछा.

' मै ने किसी से तुम्हारे बारे में जिक्र ही नहीं किया और न ही करूंगा,' भूषण लाला कहने लगा, ' मै ने बहुत सोचा और यही ख़याल मेरे मन में आया की किसी भी छन तुम आगे के दरवाजे पर दस्तक दोगी.' पन्ना के पिता का गला भर आया था. 'मै ने तो कभी यह सोचा भी नहीं था की तुम ऐसे हमें छोड़ कर चली जावोगी पर जो हो गया सो हो गया अब अपने भविष्य के बारे में सोचो.'

'हो सकता है की एक न एक दिन मै वापस आप के पास लौट आवुंगी. मेरे बारे में फिकर मत करना. मै आप की ही होशियार बेटी हूँ ,' पन्ना ने कहा और फोन रखते रखते उस ने अपने पिता के आखरी शब्दों को बड़े ध्यान से सुना, ' हाँ ! लेकिन तुम्हारे में अपने माँ के कुछ अवगुण भी हैं उन से बचना. '

पन्ना को अपने सहेलियों डोरिस और जेसिका के साथ जैकब के ***खाना खजाना*** नाम के भोजनालय में काम करते दो हफ्ते हो गए थे. पन्ना बहुत ही दिल लगा कर अपना काम करती थी इसलिए जैकब ने पन्ना को रात दस बजे भोजनालय बंद करने

की जिम्मेदारी दे दी थी. अब पन्ना वही पास के रॉयल जनरल अस्पताल के बगल में एक कमरे में डोरिस के साथ रहने लगी थी. जब भोजनालय में कुछ कम भीड़ रहती थी तो जैकब पन्ना को अपने ग्राहकों के चित्रकारी करने को कहा करता था. पन्ना ने कई बार खुद जैकब, डोरिस और जेसिका के चित्रे बनाए थे. एक बार तो रोटरी क्लब के कार्यक्रम के दौरान पन्ना ने लार्ड मेयर और रोटरी के प्रधान के भी चित्र बड़े बखूबी से बनायी थी. इन चित्रों को जैकब ने भोजनालय के दीवार पर लगा दिया था. पन्ना की चित्रकारी की धूम बढती रही और वह ***खाना खजाना*** की एक कीमती कर्मचारी हो गई थी.

इसी तरह अब तो जैकब के खाना खजाना की किस्मत ही खुल गई थी. प्रमुख और खास ग्राहक इस लालच में चले आते थे की उन की भी चित्र पन्ना अपने कला से प्रदर्शित करेगी. बगल वाले अस्पताल के कई डॉक्टर और नर्स तथा यूनिवर्सिटी के शिक्षक भी अब जैकब के खास मेहमान होने लगे थे. खाना खजाना का व्यापार दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ रही थी. अपने सभी ग्राहकों को तो नहीं पर खास कर के एक ग्राहक को पन्ना बड़े ध्यान से देखती रही. वह जैकब का दोस्त निखिल था जो पास के अस्पताल का एक नया डॉक्टर था.

निखिल वक़्त बेवक्त भोजनालय में टपक पड़ता था क्योंकि उस के काम करने की समय बड़ी अजीब थी. वह कभी सुबह को, या कभी मध्यान को, पर अक्सर वह भोजनालय बंद होने के समय आता था. ज्यादा समय पन्ना ही उस का देखभाल करती

थी. पन्ना निखिल को टकटकी लगाये निहारती रहती थी पर जैसे वह पन्ना की मौजूदगी को परखता ही नहीं था. निखिल वहां के सभी ग्राहकों से फरक था. सभी कर्मचारी निखिल के सेवा करने के लिए आतुर रहते थे लिकिन जब वे सब यह जान गए की पन्ना उस ग्राहक में खास दिलचस्पी दिखाती है तब अन्य सब पन्ना को ही निखिल की सेवा सत्कार करने देते थे. डॉक्टर निखिल उस भोजनालय के कर्मचारियों के लिए बहुत ही कृपाशील व्यक्ति नजर आता था. वह बातें कम करता था और अपने इशारे से ज्यादा काम चलता था. पानी की जरूरत हो तो वह अपना गिलास ऊपर उठा कर दिखता था और अगर उसे अपना बिल चाहिए था तब वह कोई कागज़ हिलाता था.

पन्ना ने निखिल को बहुत ही कुशलता से निरक्षण करती रही और धीरे धीरे उस के आकर्षण को देख कर उस पर मुग्ध होती चली जा रही थी.पन्ना को निखिल के लम्बे कद, घुंघराले बाल, सुडोल बदन, हंसमुख चेहरा, सुन्दर बोली बानी और मतवाली आँखे एक दम मन भाने लगी थी. अब तो पन्ना खाना खजाना में ही नहीं पर अपने कमरे में भी रात को निखिल के ही बारे में सोचती रहती थी. उसे लग रहा था की उसे निखिल से प्यार होने लगा है. पर उसे ये नहीं पता था की यह प्यार की आग दोनों तरफ से भभक रही थी.

पन्ना एक बार ब्रिसबन में एक नौजवान के प्यार में फंस गई थी और उस को प्यार के अच्छे और बुरे नतीजे के बारे में बड़े अच्छे तरह से मालूम था. उस का लफड़ा जो जय प्रकाश के

साथ हुआ था उस को याद कर के पन्ना फिर से किसी के प्यार में नहीं फंसना चाहती थी.लेकिन प्यार किया थोड़े जाता है. प्यार तो बस हो जाता है. उस दिन खाना खजाना में बहुत बड़ी भीड़ थी. सब कर्मचारी ग्राहकों की सेवा करने में व्यस्त थे और पन्ना को जैकब ने आज खास काम सौंपा था. पन्ना को चुन चुन कर अच्छे अच्छे ग्राहकों की तस्बीर अपने प्राकृतिक प्रतिभा से बनाना था. उस दिन निखिल दस बजे रात के बाद बड़े ठाठ बाट और शान शौकत को लिए भोजनालय में दाखिल हुआ. उस के आते ही खाना खजाना की रौनक जैसे और भी बढ़ गई लेकिन तब तक ग्राहकों की भीड़ कुछ कम हो गई थी.

निखिल के आने से जैसे पन्ना को एक अजीब प्रेरणा मिल गई थी और वह अति प्रेरित हो कर उस की प्रतिमा अपने चित्रकारी के जरिये कागज़ पर पिरोने लगी. पन्ना ने केवल निखिल की हुबहू आकृति ही नहीं पर उस के चेहरे के विभिन्न हावभाव, संतुलन और चलन को अपने चित्र में बना डाला. जैसे ही पन्ना ने निखिल की तस्बीर ख़तम कर के थोड़े दूर हट कर अपने चित्रकारी की सुन्दरता को परख रही थी की जैकब घर जाने के लिए तैयार हो गया था. पन्ना को दूकान बंद करने को संकेत दे कर वह दरवाजे से बाहर निकलते हुए निखिल से अलबिदा कहा, ' बाय बाय निक !' पर निखिल ने उसे सुधारते हुए कहा, 'निखिल' .पन्ना निखिल के पीछे अपने चित्र को लिए आ खड़ी हुई और पुछा,' आप ने कुछ कहा ?'

'निखिल ! मै निक नहीं हूँ ' उस ने कहा और अपने बिल भरने के लिए पैसे देने लगा. अब तक दूकान में पन्ना और निखिल के सिवा कोई नहीं बचा था. निखिल ने पन्ना से पुछा, 'मेरे समझ में तुम को ही आज यह भोजनालय बंद करना पड़ेगा. हे, तुम्हारी उम्र कितनी होगी ?'

पन्ना ने जवाब दिया, ' मै बच्ची नहीं हूँ,' और वह निखिल से पैसे ले कर गल्ले में रख दी. उस वक़्त पन्ना के हाँथ में निखिल का चित्र था जिसे वह देखना चाहता था, ' यह तो मेरी तस्वीर है, मुझे देखने दो तो सही.' इतना कह कर निखिल ने पन्ना का हाँथ पकड़ लिया. पन्ना के शरीर को जैसे कोई बिजली मार गई थी. वह अपना हाँथ छोडाने की कोशिश कर रही थी पर निखिल का स्पर्श उस पर गजब ढाह रहा था.

'यह तस्वीर तो गजब की बनी है. यह तो मुझ से भी अच्छी है' निखिल ने कहा और खींच कर पन्ना को अपने पास वाले कुर्सी पर बिठा लिया. तब पन्ना को होश आया और उस ने देखा की सच में उस का वह चित्र् निखिल से भी सुन्दर बना था.

यह उन दोनों की पहली परस्पर प्यार भरी मुलाक़ात थी और इस के दौरान वे दोनों एक दूसरे के बारे में बहुत कुछ जानकारी हासिल कर ली थी. पन्ना ने निखिल से अपने बारे में केवल इतना ही बताया की वह ब्रिसबन से आई थी. स्कूल के बाद वह आर्ट कॉलेज जाना चाहती थी पर उसकी माँ के घर से चले जाने के बाद वह अपने पिता के लिए शायद एक बोझ बन गई थी . बस उस के तकदीर ने उसे यहाँ ला पटका था.

दीवार घडी में एक बज चुके थे और इस पहले मिलन में काफी बातें हो चुकी थी. निखिल वहां से उठ खड़ा हुआ और जाने के लिए तैयार हो गया पर उस ने अपने तस्वीर को उठा कर पन्ना के तरफ करते हुए कहा, 'क्या तुम इस को भी अन्य सब तस्वीरों के तरह अपने दीवार पर लगा दोगी?'

'अगर आप की इजाजत हो तो मै यह पुण्ये काम जरूर करूंगी ,' पन्ना ने कहा और एक कलम ले कर उस चित्र के नीचे 'निखिल' का नाम लिख दिया.

निखिल ने उस चित्र पर अपना नाम पढ़ कर मुस्कराया और अपने मजबूत हाथों को पन्ना के कंधे पर रख कर उस के बगल में खड़ा हो गया. उस ने पन्ना के गले पर एक हलकी से चुम्बन दे कर दरवाजे के बाहर चला गया. पन्ना वहीँ खड़ी अपने सपनो की दुनियां में खो गई थी- यह सब कैसे और क्यों हो रहा था ?

इस हफ्ते निखिल कई बार खाना खजाना के नजदीक से गुजरा था पर उस रात के हरकत के बाद उसे उस भोजनालय के अन्दर जाने में कुछ संकोच लगता था. अभी तक तो केवल उस भोजनालय का मालिक जैकब उस को नाम से जानता था पर अब तो वहाँ की सब से सुन्दर वेट्रेस भी उस को ठीक से पहचान गई थी और उस का नाम भी जान गई थी. फिर भी हिम्मत कर के आज एक हफ्ते के बाद डॉक्टर निखिल पाण्डेय खाना खजाना के अन्दर दाखिल हुआ था. वह जा कर अपने सब दिन के केबिन में बैठ गया और भोजन के सूची को देखने

लगा. निखिल को पन्ना की मौजूदगी महसूस होने लगी थी जब पन्ना उस के ग्लास में पानी भर रही थी.

अपने जीवन में निखिल ने कई युवतियों को उस के तरफ निहारते हुए देखा था और आज जब पन्ना उस को एक टक लगा कर ताक रही थी तो निखिल को कोई घबराहट नहीं होनी चाहिए थी. पर आज की बात कुछ और थी. उस दिन रात को पन्ना ने निखिल को बताया था की वह केवल १८ साल की लड़की थी लेकिन आज तो वह सिर्फ १४ या १५ साल की छोकड़ी लग रही थी. पन्ना ने कोई नखड़ा नहीं किया था और उस के चहरे पर कोई बनावट भी नहीं थी फिर भी उस का चेहरा इतना सुन्दर लग रहा था जैसे वह कोई अफसर या परी हो. चरफर, नाजुक, कमसिन, होशियार और न जाने क्या क्या लग रही थी. लम्बे काले बाल, बड़ी बड़ी चमकीली चंचल आँखें, दमकता चेहरा और पतले फूलों के पंखुड़ियों जैसे होंठ तथा उस के पतली कमर तो निखिल को दीवाना बना रही थी. भोजन करने से पहले ही आज उस के पेट भर गया था.

निखिल खाना खजाना के दिवार पर अपने चित्र को देख रहा था की पन्ना ने उस का आर्डर लेने के लिए उस के पास आई तो उस की ध्यान भंग हुई. पन्ना की गर्मी, महक और आभास निखिल को चौंका दिया था पर वह अपने घबराहट को जाहिर नहीं होने दिया. वह जल्दी से कह दिया की उसे अपना सब दिन का खाना खजाना का खास थाली ही चाहिए. जब पन्ना निखिल की थाली लाने चली गई तब निखिल फिर वही पन्ना की

रची हुई अपनी तस्वीर के बारे में सोचने लगा. उसे लगा की कोई भी साधारण कलाकार उस के उन विशेष मुखाकृतियों को अपने कला के जरिये रच सकता था. उस में कोई खासियत नहीं थी और न ही वह कोई अचरज की बात थी. पर एक बात तो उसे मानना ही पड़ा की बिना उसके सब खास निजि विशेषता के बारे में जाने, कोई इतना बखूबी से कैसे किसी का चित्र बना सकता था. इस लिए पन्ना में एक खास हुनर होनी चाहिए जिस का उसे शायद पता नहीं था. उसे इस के बारे में सही जांच पड़ताल करनी ही पड़ेगी.

निखिल को यह भी नहीं पता था की क्यों उस ने उस रात्रि को पन्ना से बिदा लेते समय उसे चूम लिया था. उस दिन का नजदीकी स्पर्श और महक अभी भी उस के लिए ताजा था. उस दिन जब वह अपने कमरे में पहुंचा था तब उस के स्थाई प्रेमिका मीना उस के खाट पर बेपर्द हो के उस का इन्तजार कर रही थी पर निखिल ने उस के लिए पहले की तरह कोई प्यार नहीं जाता पाया था. जब निखिल ने मीना के प्यार को कोई दिलचस्पी नहीं दिखाया तब वह रूठ कर वहाँ से चल पड़ी थी और आज तक फिर लौट कर वापस नहीं आई. निखिल को लग रहा था की इस सब कार्य के लिए कुछ तो जरूर सच्चाई या मतलब होगी.

एक रात्रि को जब पन्ना खाना खजाना बंद कर रही थी तब पन्ना ने निखिल को अपने नाम का राज बताया. उस ने बताया की उस के पिता ने उसे यह नाम दिया था जब उस की माँ इस

नाम के विरुद्ध थी. पन्ना के पिता का कहना था की जैसे किसी एक पुस्तक के पन्ना को पढ़ कर कोई भी ज्ञान हासिल करता है उसी तरह मुझे देख कर लोग हमारे बारे में सब कुछ जान जायेंगे. फिर जो चाहें वह हमारे बारे में उस खाली पन्ने पर लिख भी सकते हैं. अब तो निखिल उस पन्ने को पूरे तरह से पढना चाहता था इस लिए वह पन्ना को बिना और कुछ सोचे समझे अपने तरफ खिंच कर अपने मजबूत बाहों में जकड लिया. इस आलिंगन से दोनों के दिल जोर जोर से धड़क रहे थे और न जाने कितने प्यार के गीत गा रहे थे.

इस तरह के छोटे मोटे प्रेम के मेल मिलाप होते होते तीन चार महीने हो गए थे और जुलाई महीने के पहले सप्ताह अंत के छुट्टी पर निखिल ने पन्ना को साथ ले कर फ्लिन्ट् बीच गया जहाँ कई सुन्दर सुन्दर जगहों और नॉव में समुद्र की भ्रमण दोनों ने साथ साथ किया. कितने हंसी हुई, मजाक हुआ, भोजन पानी हुआ और कई प्यार की मीठी मीठी बातें हुई. इन दो तीन दिनों में वे एक दूजे के और भी करीब हो गए थे. निखिल ने पन्ना के पिता के बारे में तो लगभग सब जान गया था पर पन्ना के माँ के बारे में उसे कुछ भी पता नहीं था इस लिए फ्लिंट बीच से लौटते समय निखिल ने पन्ना से उस के माँ के बारे में पुछा, 'पन्ना तुम ने तो बहुत कुछ अपने पिता से सीखी हो पर तुम ने यह नहीं बताया की तुम्हारी माँ ने तुम को क्या क्या सिखाया था?'

इस सवाल को सुन कर पन्ना थोड़े देर तक गुमसुम रही पर फिर मोटर के रेडियो पर नए सीडी को लगाया और ग़ज़ल

सुनने लगी जैसे उस ने निखिल के उस सवाल को सुना ही न हो. फ्लिंट बीच से सिडनी का रास्ता तो कट गया पर रास्ते में निखिल ने पन्ना को बताया की वह सिडनी पहुँच कर पन्ना को अपने माँ बाप से मिलाएगा इसलिए निखिल की मोटर डॉक्टर बृजमोहन पाण्डेय के आलिशान हवेली के सामने जा कर रुकी.निखिल मोटर से उतर] और पन्ना के तरफ वाला दरवाजा खोल कर उसे उतरने को कहा. पन्ना मोटर से उतर कर अंगडाई लेते हुए पुछा,' यहाँ कौन मकान आप का है?' निखिल ने पन्ना का कन्धा पकड़ कर उसे पीछे घुमाते हुए उस के आगे का भव्य इमारत को इशारा करते हुए कहा,' यही है वह स्थान जहां मेरा बचपन और जवानी बीते थे.'

पन्ना उस इमारत की ठाठ और शान देख कर चकाचौंध सी हो गई और चीख उठी, 'यह क्या मज़ाक है? यह तो कोई राजा महाराजा का महल लग रहा है.'

'बिलकुल नहीं, यही है पाण्डेय निवास,' यह कह कर निखिल पन्ना का हाँथ थाम कर उसे धीरे धीरे उस लम्बे ड्राइव वय से हो के अपने माता पिता के घर के दरवाजे की घंटी को बजाया. दरवाजा खुला तो सामने निखिल की माँ आरती पाण्डेय स्वंय खड़ी थी. वे सफारी जेकट पहने हुए थी और उन के कंधे से दो तीन केमेरा लटक रहा था, 'निखिल !' उन्हों ने कहा और निखिल को गले से लगाया . ' मै अभी अभी अपने नेपाल के कल्चरल भ्रमण से वापस लौटी हूँ.' और वो निखिल को अपने

घर के अन्दर खींचते हुए पन्ना से हाँथ मिलाते हुए कहा, 'तुम शायद पन्ना हो, तुम्हारा स्वागत है.'

आरती पाण्डेय ने पन्ना को भी घर के अन्दर ले आयी. पन्ना अवाक हो कर उस घर के अन्दर की शोभा देखने लगी. कभी वह ऊपर देखती तो कभी फर्श पर लगे संगमरमर को परखती थी. उसे ऐसा लग रहा था की वह कोई राज महल में खड़ी थी. आरती कह रही थी, 'मुझे घर पहुँचते ही ब्रिज ने बताया की निखिल कोई रहस्य पूर्ण और दिलकश पन्ना को हमे मिलाने के लिए आ रहा है.' पन्ना सोचने लगी. एक तरफ डाक्टर बृजमोहन पाण्डेय की विख्यात पहचान और दूसरे तरफ आरती पाण्डेय की मशहूर फोटोग्राफी और कहाँ पन्ना एक मामूली भोजनालय की वेट्रेस. उन के बीच जमीन और आसमान का फासला दीख रहा था. कहाँ राज भोज कहाँ गंगू तेली वाली परथोक हो गई थी. पन्ना घबराई हुयी दीवारों पर लगे बड़े बड़े जगह जगह के सुन्दर तस्वीरों को बड़े दिलचस्पी से देख रही थी.

निखिल अपने पिता से मिलने के लिए और उन के प्रतिक्रिया में दिलचस्पी दे रहा था और जब डाक्टर बृजमोहन पाण्डेय का पदार्पण हुआ तब तो पूरा वातावरण ही बदल गया. निखिल ऐसा सीधा खड़ा हो गया जेसे वह कोई फौज के कमांडर के सन्मुख अपना पहला हाजरी दे रहा था. पन्ना को अपने पिता के मिलान में निखिल और उस के पिता के बीच की दूरियों को देख कर ताजुब हो रहा था. उन दोनों के बीच न गले लगने की

बात हुई और न ही कोई नजदीक का संपर्क, बस एक साधारण हेलो से ही उन का मिलन पूरा हो गया था.

जब तक निखिल और उस के पिता अपने अपने काम की बातें कर रहे थे आरती भोजन का प्रबंध करने रसोई में चली गई. पन्ना रसोई वाले दिवार पर टंगी शेर के शरीर को देख रही थी और आरती रसोई में से अपने नेपाल के भ्रमण के बारे में सब को बता रही थी. निखिल ने अपने माँ से दिल्लगी किया,' माँ यहाँ सब कोई नेपाल के बारे में नहीं जानना चाहते हैं.' पर आरती ने जैसी उस की बात को सुना ही नहीं और पन्ना को बताया की उस के पति एक शिकारी हैं और वह शेर का कपार उन के शिकार की निशानी है.

जब सब लोग खाने के मेज पर बैठ कर भोजन करना शुरू किया तब आरती ने पन्ना से एक सवाल किया, "पन्ना बेटी तुम निखिल से कहाँ p]hlo पहल मिली थी ?' इस सवाल को सुन कर पन्ना ने निखिल के तरफ कुछ संकोच से देखा पर फिर अपना जवाब आरती को दे ही दिया. 'हम अपने काम पर पहली बार मिले थे'

तो तुम भी एक .. आरती ने कहना शुरू किया पर रुक गई क्योंकि vh शायद चाहती थी की पन्ना उस के कथान को अपने शbdo\ से पूरी करे और कहे की वह भी एक डॉक्टर या नर्स है पर पन्ना ने सीधे कह दिया की v]h एक भोजनालय में वेट्रेस है. यह सुन कर आरती तो चुप हो गई पर ब्रिज पाण्डेय ने कहा, 'अच्छा तो ऐसी बात है !' आरती के तो मनो सभी आचार

विचार बदल गये और वह जैसे मन ही मन अपने पति से कहने लगी 'पन्ना तो वह नहीं है जो हम चाहते थे' .

निखिल यह सब वार्तालाप को सुन कर जोर से हंस दिया और पन्ना के तरफ देख कर एक साधारण सी मुस्की लगा दी . जब उस के माता पिता ने उस के तरफ नजर दौड़ाया तब उस ने कह दिया 'पन्ना एक बहुत पहुची हुई कलाकार है. एक सुन्दर आर्टिस्ट है .'

ंवो ! ऐ तो बड़ी अच्छी बात है । मैं ने भी अपना जीवन इसी तरह शुरू किया था,ं आरती ने कहा और अपने आया को इशारा किया जिस से वह मेज पर से बरतन उठा ले जाये । ंहां तो बेटी पन्ना तुम किस कोलेज मे अपनी पढ़ाई की थी ?ं

ंमैं कोई कोलेज नहीं गई हूं । जाने की तैयारी कर रही थी पर कई अडचलो के कारण मैं कोलेज मे दाखिला न ले पाई थी । इन जवाबो को सुन कर जैसे यहीं आरती और पन्ना के बीच की सब वार्तालाप समाप्त हो गये और आरती ने अचानक निखिल के ओर देख कर पूछा, ंनिखिल बेटा, आजकल तुम्हारी माया कया करती है? ं

निखिल ने देखा कि अपने मां के इस बेढ़ंगे और बेतुक सवाल से पन्ना का चेहरा उतर गया कयोंकि निखिल के जीवन मे किसी और लड़की के बारे मे पन्ना ने नहीं सुना था । निखिल अपने कुर्सी से उठा और कहा, ंआप माया के बारे मे कब से फिकर करने लगी

हो मां ? यह कहता हुआ वह पन्ना को खींच कर चलता बना, ंमाफ करना हम अब यहां एक मिनट भी नहीं टिक सकते हैं ।

उन के जाते ही घर मे सन्नाटा छा गया था और आरती और ब्रिजमोहन अवाक एक दूसरे को देखते रह गये । लेकिन पन्ना ने अपने मन मे यह संकल्प कर लिया था कि उस बेइज्ज़ती का बदला वह एक दिन उस पाण्डय परिवार से लेगी ।

निखिल ने पन्ना को अपने मोटर मे बैठाया और वहां से जोर से चलता बना । मोटर एक सड़क से दूसरे सड़क पर घूम रही थी और थोड़े देर के खामोशी के बाद पन्ना बोल उठी, ंपरमात्मा के लिये हमे बताईये ये सब कया हो रहा है ? कया मैं कोई खोटी सिक्का या कुछ ऐसी मामुली चीज़ हूं ?

निखिल ने कोई जवाब नहीं दिया और पन्ना कुछ देर तक सबर कर के हताश हो कर चुपचाप बैठी रही । उन की मोटर चलती रही और जब पन्ना का घर का मोड़ पर कुछ देर उधर घूमने के लिये मोटर रुकी तो पन्ना दरवाजा खोल कर बाहर निकल गई । निखिल गाड़ी अचानक रोक कर पूछा, ंपन्ना ये आप कया कर रही हैं ?

ंमैं यहां से अपने घर तक पैदल ही चली जाऊंगी । चलते चलते पन्ना ने वो कह ही दिया जो इतने देर से उस के दिमाग मे चक्कर

काट रहा था, ंआप जानते हैं निखिल, आप वो नहीं हैं जो मैं ने सोचा था ा

जैसे पन्ना चलने लगी निखिल का सारा बदन गुस्से से कांपने लगा था और वह सोचा की सभी लड़किया एक जैसी होती हैं । अपने मोटर को अपने घर की तरफ जोर से चला दिया ।

दूसरे दिन काम के बाद साम को निखिल अपने पुरानी प्रेमिका माया से मिला और उस को खाना खजाना के बारे मे बताया तथा वहां माया को भोजन कराने के लिये राजी कर लिया । जब वे दोनो उस भोजनालय मे पहुंचे तो सभी क्रमचारियों की नजर निखिल की नई साथी के तरफ पड़े । दिखाने के लिये निखिल ने माया को अपने और भी करीब कर के उस के हांथों को चूम लिया तथा दोनो जा कर निखिल के सब दिन के स्थान पर बैठे ही थे की माया बोल उठी, ंइस अचानक की प्यारी स्वागत के लिये धन्यवाद निखिल ा जैसे निखिल वहां बैठा माया अपने आप को फ्रेश करने के लिये बाथरूम मे चली गई ।

जिस का दिल जलाने के लिये निखिल वहां माया को लाया था वो उसे दीखती नहीं थी । जब उस ने पन्ना को वहां नहीं देखा तो उसे बहुत नराजगी हो रही थी । निखिल यह सब सोच विचार कर ही रहा था कि उस के पीछे से एक हलकी सी वही खुशबू आई जिस से वह हूबहू वाकिफ था । पन्ना आ के उस के सामने एक हवा के

हलके झोंके के तरह खडी हो गई ओड़र लेने के लिये पर उस ने इतना कहना उचित समझा, ंमंमांफ करना, मेरा इरादा तुम को उस तरह छोड़ कर आने का बिलकुल नहीं था । पर मैं करती कया ?

निखिल के चोट पर जैसे पन्ना ने नमक छिड़क दिया था पर वह दिखाना नहीं चाहता था । ंमंजो हो गया सो हो गया । शायद ठीक ही हुआ । मुझे कोई गिला नहीं है ।

इतने मे माया बाथरूम से वापस आ गई और निखिल के पास आ कर खड़ी हप गई । पन्ना ने उसे बताया, ंमंमाफ करना देवी जी ये केबिन रिजेब है ।

ंमंहां मुझे मालूम है, ंमं माया ने कहा और निखिल की तरफ देख कर उस के हांथो को अपने हांथो मे लेते हुये पास के कुर्सी पर बैठ गई जैसे कोई मियां बीबी अपने भोजन के लिये बैठे हो ।

यह सब नज़ारा देख कर पन्ना को वह गजल याद आ गया । *तुम किसी गैर को चाहो तो मजा आ जाये* और इतफाक से उस की सहेलियो ने उस गज़ल को सभी ग्राहको के लिये बजा ही दिया ।

तुम किसी गैर को चाहो तो मजा आ जाये
और वो तुम से खफ़ा हो तो मजा आ जाये
तुम कोई नाम हथेली पे लिख दो मेंहदी से
और वो नाम मेरा हो तो मजा आ जाये
मेरे शिकवे तुझे अच्छे नहीं लगते लेकिन

तुझ को भी मुझ से गिला हो तो मजा आ जाये
तुझ को एहसास तो होगा मेरी बेचैनी का
कोई तुझ से भी जुदा हो तो मजा आ जाये

लेकिन निखिल ने देखा की पन्ना के चेहरे पर कोई मायूशी नहीं थी और न ही कोई बेवफाई के चिन्ह नज़र आ रहे थे । पन्ना उन दोनो को बस अपना एक नये ग्राहक के रूप मे देख कर पूछा, "तो बताइये आप लोगों के लिये मैं कया कर सकती हूं ?"

निखिल ने अपना गला साफ कर के कहा, "माया ने सुना है कि खाना खजाना मे कोई कलाकार है जो लोगों की हूबहू चित्रकारी करती है । माया भी अपनी चित्र बनवाना चाहती है ।"

पन्ना अपने सिर हिला कर राजी हो गई और अपना चित्रकारी करने वाली समान लाने चली गई । वापस आ कर पन्ना उस केबिन के दरवाजे पर एक ऊंचे कुर्सी पर बैठ कर अपने कोरे कागज़ पर माया का चित्र बनाना आरम्भ किया । निखिल और माया चुपचाप पन्ना के तरफ देख रहे थे पर उन को उस कोरे कागज पर पन्ना कया चित्रकारी कर रही थी नहीं दिखाई दे रही थी । जैसे पन्ना ने अपने चित्रकारी को समाप्त किया उस ने उस को निखिल के सामेने रख कर उन के ओडर तैयार करने किचिन मे चली गई ।

माया ने उस पन्ना के किये गये चित्रकारी को उलट कर देखा तो देखती ही रह गई । चित्र मे माया के बाल, गाल, आंखें, नाक और चेहरे के अन्य भाव भी थे पर ठीक से देखने पर वह चित्र एक छिपकली की थी ।

जैसे रात गई तो समझो बात गई पर निखिल के दिल और दिमाग मे पन्ना की याद और चेहरा दूसरे दिन भर सताती रही । किसी तरह से शाम तो आ ही गई और जैसे काम से छुट्टी हुई की उस के कदम अकस्मात ही खाना खजाना के तरफ चल पड़े । रास्ते मे उस ने थोड़ी देर तक बगल वाले पार्क मे बैठ कर अपने आप से तर्क करने लगा । कया उस ने पन्ना के दिल को दुखा कर ठीक किया या नहीं ? उसे पन्ना से माफी मांगनी चाहिये या नहीं ? जो कुछ भी हो उस ने यह फैसला कर ही लिया की वह आज पन्ना से जरूर मिलेगा और अपने सभी असमंजसों तथा संकाओं का समाधान ढूंढने की कोशिश करेगा । इस ख्याल को ले कर निखिल खाना खजाना मे उस समय दाखिल हुआ जब भोजनालय बन्द करने का समय आ गया था । कोई भी ग्राहक नही थे और शायद सब क्रमचारी भी चले गये थे । सब दिन की तरह पन्ना को खाना खजाना बन्द कर के जाना था । उन ने देखा की पन्ना बोतलों मे पानी भर रही थी लेकिन वह दीवार पर लगे माया के उस की ही बनाई हुई चित्र को देख रही थी ।

मुझे ये तस्वीर पसंद है,} निखिल के जुबां से अचानक निकल गया और पन्ना यह सुन कर चौंक गई और घूम कर अपने चेहरे पर एक सजीव सी मुस्कान भर कर निखिल को जवाब दिया, मुझे अफसोस है कि हम ने एक ग्राहक को एकदम से खो दिया है ।}

तो क्या हुआ ?} निखिल ने छेड़खानी की, ये खूबसूरत हरकत ने मुझे तो वापस यही ला दिया है ।}

पर इन सब से मुझे क्या मिला है ?} पन्ना ने अपने आंखो मे कटाक्ष भर के पूछा ।

तुम जो भी चाहो वही तुम को मिल सकता है,} निखिल ने मुस्कुरा कर कहा और पन्ना को पकड़ कर अपने तरफ खींच कर चूम लिया । पन्ना ने भी अपने बाहों से निखिल को जकड़ लिया जैसे कई दिनो के बिछड़े प्रेमी फिर मिल रहे हों । निखिल ने पन्ना के कमर से लटकते हुये चाभियों के गुच्छे को ले कर आगे का दरवाजा बन्द कर दिया और सभी बत्तियों को बुझा दिया । जब तक पन्ना कुछ कह पाती तब तक निखिल ने उसे अपने मज़बूत बाहों मे भर के न जाने कितने प्यार के चिन्ह लगा दिये । उस ने पन्ना के उतंग वृक्षास्थलो पर हांथ फेरते हुये उस के जांघों को टटोलते हुये बहुत देर तक अपना गहरा प्यार जताता रहा पर जब उन दोनों को होश आया तब निखिल ने अचानक अपने प्यार का

इजहार करते हुये कहा, मैं अब और इन्तजार नहीं कर सकता । पन्ना क्या तुम मुझ से शादी करोगी ?}

शायद इस सवाल से दोनो की घबराहट बढ गई थी और दोनो ताजुब मे पड़ गये थे । दोनों प्रेमियों को एक दूसरे की साथ की जरूरत थी । इस के आगे क्या होगा यह सब किस प्रेम करने वाले को फिकर रहती है । ये दोनो बस अपने मधुर प्रेम के दुनियां मे जैसे एकदम खो गये थे । निखिल ने अपने घर का एक चाभी पन्ना को दे दिया और कहा, पन्ना डार्लिंग, आज से मेरे दिल का ही नहीं पर मेरे मकान का दरवाजा तुम्हारे लिये हरदम खुला मिलेगा ।}

पन्ना ने भोजनालय को बन्द कर के निखिल के साथ बाहर निकली तो देखा की खुले आसमान पर पुणिमा का चांद चमक रहा था जैसे उस के जीवन मे एक नई चांदनी फैला रहा था । दोनो प्रेमी एक हंस के जोड़े के तरह धीरे धीरे निखिल के गाड़ी तक पहुंचे और निखिल अपने परी को ले कर अपने घर की ओर चल पड़ा । जब मोटर निखिल के घर के पास रुकी तब पन्ना चौंक गई पर कुछ कह नहीं सकी । न जाने उसे कोई संदेह था या कोई घबराहट थी या फिर पहले पहले दिन प्यार मे ऐसा ही होना है । उधर निखिल मारे घबराहट के खुद अपने ही दरवाजे मे चाभी नहीं लगा पा रहा था ।

कुछ देर मे जब दरवाजा खुला तब दोनो प्रेमी अन्दर गये लेकिन निखिल तब तक पन्ना को एक टक निहारता रहा जब तक पन्ना पूरे कमरे की निरक्षण कर के धीरे से कहना शुरू किया, ़हमारा कमरा कभी इतना साफ सुथरा और नियमित नहीं रहता है ।}

यह सुन लेने के बाद ही निखिल अपने आप को सम्भाल कर बोला, ़अगर चाहूं तो मैं भी अपने कमरे मे काफी उथल पुथल मचाना सीख सकता हूं ।}

उन के बीच मे ऐसे वार्तालाप से उन दोनो को यह महसूस हुआ की भले वे एक दूजे के करीब तो आ गये थे पर अभी भी वे एक दूसरे के बारे मे हजारो ऐसी चीज़े थी जिन से वे पूरे तरह से वाकिफ नहीं थे । निखिल के विचार मे कुछ हद तक यह ठीक ही था कि वे एक दूसरे के पुराने जीवन के बारे मे छानबीन न ही करें । शायद पन्ना के लिये भी यह समझदारी की बात होती । इसलिये वे दोनो अपने भूतपूर्व जीवन को वहीं छोड़ कर वर्तमान मे रहने की चाह को लिये अपना भविष्य बनाने मे लग गये थे ।

अपने रसोई के मेज पर पड़े कुछ पुराने बिसकुट को पन्ना के सामने रखते हुये निखिल ने कहा, ़एक मुगलिसिया के घर मे बस यही मिल सकता है । तुम यहीं बैठो मैं फ्रिज मे से कुछ शरबत पानी वगैरह निकालता हूं ।}

अभी उन दोनो की झिझक गई नहीं थी कयोंकि अभी तक पन्ना ने निखिल के उस महत्वपूर्ण स्वाल का जवाब नहीं दिया था-*क्या तुम मुझ से शादी करोगी* ? पर इस गम्भीर स्वाल का जवाब ऐसे आसानी से तो दिया नहीं जा सकता था और वे दोनो जानते थे की इस के लिये काफी सोचने की जरूरत होती है । पर फिर भी निखिल उस जवाब का बड़े उत्सुकता से सबर कर रहा था ।

अचानक निखिल को ऐसा लगा की पन्ना उस को इस कदर एक टक देख रही थी जैसे उस ने उस को पहले कभी देखा ही नहीं था । निखिल को लगा की पन्ना शायद उस के स्वाल का सही जवाब ढूंढ रही थी ।

पन्ना की नज़रे निखिल के चेहरे से हट कर कभी दीवारों पर तो कभी ऊपर सीलिंग पर चली जाती थी । अब पन्ना के ऐसे व्योहार से घबराहट होने लगी थी । वो केवल अटठारह वर्ष की नाजुक युवती थी और उस के इस झिझक से यह पता चलता था कि वो भी अपने आप से कुछ सही फैसले की मांग कर रही थी ।

निखिल जितना पन्ना को देखता था उसे उस पर उतना ही प्यार आता था पर न जाने कहां से उस के मन मे उस समय वह शादी का स्वाल आ धमका था । उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह एक मक्खी को मारने के लिये एक बहुत बड़ा हथौड़े को काम मे ला रहा

था । पर निखिल कभी भूल कर भी अपना वह खास पन्ना से शादी करने का प्रस्ताव को वापस नहीं करने वाला था ।

पन्ना अब नीचे अपने जूते को देख रही थी और अपने सलवार कमीज़ पर नज़र दौड़ा रही थी । अपने हांथों को मलते हुये वह बोल उठी, यह सब आज बड़े अजीब लग रहे हैं । मेरा मतलब है कि आज तक हम ने कभी इन सब के बारे मे कोई फिकर ही नहीं की थी । पर आज मुझे अपने पहराव, अपने बदन की सजावट और अपने बोली वाणी पर जैसे कुछ ज्यादा ध्यान होने लगा है । न जाने ये सब क्यों हो रहा है?}

हम को भी कुछ ऐसा ही महसूस हो रहा है । शायद हम दोनो को एक दूसरे से प्यार हो गया है,} निखिल ने कहा और वे दोनो के चेहरे पर एक सुन्दर सी मुस्कान खिल उठी और पन्ना ने सोने मे सुहागा मिला ही दिया, तुम जानते हो निखिल की तुम हर सही समय पर सही बातें कर देते हो और तुम्हारी यही अदा पर मैं फिदा हो जाती हूं । यही सब से बड़ी कारण है की मैं भी तुम को बहुत चाहने लगी हूं ।}

निखिल आ कर पन्ना के पास सेटी पर बैठ गया और उसे अपने बाहों मे लपेट लिया और कहते जा रहा था, ये तो ईशवर की कृपा है कि तुम भी मुझ से उतना ही प्यार करने लगी हो शायद जितना

मैं तुम से करता हूं । जब ये प्यार की लपट दोनो तरफ से धड़क रही है तो कयों न हम आज इस का इज़हार कर ले ।}

पन्ना ने बड़े ध्यान से निखिल के तरफ देख कर कुछ कहना चाहती थी पर वह केवल अपने सिर को हिला कर निखिल के बातों से सहमत हुई । तब निखिल के दिल और दिमाग मे कुछ शान्ति हुई और वह अपने पूरे प्रेम की गती को पन्ना पर निछावर करता रहा । रात बीतते जाती थी पर उन दोनों की प्रेम की बातें और काम तो अभी शुरू ही हई थी ।

अचानक जैसे पन्ना जाग उठी और बोली, ंनिखिल, तुम ने हम से शादी करने की ख्याल की थी न ?

निखिल मुस्कुराया और कहा, ंओ हां ! पर अभी तक हमे मेरा सही जवाब ही नहीं मिला है । अब मैं कया करूं ?

ंबस इसी तरह मिलते जुलते रहिये । एक न एक दिन जवाब मिल जायेगा । पर मैं तो अभी तुम्हारा पूरा नाम भी नहीं जानती हूं । हां रातो दिन तुम्हारे बारे मे ही सोचती जरूर रहती हूं,} पन्ना ने अपने आंखों मे एक अजीब सी कटाक्ष भर कर कहा ।

अच्छा तो तुम को मेरे पूरे नाम की जरूरत है । मुझ को मेरे माता पिता ने मेरे पैदाइश पर बड़े लम्बे नाम से सजाया था । *निखिल नितिष बृजमोहन पाण्डय* । अब इस के बाद तो मेरे ख्याल का

जवाब हमे मिल ही जाना चाहिये । निखिल ने कहा और पन्ना को एक और प्यार की निशानी उस के होठों पर दे दिया ।

किसी तरह से अपने आप को निखिल के चंगुल से बचा कर पन्ना ने उसे चुनौती दिया कि वह उस का पूरा नाम बताये । यह चुनौती सुन कर निखिल जैसे अंधेरे मे तीर चलाया और पन्ना का पूरा नाम बताया-*पन्ना देवी लाला ।*

अपना पूरा नाम सुन के पन्ना देवी लाला के मुह खुले के खुले ही रह गये कयोंकि उस को ये विशवास ही नहीं हो रहा था कि निखिल ने कैसे उस का पूरा नाम जान पाया था । पर उस ने अपने पूरे नाम की खासियत को समझाने लगी । मंमेरे पिता जी का कहना था कि जैसे किसी खाली पन्ना पर किसी देवी के नाम लिख देने से उस पन्ने पर निशान बन जाते हैं ठीक उसी तरह जब हम को कोई चाहने वाला मिल जायेगा तब मेरा दिल भी खुश हो जायेगा । पर तुम ने मेरे सामने कयों शादी करने का ख्याल रखा था?

मुझे लगा की मैं ही वो खास चाहने वाला युवक हूं जो तुम को खुश रख सकता हूं । और फिर जब तुम ने हम से यह ख्याल नहीं किया तो मैं ने सोचा की कहीं देर न हो जाये इस लिये मैं ही कह दूं ।} निखिल ने पन्ना को समझाने की कोशिश की ।

इसी तरह उन दोनो के बीच एक दूसरे के परिवार के बारे मे कुछ इधर उधर की बाते तब तक होती रही जब तक निखिल ने अचानक पन्ना से एक बेहूदा सवाल कर बैठा, .कया तुम को तुम्हारे पिता ने कभी ये बताया कि कयों तुम्हारी मां उन को छोड़ कर चली गई थी ?}

इस बेतुकी सवाल सुन कर पन्ना के तेवर बदल गये । उस की आंखे भर आई और गाल लाल हो गये । वह जल्दी से उठ खड़ी हुई और निखिल के तरफ देख कर जोर से बोली, .तुम मुझ से शादी करना चाहते हो या मेरे परिवार से ?}

यह सुन कर निखिल कुछ छण चुप रहा पर जब पन्ना ने अपने उत्सुकता का कारण बताया और एक सुन्दर सा मुस्कान से कहा तब उसे कुछ सुकून मिला, .मैं शायद थक गई हूं । मैं तुम से नाराज नही हूं पर मुझे लगता है अब बहुत देर हो गई है और मुझ को अपने घर जाना चाहिये ।}

निखिल ने पन्ना को उस के घर तक अपने मोटर मे ले गया और जब तक पन्ना अपने कमरे का दरवाजा खोल रही थी तब तक निखिल वहीं पास ही मे चुप चाप खड़ा रहा । उस ने आज की सभी सुन्दर वातावरण को अपने एक बेहूदे सवाल से नेसतानाबूत कर दिया था । पर निखिल को अभी भी लग रहा था की पन्ना उस को अपने बारे मे सब बताने से हिचकिचाती थी । इस का कोई

खास कारण तो जरूर होना चाहिये । कुछ भी हो पन्ना का अतीत उस के लिये कोई मतलब ही नहीं रखता था ।

जैसे पन्ना के कमरे का दरवाजा खुला वैसे ही पन्ना घूम कर बोल उठी, अच्छा तो आज की रात तो एक हसीन रात थी है न निखिल ? हम फिर मिलेंगे ।}

निखिल ने पन्ना को अपने तरफ खींच कर अपने बांहों मे भरता हुआ जब पूछा, तुम कल शाम को कब तक घर पहुंचोगी ?} तब पन्ना ने फुसफुसा कर कुछ कहा पर उस के आवाज और समपर्क इतना मधुर थे की निखिल अवाक रह गया और उस के माथे को चूम लिया ।

पन्ना शायद इस तरह के चुबन से और कुछ ज्यादा के इन्तजार मे थी पर वह न मिलने से उसे कुछ असमंजस हुआ और उस ने निखिल को वैसे निहारने लगी जैसे एक चित्रकार अपने चित्र बनाने समय किसी को देखता है । पर पन्ना ने मुसकुरा कर कहा, फिलहाल मैं तुम्हारे सभी सवालो के जवाब के बारे मे सोचूंगी । गुड नाइट ।}

दूसरे दिन पन्ना निखिल के घर पर उस का बेसबरी से इन्तज़ार कर रही थी । जब निखिल अस्पताल से घर आया तब उसे लगा की कल के छोटे से तूफान के बाद आज सब जैसे के तैसा हो गया था । घर मे खाना पकने की खुशबू आ रही थी । आज पन्ना ने

कुछ सौदा खरीद कर लाया था, घर को साफ किया था और अब जब उस का खाना पक चुका था तो वह फर्श पर बैठ कर कोई मेगजिन पढ़ रही थी । निखिल को अन्दर आते देख वह चट से खड़ी हो गई और सब काम कर देने के लिये माफी मांगा ।

कल जब तुम मुझे यहां लाये थे तब मुझे इस घर के अन्दर की दशा देख कर कुछ ताजुब हुआ था इस लिये आज मैं ने थोड़ा कुछ सफाई कर दी है । और हां जब हम को फूलो को सजाने के लिये कोई वाज नहीं मिला तो मैं ने पीनट बटा के जग को खाली कर के उस मे इन फूलों को सजा दिया है । सब कैसे लग रहे हैं ?} पन्ना पूछ रही थी पर निखिल ने उस को अपने बाहों मे भर के देर तक चूमता रहा तब फिर जवाब दिया ।

मेरे खयाल से हम को एक वाज खरीदना पड़ेगा जिस से उस मे से हर रोज ऐसे ही सुन्दर फूलो की महक आती रहे और हम दोनो की जिन्दगी इसी तरह लहराती और महकती रहें ।} निखिल कहता रहा और पन्ना पर अपना प्यार जताता रहा ।

आहिस्ते आहिस्ते समय बीतता गया और दो हंसो का जोड़ा एक कमरे से दूसरे कमरे की निरक्षण करते रहे इसी तरह उन के भोजन का समय भी हो गया । उस दिन पन्ना ने जो बड़े शौक से पकाया था ला कर मेज पर रखती गई और निखिल देखता रहा । अचानक उसे याद आया कि वह तो उस का ही घर है इस लिये

उस को भी कुछ करना चाहिये । उस ने दौड़ कर अपने वाइन सेलर से एक बोतल वाइन निकाला और उसे खोल कर दो ग्लासों मे छोड़ कर सामने मेज पर रखा ।

बड़े प्रेम से सब खाना पीना हुआ और चोकलेट के साथ आइसक्रीम भी खाई गई । सब बरतन और रसोई की सफाई के बाद दोनो निखिल के शयनकक्ष मे गये और रात कैसे बीत गया उन दोनो को पता ही नहीं चला ।

सुबह होते ही फिर घर मे चहल पहल होने लगी । निखिल को विशवास ही नही हो रहा था कि पन्ना ने केवल अठारह वर्ष के उर्म मे अपने घर बार छोड़ कर एक नये शहर मे आ कर अपना सही स्थान बना लिया था । उस ने पन्ना को शाबासी देते हुये कहा, मैं नहीं जानता की मैं कभी कर सकता या नहीं ।}

तुम को वैसा करने का कभी जरूरत ही नहीं पड़ा,} पन्ना ने कहा पर निखिल इस का कोई जवाब देना मुनासिब नहीं समझा कयोंकि यह उस के मांता पिता से सम्बन्ध रखता था ।

आज शनिवार था इसलिये पन्ना सुबह के नाशता के बाद सब काम को निपटा के आ कर वहीं फर्श पर बैठ गई जहां निखिल सेटी पर बैठ कर समाचार पत्र पढ़ रहा था । उस ने निखिल की एक डाकटरी वाली पुस्तक उठा कर उस से पूछा की कया वह *आप कितना जानते* हैं वाला खेल खेलना चाहता है । निखिल

सवाल जवाब का खेल खेलने को राजी तो हो गया पर पन्ना से विनती किया की अगर उस से कोई गलती हुई तो वह किसी और से न कहे ।

पन्ना ने चार पांच सवाल किये और निखिल ने सभी का सही जवाब देता गया पर जब पन्ना ने निखिल से पूछा की वह एक नये मरीज का स्वास्थ्य की इतिहास कैसे लेता है तब निखिल ने कहा कि वह दिन मे एक सौ से ज्यादा मरीजों से उन के नाम, उमर, जनम दिन, पैदाइश की स्थान, ध्रुप पान, कसरत करने की आदतों, परिवार मे अन्य बिमारियों के इतिहास वगैरह वगैरह पूछता रहता है इसलिये यह तो बहुत सरल बात है ।

इतना कह कर निखिल भी जा कर पन्ना के पास फर्श पर बैठ गया और उस के घुंघराले बालो से खेलने लगा । यह शायद उस के लिये प्यार दर्शाने का एक तरीका था । पर पन्ना ने पूछा, निखिल तुम डाकटर लोग मरीज के बारे मे जानकारी करते हो सो तो ठीक है पर फिर क्यों मरीज के परिवार को बीच मे ले आते हो ?}

निखिल ने बड़े प्रेम से पन्ना के हाथों को अपने हांथ मे लेते हुये कहा, अच्छा पन्ना अब तुम हम को अपने परिवार की इतिहास बताओ । खास कर के अपने मां के बारे मे बताओ ।}

पन्ना चौंक कर उठ खड़ी हुई अपना बटुआ उठाया और बोली, अब मुझे घर चलना चाहिये,} लेकिन पन्ना को आगे जाने से पहले निखिल ने उसे जकड़ कर पकड़ लिया और कहा, ऐसा क्यों होता है कि जब भी मैं तुम्हारे मां के बारे मे और कुछ जानना चाहता हूँ तुम घर चलने की तैयारी करने लगती हो?}

मुझे क्यों ऐसा लगता है कि जब भी मैं तुम्हारे साथ होती हूँ तुम मेरे मां के बारे मे जानने के लिये बड़े उत्सुक हो जाते हो,} पन्ना ने कहा और अपने आप को निखिल के बन्धन से छुड़ाने की कोशिश करती रही । निखिल, मेरी मां के इतिहास मे कोई बहुत बडा रहस्य नहीं छुपा है । तुम को ऐसा नहीं लगता की मुझे मेरे पास मेरे मां के बारे मे बताने वाली कोई भी बात नहीं है ।}

निखिल ने खींच कर पन्ना को अपने पास फिर से बैठा लिया और अन्य इधर उधर की बाते होने लगी जिस से परिवार के इतिहास की बात वहीं खतम हो जाये । तुम्हारा *आप कितना जानते है* वाला खेल अभी नहीं खतम हुआ है । उस को पूरा करो,} इतना कह कर निखिल ने पन्ना को ले कर फर्श पर लेट गया और दोनो बड़े देर तक एक दूसरे के बाहों मे बन्धे रहे और एक दूसरे पर अपना असीम प्यार जताते रहे । थोड़ी देर बाद जैसे पन्ना की नींद खुली और जैसे उसे याद आया कि निखिल ने उस से कोई सवाल किया था जिस का जवाब सुनने के लिये वह बड़े बेसबरी से इन्तजार कर रहा था ।

निखिल, हॉ मैं तुम से शादी करूँगी ।}

पन्ना ने शादी के लिये हां तो कह दिया था पर उस ने निखिल को अपने बारे मे सब सच्चाईयों को उस के सामने जाहिर नहीं कर पाई थी । पन्ना को डर था कि अगर वह अपने बारे मे सब सच्च बता देती तो वो निखिल को खो देगी और वह अभी ऐसा हरगिज नहीं होने देना चाहती थी क्योंकि उसे भी निखिल से बहुत लगाव हो गया था ।

पन्ना ने शादी के लिये हां तो कह दिया था पर उसे अभी कोई जल्दी नहीं थी । वो निखिल को इस रिशते के बारे मे और भी सोचने का मौका देना चाहती थी क्योंकि शायद उसे इस फैसले से मुकरने की जरूरत पड़ जाये । दूसरे तरफ पन्ना को अभी अपने लिये बहुत कुछ करना था ।

निखिल उस से बेहद प्यार करता था । पन्ना को निखिल के गहरे प्रेम का आभास तब होता था जब निखिल उसे उस तरह से पकड़ा करता था जैसे एक बच्चा एक स्नोफ़लेक यानी बर्फ का टुकड़ा को पकड़ता है । निखिल को ऐसा लगता था की पन्ना कहीं उस के आंखो से ओझल न हो जाये । उधर पन्ना भी निखिल को एक देवता के तरह पूजती थी । उस ने अपने जीवन मे कभी निखिल जैसे व्यक्ति को न देखा था न पाया ही था और उसे बहुत फक्र था

कि निखिल ने उसे ही अपना जीवन साथी बनाने के लिये चुना था ।

पन्ना ने यह संकल्प कर लिया था कि वह निखिल की कोई भी बात मानने को सदा तैयार रहेगी और उस के साथ जीवन काल तक सफर करती रहेगी । निखिल के अनुमान से पन्ना अठारह वर्ष की नई नवेली कुवांरी थी और उस ने अपने कुवांरपन सिर्फ निखिल के लिये बचा कर रखा था । यही झूठ को छिपा कर पन्ना अपने आप पर एक बहुत बड़ा जुलम ढा रही थी । यही पन्ना को भीतर ही भीतर खाये जा रही थी । हर सुबह जब पन्ना निखिल से मिलती तो उस से सब सच कह देना चाहती थी पर वह कैसे बताती की वह इस दुनियां की सब से बड़ी झूठी थी । इस का नतीजा वही होता जो वह कभी भी नहीं चाहती थी । निखिल सब सच सुन कर पन्ना से दूर हो जाता ।

समय किसी के लिये नहीं रुकता है । समय का चक्र चलता रहा और पन्ना के जीवन मे नये नये मोड़ आते गये । उस के चित्रकारी की कला दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करने लगी थी । उस के एक एक चित्र हजारों मे बिकने लगे थे और अब उस के पास अथाह धन सम्पति भी हो गई थी । आहिस्ते आहिस्ते पन्ना ने अपने आप को एक पूंजीपति बना लिया था ।

वह खाना खजाना भोजनालय अब जैकब से पन्ना ने खरीद लिया था और अब वह एक आलीशान हवेली की मालिक थी । यह हवेली पन्ना ने निखिल पाण्डय के मां बाप के घर के सामने ही बनवाई थी और अब उसी मे उस का शानदार चित्रकारी का व्यापार चल रहा था । उस हवेली का नाम *पन्ना निवास* रख दिया था जो बड़े बड़े अक्षरों मे सामने फाटक पर चमका करते थे । बृज मोहन और आरती पाण्डय को ऐसा लग रहा था कि पन्ना उन के छाती पर मूंग पीस रही है ।

पन्ना आजकल अपने व्यापारों के संचालन मे इतना व्यस्त रहती थी कि उसे निखिल से मिलने जुलने की बहुत कम समय मिलती थी फिर भी कभी कभार वे दोनो खाना खजाना के व्यक्तिगत कमरे मे मिल जाया करते थे । पन्ना के इस रवइये से निखिल बहुत चिन्तित रहता था पर जब भी वह इस के बारे मे पन्ना से कुछ कहना चाहता था पन्ना उस की बातों को टाल देती थी ।

इसे चाहे हम दौलत का नशा कहें या सौहरत का अभिमान पर यह जाहिर था कि पन्ना अब बिलकुल बदल गई थी । पन्ना अब शहर के माने जाने लोगों से मेल जोल रखती थी तथा मामुली वर्ग के लोग उस से मिल भी नहीं सकते थे ।

उधर निखिल की भी जिम्मेदारी अस्पताल मे बहुत बढ़ गई थी कयोंकि वह एक मुख्य दिल का डाक्टर बना दिया गया था । दिन

भर के काम के बाद उसे अस्पताल से कभी भी बुलाआ आ जाता था । इतना होते हुये भी पन्ना और निखिल ने यह निशचय किया कि वे पन्ना निवास मे पदार्पन से पहले अपनी विवाह कर लेंगे । लेकिन उन को न ही कोई दावत की या हनिमून की फुर्सत थी । आज शुक्रवार था और बहुत ही सुन्दर दिन था । इसलिये एक कोर्ट मेरिज के बाद वे आज पहली बार साथ साथ पन्ना निवास मे रहने आये थे ।

पन्ना और निखिल आज कुछ दिनो के बाद अपने आप को एक दूसरे के इतना करीब पाये थे कयोंकि वे दोनों अपने अपने निजी कार्यों मे बहुत ही व्यस्त थे । शायद इसी लिये वे जल्दी ही अपने शयनकक्ष मे चले गये थे । अपने इस बड़े और खूबसूरत कमरे के भव्य खाट पर सफेद साटिन के चादर मे नग्नधड़गं वे एक दूसरे के आलिंगन मे ऐसे जुटे थे जैसे वे पहली बार एक दूसरे से ऐसा प्यार कर रहे थे ।

पूरी रात इसी तरह लपटने झपटते प्यार मे करवटे लेते बीत गई । इस गहरे प्यार के धुन मे उन को पता भी न चला की कब सुबह हो गई । उन को होश तब आया जब उन के घर का टेलीफोन एक बार पूरे बारह घंटियों को बजा कर फिर दुबारा बज रहा था । निखिल फोन उठाया और बड़े ध्यान से सुना और सुनता रहा फिर हुँकारी भर के फोन रख दिया । पन्ना के पूछने पर निखिल ने

कहा.मेरे माता पिता हम को बधाई दे रहे थे और हम को कल शाम को खाने पर बुलाया है ।}

` ये कैसे हो सकता है ? उन के विचार मे कैसे अब ऐसा बदलाव आ गया हमे विशवास ही नहीं हो रहा है,} पन्ना ने कहा और स्नान ध्यान करने चली गई । निखिल भी सोच मे पड़ गया कि अब आगे कया होने वाला है । पर उस ने फैसला कर लिया कि जो भी होगा देखा जायेगा । शनिवार तो इधर उधर की प्रेम लीला मे बीत गई और आज रविवार था और उन को पण्डेय निवास जाना था ।

जब किसी खास चीज़ की इन्तजार रहती है तो समय बड़े मुशिकल से कटती है । ठीक ऐसा ही पन्ना और निखिल के साथ हो रहा था पर वह समय आ ही गया जब उन को न चाहते हुये भी आरती और बृजमोहन पाण्डेय के निमन्त्रण पर जाने के लिये तैयार होना था । अब जब दोनो हवेलियां एक दूसरे के आमने सामने थीं तो वे पैदल ही जा सकते थे पर पन्ना ने अपने नये आलीशान मर्सैडिस मे जाना ठीक समझा ।

उन की मोटर जिस का अपना खुद की पहचान उस के खास नम्बर पलैट (फएण्णए २०) से होते थे जा कर निखिल के मांता पिता के आंगन मे खड़ी हुई । निखिल और पन्ना ने उन के दरवाजे की घणटी बजाई तो दोनो आरती और बृजमोहन ने एक साथ आ के दरवाजे पर उन दोनो का स्वागत किया । उन के घर की बत्तियां

धीमी गति से जल रही थी और कुछ शात्रिये संगीत की धुन सुनाई दे रही थी। निखिल के माता पिता दोनों अपने सूट बूट मे थे। पन्ना को ऐसा लगा जैसे वह किसी के मइयत मे पहुँच गई है पर उस ने अपने आप को सम्भाल कर घर के अन्दर चली गई।

कुछ देर की बात चीत के बाद सब लोग खाने पर बैठ गये। भोजन परोसा गया, धीरे धीरे खाया गया और फिर आरती ने नये विवाहित बच्चों के लिये अपने आर्शिवाद की टौस्ट किया। भोजन के पश्चात जब सब लोग उठ कर बैठके मे गये तब मेवा मिशठान भी परोसा गया।

अचानक बृजमोहन की एक सवाल पन्ना को चकाचौंध कर दी थी, ‚पन्ना, आखिर तुम्हारी सही उमर क्या है ?}

हलाकि यह सवाल कुछ बेहूदा सा लगा फिर भी पन्ना ने निखिल के तरफ देखते हुये उस का सही जवाब भी दे दिया, ‚मैं अपनी बीसवी जनमदिन अगले हफ्ते मनाने जा रही हूँ। क्यों क्या हुआ है मेरे उमर को ?}

‚नहीं तुम्हारे उमर को तो कुछ नहीं हुआ पर हम को तुम्हारे शादी के निशचय कुछ जल्दबाजी के विचार लगते हैं। हम सोचते हैं कि तुम दोनो को अभी कुछ दिन अगोर लेना चाहिये..} बृजमोहन कह ही रहे थे की निखिल ने बीच मे उन को टोक कर कहा, ‚हम ने कोई जल्दबाजी नहीं की है पिता जी और अभी कल ही हम ने

अपनी कोट मेरिज की रसम पूरी की है । हां हम अपने इरादे और विचार से बहुत खुश है ।}

पर निखिल बेटा तुम ने ऐसा कयों किया ? कया पन्ना प्रेगनेन्ट है ?} आरती ने पूछा तो निखिल को ऐसा लगा जैसे उस के मुंह पर कोई बड़े जोर से एक तमाचा लगा दिया हो । वह तुरंत उठ खड़ा हुआ और पन्ना के हांथ पकड़ के उसे खींचता हुआ सीधे बाहरे चला गया और जाते जाते ये भी कहता गया, आप लोग आज से हमारे लिये कुछ भी न करें और सोचें तो बेहतर होगा । अलविदा ।}

घर मे संन्नाटा छा गया था और बाहर निखिल और पन्ना अपने मोटर मे सवार हो कर एक लम्बे ड्राइब पर निकल पड़े थे ।

दूसरे दिन सुबह जब निखिल और पन्ना नहा धो कर, पूजा पाठ कर के अपने नासते पर बैठे थे कि उन को एक बहुत ही दर्दनाक और मनहूस खबर मिली । निखिल के पिता के घर मे अचानक आग लग गई थी और सब नाश होने के अलावे बृजमोहन और आरती पाण्डय का भी देहान्त हो गया था ।

कुदरत भी न जाने इस संसार मे कैसे कैसे खेल खिलाती है लोगो को । अभी कल ही निखिल ने अपने माता पिता से अलविदा कहा था और आज वेइ स संसार से ही अलविदा कह गये थे । अभी कुछ दिनो से पन्ना भी पाण्डय परिवार से अपने मान हानी का

बदला लेने की सोच रही थी पर आज उस के विचार ही बदल गये थे ।

अब जब निखिल के माता पिता ही न रहे तब उसे अपने मां बाप की कमी महसूस होने लगी थी । इसलिये निखिल ने पन्ना से यह अनुरोध किया कि उन को अब पन्ना के मां बाप की खोज करना चाहिये जिस से उन की उचित देख भाल के के वे अपने उतावलेपन और बुरे भावनाओं का कुछ प्रायश्चित कर सके ।

अगर दिल मे सच्ची लगन हो जाये तो इनसान कोई भी कड़ी से कड़ी कार्य को सिद्ध कर सकता है । ठीक दो हफते मे पन्ना और निखिल ने भूषन लाला और चंचल देवी की पता लगा ही लिया । पन्ना के पिता भूषन लाला से निखिल की मिलन हुई और उन को ले कर वे चंचल देवी के पास पहुँचे और उन दोनो बिछड़े लोगो को पुनर विवाह कराया ।

यह सब होने और करने से पन्ना और निखिल को बहुत ही सुकून मिला और वे दोनो भूषन लाला और चंचल देवी को अपने साथ ला कर पन्ना निवास मे उचित स्थान दिया ।

जहां निखिल और पन्ना एक अजीब संतोस का अनुभव करने लगे थे वहीं भूषन लाला और चंचल देवी के आर्शिवाद से उन के जीवन मे हजारों बहारे आ गई थी । यही रहा उन सब के प्रीत का रीत ।

१८

गजब गाँव की अजब कहानी

यह गाँव भी क्या गजब का स्थान था | उस का नाम अजब और सुन्दरता बेहाल था | इस गाँव को लोग शामनगर के नाम से जानते थे | राम भरोस ने अपना साधारण घर वहीँ एक छोटे पहाड़ पर बनाया था | उस के घर में उस की बीबी जानकी और दो बच्चे सत्तू और मुन्नी रहते थे | सत्तू उन का बड़ा बेटा बहुत मेहनती नौजवान था और मुन्नी तो घर के सभी कामों में अपने माई के साथ करती रहती थी . राम भरोस की यह छोटी सी घर संसार उन के इस दस बिगहे जमीन पर वर्षों से गुजर बसर कर रही थी . गन्ने धान मकई अरहर और अन्य फल फूल की उन की लहराती खेती थी . ये खेती बारी कोई सेठ की मिलकियत नहीं थी और न ही कोई जिमीदार की जागीर थी पर वह पूरा परिवार दिल के बड़े धनी और विचार के काफी ऊँचे थे .

राम भरोस के पास दो खेती वाले तगड़े तगड़े बैल लालू और भालू थे . उन का चरफर घोडा सूरज उन के खेती में भी काम आता था और घूमने फिरने तथा माल धोने में माहिर था. खाजू उन का एक बड़ा ही भक्तिमान कुत्ता और रानी उन के घर में से चूहों को दूर करने वाली बिल्ली थी. खाजू का देखभाल सत्तू

करता था और रानी की रखवाली मुन्नी के हवाले थी . आँगन में दस बारह अंडे देने वाली मुर्गियां थी और दो काले काले मुर्गे थे जो समय समय पर कुकडू कूँ किया करते थे तथा मुर्गियों को भी तंग किया करते थे . दो गायें भी थी, लाली और पियरी, जिन के सोजन्ये से घर में दूध दही माठा और घी की बहुतायत रहती थी . घर के आस पास न जाने कितने आम निम्बू नारियल बेल्फुट अमरुद और इस तरह के फलों के पेड़ लहरा रहे थे .

ऐसे वातावरण में ये शामनगर का ख़ुशी परिवार अमन चैन से अपना गुजर बसर कर रहा था . पास पड़ोस के लोग भी बड़े मिलनसार थे और सभी परिवारों में खूब निभती जाती थी . सत्तू का मिन्त्र रामू था और मुन्नी की सहेली केकई थी .

शामनगर स्कूल में तीन सौ बच्चे पढ़ते थे . राम शरण वहाँ का मुख्य अध्यापक था और उन के अन्य आठ सहायक बड़े निपूर्ण शिक्षक थे. इन अध्यापकों के आधीन जो विध्यार्थी रहते थे उन में सभी प्रकार के गुण भरे जाते थे . जहाँ स्कूल में अध्यात्मिक शिक्षा पर ध्यान दिया जाता था वहीँ धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, कृषि सम्बन्धी, खेल कूद वाले और राजनीतिक गुण भी बच्चों को यथापुर्वक दी जाती थी . शायद इसी लिए इस गाँव का नाम शामनगर से सही तुलना की जा सकती थी . गाँव के लोग अपने बच्चों के पढाई पर कड़ी नजर रखते थे और अध्यापकों का यथा शक्ति मदद करते और ध्यान रखते थे .

शामनगर गाँव का मुखिया वहां का दुकानदार बेचू था जो अपने इमानदारी और नेक व्योहारों के लिए मशहूर था . बेचू के

परिवार वाले पUरे गाँव को अपना रिश्तेदार की तरह मान जान करते थे. दिन दूनी और रात चौगुनी इस गाँव की उन्नति हो रही थी . सभी लोग सुख के नींद सोते थे ख़ुशी के गीत गाते थे और बड़े प्रेम भाव से रहते थे . ये तो ऐसा लगता था कि इस कलियुग में ये गाँव के लोग तो सतयुग का प्रदर्शन करने लग गए थे . लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है . इस दुनियां में जहाँ दिन होते हैं वहीँ रात भी होती है, जहां सुख होता है वहाँ दुःख भी आ जाते हैं और जहां अच्छे लोग होते हैं वहीँ कुछ लोग अपने बेहूदेपन दर्शाते रहते हैं . शामनगर का भी ऐसा ही हाल था . पर वहाँ के सभ्य लोगों के एकता और मिलन जुलन ने ऐसे कुछ गैरजिम्मेवार लोगो को सही रास्ते पर ला दिए थे . उन सजन्नों की लगन और कोशिश ने सभी बुरे दुर्जन चलन वाले व्यक्ति को सीधा करने में समर्थ हुए थे |

१९

शैतान से सौदा फरिशता का ज्ञान

नन्दू एक बहुत ही समझदार और सुन्दर स्वाभाव का लड़का था। वह सब दिन अपने भजन कीर्तन मे लीन और मगन रहता था। नन्दू अपने बड़े बूढ़ों की बहुत आदर सत्कार करता था। अपने माता पिता को तो वह भगवान स्वारुप ही मानता था। नन्दू का यह अटल विशवास था कि उस के अच्छे आचरणों और कायों के कारण उस को ईशवर का असीम आर्शीवाद सदा मिलता रहेगा लेकिन उस को बहुत दुख हुआ उस दिन जिस दिन उस की मां उसे केवल सोलह वर्ष के उमर मे डाकटर के पास ले गई थी उस बुरे खबर सुनने के लिये।

डाक्टर मनोज ने कहा, "नन्दू की मां, मुझे नन्दू के दिल के बिमारी के बारे मे बहुत सोच है पर मैं उस को ठीक करने के लिये अभी कुछ भी नहीं कर सकता हूँ।"

"आप ऐसा कयों कह रहे हो डाक्टर साहब ?" नन्दू की मां ने पूछा।

“नन्दू की मां, यह बिमारी नन्दू को जन्म लेने से पहले आप के गर्भ मे हुआ था इसलिये न ही नन्दू और न ही आप इस को ठीक करने के लिये कुछ भी कर सकते थे । मैं नन्दू को अपने अस्पताल के मरीजो को सबर करने वाले सुचि मे कर दी है और जैसे ही हम को कोई दिल का दानी मिल जायेगा हम नन्दू के दिल को टरांस्पलान्ट कर देंगे । बिना उस के दिल को एक नये दिल से बदले नन्दू शायद ही अटठारह वर्षो तक ही जी पायेगा ।” डाक्टर मनोज ने समझाया ।

इस के बाद नन्दू और उस की मां संतोष कर के अपने घर चले गये । घर पहुँच कर नन्दू ने अपने पंड़ित पिता से एक सवाल किया, “पिता जी, मैं और आप इतना भक्ति करते रहते हैं और परमात्मा मे बहुत विशवास रखते हैं पर फिर भी उस ने हमारे साथ ऐसा कयों किया ? मेरे दिल को ही इतना बुरा बना दिया कि मैं अब केवल दो साल तक जी सकता हूँ ?”

“ बेटा, हम भगवान को अपने दुखों के बारे मे कोई दोष नहीं दे सकते हैं । हम उन के नेक इरादे पर शक भी नहीं कर सकते हैं और हम उन के दिल और दिमाग मे कया रहता है उस के बारे मे भी नहीं जान सकते हैं । ईशवर के विचार और इरादे बहुत ऊँचे और नेक होते हैं । उन के हावभाव और तरीके भी बहुत ही गहरे और दयालू होते हैं ।” पंड़ित जी ने कहा ।

“यह तो आप ने मुझे बड़े पते की बात बताई है पिता जी पर मैं भगवान से अपने बिमारी को ठीक करने के लिये क्या मांग सकता हूँ ? आप तो जानते ही हैं कि मैं उन का एक सच्चा भक्त हूँ और रातो दिन उन की अराधना करता रहता हूँ ।” नन्दू ने कहा ।

“भगवान अपने भक्तों से कोई सौदा नहीं करता है मेरे बेटे । सौदा तो केवल शैतान ही करते हैं । शैतान की हर मांग को पूरा करना साधारण मनुष्य के लिये बड़े मुश्किल की बात हो जाती है ।” नन्दू के पिता जी ने कहा ।

“पर मैं शैतान से सौदा करने के लिये तैयार हूँ पिता जी, बसरते मेरी बीमारी ठीक हो जाये और हम को जीने के लिये और भी समय मिल जाये । न मैं अभी मरना चंहता हूँ और न ही मैं किसी और के दिल को अपने अन्दर लगवाना चाहता हूँ ।” नन्दू ने अपने पिता से कहा ।

“थोड़े देर के लिये तुम सोचो बेटे कि तुम क्या अजीब बात कह रहे हो । क्या तुम जानते हो कि तुम क्या कह रहे हो ? कहीं शैतान तुम्हारी बातों को सुन न रहा हो,” पिता जी ने नन्दू को सचेत किया ।

“वह सुन लेता तो मेरा काम ही बन जाता, पिता जी । ओ शैतान ! आप मेरी बातों को सुन रहे हो न ? समय देख कर आ जाना । तुम्हारी सभी शर्तों को मैं मानने के लिये तैयार हूँ अगर तुम मुझ को और भी लम्बी उमर दिला सकते हो ।” नन्दू ने आकाश की ओर ताक कर कहा ।

शैतान तो नन्दू की सब बातें साफ साफ सुन रहा था क्योंकि नारद मुनी के तरह उस की भी आंख और कान सभी जगह पर लगे रहते हैं । उस रात को जब शैतान नन्दू के सोने वाले कमरे मे आया तब नन्दू ने देखा कि वह एक बहुत ही छोटा आदमी का रुप बना रखा था ओर वह काले कपड़े को पहन रखा था । उस के सर पर एक नीली टोपी थी तथा वह बड़े प्यार से एक दोस्त और माल बेचने वाले व्यक्ति के तरह दया दिखा कर चिकनी चुपड़ी बाते कर रहा था । उस की लुभावनी बातों को सुन कर नन्दू मुग्ध हो गया और उस की सभी बातों पर अमल करने के लिये तैयार हो गया ।

“हमारे तुम्हारे बीच के सौदे को हम दोनों को भलिभांति समझ लेना जरूरी है, नन्दू भाई,” शैतान ने कहना शुरू किया । “मैं तुम्हारे दिल की बिमारी को बिलकुल ठीक कर दूँगा और तुम इस के बदले मे अपने मरने के बाद अपने आत्मा को मेरे हवाले कर दोगे ।”

नन्दू के पिता ने उस को गरुड़पुरान की दन्तकथाये सुनाई थी इसलिये वह जानता था कि शैतान बड़े चालाक होते हैं और अकसर इनसान को बेवकूफ बना कर उन को चकमा दे देते है । अगर हम होशियार न रहें तो शैतान के चाल से उस के जाल मे बुरी तरह से फंस जाया करते हैं ।

इसलिये नन्दू बहुत ही सतर्क हो कर उस शैतान के शर्त को फिर से उस के सामने दोहराया । "मेरे डाक्टर का कहना है कि मेरी मौत अटठार साल के उमर मे ही हो जायेगी पर मैं इस से ज्यादा जीना चाहता हूँ । मैं अपने *लाइफ स्पेन* याने *जीवन काल* को दुगना करना चाहता हूँ ।"

"तथास्तु ! मुझे तुम्हारी यह शर्त मंजूर है नन्दू । बस मरने के बाद तुम को अपने आत्मा को मेरे पास कर देना पड़ेगा ।" शैतान ने कहा ।

"जरा मुझ को ठीक से समझा दीजिये इस का मतलब । तुम हमारे आत्मा को कैसे ले लोगे ?" नन्दू ने शैतान से पूछा ।

"तुम मेरे ही साथ रहोगे जब तुम्हारे शरीर से तुम्हारा जान निकल जायेगा," शैतान ने नन्दू को समझाया ।

“तुम्हारा मतलब है कि जब मेरी मौत होगी और जब मेरे शरीर को लोग अंतिम संस्कार कर देंगे तब मैं तुम्हारे साथ नरक के महान गर्मी मे रहने लगूँगा जहां मुझे सताया जायेगा और दुख दिया जायेगा ।” नन्दू चौंक गया ।

“ओ हो नन्दू ! तुम बहुत दिन अपने पिता के साथ मंदिर मे रहे और भजन कीर्तन करते रहे । तुम्हारे पंड़ितों ने तुम को नरक के बारे मे सब सच्च नहीं बताया है । नरक असल मे उतना खराब नहीं है जितना तुम्हारे पंड़ितों ने तुम को बताया है । हम अपने अतिथियों को न मारते हैं, न सताते हैं और न ही उन को कोई कष्ट पहुँचाते हैं । हां हमारे यहां सभी लोग आग जैसी गरमी मे रहने की हिम्मत रखते हैं जैसे तुम्हारे धरती पर कुछ पुजारी लोग समय समय पर आग पर चलते हैं । हमारे यहां तो लोग हर रोज वैसे ही आग मे रहते हैं । तुम थोड़े ही देर मे हमारे वातावरन से परिचित हो जाओगे तब तुम को कोई तकलीफ नहीं होगी ।” बड़े बिस्तार पूर्वक शैतान ने नन्दू को बताया ।

“ अब मैं सब समझ गया शैतान भाई । मैं अपने जीवन भर से गरम देश मे रहने की आदत लगा ली है तो हमारे आत्मा को कोई तकलीफ नहीं होगी तुम्हारी मेहमान नवाजी करने मे शैतान साहब । कया मुझे कोई कागज़ात पर दस्तखत करना पड़ेगा ?” नन्दू ने पूछा ।

" हम नरक वासी अपने जबान के बड़े पक्के होते हैं । हम को कोई कागज़ पत्तर की जरूरत ही नहीं होती है । जब हम कोई सौदा करते हैं तो उस को अच्छे तरह से निभाते भी हैं । अब मैं तुम को तुम्हारे *जीवन काल* के दुगने समय के बाद देखूँगा क्योंकि तब हमारा तुम्हारा सौदा पूरा हो जायेगा ।" शैतान अपने मनहूस चेहरे पर एक कुटील मुस्कान को लिये हुये कहा और वहां से बड़े खुशी से चलता बना ।

समय का चकर धारावाहिक रूप से चलता रहा और नन्दू अब दया नन्द शर्मा के नाम से जाना जाता था । वह यूनिवेसिटी मे पढ़ लिख कर कई डिगरी हासिल कर के एक बहुत बड़े व्यवसाय का एक बहुत ही होनहार मनेजर हो गया था । बड़ी तलब, शानदार महल, चमकती मोटर और सुखी जीवन के होते हुये भी दया नन्द शर्मा ने अभी तक शादी नहीं की थी । उसे डर था कि कहीं उस के बच्चे भी दिल के बिमारी के शिकार न हो जायें ।

उस का समय बहुत ही सुख और खुशी से बीत रहा था । आज दया नन्द की छत्तीसवी वर्ष गांठ थी और उस के कम्पनी वाले उस के जन्मदिन मनाने के लिये शहर के कई मान्नीय लोगों को बुलाया था । नाच, गाना, बजाना, भाषण और भोजन की अच्छी सुबिधा की गई थी । सब लोग मगन थे और मौज मना रहे थे । दया नन्द तो मारे खुशी के शायद सातवे आसमान पर घूम रहा था ।

अचानक एक बड़ा धमाका हुआ और सब लोग दरवाजे के तरफ देखने लगे । वहां एक लाल कपड़े को धारन किये हुये, विचित्र चेहरे वाला, सर पर दो सिघं लिये, लम्बे पूंछ, मैले दांत और हांथ मे लाठी पकड़े खड़ा था । जब सब लोग चुप हो गये तब वह कहने लगा, “नन्दू मेरे यार ! आज हमारे सौदा का आखरी दिन है और हमारे शर्त के मुताबिक मैं तुम को लेने आया हूँ । तुम्हारा इस संसार को छोड़ कर जाने का समय आ गया है ।” शैतान ने अपने दांत को दिखाते हुये कहा ।

“मांफ करना शैतान ! तुम्हारी यह बहुत बड़ी बेसमझी है ।” दया नन्द शर्मा अपने रंगमन्च से कहा ।

“अब तुम को अपने सौदे और शर्त से कोई नहीं निकाल सकता है नन्दू । तुम ने अपने *जीवन काल* को दूना करने की बात की थी और मैं ने तुम्हारे अटठारह वर्ष को दूना कर के छत्तीस कर दिया है । मेरे मन मे कोई गलत फेहमी नहीं रही और उस शर्त का पलन तो तुम को करना ही पड़ेगा । चलने के लिये तैयार हो जाओ नहीं तो मुझ को जबरदस्ती करनी पड़ेगी ।” शैतान ने चिल्लाते हुये दहाढ़ मारा ।

“ तुम ने हम को दूना ***जीवन काल*** नहीं दिया है और इस लिये हमारे शर्तनामे के मुताबिक तुम बहुत बड़ी भूल कर रहे हो

शैतान । जरा अपने शर्तनामे पर गौर से नज़र दौड़ाईये । मैं ने तुम से अपने ***जीवन काल*** को दूनी करने को कहा था और तुम इस शर्त का सौदा मुझ से बिना कोई हिचकिचाहट के कर ली थी । याद रहे ***जीवन काल*** हमारे ग्रन्थों के मुताबिक सत्तर वर्ष की अवधि होती है ।" दया नन्द ने शैतान को समझाने की कोशिश की ।

"नन्दू यह कैसे हो सकता है ?" शैतान ने जोर दे कर पूछा ।

"बात तो बहुत सरल है शैतान । हमारे ग्रंथो मे और बाइबल मे भी साफ तौर से लिखा है कि एक इनसान का ***जीवन काल*** सत्तर वर्ष की होती है । अगर तुम को विशवास नहीं होता हो तो मेरे आदर्नीय अतिथि पादरी देवकी जी से पूछ लो ।" दया नन्द ने पादरी देवकी से आग्रह किया कि शैतान को इनसान के ***जीवन काल*** के बारे मे सब बता दें और शर्तनामे की शर्त को सुलझाने की कोशिश करें ।

पादरी साहब ने शैतान के नज़दीक जा कर उसे ठीक से समझाया, "शैतान सावधान ! तुम आज तक हमारे भक्तों को सताते रहे पर आज तुम्हारे शर्त के मुताबिक तुम दया नन्द को नहीं ले जा सकते हो कयोंकि हमारे बाइबल मे साफ साफ लिखा है कि इनसान का ***जीवन काल*** तीन बीस और एक दस वर्ष की अवधि होती है ।(*three scores and ten years*)

जिस को हम सत्तर साल की अवधि समझते हैं ।" पादरी थोड़े देर रूके । शैतान के चेहरे पर मातम देख कर फिर कहा,
"शैतान ! इस लिये तुम आज लौट जाओ और जब तुम्हारे शर्तनामे के मुताबिक दया नन्द की ***जीवन काल*** दूनी हो जाये तब तुम अपना सौदा करने खुशी से वापस चले आना । तब तक तुम्हारी यहां कोई दाल नहीं गलने वाली है ।"

पादरी देवकी की बातें सुन कर शैतान आग बबूला हो गया । तब दया नन्द ने उस के गहरे जख़म पर जैसे और भी नमक छिड़ते हुये कहा, "शैतान ! अब इस का मतलब यह हुआ कि तुम अपने शर्त को अपने कहने के मुताबिक मानयता नहीं दे रहे हो । मेरा ***जीवन काल*** का अन्त होने मे अभी एक सौ वर्ष से भी ज्यादा समय बचा है । अब तुम यहां से जा सकते हो और हम सब को अपने जशन मनाने मे कोई दखल नहीं दे सकते हो ।"

शैतान के लाल कपड़े ही नहीं पर उस की पूरी देंह अब आग के तरह लाल हो चली थी । वह बड़बड़ाने लगा था, शाप देने लगा और कई दुर्वचन भी कहने लगा था, "*धोखा ! अन्याय ! विशवासघात !*" शैतान बड़े जोरदार शब्दों मे कहा, "मेरे साथ अन्याय हो रहा है । मैं न्याय चाहता हूँ । अब हम को मध्यस्थता की जरूरत है और मैं पंचनिर्णय चाहता हूँ । मुझे कोई एक ऊँच्च न्यायधीश चाहिये ।" शैतान के मुख से ऐसी बाते सुन कर सभी लोग चकीत हो गये । इतने मे वहां एक बेजोड़ और आंख को

चकाचौंध कर देने वाली रोशनी हुई । उस दैवी रोशनी को देख कर लोगों के आंख बन्द हो गये और सुन्दर मोहनी जोरदार शब्दो को सुन कर सब के कान बन्द हो गये ।

थोड़े देर बाद उस रोशनीदार स्थान से निकलती दया नन्द ने एक धर्मात्मा की ईशवरिये बाणी सुनी । "हे शैतान तू किस भ्रम मे पड़ा है । तेरे शर्तनामे को गौर से देखने और समझने के बाद मुझे यह साफ जाहिर होता है कि तू गलत रास्ते पर जा रहा है । अभी भी वक्त है सम्हल जा नहीं तो मैं तेरा नाश कर दूंगा । दया नन्द शर्मा और पादरी देवकी की बातें सोलहो आने सच्च और माननीय हैं । मनुष्य की सामान्य *जीवन काल* सचमुच सत्त ार वर्षों की होती है । यह बाइबल मे भी लिखा है और कई अन्य धार्मिक ग्रन्थों की कथन भी यही है । हां अगर ईशवर चाहे तो इस अवधि को बढ़ा और घटा भी सकते हैं लेकिन तुम इस को कभी भी बदल नहीं सकते हो ।" शैतान यह सब बड़े शान्तिपूर्वक सुन रहा था ।

वह ईशवरिये बाणी फिर से शुरू हुई, "शैतान अब तुम को समझ मे आ गया होगा कि तेरे शर्तनामे के सौदे के मुताबिक तुम को दया नन्द शर्मा को एक और ***जीवन काल*** का समय बिना कोई अन्य टालमटोल किये ही देना पड़ेगा । हां आगे से जब भी तुम मेरे किसी बी भक्त से कोई सौदा करना तब अपने वकीलों से खूब अच्छे से सलाह मशवरा कर लिया करना । हम जानते हैं कि तुम्हारे नरक मे लाखों माहिर वकील भरे पड़े हैं जिन की मदद तुम कभी भी मांग सकते हो ।" उस ईशवरिये

धर्मात्मा ने मुस्कुरा कर कहा और वहां से अचानक लापता हो गये । शैतान को वहां से फौरन भाग जाना पड़ा ।

दया नन्द के जन्मदिन की जलसा खतम हुई और वह शाम तक अपने घर पहुँचा । रात मे अपने कमरे मे आराम करते समय उस के समक्ष एक फरिशता उपस्थित हुआ । वह छाया दया नन्द के खाट के कोने पर बैठ कर कहना शुरू किया, " दया नन्द, मेरी बातों को ठीक से सुनो कयोंकि मैं तुम्हारा संरक्षक फरिशता हूँ । आज आप को अपने भगवान को धन्यवाद करना है कयोंकि उन्हों ने तुम को अमर पद दिलवा दिया है । अब शैतान और उस के यमदूत लोग चाहे कितना भी जोर लगा लें पर तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकते हैं । यही सच्चे भक्ति और अटल अराधना के महत्वपूर्ण नतीजा और फल हैं ।" दया नन्द शर्मा के संरक्षक ने उस के हांथ को पकड़ कर फिर कहना शुरू किया, "आज से तुम को अपने सभी धन दौलत, मान मर्यादा, रिशते नाते, मित्र सखा और माल असबाब को त्याग कर अपने आप को परम पिता परमेशवर को सौंप देना होगा तभी तुम्हरा कल्याण हो सकता है ।"

दया नन्द बड़े ध्यान से अपने संरक्षक के कथन को सुन रहा था और जब संरक्षक कुछ देर के लिये रुके तब दया नन्द ने उन से सवाल किया, "मैं यह सब कैसे कर सकता हूँ ?"

“अगर तुम सोचते हो कि इस कलियुग मे अमर पद पाना इतना सहज और कानूनी दांव पेंच का मामला है तो वह तुम्हारी भूल है । परम पिता परमेशवर का ऐसा बरदान पाना उतना सरल नहीं है जितना तुम सोच रहे हो । इस के लिये न ही नियम, संयम, लगन और भक्ति की जरूरत होती है पर तुम को निस्वार्थ रूप से त्याग कर के संन्यास लेने की जरूरत है । यह आत्मत्याग ही इस कलियुग मे तुम को दुख बिमारी, सोच फिकर, बाढ़ तूफान और अन्य अड़चनों से बचा कर तरन तारन कर सकती है । भले ही तुम एक सौ पचास वर्ष तक जी सकते हो लेकिन तुम बिना इस साधन से जिन्दा तो रहोगे पर तुम को संसारिक कलेश, दुख बिमारी, परिवारि कलह और अनेक पीड़ा सदा घेरे रहेंगे और सताते रहेंगे । इस का सही चुनाव तुम्हारे ही हांथों मे है ।” उस फरिशते ने दया नन्द को समझाया ।

दया नन्द शर्मा जैसे कोई गहरी नींद से जाग गया हो । उस ने अपने इस नये सुख चैन के उत्तम जीवन मे इतना मौज उठाया था कि उन सब सुख सम्पति को त्यागने का सवाल कभी भी उस के सामने नहीं आया था । इसलिये आज जब आत्मत्याग और परमेशवर को अपने सब कुछ सौंपने की बात उस फरिशते ने उठाई तो वह जानना चाहता था कि यह सब इस कलियुग मे कैसे मुमकिन हो सकता था । दया नन्द ने अपने संरक्षक फरिशते से पूछा, “मैं कया कर सकता हूं ?”

“तुम को अपनी यह शैतान की लड़ाई करने से पहले सोचना चाहिये था । पर अभी भी बहुत कुछ बिगड़ा नहीं है । अगर तुम मेरी कहना मानने के लिये तैयार हो तो मैं तुम को इस मुसीबत से निकालने की कोशिश करूँगा ।” फरिशते ने कहा ।

“आप जो भी सलाह हम को देंगे मैं कठिन से कठिन कार्य करने के लिये तैयार हूँ कयोकि मैं केवल जीना नहीं चाहता पर मैं बड़े शान से इस कलियुग मे अपने लोगों की सेवा सत्कार भी करना चाहता हूँ ।” दया नन्द शमा को जैसे एक गहरी नींद आ गई और उस का फरिशता कहता गया । दया नन्द को लगा जैसे उस के सपने मे खुद परम पिता परमेशवर आ कर उस को अपनी मोहनी मूरत दिखा दिये थे ।

दया नन्द शर्मा के संरक्षक फरिशते की कथन :

‘यह संसार ही हर मनुष्य के तरह नाशवान है । इस का शुरुआत भी है और इस का अन्त भी निशचय है । यह सब कब होगा किसी को आज तक पता नहीं चल पाया है । ठीक इसीलिये हम उस सब को बनाने वाले भगवान की अराधना करते रहते हैं ।

विष्णू,ब्रहमां और महेश या शिव ही हमारे त्री मूर्ति के रूप में एक ही महान शक्ति हैं जो हमारे निर्माता, विधाता, परिरक्षक और विध्वंसक हैं जिन का हर वैशनवजन सदा

पूजन करते हैं। यह तीन महान संसारिक शक्तियां ही हम सब के लिये पूजनीय हैं। यही हमारे एकमात्र भगवान हैं।

जैसे जैसे युग बदलता है और जरूरत होती है वैसे वैसे मनुष्य रूप में इन का अवतार होता है। कभी वे कृष्ण बन कर, तो कभी राम के रूप लेकर इस धरती पर हमारी रक्षा करने और हमें सही ज्ञान देने चले आते आते हैं।

इन सब की कहानियां और उपदेशों को हमारे ज्ञानीजन हमारे लिये शास्त्रों में बखान कर चुके हैं और हम उन सब को ग्रहण करके अपना अपना निजी पारिवारिक तथा समाजिक जीवन सुधारते रहते हैं।

उन की अच्छाइयों से और उन के अन्य पात्रों की गलतियों से हम अपना जीवन सम्भालते रहते हैं और उस परम पिता परमेशवर के चरणों में बैठ कर प्रार्थना करते रहते हैं की वे हमारी सही रक्षा करें, हमें अपना भक्त बनाये रहें, हमारे सभी बोलीवाणी. चालचलन और शिष्टाचार को समाज के नियम के अनुकूल रखें तथा हम सब को हमारे मोक्ष का सही राह दिखाते रहें। हम सब कृष्ण तो नहीं बन सकते हैं और न ही राम के आदर्शों पर पूरे तौर से चल सकते हैं पर हम अपना कोशिश तो कर सकते हैं जिस से इस संसार में प्रेम, शान्ति, अमनचैन बढ़ती रहे और धर्म की रक्षा होती रहे।

कृष्ण,बलराम और सुदामा की गहरी मिंत्रता को हम कैसे भुला सकते हैं ? उन की गीता ज्ञान को ले कर हम अपना सारा जीवन सुधार सकते हैं।

राम,लक्षमन,भरत और शत्रुघन के पुनीत भ्रात्र प्रेम और उत्तम रिशते को हम याद कर के अपने जीवन को सार्थ बना सकते हैं।

दसरथ जैसे महान पिता के राह पर हम चल सकते हैं और अपने बच्चों को शिक्षित और गुणवान बना सकते हैं। अपने हिन्दू ग्रंथों में कई सुन्दर सौभाव की माताओं का वर्नण है। कौशल्या,देवकी और जशोदा जैसी मांताओं के गुन इतने पवित्र हैं जिन के आदर्शों को अमल में ला कर हम एक सुखी परिवार का निर्माण कर सकते हैं।

सीता,सावित्री,पारवती,द्रोपति और अहिल्या जैसी सती पत्नियों के शुभ लक्षनों को हम अमल में ला कर अपने पारिवारिक जीवन को सुख, शान्ति और खुशी से भर सकते हैं।

निशाद, केवट और शबरी जैसे भक्तों का तो कहना ही कया है जिन के भक्ति को हम पूरे तौर पर समझ कर प्रभु के चरणों में लीन हो जा सकते हैं।

जब इन सब शिक्षाओं और उमदे ज्ञान से भरपूर हमारी हिन्दू धर्म भरी पड़ी है तब हम न जाने क्यों रावन, कन्स और बालि के अवगुनों के तरफ झुके जा रहे हैं ?

यहीं पर हमारे धर्म के कुछ ठेकेदारों या पुरोहितों ने हमे अपने घिसेपिटे और बेमतलब के पोपलीलाओं तथा पूजन और प्रचार के पुराने, बेकार और अप्रचलित नियमों को हम पर लाद कर हमे धोखा देते आये हैं । सब पाखंड़ अब बस कर के हिन्दू धर्म को बचाना हम सब यजमानो का परम कर्तव्य है ।

नतीजा बहुत बुरा हो रहा है जब हमारे नये युग के लोग न तो हिन्दी भाषा का ग्यान रखते हैं और न ही हिन्दू धर्म की स्वतंत्रता और असलियत पर ध्यान दे पा रहे हैं । हम अपने भावी संतानो को सरल भाषा और सरल उपाय से दूर किये जा रहे हैं । एक दिन ऐसा आ जायेगा जब हमारा सुन्दर,पवित्र, आजाद तथा महान हिन्दू धर्म को हमारे ही लोग बिगाड़ बैठेंगे तब बहुत देर हो चुकी होगी । ***जागो और जगाओ*** का नारा बजाना अतियंत जरूरी है ।

सतयुग को तो हम वापस ला नहीं सकते हैं पर कलियुग की धधकती धर्म की आग को हम शान्त कर के अगले मोहिनी युग में अपने हिन्दू धर्म में सही परिवर्तन ला कर

अपना और अपने समाज का जीवन सफल बना सकते हैं । दया नन्द शर्मा आप जरा कोशिश तो कीजिये !

एक बात और याद रखने की है तुम को दया नन्द जी । अगर भला किसी का कर न सको तो बुरा किसी का मत करना । अगर किसी के लिये पुष्प नहीं बन सकते हो तो तुम कांटे भी बन कर मत रहना । बन न सको भगवान अगर तुम तो कम से कम इनसान तो बनो । नहीं कभी शैतान बनो तुम और नहीं कभी हैवान बनो तुम । यह भी याद करने की बात है कि अगर सदाचार अपना न सको तो पापों में पग मत धरना ।

मैं तुम जैसे साधारण इनसान से कया कया कहूॅ पर आज जब तुम ने पूछ ही लिया है तो मुझ को दिल खोल कर कहने दो ।

अगर तुम सत्य वचन न बोल सको तो झूठ कभी भी मत बोलो तथा मौन रहने से तो सब ही अच्छा होगा कयोंकि कम से कम किसी के जीवन मे तुम विष तो मत घोलोगे ।

यदी जो भी तुम को बोलना हो तब सब से पहले तुम उस बात को ठीक से तोलो फिर अपने मुंह को खोलने की हिम्मत करो । यदी धर न किसी का बसा सको तो किसी की झोपड़ियों को न जला देना । फिर गर मरहम पट्टी

किसी की कर न सको तो घाव में भी नमक मत लगा देना । अगर दीपक बन कर किसी के लिये जल न सको तो उस के लिये अंधियारा भी मत करना ।

जब आप मे बल ही नहीं है कि किसी नेक इनसान को अमृत पिला सको तो अपने जानते हुये कभी भी किसी को जहर पिलने से ड़रते रहना । अगर तुम अपने लोगों को धीरज बन्धा नहीं सकते तो उन को ही नहीं पर किसी के तन मन मे भी घाव मत कर देना । दया नन्द जी आप ऐसे ही ईशवर की माला जपते रहना तथा हर सुबहो शाम भजन कीर्तन करते रहना ।

हमारी एक और अनोखे ज्ञान को समरण करना । आप के हर सच्चाई की राह में बेशक कष्ट अनेको मिलते रहेंगे पर यह भी याद रकना कि कांटो के बीच में देखो फूल भी हमेशा खिलते रहते हैं इसलिये सूरज की भांति खुद जल कर सब जग को रोशन करते रहना तभी मैं तुम्हारे लिये तुम्हारा संरक्षक बन सकूँगा ।

अब समय आ गया है कि हम अपने इस जीवन का सब भार परम पिता परमेशवर के हांथों मे सौंप दें जिस से हमारी जीत भी उन्ही के हांथों मे हो और हमारी सभी हार भी उन के हांथो मे हो ।

दया नन्द शर्मा जी आज से आप यह संकलप कर लें कि आप का एक ही निशचय हो और वह यह हो कि कभी एक बार भी जो तुम उस परम पिता परमेशवर को अगर कोशिश कर के पा जाओ तब दुनियां भर के सब प्यार, भक्ति और चाह तुम बिना कोई भी संकोच और हिचकिचाहट के उन के ही हांथों मे खुशी खुशी अर्पण कर दोगे ।

अब तो तुम को इस जग मे रहना ही पड़ेगा इसलिये तुम आज से यहां ऐसे रहना सीख लो जैसे निर्मल जल मे एक सुन्दर कमल का फूल रहता है । ऐसा होने से तुम्हारे सभी गुण, अवगुण, दोष और कपट भगवान के पवित्र चरणों मे समर्पित हो जायेंगे और तुम अपने सभी कर्मो और सोच मे सफल होगे ।

फिर तो चाहे तुम इस जग से दूर उस पार रहो या फिर इस जग के कोई कोने मे भी रहो पर तब तुम ऐसे रहने लगोगे कि इस पार भी तुम उन के हांथों मे रहोगे और उस पार भी उन के साथ रहोगे । यदी मनुष्य का जनम तुम को फिर मिले तो उन के श्रीचरणो का ही तुम प्रेम पुजारी बन कर रहना सीख लो ।

तब यह मेरा दावा है कि तुम जैसे पूजक की एक एक रग का हो जायेगा तार उन्ही के हाथों से और जब जब तुम इस

संसार का कैदी बन कर लौटोगे तब तब तुम निष्काम भाव से अपने सभी काम को करते रहोगे । फिर अन्त समय मे जब तुम अपनी जीवन काल को पूर्ण कर के प्राण तजोगे तब तुम निराकार उन्ही के हाथों मे होगे और उन मे लीन हो जाओगे ।

अन्त मे यह बात भी याद रखना कि तुम मे और उन मे बस भेद यही कि तुम सदा नर ही रहोगे और ईशवर तुम्हारे नारायन बने रहेंगे तथा तुम इस संसार के हांथों मे रहोगे पर सारा संसार उन के पवित्र और पावन हाथों मे रहेगा ।

दया नन्द शर्मा जी, अब तुम को इतना ऊँचा उठना है कि जितना ऊँचा हमारा आकाश है, हमारे बादल हैं और हमारे विचार हैं । पर तुम यह कैसे कर सकते हो ?

अपने सभी सम्पती का त्याग तो तुम कर ही रहे हो पर इस के बाद तुम को सारे दुनियां के लोगों को एक ही दृष्टि से देखना होगा । जो लोग जाति भेद-भाव के, धर्म-वेश की और काले गोरे की ज्वालाओं मे जल रहें हैं उन सब को शीतल कर के खुद ऐसे बहो जैसे समुद्र के किनारे मंद मंद पवन चलती है ।

अगर तुम्हारे पास सही उमंग और प्रेर्णा है तो तुम अपने नये विचार से संसार के वर्तमान झगड़ा झंझट, मार काट और चोरी चंडाली को सँवारने मे मदद करोगे । तुम्हारे सभी चित्रण, सभी स्वर, भाषा और रहन सहन इतने नये होंगे कि लोग तुम को सज्जन तो कहेंगे ही पर तुम खुद एक अजीब मौलिकता का अनुभव करने लगोगे ।

अपने बीते दिनों और अतीत से ठीक उतने ही ज्ञान और सामान लो जितना तुम हजम कर सको क्योंकि अकसर पुराने वस्तुओ का मोह बहुत घातक होता है । झूठे और कमजोर बन्धनों को तोड़ दो और परिवर्तन की ओर कदम बढ़ाओ । अगर चाहते हो इस धरती को फिर से स्वर्ग बनाना तो जा कर खोज करो उस स्वर्ग का और इस धरती पर लाऔ । इस से सभी कुरूप रूप को तुम सलोना बना कर अपनी और अपने जनों की सुन्दरता और आकर्षण मे चार चांद लगा दोगे ।'

इस के बाद एक जोर का धमाका हुआ और एक अनोखी रोशनी जल उठी और संरक्षक फरिशता बोल उठा, "जागो दया नन्द शर्मा जी जागो ! अब तुम्हारे कार्य करने का समय आ गया है ।जाओ और अब फूलो फलो !"

दया नन्द शर्मा की तो जिन्दगी ही बदल गई थी। उस ने अपने सभी धन दौलत, माल खजाना, मान अपमान, जन समाज और घर परिवार को त्याग कर अपने सभी नौकरों, मित्रों और परिवारिक जनो को सौंप कर अपनी एक नई दुनियां बना ली है। अब वहां वे केवल सुख, शान्ति और भक्ति का जीवन बिता रहे हैं। आप भी उन के इस पवित्र और पावन धाम पर पधार सकते हैं पर कया आप उस तरह के आत्मत्याग कर सकते हैं ?

यह हम सब के सोचने और चिन्ता करने की सम्सया है कयोंकि हमारी यह दुनियां ही पतन की ओर बड़े जोर से भाग रही है। हम सब सज्जनो और देवियों को मिल कर इस बिगड़े संसार की हालत को सुधारने का बीरा उठाना पड़ेगा।

हम चलते हैं और आप भी आईये।

२०

सफल जहाजिओं की अजब दास्ताँ

हमारे पूर्वजों की सच्ची कथा

Dr Ram Lakhan Prasad

यह हमारी आत्म कथा है और आप इसे हमारी राम कहानी ही समझें तो बेहतर होगा | मुझे मेरे आजा आजी से बचपन से ही एक अनोखा लगाओ हो गया था क्यों की घर में सब से बड़े पोते होने के नाते वे हमे बड़े प्यार से देख भाल करते थे | मैं दस साल का था जब हर शाम को मेरे आजा आजी मुझे तुलसीदास की रामचरित्र मानस की कुछ चोपाई और दोहा बांचने को कहा करते थे | इसी बीच जब बिसर्जन होता था तब वे अपनी गिरमिट की दुःख भरी और दर्दनाक घटनाओं का उल्लेख बड़े बिस्तार पूर्वक हम से किया करते थे | मै भी उन से कई सवाल किया करता था और वे सही जवाब देने से कभी हिचकिचाते नहीं थे |

एक बार हम ने अपने पागलपन में उन से एक बड़ा बेढंगा सवाल कर बैठा पर उन का जवाब मेरे मन में भा गया था | "आजा जी, जब आप लोग फीजी पहुंचे और तब अगर एक आदिम निवासी स्त्री के साथ विवाह कर लेते तो आज हमारे सामने जो जमीन की समस्या है वह कुछ हद्द तक हल हो सकती थी |"

मेरे आजा को इस सवाल से कोई अचरज नहीं हुई और वे बोले , " पहली बात तो यह है की मेरी शादी तेरे आजी के साथ जहाज पर ही हो चुकी थी तो मै दूसरी शादी नहीं कर सकता था | पर मान लो की मेरी शादी नहीं हुई होती तब भी मैं ऐसा नहीं कर सकता था क्यों की उस समय के काईबीती लोग बड़े खतरनाक थे और वे सदा हम से दूर अपने कोरो में रहते थे | फिर एक और बात है जो तुम आज नहीं समझोगे और वह यह की उस समय की आदिम निवासियों की लड़कियां देखने में बड़ी भयानक और बदसूरत लगती थीं | उन से शादी करने की बात तो दूर थी , हम उन के नजदीक भी नहीं जा सकते थे |" इतना कह कर आजा हंस पड़े और उस हंसी का मतलब मुझे आज समझ में आ रहा है |

अब आप ही देखिये की लेरे आजा आजी संस्कारी लोग तो थे ही पर वे हाजीजवाबी भी थे | उन्हें सच बोलने से कोई नहीं रोक सकता था | इसलिए उन की सच्ची घटनाओं को मै ने इस आत्म कथा में बयान करने का निश्चय किया जिससे अन्य लोग यह जान जाएँ की गिरमिट के दुःख दर्द और ताड़ना कितने दारुण और सोचनिये थे | इतना दुःख काट कर और तकलीफ सह कर भी हमारे पूर्वज के लोग हमारा भविष्य बना गये हैं | हमे उन के मेहनत और दूर दर्शिता पर गर्व है |

जब दुनियां भर में गुलामी की प्रथा की अन्त हुई तब दुर्भाग्य से हिंदुस्तान की बारी आ गई | विलायत के सरकार के मदद से ओस्देश के एक जबरदस्त व्यापारिक कंपनी , जिसे सीएसार के नाम से जाना जाता था, ने अपना जटिल अधिकार फीजी के सरकार पर डाला | वहां के सरकार को प्रभावित किया जिससे उन के गन्ने के खेतों में आदिम निवासियों के स्थान पर भारतीयों के कृषि सम्बन्धी हुनर को काम में लाया जाए | यही मानलो की वे चुने हुये भारतीयों को जोर जोर से पुकार रहे थे ," आओ जहाजी हमारी खेती करो ! " क्यों कि यहाँ के काईबीती लोगों का आचार विचार गन्ने के खेती से मेल नहीं खाती थी |

गुलामी तो दुनियां से मिट गई थी और ब्रिटिश सरकार इस प्रथा को फिर वापस नहीं ला सकती थी क्योंकि सारा संसार उन पर थू थू करती | इसीलिए चालाकी से एक नये शर्तबंदी प्रथा को प्रचलित किया गया जिसे इन्देंचर सिस्टम के नाम से जाना जाने लगा था | जहाँ गुलामी प्रथा में काले लोग जीवन भर के लिये बिक जाते थे वहीं हमारे पूर्वज पांच या दस साल के लिये बंधने लगे | उन को खरीदने या बाँधने वाले बड़े चालाकी से उन्हें अपने मीठी मीठी बातों से भारतवर्ष के अनेक जिलों से फंसा कर बटोर लेते थे और कई ब्रिटिश सरकार के उपनिवेशों में जहाजों पर लाद कर ला पटकते थे |

किस्मत उन की खराब थी जो इस खतरनाक जाल में फंस गये थे पर परमात्मा के दया से जब उन्हें पांच या दस साल के बाद आजादी मिली तब उन की देश भक्ति , मेहनत और तरक्की करने की चाह को देख कर आज उन का देश फीजी ही नहीं पर दुनियां उन की बड़ाई करती है |

सीयसार (CSR) ने ब्रिटिश सरकार के मदद से कई किसम के आरकाठियों को इस काम के लिये चुना था| उत्तर प्रदेश के कई जिले और अन्य गाँव में पोंगें पंडितों को पीली झुल पहना कर उन से वहां के अनजान और कच्ची उम्र के लड़के लड़कियों को धोखा से बहका कर इस प्रथा में भरती कराये जाते थे | ऐसे लोगो को इस लिये आरकाठी के रूप में चुना जाता था जिससे वहा के भारतीये लोग उन का विशवास कर सकें |

इन आरकाठियों याने कंपनी के चालाक नियोक्ताओं का काम था की वे हष्ट पुष्ट हिन्दुस्तानियों को चुन चुन कर जगह जगह पर बंदरगाहों के समीप डेपो में जमा करे और जहाज़ों में भर के उन्हें फीजी देश में ला पटके जिससे सीयसार के गन्ने की खेती सदा लहराती रहे और मजदूर बेचारे रोते रहे | शायद बिधि के विधान में ऐसा ही लिखा था और हमारे पूर्वज इस गंभीर सामाजिक और राजनीतिक तूफ़ान के झपेट में पड़ कर हजारों मुसीबतों का सामना करते हुये फीजी देश को आबाद किया |

यह गिरमिट की भयानक और दर्दनाक प्रथा सन अठारह सौ उनहत्तर (१८७९) में शुरू की गई थी और उन्नीस सौ बीस(१९२०) में ख़त्म की गई थी | उन चालिस वर्षों में हिन्दुस्तानियों पर कितने जुर्म ढाये गये इस का अनुमान आज का कोई साधारण आदमी लगा ही नहीं सकता है क्योंकि वे इतने दर्दनाक और दुखदाई थे| फिरभी हमारे वतन के प्रवासियों ने इन सब तकलीफों को सहन करके अपने भावी संतानों के लिये कितने बलिदान दिए थे |

इतना सब जानते हुये भी हमारे कुछ नये वर्ग के पढ़े लिखे विद्यार्थी कह रहें हैं कि गिरमिट की कहानिया को हम बढा चढ़ा कर बताते हैं क्योंकि अमेरिका के काले लोगों की गुलामी की दास्ताँ फीजी के भारतियों से और भी खराब थी | हम मानते हैं की उन काले लोगों पर भी बेसुमार जुर्म ढाये गये थे पर हम अपने गिरमिटियों के दुखों और तकलीफों पर परदा तो नहीं दाल सकते हैं | जो उन पर बीता था उसे आजकल के छोकडों को क्या पता है |

जो झेल चुके थे वे अपनी अपनी दुःख भरी कहानी अपने परिवार वालों को बता गये थे | उन की कहानियों पर गलत टीका टिपन्नी करना तो हमारे लिये बहुत ही बेवकूफी की बात होगी | अगर हम ऐसा करते हैं तब हम उन पीड़ित और लाचार हिन्दुस्तानियों के प्रति अपना असम्मान दिखा रहें हैं |

सरजू महाजन हमारे आजा थे जो हिन्दुस्तान के बस्ती जिला के दुमरिआगंज थाना के सेंदुरी गाँव के रहने वाले थे | उस समय वे करीब तेरह या चौदा वर्ष के नौजवान थे जो अपने पिता शंकर और उन के दो भाइयों , बिपत और रघुबर, के साथ आम और अन्य फलों की खेती में जुटे रहते थे | आम और महुए के बड़े बड़े पेड़ उन के जमीन में लहरा रहे थे और सारा परिवार उन फलों को बेच कर अपना खाना खर्चा चलाते थे | खेती छोटी और परिवार बड़ा यह सोच कर उन के पिता उन को पास के गाँव के एक दोस्त अमरनाथ के बहुत बड़े जमींदारी में नौकरी पर लगा दिए थे | मेरे आजा को वहां रहने का प्रबंध भी हो गया था और वे अपने नये काम को तन मन लगा कर करने लग गये थे |

मेरे आजा जी महीने में एक बार दो तीन दिनों की छुट्टी पर अपने घर जाया करते थे | इस बार आम के फलों का बहार था और जिस दिन उन को अपने घर जाना था उस दिन जोरों की पुरवैया हवा चली और कई गद्दर और पके आम जमीन पर गिर पड़े थे | उन्हों ने उन में से कुछ फलों को चुन कर अपने बसते में रख लिया था और घर ले जाने को अपने सामान ले साथ रख कर तैयार हो रहे थे की उन पर अमरनाथ के सरदारों ने आम की चोरी करने का इल्जाम लगाया |

बात अमरनाथ तक पहुँच गई और मेरे आजा को दो चार कडुवे बातें भी सुनने को मिले | उन की लाख सफाई देने पर भी अमरनाथ ने उन को काम से निकाल दिया और कहा की यह सब बात वे एक चिट्ठी में लिख कर आजा के पिता शंकर के पास भेज देंगे | मेरे आजा के पास धन दौलत तो थे नहीं पर स्वाभिमान तो था | उन को इस बेइज्जती को सहने की ताकत ही नहीं रही और सब कडवी बातें उन के दिल पर तीर के समान लगी |

तीर का घाव समय ले कर भर जाता है पर कडुवे बातों की जखम जीवन भर कस्ट देता है | मेरे आजा एक बड़े धार्मिक और संस्कारी परिवार के खास अंग थे और इस कलंक को नहीं सहन कर सके | अगर वे अपने घर गये तब पिता और अन्य परिवार के ताने सुनने पड़ेंगे इसीलिए फिलहाल वे अपने घर न जाने का निश्चय कर के कोई दूसरी नौकरी के तलाश में चल पड़े | आजा ने अपना झोली झंडा उठाया और वहां से चल पड़े | चलते चलते नौकरी की तलाश में वे काशीपुर पहुंचे |

अभी शहर में प्रवेश भी नहीं कर पाए थे की एक धूर्त आरकाठी की चालाक नजर उन पर पड़ गई | मेरे आजा के दुखी चेहरे को देख कर वह उन पर ऐसा लपका जैसे कोई शिकारी कुत्ता एक भागते हुये इंसान पर झपटता है | इधर उधर की कुछ बातें करके वह आखिर पूछ बैठा ," कैसे हो दोस्त ? कोई काम खोज रहे हो क्या ? "

"काम याने नौकरी ? अरे जनाब आप नेकी भी करना चाहते हैं और फिर पूछ पूछ | कैसी नौकरी है और कितना तलब मिलेगा?" मेरे आजा ने बड़ी आतुरता से उस आरकाठी के तरफ देखते हुये पूछा |

बस अब क्या था मेरे आजा न जानते हुये भी उस के पंजे में फंसने वाले ही थे |आरकाठी ने अपनी ख़ुशी छुपाते हुये बहुत हमदर्दी दिखाया और अपने जाल में फंसाने के लिये कहने लगा , " अजी दोस्त, यह कोई नौकरी थोड़े है ! इसे तो एक पिकनिक या सैर सपाटा ही समझो, क्यों की यह तुम्हारा भाग्य खोलने का एक सीधा और सरल रास्ता है | विशवास करो भैया यही रास्ता थोड़े ही दिन में आप जैसे नसीब वाले इंसान को धनवान और सुखी बना देगा |"

उस की चिकनी चुपड़ी बातें सुन कर आजा जी ने खयाली पुलाव चखना शुरू कर दी थी पर वह आरकाठी कहता गया, "मेरे यार, तुम ने सुना होगा की कलकत्ता से थोड़ी ही दूरी पर समुद्र तट पर एक बड़ा ही सुन्दर और धनी प्रदेश है जिसे लोग रमणीक देश के नाम से जानते हैं | वहीँ पर मेरा एक जान पहचान का बहुत धनी जमींदार रहता है जिस के पास एक

बहुत बड़ी खेती बारी है | उन्हीं के घर और जमींदारी के रखवाली करने वाला एक सिक्यूरिटी गार्ड चाहिए | अच्छे तलब के अलावे पहनने के लिये युनिफोर्म , रहने के लिये एक फार्म हाउस और तीनो पहर के पके पकाए भोजन मिलेंगे | हाँ , पर पूरे बारह घंटे का काम रहेगा जहाँ तुमको अपने कंधे पर बन्दूक लटकाए हुये पूरे जायदाद और जमींदारी के इर्दगिर्द चक्कर लगाते रहना पड़ेगा | ऐसी नौकरी और कहाँ मिल सकती है ? बस वहां चैन से काम करना और मौज में रहना | इस से अधिक तुम्हारे जैसे नौजवान को और क्या चाहिए ? "

उस चपरासी की बातें सुन कर मेरे आजा के मन में घी के लडडू फूटने लगे थे और वे अब ज्यादा नहीं सुनना चाहते थे | वे अब अपने सपने की दुनियां में घूमने लगे थे | वे अपने आप को एक पोशाक पहने हुये सिपाही को अपने कंधे पर बन्दूक लिये खेतों में घूमते और मार्च करते हुये अभी से ही देखने लग गये थे | आजा सोचने लगे थे की आज उन का भाग्य खुल गया है और अब भले दिन जल्द ही आने वाले हैं | इस से बढ़ कर और क्या चाहिए! बस वे एक शेखचिल्ली के तरह अपने नये जिंदगी की कल्पना करने लग गये थे | मेरे आजा ने उस आरकाठी को कितने धन्येवाद दिए और उस कृत्रिम नौकरी को स्वीकार कर के उस के साथ जाने को तैयार हो गये |

एक और मछली उस आरकाठी के जाल में फंस गई, यह सोच कर वह बहुत खुश हुवा और बगल में हलवाई के दूकान से कुछ मिठाई और कुछ भोजन लाकर मेरे आजा का मूह मीठा करवाया | आजा के ख़ुशी का ठिकाना न रहा और उस

चालाक आदमी पर उन का पूरा विशवास और भरोसा हो गया था|

लेकिन वहां से इक्के की सवारी से जब वे डेपो पहुंचे तब वहां के सब हाल को देख सुन कर उन का खयाली पुलाव सब मिट्टी में मिल गया, उन की सब आशाएं मर गई और वे मानो आसमान से आकर जमीन पर धडाम से गिर पड़े थे| थोड़ी देर के लिये उन्हें होश ही नहीं रहा की वे कहाँ हैं |

उस डेपो में इन आरकाठियों के जाल में फंसे लोगों की भीड़ लगी थी और वे सब अपने अपने भूल पर पश्चताप कर रहे थे , कुछ रो रहे थे, चिल्ला रहे थे और कुछ तो शर्म के मारे चुपके चुपके आंसू बहा रहे थे | उन सब की रुदन सुनने वाला वहां कोई नहीं था | वे सब सताए जा रहे थे और वे सहन करने के सिवाए और कुछ कर नहीं सकते थे|

मेरे आजा का कहना था की वहां केवल नये नौकर नहीं थे पर कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्हें स्वदेश प्रेम उन को उन के गिरमिट से लौटा तो लाई थी पर जात पात और छुवा छूत के वहां के समाज के ठेकेदारों ने उन्हें उन के गाँव से छांट कर निकाल दिया था | अब वे बेचारे जाते तो जाते कहाँ और दुर्भाग्येवस फिर इसी नरक में आ कर फंस गये थे|

वहां के लोगों की सच्ची कहानी सुन कर और नौकरी की असलियत जान कर मेरे आजा के होश हवास उड़ गये | बस यही समझलो की वे उस पिंजरे के पन्छी के तरह तड़प रहे थे जिस का दर्द कोई न जान सकता था | मोहम्मद रफ़ी तो वहां नहीं थे जो उन दुखियारों को अपना नगमा सुनाते , "पिंजड़े के

पन्छी रे तेरा दर्द न जाने कोए..बाहर से तू खामोश रहे पर भीतर भीतर रोये .."

गिरमिट से लौटे हुये लोगों की बातें सुन कर मेरे आजा बड़े सोच में पड़ गये थे | वे इतना जान चुके थे की उन को कहीं समुद्र पार की दूर देश में जाना था और वहां कई मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा | मजबूत पहरे सब तरफ थे और वहां से निकलने की बात छोड़ कर आजा जी अपने आने वाले दुःख तकलीफों के बारे में सोचने लगे थे | कुछ लोगों का कहना था की उस समुद्र पार वाले देश में अंग्रेजों के गन्ने के खेतों में पसीना बहाना होगा और कई अन्ये काम करना पड़ेगा | कुछ भी कहने की हिम्मत करने पर सजा मिलेगी और साहब या सरदार के लात,घुसे और जूते खाने पड़ेंगे | यह सब सोच कर उन का मन तो रो ही रहा था पर अब तन भी तिलमिलाने लगा और आत्मा बेजान हो चली थी | वे कहाँ आ फसे ? इस से तो अच्छा गाँव की गरीबी और घर वालों की घुड़की और झिडकी ही रहती |

सिपाही बनने के झूठे सपने टूट गये पर आजा जी ने हिम्मत कर के आरकाठी के पास गये और बड़े धीरे से बोले , "भैया जी , मै अपना घर छोड़ कर बिदेश नहीं जाना चाहता , मुझे नौकरी नहीं करनी है और आप मुझे दया कर के यहाँ से निकल जाने दीजिये |"

आरकाठी तो वही था पर उस के तेवर और स्वाभाव बदल चुके थे | वह गुस्से में आ गया और गरज कर बोल उठा , "तुम कैसे आदमी हो , तुम्हारे अकल ठीक तो हैं ? में ने तुम्हे भोजन कराया और इक्के पर बैठा कर यहाँ लाया | अगर तुम्हे नौकरी

नहीं करनी थी तो मेरे दस रूपये क्यों खर्च कराया ? फिर हमारा समय भी बर्बाद कराया | इसलिए पहले हमारे सब मिला कर बीस रूपये लौटा दो तब चले जाना | " मेरे आजा के पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी और अब वे वहां से जाने के लिये बीस रूपये कहाँ से लाते ? उन को वहां से बाहर जाने का कोई रास्ता नजर नहीं आया | उन का भविष्य एक काली अमावस्या की रात बन कर रह गई |

आखिर वह मनहूस घडी आ ही गई जब डेपो के सभी रंगरूटों को एक जिलाधीश के सामने पेश किया गया जिससे उन सब की रजामंदी ले कर उन की अग्रीमेंट पक्की कर दी जाये | मजिस्ट्रेट ने केवल एक सवाल पूछा था , " तुम को फीजी में नौकरी करना कबूल है ? "

आजा अंग्रेजी तो जानते नहीं थे पर आरकाठी के कहने के मुताबिक मेरे आजा को मजबूरन कहना पड़ा , "हाँ साहेब |" मेरे आजा के इन दो शब्दों ने उन की जिंदगी बर्बाद कर के रख दी थी | बस पांच साल ले लिये उन के भाग्य का फैसला हो गया था | उन की एक छोटी सी हाँ ने उन के पैरों में गुलामी के जंजीर पहना दिए थे |

काशीपुर के डेपो से कड़ी निगरानी में उन सब को कलकता पहुँचाया गया | वहां सैकड़ों अभागे जहाज का इंतज़ार कर रहे थे | उन में स्त्री , पुरुष और कुछ बच्चे भी थे | सभी के तरह मेरे आजा के दिल में दर्द, चहरे पर महान चिंता और आँखों से दो चार आंसू भी टपक रहे थे | मेरे आजा और आजी के अनुसार यह डेपो इस धरती पर उन दोनों के लिये नरक से भी ख़राब था |

मेरे आजी का शुभ मिलन मेरे आजा से उसी डेपो में हुआ था | लेकिन मेरे आजी की दास्ताँ तो और भी दर्दनाक है | उन का नाम माता पिता ने बड़े प्रेम से गंगा देई रखा था क्योंकि वे गंगा की तरह बड़े शांत सवभाव की थी और गंगा जैसी सुख देने वाली एक सुन्दर और सुशील कन्या थी | उन का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिला के सीतापुर गाँव में हुआ था | इस किसान परिवार के चार बच्चों में सब से छोटी थी और माता पिता की बड़ी दुलारी थी | उन के बचपन के बारे में बहुत कम जानकारी है पर उन के भाई राम खेलावन के अनुसार वे एक बुद्धिमान और प्रभावशाली औरत थी |

जब उन की बचपन की नैया सुचारू रूप से चल रही थी और वे केवल बारह वर्ष की थी तो ठीक उसी समय उन के भी जीवन में एक बहुत बड़ा तूफ़ान आ गया था | उस समय अयोध्या में एक बड़ा मेला लगा करता था और मेरी आजी और उन के भाई गाँव के एक धार्मिक मंडली के साथ मेला देखने चल पड़े थे | इस मेले में ऐसी भीड़ जमा हो जाती थी की उस के धक्कम धुक्की में बड़े बड़ों के छक्के छूट जाते थे |

स्त्री और बच्चों को बड़ा संभाल कर चलना पड़ता था | आजी के गाँव का गुट धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था क्योंकि उन्हें एक दूसरे से बिछड़ जाने का डर लगा रहता था | एक भयंकर ठेलम ठेल में गाँव के सब साथी छितर बितर हो गये और एक दूसरे से अलग हो गये | आजी ने इधर उधर नजर दौड़ाया और कुछ देर तक अपने साथियों और परिवार वालों को ढूंढती रही पर किसी को नहीं पाया | अन्त में थक कर एक किनारे बैठ गई |

आजी अपने लोगों को मिलने के लिये तड़प रही थी और उन की दशा मानो जल से निकाल दिए गये मछली की तरह हो रही थी | उन के सर पर जैसे आसमान ही टूट पड़ा था और पैरों तले जमीन खिसक गई थी | वे वही सोचने लगीं की वे अब कहाँ जाएँ और किससे सहायता ले | उस समय की लड़कियां तो परदे ही में रहती थी और कोई ऐसी संस्था या समिति भी नहीं थी की जहाँ से उन्हें कोई मदद मिल सकती थी | रोने के सिवा उन के पास कोई चारा ही नहीं बचा था |

आजी को रोते और दुखित अवस्था में देख कर एक पीला झुल्ल वाले पंडित उन के पास आये और बड़े प्रेम से उन से बोले, " बेटी , रोटी क्यों हो ? क्या परिवार वालों का साथ छूट गया है ? डरने की कोई बात नहीं है | मै एक हिन्दू ब्राह्मण हूँ और तुम्हारी सहायता करना हमारा परम धर्म है |"

ऐसा आसवासन पा कर आजी का रोना कुछ कम हुआ मानो खुद भगवान् ही उन के सामने उन का उद्धार करने को आ खड़े हो गये थे | उन्हों ने अपने उत्तम शिस्टाचार के मुताबिक बड़े इज्जत से पंडितजी को शीश नवाया और अपनी करुना भरी कथा को सुनाया | उस पोंगे पंडित को मालूम पड़ गया की मेरी आजी दुःख की मारी है क्यों की वह मेले में खो गई है | उन्हें मदद की शक्त जरूरी है | उस आरकाठी के ख़ुशी का ठिकाना न रहा , क्योंकि एक और मछली उस के जाल में फंसने ही वाली थी | लेकिन आरकाठी ने अपना निजी मनोभाव छिपाते हुये बाहर से ऐसी दया दिखाई जैसे उन्ही की बहन बेटी पर दुःख आ पड़ी है |

आरकाठी ने मेरे आजी को धीरज दिलाया और बड़ी ममता दिखाते हुये बोला, " बेटी , अब जो होना था सो हो गया है पर

तुम को अब कोई सोच करने की जरूरत नहीं है | हम हैं तुम्हारे मदद के लिये और मै अभी एक रिक्शा मंगाता हूँ और तुम को घर पहुंचाता हूँ |"

मरीज जो चाहता था उस का डाक्टर मिल गया | आजी तो घर जाना चाहती थी और वह पोंगा पंडित उन की यह इच्छा पूर्ति करने के लिये खड़ा था | आजी ने उस अधेड़ ब्राह्मण पर विशवास किया और उस के साथ घर जाने को तैयार हो गई | मेरे आजी को क्या पता था की वे किसी जंगली कुत्ते के मुह में अपना हाँथ ड़ाल रही हैं | आरकाठी ने इशारा से एक रिक्शे वाले को बुलाया जो पहले से उस का इन्तजार कर रहा था | उस में वे बैठ कर मेले के भीड़ भाड़ से किसी अज्ञात मंजिल की ओर चल पड़े |

आजी अब एकदम उत्सुक हो रही थी अपने घर पहुँचने को पर उन की यह प्रतीक्षा गई चूलेह के भाड़ में ओर फिजूल हो गई | आरकाठी ने उन्हें वहां से सीधे डेपो में पहुंचा के दम लिया |जब आजी को यह मालूम हुआ की वह पोंगा पंडित एक विश्वासघाती कुली भरती कराने वाला आरकाठी था तब उन के दुःख कई गुने बढ़ गये ओर वे फिर रो पड़ी | उस पोंगे पंडित पर विशवास कर के आजी अपने आप को सदा कोसती रहीं पर अब बहुत देर हो चुकी थी |

मेरी प्यारी भोली भाली आजी अब असल में मानो एक जेलखाने में आ गई थी जहाँ से बाहर निकालना मुशकिल ही नहीं पर असंभव था | उस ने देखा की इस डेपो में ओर भी अनेक अभागे लोग बैठे हुये अपनी अपनी किस्मत ओर तकदीर को कोस रहे थे | उन सब का भविष्य अनिश्चित था ओर उन सब की जीवन नैया जैसे एक गहरे समुद्र के

जालिम हिलकोरों से टकरा रही थी |किसी को कुछ सूझता नहीं था | बस उन का दिल रो रहा था ओर आँखें भरी थी |

उन आरकाठियों को तो जल्दी थी इसी लिये दूसरे ही दिन सब रंगरूटों को फीजी में गुलामी करने का अग्रीमेंट एक न्यायधीश के सामने बनाया गया | उन सब की गिरमिट लिखा दी गई | रजिस्ट्री हो जाने पर सब को रेलगाड़ी पर चढ़ा कर कलकत्ता पहुँचाया गया | वहां के डेपो की बुरी हालत देख कर मेरे आजी को उल्टियां होने लगी, उन का ह्रदय चिंता ओर व्यथा से भर गया ओर उन को रोने से छुट्टी ही नहीं मिली की वे दूसरे कोई बात के बारे में सोच सकें |

नये कुलियों या रंगरूटों को वहां के अप्जेंटों ने बहुत सताया जब मर्द औरत को एक साथ कमरे में जानवरों के तरह बंद कर के रखा था | स्त्री ओर पुरुष को एक दूसरे के जोड़ी बनने को मजबूर किया गया ओर उन्हें शादी सुदा करार दिया गया क्योंकि सरकार केवल विवाहित लोगों को गिरमिट में लेने की समति देती थी | जो लोग जोड़ियाँ बनाने से इनकार करते थे उन्हें एक कमरे में बंद कर के रखते थे जब तक वे राजी न हो जाते थे | इस पर भी अगर नहीं राजी हुये तो ओर भी कड़ी सजाये मिलती थी |

यह गैर कानूनी जोड़ी बनाने की प्रथा से सरकार को यह दिखाया जाता था की गिरमिट दोनों विवाहित स्त्री पुरुष के रजामंदी से लिखी गई थी | यह एक सफेद झूठ था ओर कितने लोगों ने जीवन में यह बुरी प्रथा कई सामाजिक विपत्ति प्रकट कर रही थी | पर कुछ लोगों के लिये यह मरहम पट्टी का काम कर रही थी क्योंकि उन्हें एक दूसरे के दर्द बांटने का अवसर प्राप्त होता था |

उस समय मेरे आजी की मानसिक दशा बड़ी दर्दनाक थी ओर वे अपने भविष्य के बारे में इस जोड़ी बनाने की प्रथा से बहुत चिंतित हो रही थी | इसीलिए उन्हों ने जल्दी से मेरे आजा को अपना जीवन साथी चुन लिया था क्योंकि आजा भी बस्ती जिला के रहने वाले थे ओर देखने में भी किसी से कम नही थे | उन का स्वाभाव बड़ा सुन्दर था ओर वे एक हस्ट पुष्ट नौजवान थे | यही उन के पारिवारिक जीवन की शुरुआत थी ओर उन के विवाह की रजिस्ट्री कानूनी तौर पर कर दी गई थी | बस उन की शादी संपन्न हो गई , न तो कोई घराती ,न कोई बाराती ओर न ही कोई नाच गाने हुये थे | मन्त्रों ओर अग्नि के फेरों की तो बात ही मत पूछिए | राम मिलाये सब की जोड़ी लेकिन इन की जोड़ी कैसे बनी यह तो इन दोनों के सिवाय ओर कोई नहीं जानता था |

इतना जरूर साफ़ है की यही वह जगह थी जहां मेरे आजा ओर आजी एक दूसरे को पती पतनी के रूप में स्वीकार किया था | आज के जमाने में दो चाहने वाले अक्सर बागों ओर बगीचे में मिलते हैं लेकिन इस हसीन जोड़ी की बात ही कुछ ओर थी |

कलकत्ता के डेपो में वे ऐसे मिले की अस्सी साल तक उन की विवाहिक जीवन बिना किसी हिचकिचाहट से चलती रही | दस वर्षों की गिरमिट काटे , अपने जीवन में कितने दुःख सुख सहे , कई नाम कमाए, फिर सफल किसान बने, धनवान हुये, नौ बच्चों को पाला पोसा ओर यह सब भोग कर इस दुनियां से चले गये | यह हमारा अहोभाग्य है की आज उन के सभी बच्चे , नाती पोते तथा उन के पर नाती पोते, इस संसार में जहां भी हैं, उन के बलिदान तथा उन के बोये हुये जीवन के मीठे फल को चख रहें हैं ओर उन का नाम रोशन कर रहे हैं |

मेरे आजा ओर आजी ने यह स्वीकार किया की डेपो में हुये उन अधर्मी करतूतों से सभी जात पात के बन्धन टूट चुके थे | न तो कोई हिन्दू रह गया था ओर न ही कोई मुसलमान बचा था | ब्राह्मण, छत्री, वैश्य या सूद्र में अंतर ही नहीं रहा ओर सब एक हो गये थे | सब साधारण इंसान बन कर एक साथ जहाजी भाई बहन का नाता अपना चुके थे |

आखिर भारत छोड़ने का समय आ पहुंचा | मार्च का महीना था | मंगलवार का दिन तो था पर वह बड़ा मनहूस सुबह था | सूरज भगवान् उदय होने ही वाले थे | मेरे आजा आजी के लिये यह भारतभूमि पर अंतिम सूर्योदय था | वे दोनों हाथ जोड़ कर सूर्ये देवता को प्रणाम किये ओर आज्ञाकारी नौकर के तरह संगोला नंबर एक नामक जहाज पर सवार हुये | थोड़ी ही देर में जहाज पर ऐसी भीड़ लग गई थी की कहीं पैर रखने की जगह भी नहीं बची थी | न कोई मान, न कोई अभिमान , आ लाज , न लिहाज , न कोई विचार ओर न कोई संस्कार नजर आ रहा था | इन सब श्रेष्ट आचारों को इतिहास के भट्टी में ड़ाल कर मेरे आजा आजी जहाज पर एक कोने में चुपचाप बैठ गये ओर जहाज छूटने का इन्तजार करने लगे |

एक जोर की सीटी लगी ओर जहाज खुल पड़ा | सब यात्रियों के ह्रदय में एक अजीब सी हूक उठी ओर मुह से चीख निकल पड़ा | जैसे जैसे कलकत्ता दूर होता जा रहा था वैसे वैसे सभी के आँखों का गंगा जल बहता हुआ हिंद महासागर में ओझल होता जा रहा था | सब रंगरूटों ने अपने अपने छाती पर पत्थर रख कर कूच का डंका बजाया ओर अपने नये जिंदगानी का श्रीगणेश किया |

मेरे आजा का कहना था की जहाज जब खुले समुद्र में पहुंचा तब बड़ी बड़ी लहरों की चपेट खाकर ऐसा डगमगाया था की बेचारे यात्री गेंद के तरह इधर-उधर लुढकते फिरते थे | आजी तो आँखे खोल नहीं खोल पा रही थी | कई लोगों को तो उलटी पर उलटी आ रही थी मानो उन की अत्डी ही बाहर आ जायेगी | जहाज के क्रमचारियों का कहना था की अगर अभी एक ही हफ्ते में लोगों का यह हाल है तो तीन महीने में फीजी पहुँचने तक क्या होगा |

मेरे आजा ने पुष्टी की कि हर एक यात्री को नाप जोख कर जहाज पर जगह ओर खाना दिया जाता था | जहाज गंदगी से भर जाते थे , सफाई तो होती नहीं थी ओर जो लोग यह सब बरदास्त नहीं कर पाते थे वे समुद्र में कूद कर सभी दुखों से छुटकारा पा जाते थे | रेवरन एनद्रुस ने भी अपने लेख में इस कि पुष्टी करते थे | पर जो लोग बच कर ओर सब दुःख सह कर फीजी पहुँच जाते थे वे तो धन्ये थे |

संगोला जहाज के यात्री इस लम्बी ओर खतरनाक यात्रा में खिचड़ी खाते ओर बुरे मौसम के बौछार सहते हुये अपने मंजिल तक पहुँच तो गये पर उन तीन महीनो में उन के तेहहो गत हो चले थे | जैसे भी रहा , भूख प्यास , बेहद्द कस्ट ओर निर्दयता को सह कर मेरे आजा आजी , सरजू महाजन ओर गन्गादेइ, सही सलामत अपने ठिकाने पर पहुँच गये थे | नुकुलाऊ टापू के क्वारन्तीन स्टेशन पर सब यात्रियों कि फेनाइल से धुलाई सफाई कि गई ओर उन्हें फिटनेस का सेतिफिकेत दिया गया | इस के बाद उन्हें अपने अपने इलाके के कुलम्बर या सरदार को सौंप दिया गया | आजा आजी को

सिंगातोका में मतूतू नामक सियासार के जमींदारी पर पहुँचाया गया |

मेरे आजा आजी को इतना जान कर संतोष हुआ कि वे अब कहीं धरती माता के गोद में आ गये हैं जहां अन्य भारतीयों से मुलाकात होती रहती थी | उन के रहने के लिये जो झोपड़ी मिली थी उस के बारे में यह कहना कठिन था कि वह मनुष्यों के रहने का कमरा था या मुर्गी का दरबा था | घास के छत , बांस के दीवार ओर जमीन का फर्स | कुछ भी हो जान बची लाखों पाए | यह डेपो ओर जहाज कि रहन से तो अच्छी ही थी | आजी ने उस झोपड़ी को लीप पोत कर ओर झार पोंछ कर अपने रहने के लायक बना लिया था |

हर सात दिनों में उन को रेशन मिलता था जिस में सामिल थे चावल, दाल , मकई के आटा, नमक ओर तेल | काम का ठेका पूरा कर लेने पर पांच या दस शिल्लिंग मासिक वेतन तभी मिलती थी जब अच्छा बर्ताव रहते ओर कोई गलतियाँ नहीं होती थी |

आजा का कहना था कि उस ज़माने के अंग्रेज सरदार या कुलम्बर उन को दिन भर के लिये काम का तास दे कर उन पर हुकम तो चलाते ही थे पर यदि कोई कमजोर लोग अपना ठेका पूरा न कर सके तब उन की तो हालत ही बिगाड़ दी जाती थी | उन पर घुसे, झापड़ ,लात ,डंडे ओर चभुक कि मार भी पड़ती थी | उन को यह सब बरदास्त करने पड़ते थे क्योंकि न तो उन के शिकायत को सुनने वाला कोई था ओर न ही वहां कोई इन्साफ दिलाने वाली संस्था थी | उन गिरमिट के बन्दों पर जुर्म होते गये ओर वे बेचारे इन सब तकलीफों को यही सोच

कर सहते गये कि एक न एक दिन समय लौटेगा जो उन के जीवन में नया सबेरा ले कर आएगा |

उम्मीद पर सभी लोग जीतें हैं ओर अगर हमारे गिरमिट कमाने वालो ने इस उम्मीद से काम किये तो क्या बुरा किया ? आज उन के भावी संतान तो सुखी हैं |

कई लोगों का यह भी कहना था कि अगर हिन्दुस्तान में गरीबी न होती तब वहां के साधारण लोगों को भरमाना उन चालाक आरकाठियों के लिये सहज नहीं रहता ओर शायद इस गिरमिट प्रथा का आरम्भ ही नहीं हो पाता | पर यह भी बात तो कहते हैं लोग कि कर्म का लेख मिटे न रे भाई चाहे लाख करो चतुराई |

कोई भी प्रकार कि गुलामी हो, दुनियां में सभी जगह उसे बुरी बला मानी जाती है ओर इस से बढ़ कर कोई ओर पाप हो ही नहीं सकता है | पर हमारे पूर्वजों ने इस गुलामी के शिकार हो कर जो दुर्दशा उठाये थे उन से कभी कोई इस बुरे बर्ताव के लिये माफ़ी मांगेगा ? कोई कोम्पेंसय्सेन या हर्जाना मिलने कि सम्भावना है ? क्यों नहीं ?

ऐसे सवाल मेरे आजा आजी के साथ साथ उन के कई जहाजी भाई ओर बहन कई बार कर चुके थे पर उन कि सुनवाई नहीं हुई | वे तो यही इन्साफ मांगते हुये चले गये पर शर्म तो उन देशों ओर कंपनियों को आना चाहिए जिन्हों ने गिरमिट प्रथा जैसी घिनोने व्यवस्था को बढ़ावा दिए थे ओर आज भी कोई माफ़ी मागने से इनकार कर रहे हैं |

आस्ट्रलिया के प्रधान मंत्री श्री केविन रड ने अपने गुनाहगारों से माफ़ी मांगने ओर छमा प्राथी होने से नहीं हिचकिचाए पर ब्रिटिश सरकार ओर सीयसार कंपनी ने ऐसा नहीं किया | शायद हम ने उन से अपने जोरदार शब्दों से मांग नहीं किया या | हमारे नेता सब चुप मार कर बैठे रह गये थे ओर आज भी कोई कुछ नहीं कर रहा है |

हलांकिमेरे आजाआजी दोनों तंदुरुस्त थे,बहुत मेहनती किसान भी थे ओर अपने ठेकों को अच्छी तरह से पूरा कर देते थे फिर भी हरामी अंग्रेज सरदारों ओर कुलम्बरों ने उन पर भी कई जुलुम ढाये थे | उन को भी पहले महीने में पीटा गया था ओर कई गालियाँ खानी पड़ी थी | एक दिन दूसरे महीने के शुरुआत होते ही जब एक अंग्रेज कुलम्बर मेरे आजी को गाली दे कर उन पर अनुचित व्योहार करने जा रहा था तब आजा अपने गुस्से को रोक नहीं सके ओर अपने कुदाली या कुदारी के लम्बे हेंडल से उस साहेब के पीठ पर दो चार दे मारा | साहेब तो जान बचा कर भाग गया पर आजा पर मुसीबत आ गई थी | उन के तास को बढा दिया गया था |

आजा ने ऐसे ही आत्म सुरक्छा के वार दो चार बार किये ओर उन पर अत्याचारी आकर्मण होना तो कम हुआ था पर गाली गलौज जारी रहा | आजा कहते थे , "देखा देखी पुण्ये ओर देखा देखी पाप " | वे अन्य लोगों को अपने आत्म रक्छा का मंत्र पढ़ना शुरू किये ओर धीरे धीरे हमारे आजा के देखा देखी अन्य गिरमिट काटने वालों कि हिम्मत बढ़ गई थी ओर मतूतू सेक्टर में कुलम्बरों के लात , घूंसे ,लाठी ओर चाभुक चलने तो कम हो गये थे पर शक्ति से पेश आना ओर गालियों कि बौछार कि कमी नहीं हो पाई थी |

आजा के जहाजी भाई तुलाराम ने उन का साथ दे कर कुलम्बरों को सीधा कर रखा था | उन के दोस्त तुलाराम एक इस्लाम औरत से निकाह कर के रहमतुल्ला हो गया था पर आजा के साथ बहुत ही सामाजिक कामों में अपना हाथ बटाया करता था | उन की दोस्ती अमर हो चली थी |

जब तक आजा आजी मतूतू नामक गाँव में रहे वहां उन की मिन्त्रता कई लोगों से हुई थी | उन के दोस्तों में रामबदन महाराज के परिवार का नाम अक्सर आता था | पहली गिरमिट कमाने के बाद रामबदन महाराज एक दुकानदार बन गया था | उन के परिवार वालों से मेरे आजा के कुटुम्भ में भाई बंधू के रिश्ते बन गये थे | मेरे आजा के नो बच्चे ओर महाराज जी के चार पुत्रों के बीच कि यारी और दोस्ती जिंदगी भर चलती रही | मतूतू सिंगातोका से बोतीनी g]>]v] साम्बेतो चले जाने पर भी दोनों परिवारों के लोग एक दूसरे से मिलते जुलते रहे | मेरे पिता भगौती प्रसाद , उन का चचेरा भाई मुनेश्वर और लील राम की दोस्ती की चर्चा उस गाँव में बहुत दिन तक चलती रही | मेरे काका मुनेश्वर प्रसाद के पैर एक घुड़सवारी के दुर्घटने में काट दी गई थी |

उन दिनों मेरे आजा जी राम बदन महाराज के साथ हर शाम को कई हिन्दू धर्म ग्रंथों की मथन किया करते थे ओर आस्ते आस्ते उन के मंडली में कई लोग शामिल हो गये थे | दिन भर के कड़ी मेहनत ओर दुर्दशा सहने के बाद इन ग्रंथों को पढने ओर मथन करने से सब को बड़ी शांति मिलती थी ओर सब का मनोरंजन भी हो जाता था जब भजन कीर्तन होने लगते थे |

तम्बूरा, खजडी, झांझ , सारंगी ओर ढोल बजते थे ओर सब धर्म प्रेमी मगन रहते थे |

इसी तरह मेरे आजा आजी के दस दुःख भरे साल निकल गये थे ओर उन्हें उस जालिम गिरमिट से आजादी १९१६ में मिल गई थी | उन की यह आजादी एक मुक्ति थी ओर सब गन्ने के रस से भी मीठी साबित हुई | जब उन को उस कैद के जंजीर से छुट्टी मिली तब वे उन सब तकलीफों को थोड़े ही दिनों में भूल गये थे | मनुष्य के लिये आजादी ओर गुलामी में यही फर्क होता है | गिरमिट के कठोर बंधन कट गये ओर वे स्वतंत्र हो गये थे | जिस दिन उन को स्वतंत्रता के वातावरण में सांस लेने का शुभ अवसर मिला, उस दिन उन के आँखों के सामने एक बिलकुल नया संसार था |

आजादी की उषा की लाली कितनी मनोहर होती है यह तो कोई उन आजाद गिरमिटियों से पूछता तब पता चलता | सच पूछो तो स्वाधीनता ही जीवन की ज्योति है ओर पराधीनता को हम मृत्यु के मुद्रा कहते हैं | " पराधीन सपनेहूँ सुख नाहीं ," यही महाकवि तुलसी दास का कहना था |

इसीलिए तो पराधीनता की बेड़ियाँ काटने के लिये दुनिया भर में बड़ी से बड़ी क्रांतियाँ हुई थी | खून की नदियाँ बही थी ओर अनगिनत लोगों को अपने जान की बलि चढाने पड़े थे | स्वाधीनता से बढ़ कर कोई ओर सुख कहाँ ? पर उस ज़माने में गिरमिट को मिटाने के लिये वैसी कोई क्रांति नहीं हुई थी | हिन्दुस्तानी इतना सहन शीलता से भरे पड़े थे |

मेरे आजा आजी ने अपने गिरमिट काल में रूखा सूखा खाकर ओर सादा जीवन बिता कर कुछ पैसे जमा कर लिये थे | उन

की मेहनत ओर इमानदारी देख कर सीयसार कंपनी ने उन के परिवार के लिये दो ब्लाक की जमींदारी खरीदने की अनुमति दे दी थी | इन दोनों जमीनों में उन के बच्चों के मदद से गन्ना ओर कई प्रकार की तरकारियाँ लहराने लगी थी | जैसे जैसे उन की आमदनी बढ़ी वैसे वैसे समाज में उन का मान ओर शान भी बढ़ता गया ओर सरजू मुराव से वे सरजू महाजन के नाम से प्रसिद्ध हो गये थे |

उन के परिवार अपने गिरमिट के बाद मेहनत करना नहीं छोड़ा ओर अपने मतूतू के दो जमींदारी के अलावे बोतीनी नांदी में भी चार जमीनों को ले कर उन में तरकारी ओर अनरस की खेती करते रहे | दूरियों के कारण १९२८ में मतूतू की सभी कारोबार बेंच कर सब परिवार बोतीनी आ गया था | उन के अपने तीन सुपुत्रों ओर छः सुपित्रियों का पालन पोषण करना था इसलिए उन्हें जब मौका मिला तब चाहते हुये भी वे अपने वतन भारतवर्ष न लौट सके | दिल लगा कर अपने खेतों में कड़ी कमाई करते गये ओर अपने परिवार की उन्नति करते गये |

दूसरे महायुद्ध के समय जब सिपाहियों का जत्था आजा के घर के इर्द गिर्द अपने डेरा डाले हुये था तब उन का एक पुत्र, मेरे पिता जी , भगौती प्रसाद ने उन सिपाहियों को अपना सहयोग प्रदान करते थे ओर उन को अपने खेत से तरकारी ओर फल को बेच कर काफी पैसे कमाये थे | इसी तरह गाँव में आजा जी के सब परिवार की रहन सहन काफी उचे दर्जे की हो गई थी |

जब परिवार के लोग बड़े हुये aOr उन सब की अपनी अपनी गृहस्ती हो गई तब हमारे आजा ने अपने सभी जमींदारी की

बटवारा किया | अपने जेस्ट पुत्र हीरालाल को अपना एक बीस अक्कड़ की खेती में लगा दिए ओर अपने दूसरे सुपुत्र भगौती प्रसाद को भी तीस बिगहा का एक अलग जमीन सौंप दिया था | अपने छोटे पुत्र चेतराम को अपने साथ रहने को कहा ओर वे मिल कर बाकी दो जमींदारी को सँभालने लगे | इन तीनो भाइयों में बहुत बड़ा सुम्मत था ओर सब एक दूसरे के किसानी कार्य में सदा सहयोग दिया करते थे |

गन्ने की खेती और चीनी की अच्छी मांग के कारण आजाद किसान को अपना गन्ना देने का कॉन्ट्रेक्ट सीयसार कंपनी ने बनाया ओर किसान अपने खून पसीने की कमाई उन के मिलों में अपने लोरी या कंपनी के गाडी द्वारा भेजने लगे | कई बार ऐसा भी होता था जब की बहाने बाजी से कंपनी किसानो को पैसा देने से इनकार कर देती थी यह कह कर की उन के गन्ने में चीनी नहीं थी या उन का गन्ना बहुत मैला था जिस से मिल की सफाई करने में ज्यादा समय लग गया | मेरे आजा के अनुसार कभी कभी यह भी कहा जाता था की किसान को कंपनी के मिल साफ़ करने का खर्च देना पड़ेगा |

उन दिनों किसानो के पास कोई उन की मदद करने वाली संस्था नहीं थी इस लिये किसान इन सब बेइंसाफी को सहन कर लेते थे | अपने जीवन निर्वाह के लिये किसान उन दिनों अन्य फसल उगा लेते थे जिस से उन की रोजी रोटी चल जाती थी | सन १९५० में किसानो की संस्था बनी तब जा कर किसानो को कुछ इन्साफ मिलने लगा था |

कई बार सीयसार कंपनी के कुलम्बरों का कहना था की भारतीयों को फीजी ला कर कंपनी ने उन पर बड़ी कृपा की थी | अगर वे भारत में रह जाते तो वहां गरीबी के शिकार बने

रहते | इसीलिए फीजी के हिन्दुस्तानियों को सीयसार कंपनी का आभार मानना चाहिए | इस के बिरुद्ध में किसानो का कहना था की सभी जुर्म ओर बुरे करमों के लिये ब्रिटिश सरकार ओर सीयसार कंपनी को भारतीये किसानो से सभी बुरे बर्ताव के लिये माफ़ी मांगनी चाहिए ओर उन्हें हर्जाना देना चाहिए |इन सब बातों की सुनवाई कहीं नहीं हुई ओर मेरे आजा आजी छमा ओर हर्जाना के लिये अगोरते रह गये |

इस बीच १९५२ में मेरे आजा को अपने वतन की याद आई ओर वे फीजी सरकार से एक तरफ का भाडा लेकर अपने गाँव वापस गये ओर बस्ती जिला के सेंदुरी गाँव में अपने भाई के पुत्र विपत के परिवार के साथ तीन महीने बिता कर फिर फीजी लौट आये | वहां पर मेरे आजा ने कई आम के पेड़ लगाये ओर सभी परिवार वालो से बड़े प्रेम से मिल कर अपने बाल बच्चों के साथ रहने बोतीनी आ गये |

आजा जी के लिये फीजी अब उन की अयोध्या बन चुकी थी पर जब तक वे जीवित थे वे अपने तरफ से कुछ पैसे बस्ती के परिवार के लिये भेजते रहे | कुछ वर्षों तक वहां से चिठ्ठी पत्री आती रही पर अचानक १९७५ में जब आजा जी का देहांत हो गया तब सब पत्रव्योहार बंद हो गये थे |

विजयराज गंज के पोस्ट ऑफिस से संपर्क करने से पत्र व्योहार पुनः जारी किया गया ओर मेरे पिता जी भगौती प्रसाद ने कुछ दिनों तक चिट्ठी पत्री बिपत मुराव से जारी रखा था पर धीरे धीरे १९८० तक सभी सम्बन्ध समाप्त हो गये | जब १९९५ में मै ने फिर से संपर्क करना चाहा तब पता चला की उस जिले में कई बार बाड तूफ़ान आ जाने से ओर वहां के बुनियादी रद्दोबदल

के कारण आजा जी के किसी भी परिवार से संपर्क नहीं हो सकती थी|

अपने मूल कुल या कुटुम्भ परिवार के जड़ों को इस प्रकार से खो देने से बड़ी दुःख पहुँचती है ओर इस का जिम्मेदारी ओर कारण भी हम गिरमिट के प्रथा को ही दे सकते हैं| हम ने कई बार उत्तर प्रदेश के डाकखानों ओर सरकारी कर्मचारियों से संपर्क किया पर मेरे कुटुम्भ के लोगों का पता नहीं चल सका| लेकिन मै हिम्मत हारने वालों में से नहीं हूँ ओर एक न एक दिन उन को ढूंढ ही लूँगा|

हम ने कई बार अपने आजा जी को यह कहते हुये सुना था की हिन्दुस्तानी किसानों ने केवल फीजी देश को हरा भरा और आबाद ही नहीं बनाया था पर सीयसार कंपनी को एक मजबूत समुदाय बनाने में उन की मदद की थी| दुःख इस बात की है की न तो सीयसार और न ही ब्रिटिश सरकार ही इस सत्य को मानने को तैयार थे|

जहां जहां हमारे लोगों की खेती थी वहां वहां अमन चैन से लोग रहते थे और अपने संस्कृति और सभ्यता को कायम किये थे| उन की खेती लहराती थी और लोग अपने परिवार की सफलता की तरफ ज्यादा ध्यान दिया करते थे| चाहे वह बोतीनी गाँव हो या कोई और भी जगह हो इन सभी स्थानों में सभी गाँव वाले बड़े लगन से खेती करते और देश की उन्नति में लगे रहते थे| यही उन की मान थी और यही उन की शान थी| फिर भी सरकार ने सब दिन उन को तीसरे दर्जे के नागरिकता देती रही| यह भी हमारे फीजी भारतीयों का दुर्भाग्य था|

मेरे आजा आजी ही नहीं पर उस ज़माने के सभी किसानों में मेहनत , खुद्दारी और इमानदारी कूट कूट कर भरी गई थी | वे अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा करना अपना परम कर्तव्य समझते थे | सुम्मती से रहना और सफलता के चोटी तक पहुचना उन का एक मात्र लक्ष्य बन गया था शायद इसीलिए अन्य जाति के लोग उन से जलन भाव करने लगे थे | धीरे धीरे उन किसानो के बच्चे पढ़ लिख कर होशियार हो गये और उन के घर आँगन ऊंचे आर्थिक स्थर की चमक दे रही थी | यह उन्नति और अच्छाई भी मानो फीजी के भारतीयों के लिये जैसे एक श्राप बन गया था |

मेरे आजा जी धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं की बहुत बड़ाई करते थे क्योंकि इन्ही लोगों के जरिये ही कई मंदिर, मस्जिद,और गुरूद्वारे बनाये गये थे जिससे धर्म की रक्षा हो और समाज में सदाचारी रहे | आजा जी इन संथाओं को कई पाठशालाओं का सञ्चालन करने के लिये सदा दिन उन के आभारी थे | इन्ही कार्यकर्मों से कौम की उन्नति होती थी और लोग अपने भविष्य सुधारने के चिंता में लगे रहते थे | धन्ये थे वे भारत के हमारे शूर वीर जिन के खून पसीने से फीजी की उन्नति होती गई और इज्जत बढती गई |

मेरे आजा ने अपने जीवन में कितने रामलीला रचाए थे और समाज में अन्य धार्मिक कार्य करते रहे | मै आज भी उन को अपनी लाठी लिये दुगुर दुगुर चलते हुये लोगों को प्रोत्साहन करते हुये देख रहा हूँ तो मेरा सर भी अभिमान से ऊंचा उठ जाता है | पर सब मनुष्यों की तरह उन को भी इस दुनिया से जाना पड़ा | उन के मृतक शरीर को नहलाते हुये मै ने भी एक

संकल्प ली थी की मै भी उन की तरह अपने परिवार और समाज की रक्षा में अपना सारा जीवन लगा दूंगा |

मै ने इश्वर की कृपा से ऐसा ही किया और आज मेरे दो सुपुत्र और दो सुपुत्रियाँ संस्कारी हैं, पढ़े लिखे हैं और अपने उन्नतिशील परिवार के साथ अपना सफल जीवन दो दो बच्चों के साथ शांति और बड़े चैन से बिता रहें हैं | इस का खास श्रय मै अपने धर्मपत्नी सरोज को देता हूँ जिन्हों ने इन बच्चों का सही पालन पोषण करने में हमारा सहयोक दिया है | यही हमारे आजा आजी और माता पिता का शुभ आशीर्वाद रहा है |

मेरी अर्धांगनी सरोज ने इन सही संस्कारों को मेरे आजा आजी , मेरे माता पिता तथा अपने पूज्य माता पिता श्रीमान और श्रीमती चंदरपाल शर्मा और अपने आजी मुनेश्वरी तथा नानी सुन्दर मती से सीखा था | यही हमारे बुजुर्गों की देन रही है और हम सब को इस का बड़ा गुमान है |

मेरे लिये मेरे माता पिता का आशीर्वाद सदा मेरे साथ रहा है इसीलिए मै एक सफल अध्यापक बना और फिर शिक्षा विभाग का ऊच्च अफसर बन कर कुल ४७ वर्षों तक काम करने के बाद सरकारी काम से अवकाश लेकर एक बड़े व्यापार में सामिल हुआ | इस नये काम के लिये हमें और पढाई करनी पड़ी और हम ने अपनी पोस्ट ग्रेदुअट की डिग्री कालिफोनिया अमेरिका से हासिल किया |

अपने जीवन काल में मै ने अपने पूर्वजों से जो भी कुछ सीखा है उस के लिये मै उन का सदा आभारी रहूँगा | हमारे पूर्वजों की कई शिक्षाप्रद और श्रेष्ट आचार आज भी हमें हमारे जीवन में सही राह दिखा रही है | जब मै पांच वर्ष का था तभी हमारे

माता पिता की आर्थिक स्थिथि बहुत अच्छी हो गई थी | मेरा बचपन आमोद प्रमोद में बीता तथा बोतीनी गाँव का मै पहला सफल बिद्यार्थी था जिसे १९५४ में उस मशहूर नाताम्बुआ हाई स्कूल में दाखिला मिला था जहां मेरे तकदीर और भविष्य की नीव मेरे प्रिये अध्यापकों ने डाली थी | मै सर्वश्री रोहन प्रसाद , परशुराम और रामशरण जैसे उत्कृष्ट गुरुजनों का चेला रह चुका हूँ | उन के शिक्षा दीक्षा से मै अपने जीवन का निर्माण करने में सफल हुआ हूँ |

छोटे उम्र से ही मेरे पूर्वजों और मेरे गुरुजनों ने मुझे काम की कदर, कला की करिश्म , काबलियत की कीमत, कर्तव्य की कामयाबी और कोशिश का महत्व मालूम कराया था | मै घर का काम तथा मन लगा कर पढने के अलावे खेत के काम में पिताजी का पूरा हाँथ बटाया करता था | करम ही मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण कुंजी बन गया था | यही शिक्षा जीवन भर मेरी सहायता करती रही और मेरे तथा मेरे परिवार की सफलता की असली कारण बन गई है |

हम ने अपने चारों बच्चों को यही सिखाया है की अगर जीवन की कसौटी से लड़ कर आगे बढ़ना है तब हम हो अपने कोशिश और कर्तव्य से अपनी सभी कला, काबलियत और कीमत की कदर करते हुये आत्म विशवास से चलना होगा | तभी हमारा कल्याण होगा और हमारी किस्मत का सितारा चमक उठेगा | इतना कर लेने पर कोई भी इंसान अपने सुखद भविष्य की कल्पना कर के मारे ख़ुशी से नाच उठेगा |

हमारा बहुत दिनों का सपना अब पूरा हुआ है | मै ने यह सपना देखा था की एक दिन मै अपने पूर्वजों के तरह सुखी जीवन

अपने ख़ुशी परिवार के साथ बिताऊंगा जब मै सभी कर्जों से मुक्ति पा कर अवकाश ले कर अपना जीवन बिताऊंगा | पूर्वजों के आशीर्वाद से ऐसा ही हुआ |

हमारे पूर्वजों ने अपने जीवन में कई ऊंची नीची रास्तों को पार करते हुये और दुःख सुख सहते हुये आज हमें एक महान सुखद पूर्ण संसार में रहने का शुभ अवसर प्रदान किये हैं | इस के लिये हम उन के सभी कोशिशों की कदर करते हैं अरे उन्हें कोटि कोटि धन्यवाद देते हैं | इश्वर उन्हें सदगति प्रदान करे यही हमारी कामना है |

यह रही हमारे सफल गिरमिट जहाजी की अजब दास्ताँ | उन की दुखित दांस्ता को तो हम यहीं ख़तम कर सकतें हैं | पर हमारे आजा आजी के तरफ से एक मांग रखता हूँ | जो असहाय जुर्म उन पर ढाये गये थे उस के लिये बिलायती सरकार और सीयसार कंपनी को उन को धोखा दे कर फीजी लाने के लिये , सताने के लिये और दुःख पहुचने के लिये उस से छमा याचना और माफ़ी मांगना चाहिए |

उन मुजरिमों और अपराधियों के गले में कौन घंटी डालेगा ?

फीजी सरकार ?

भारत सरकार ?

या और कोई ?

समापन

हमने तो अपने कलम से अपनी सभी कहानियों को आप के समक्ष रख दिया है अब इन को पढ़ना, गढ़ना और इन पर टिप्पणी करना आप का काम और सौभाग्ये है । इतना याद रहे कि सभी कहानिया कल्पित नहीं है । कुछ मेरे अंदर की करुण पुकार हैं और कुछ सच्ची बृतान्त हैं ।

एक अंतिम बृतान्त जो हमने अपने आजा आजी के सौजन्य से अर्पित किया है वह बहुत बहुमुल्ये है क्यूंकि उन्हीं के आशीर्वाद से , पालन पोषण और सेवन से मैं आज इन कहानियों को आप तक पहुंचाने में समर्थ हुवा हूँ । उन सभी बुजुर्गों को और मेरे सभी गुरुजनो को मैं सादर प्रणाम करता हूँ ।

यह सभी कहानिया उन्हीं लोगों को अर्पित हैं । यह सब केवल राम लखन प्रसाद के कलम की कमाल है ।

पाठकों की टिपन्नी या विचार